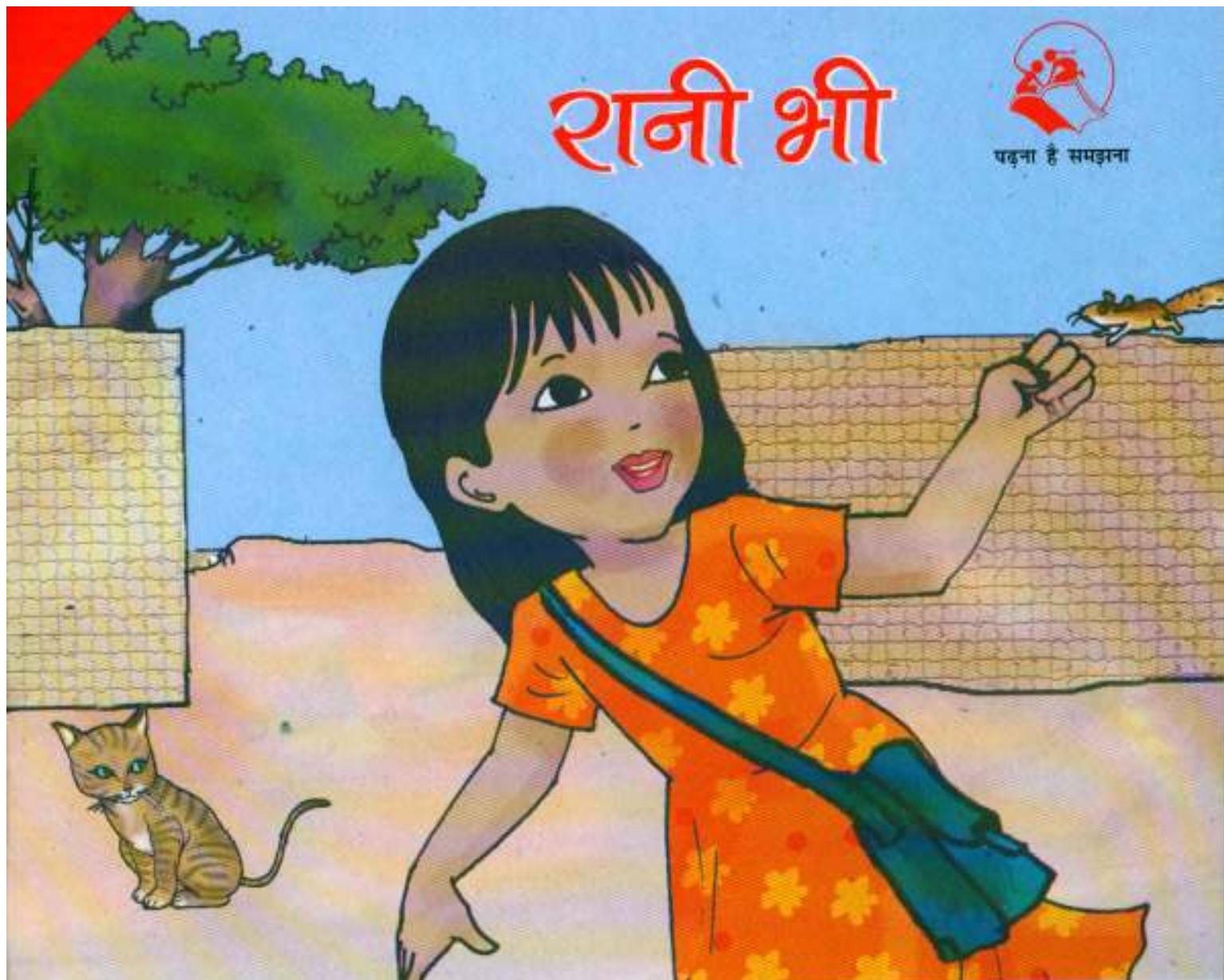


रानी भी



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, गुण कुमार, ज्योति मंडी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, गोधिका बनन, शालिनी शर्मा, लता गांडे, रवाति बर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुभल

सदस्य-समन्वयक – लिखिका गुप्ता

संपादक – जोश्ल गिल

सम्बन्ध आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी., ऑफिसर – अर्वन गुप्ता, जीलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार झाप्तन

ग्रोफ़ेसर कुमा कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोफ़ेसर वसुभा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीकी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोफ़ेसर के. के. लक्ष्मण, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोफ़ेसर मंजुरा माशुर, अभ्यक्ष, रोडिंग देवलैपमेंट सेल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

बी. अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपाठी, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय ट्रिडी विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफ़ेसर फरीद, अनुलला. खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वीनंद, रोहर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ.शश्वन्म मिश्रा, शोई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुम्बई; सुशी तुलहत इस्लम, निदेशक, नेशनल युक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

8) जी.एस.एस. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में गमित, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अविनेद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पेनज विट्टिंग ऑफ, छो-28, इंडिपूर्प्ल गाँव, साहूट-ए-मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-पैर)

978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली ओर दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पौंच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को सूझाए के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को योजामरी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक समग्री हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चाएँ के होके शेत्र में संलग्नतमक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आमानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पर्वतनाली के बिना इस प्रकाशन के लिये यांग या जापना तथा इलेक्ट्रोनिकी यांगों, फोटोप्रिलिस्टि, रिकार्डिंग अवलोकन किसी अन्य विधि से उत्पन्न प्रदूषण द्वारा उपका संग्रहण अवश्य प्रत्यरोध नहिंत है।

एम.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एम.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अविनेद मार्ग, नई दिल्ली 110 016. फोन : 011-26562708
- 106, 108 पर्स नं. १८८, दैली एम्प्लोइमेंट, हाईटेकोर, बताहाड़ी III एस, अस्सी 310 085 फोन : 080-26725740
- एम.सी.ई.आर.टी. नं. १८८, दैली एम्प्लोइमेंट, अस्सीवाहन, अस्सीवाहन 380 014. फोन : 079-25541446
- श्री.इलानू.सी. कैम्प, निकट: धनकुल बस स्टॉप परिसर, कैम्पकाल 700 114 फोन : 033-255310454
- श्री.इलानू.सी. कैम्पकाल, धनकुल, तुम्हाड़ी 781 021. फोन : 0361-2673360

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पौ. राजकुमार पुस्तक संस्करण विभाग : शिव कुमार

पुस्तक विभाग अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य अधिकारी : गौतम कामुनी

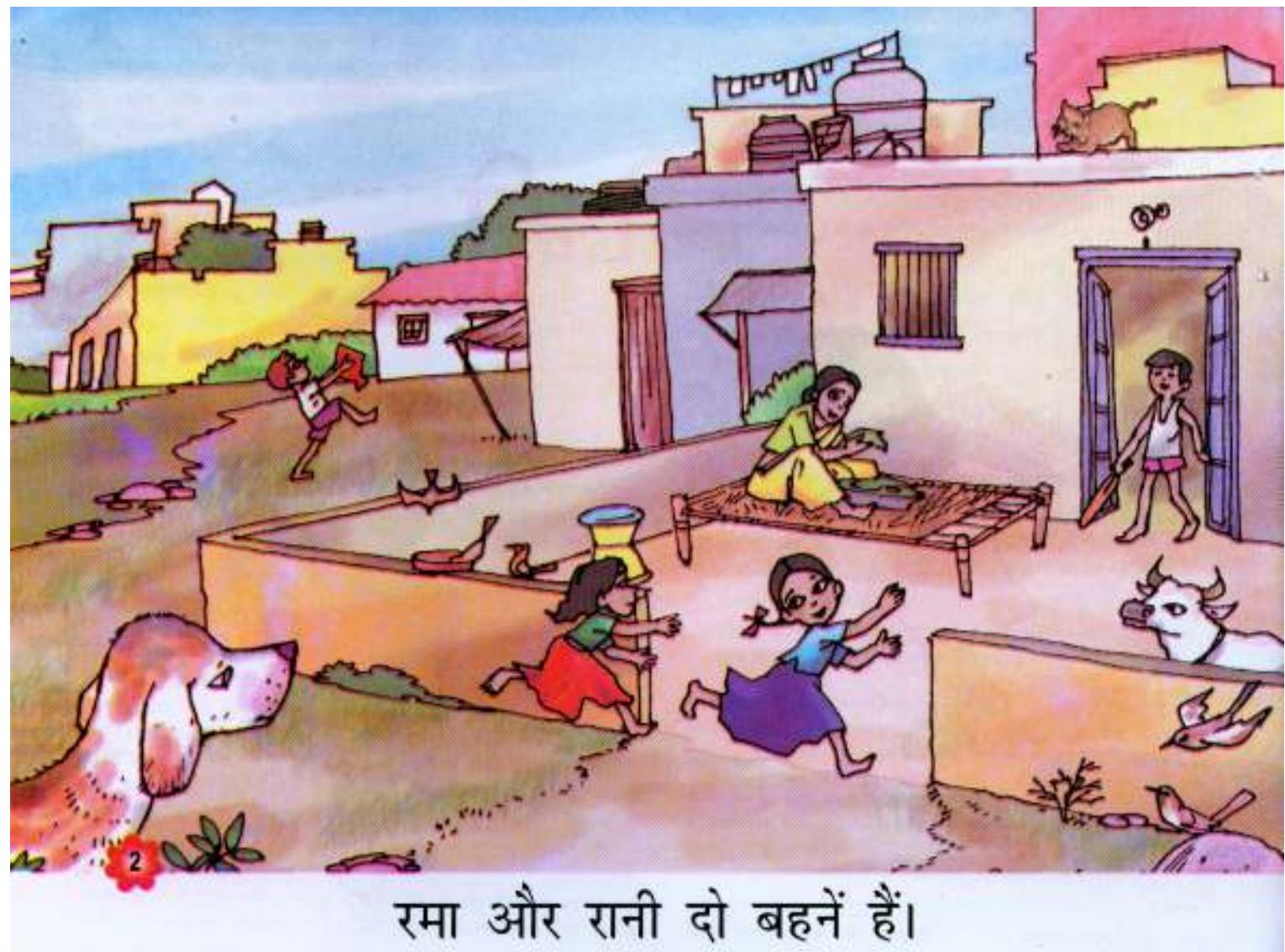
रानी भी



रानी



रमा



रमा और रानी दो बहनें हैं।

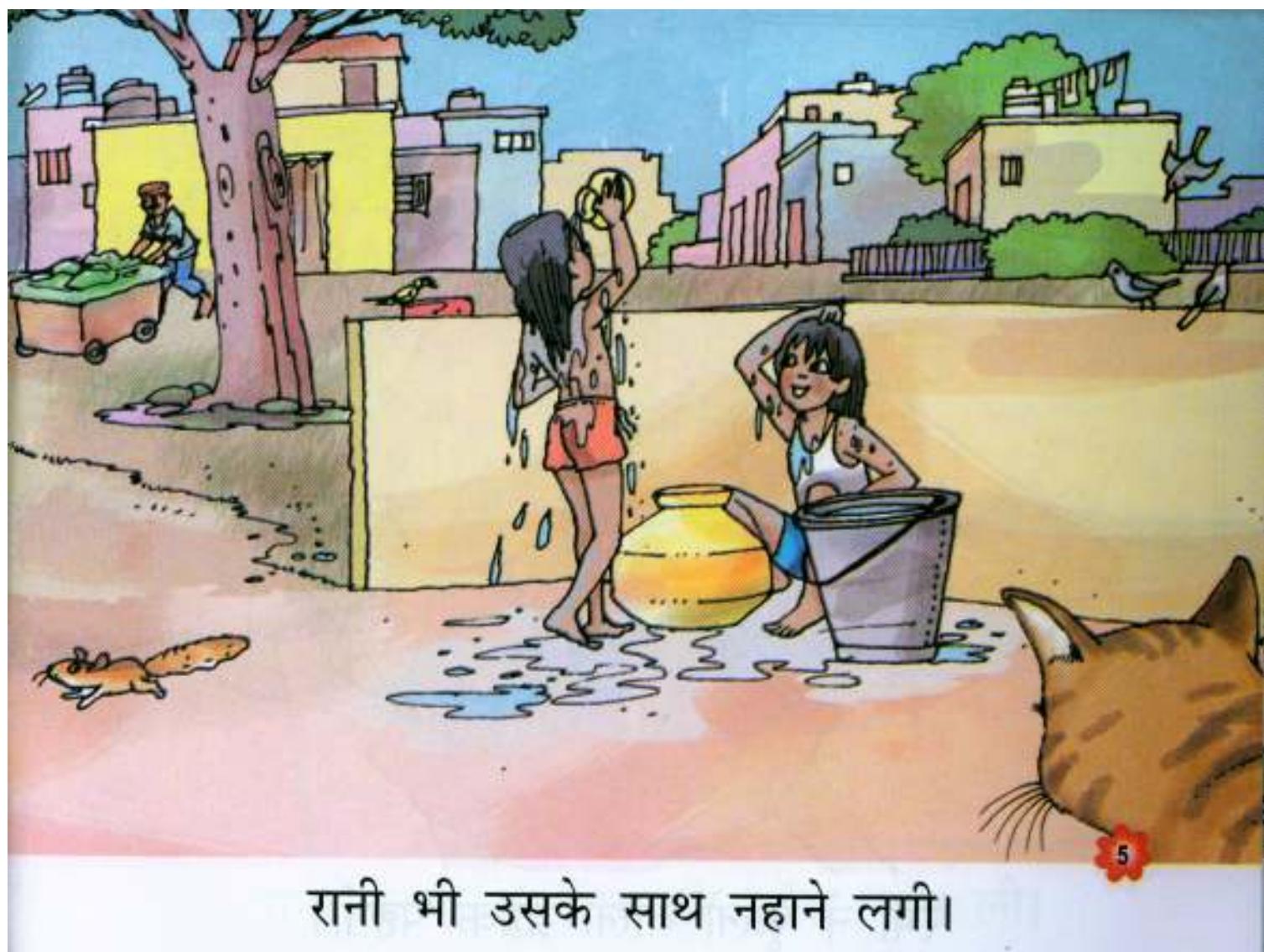


रानी हमेशा रमा के साथ रहती है।



4

एक दिन रमा नहा रही थी।

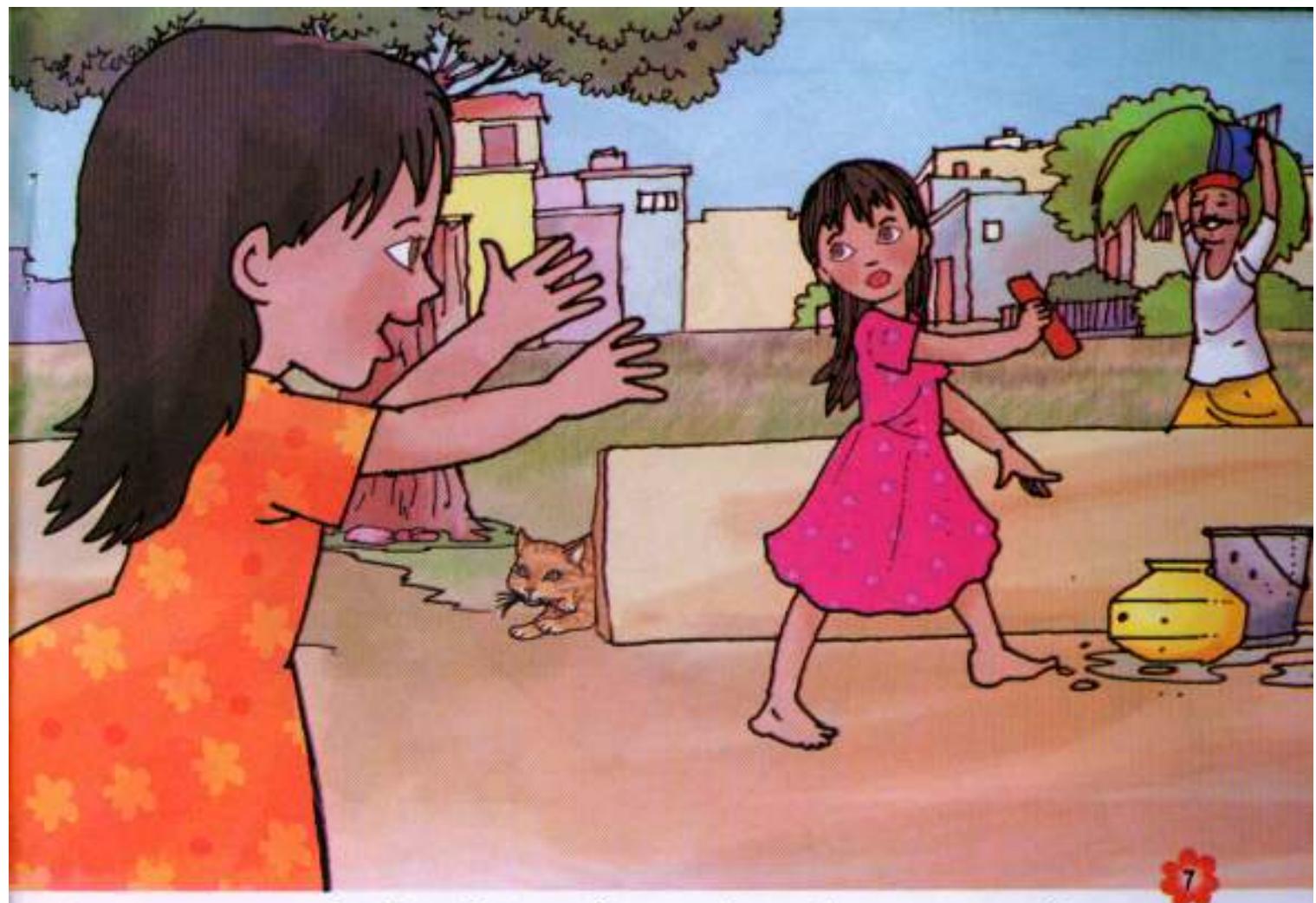


रानी भी उसके साथ नहाने लगी।



6

रमा ने फूलों वाली फ्रॉक पहनी।

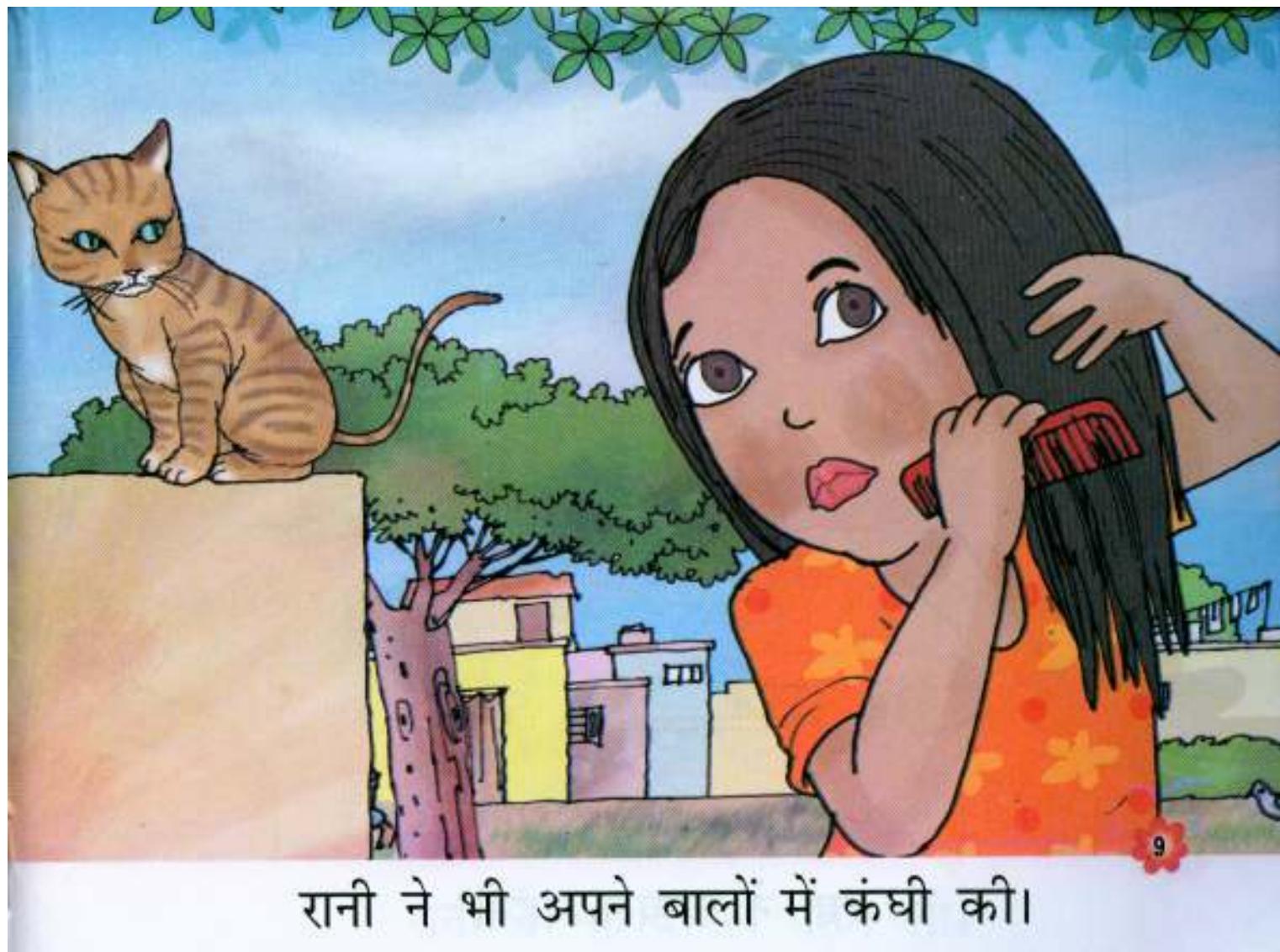


रानी ने भी फूलों वाली फ्रॉक पहन ली।

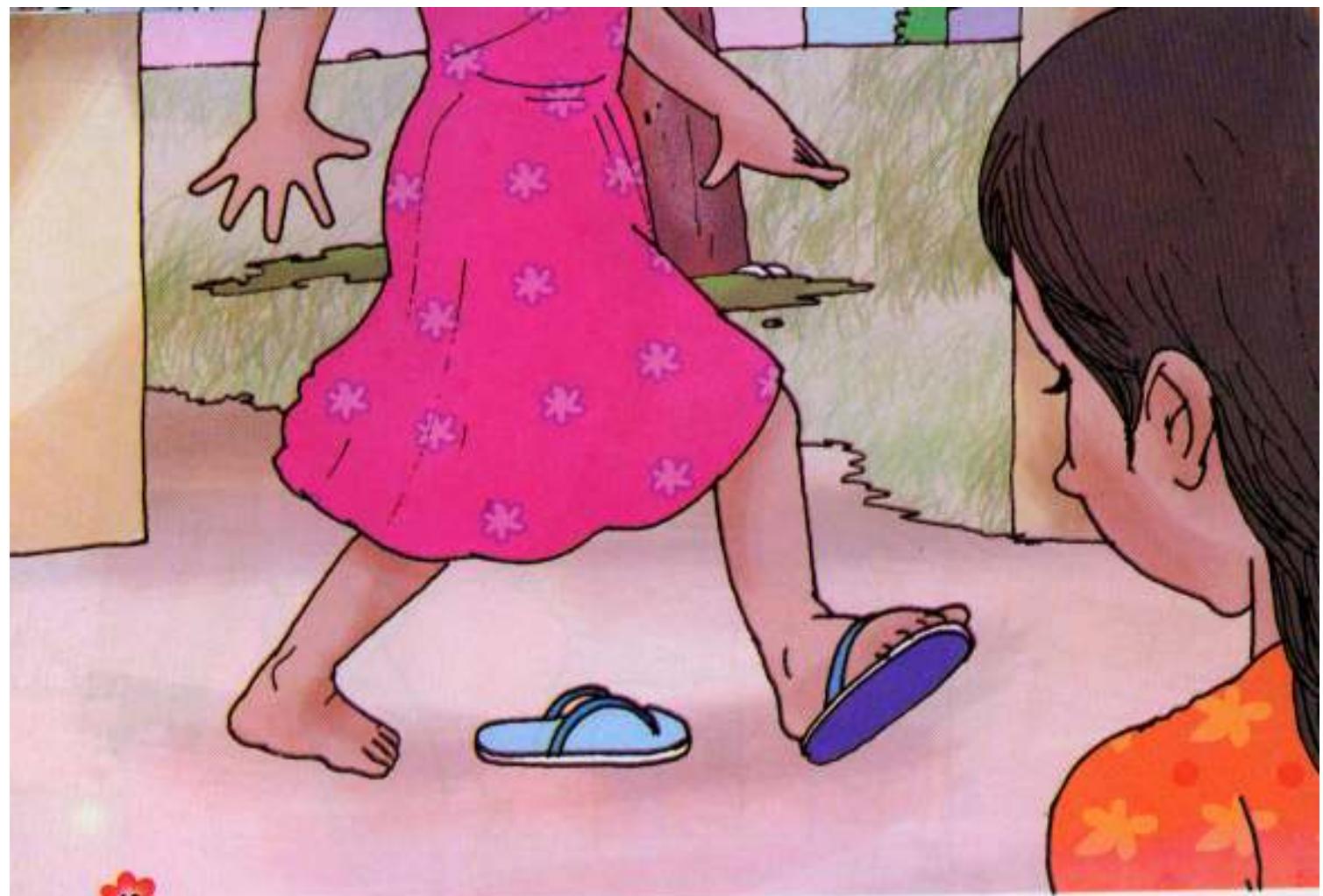


8

रमा ने अपने बालों में कंघी की।

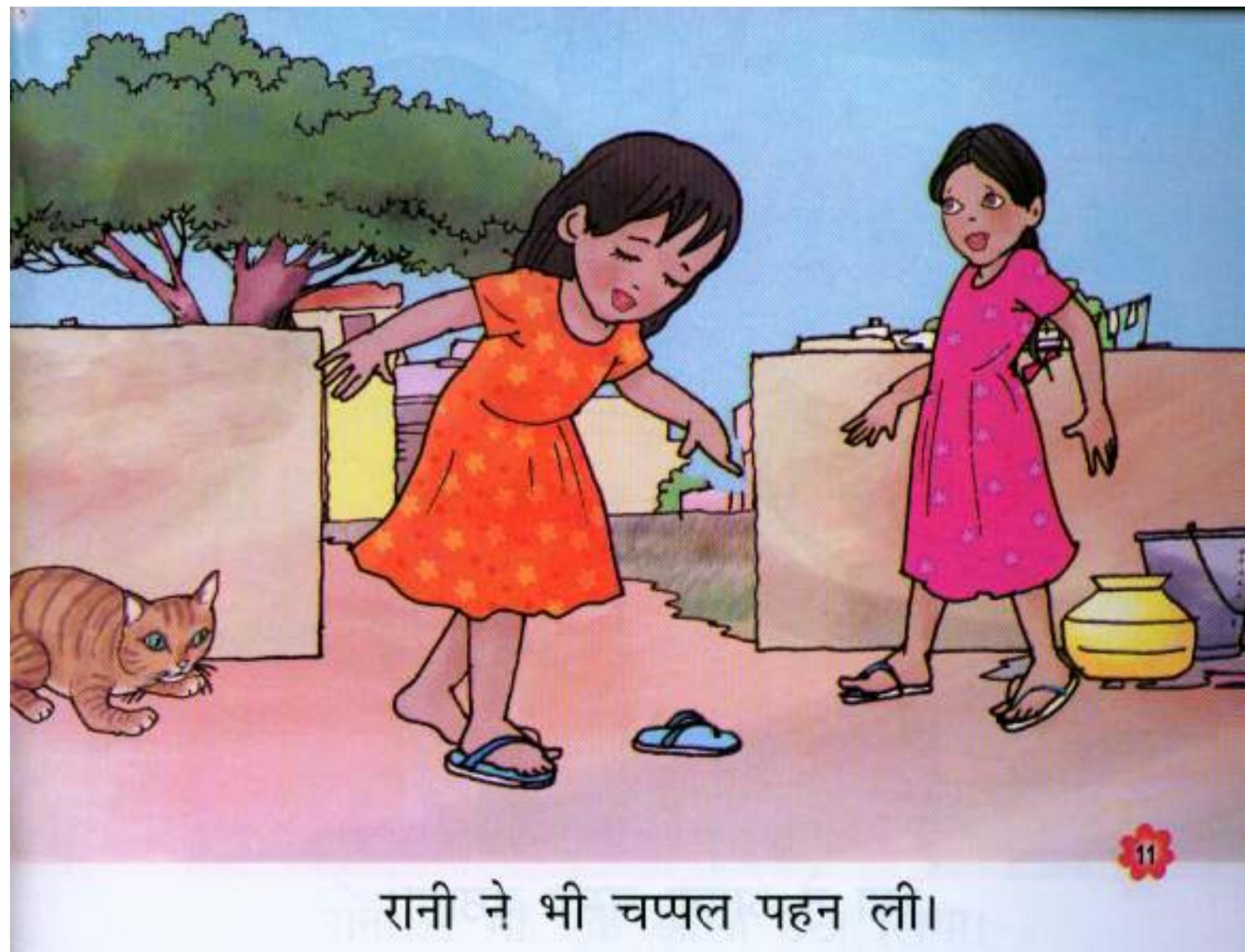


रानी ने भी अपने बालों में कंघी की।



10

रमा ने चप्पल पहनी।



रानी ने भी चप्पल पहन ली।

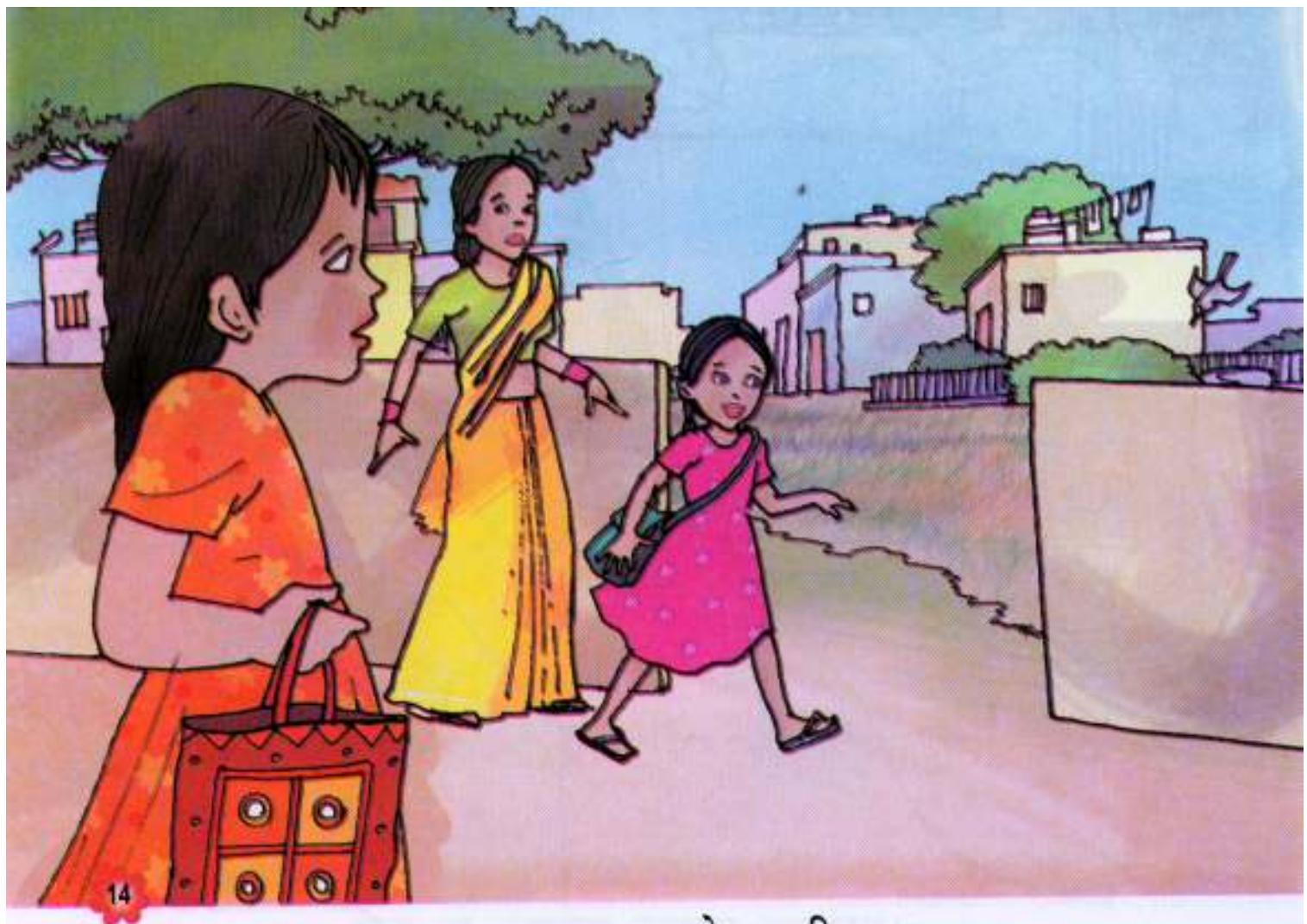


12

रमा ने अपना बस्ता उठाया।



रानी ने भी एक झोला उठा लिया।



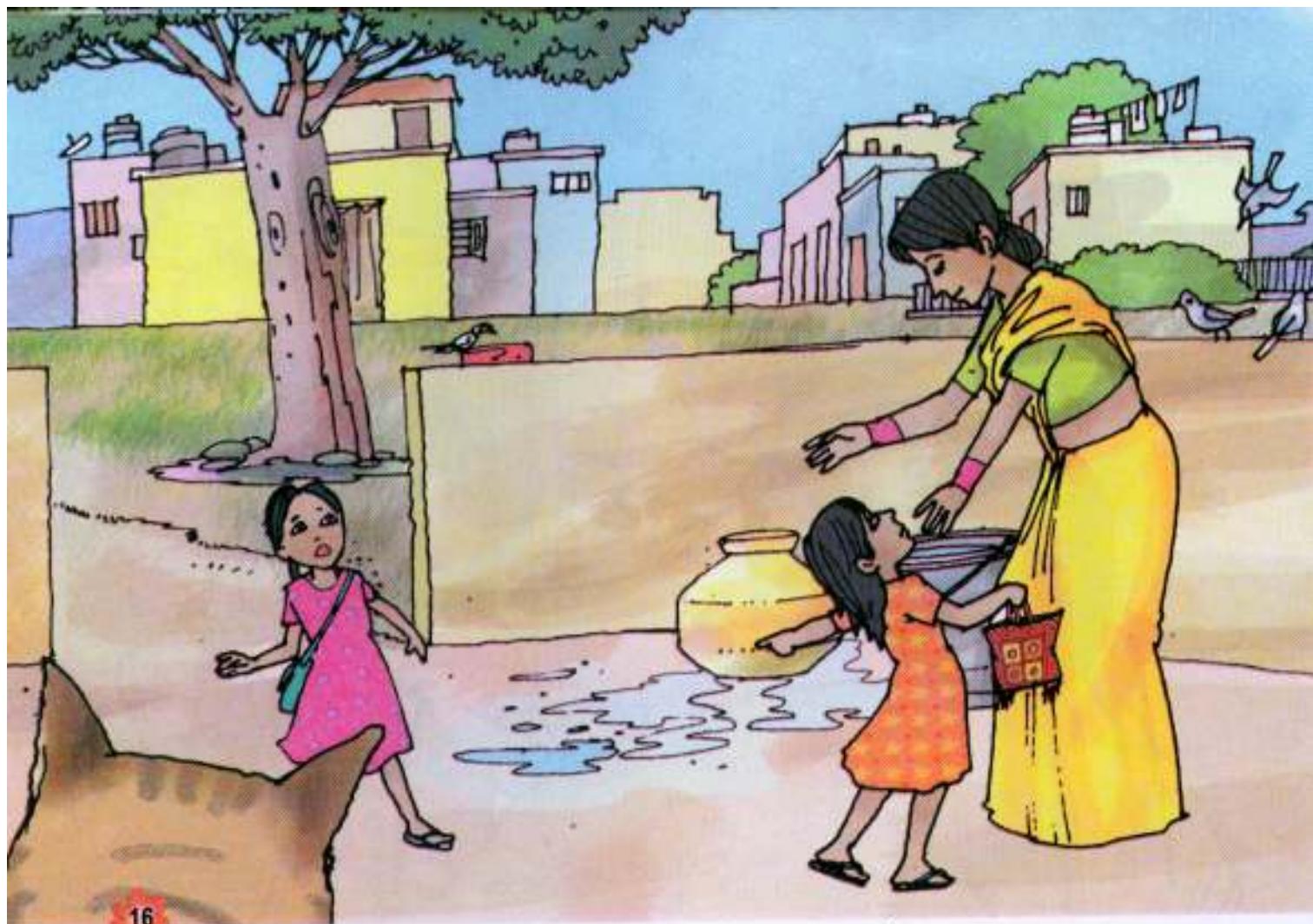
14

रमा स्कूल जाने लगी।



15

मम्मी ने रानी को स्कूल नहीं जाने दिया।



16

रानी अभी बहुत छोटी है।



2057



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

₹. 10.00

ISBN 978-81-7450-898-0 (बर्ला-सेट)
978-81-7450-858-4

मुनमुन और मुनू



पढ़ना है समझना



प्रकाशन संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वाम, मुकेश मालवीय, गण्डीय मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति चर्मा, सारिका चंशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, मुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – जोएल गिल

संज्ञा तथा आवरण – निधि चाधवा

डॉ.टी.पी. ऑफिटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुपा कामथ, भयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीयी की संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर क. के. लक्ष्मण, विभागाध्यक्ष, प्रार्थिक फिल्म विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर गमजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंडला माशुर, अध्यक्ष, शीडिंग डेवलपमेंट सेल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक बाजपेशी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महाराष्ट्रा गांधी आर्थिक विद्यी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला. खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्विनद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.ए.ए. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुकहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. ऐस पर चुनित

प्रकाशन विभाग में सचिव, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अश्विन नारं, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंक्ति प्रिंटिंग प्रेस, रोड़-28, इंडस्ट्रियल परिषद्, सलैंग-ए, मधुरा 281004 द्वारा प्रसिद्ध।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-859-1

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथाओं स्तरों में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की सुन्दरी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को गोजामरी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी गोचक सागती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षा

प्रकाशक की पूर्णअनुमति के बिना इन प्रकाशन के किसी भाग को अपना लक्ष लेनेवालिकी, प्रांतीय, फोटोप्रिलिंग, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग प्रदर्शित द्वारा उसका संप्रहरण अथवा प्रसारण याजित है।

ए.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैप्स, श्री अश्विन नारं, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 चौट गोद, हैंडे प्रम्पटेजन, हैंडेकेन, कालाकारी III स्ट्रेज, काशी 560 065 फोन : 080-26725740
- वल्लीन इन्डस्ट्रीज, लाकपा नवबीवन, वाहगढ़वाल 380 014 फोन : 079-27541446
- गोलकृष्ण सी. कैप्स, निकट: पनकल बस स्टॉप परिहारी, बोमकाश 700 114 फोन : 033-25530454
- गोलकृष्ण सी. कैप्सीमें, भरतीय, पुस्तकालय 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन संहिता

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : डॉ. गवाहुमा
पुस्तक संपादक : शंख उपल

मुख्य उपादान अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम शर्मा

मुनमुन और मुन्नू



रमा



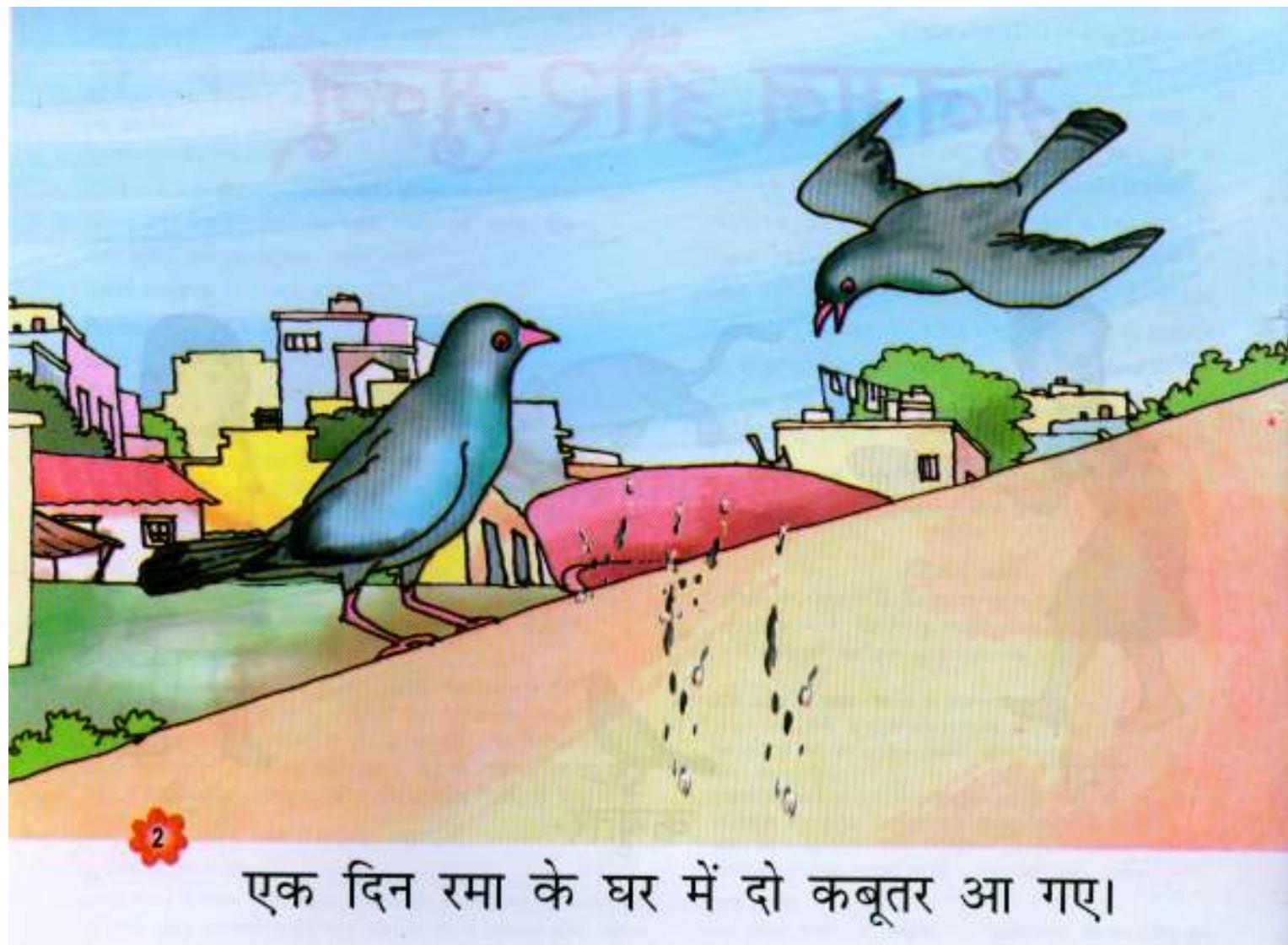
मुनमुन



रानी



कबूतर

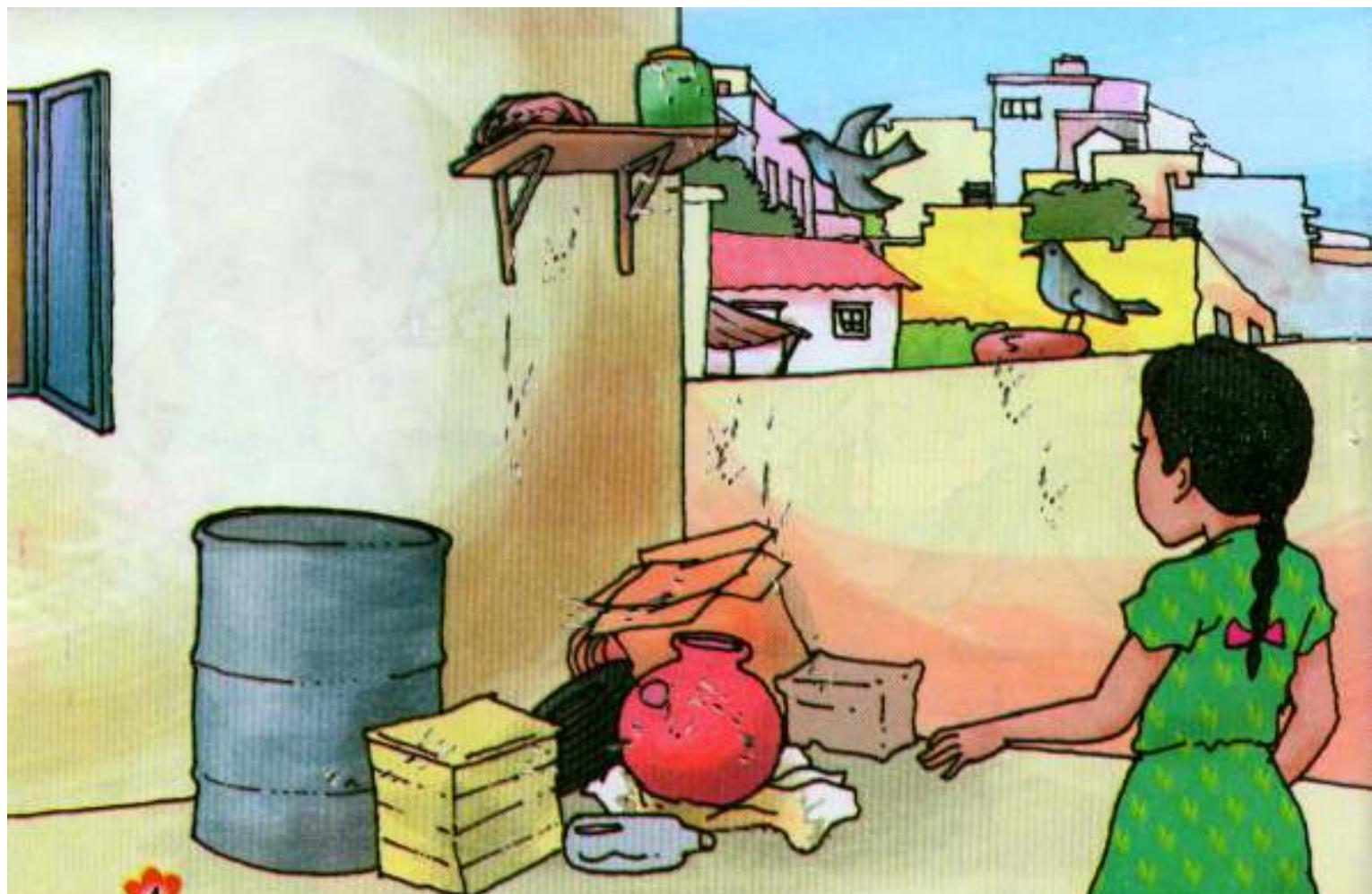


2

एक दिन रमा के घर में दो कबूतर आ गए।

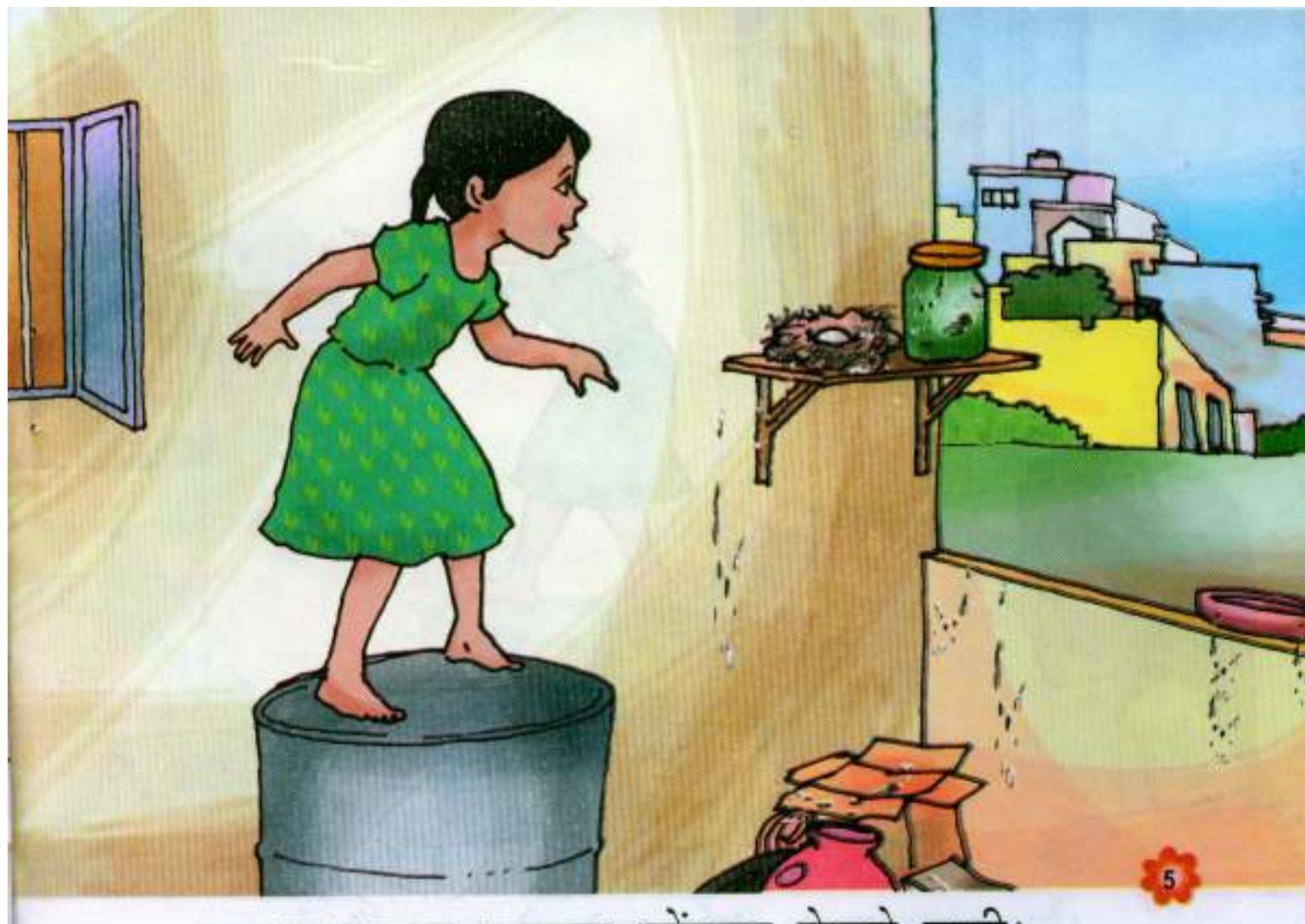


रमा उन्हें देखने आँगन में आ गई।



4

रमा को कबूतरों का घोंसला दिखा।



रमा ऊपर चढ़कर घोंसला देखने लगी।



रानी भी घोंसला देखने आ गई।



घोंसले में अंडा देखकर दोनों बहुत खुश हुईं।



रानी ने देखा कि मुनमुन भी वहाँ थी।



रमा ने मुनमुन को वहाँ से भगा दिया।



मुनमुन फिर से लौट आई।



रमा ने मुनमुन को दूध पिलाया।

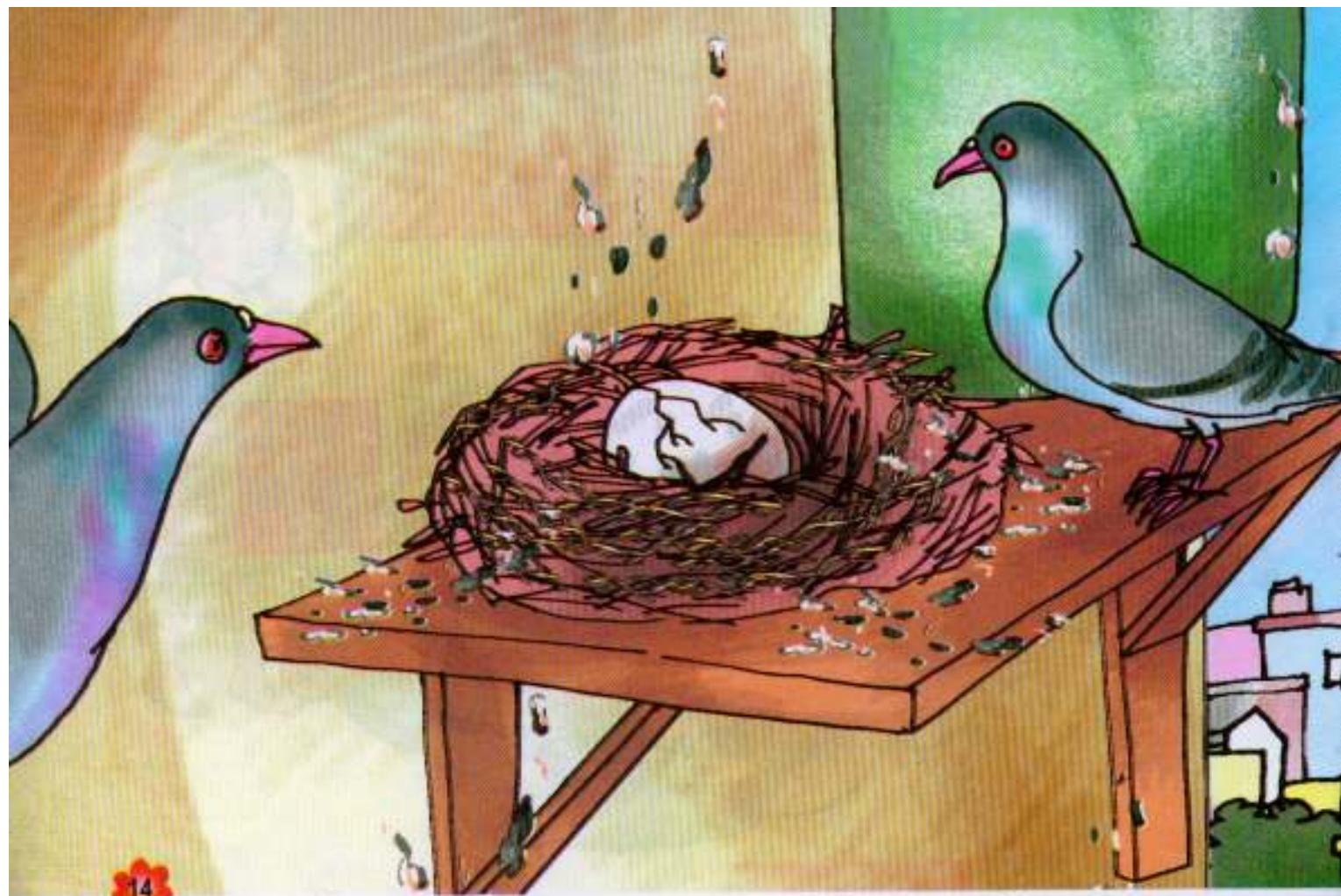


12

वे मुनमुन को रोज़ दूध देने लगीं।



मुनमुन रोज़ दूध पीती और चली जाती।



14

रमा और रानी को एक दिन अंडे में दरारें दिखीं।



अंडे में से बच्चा निकल आया।



16

रमा और रानी ने उसका नाम मुनू रख दिया।



जर्व शिक्षा अभियान
नव पड़े नव बढ़े



2058



रु. 10.00

राष्ट्रीय शिक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा देंट)

978-81-7450-859-1



पहचान है सम्प्रदान

मिठाई



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलारुल विश्वास, युवेज मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी राधी, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, मारिका वर्षाचार्य, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-सम्बन्धक - लिंगिका गुप्ता

विश्वांकन - कृतिका एस. नरला

सञ्ज्ञा तथा आवरण - निधि चाधवा

श्री/टी/यी, ऑफिसर - अर्चना गुप्ता, मानसी सिन्हा, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, मधुमत्त निदेशक, कैन्टोन शैक्षिक शिक्षोगिकी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वर्षाचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मनुकुल माशुर, अध्यक्ष, रीडिंग इंवेलपमेंट सेल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक चावडेरी, अध्यक्ष, पूर्व कृतपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वर्षा; प्रोफेसर फरीदा, अमृतनना खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वनंद, रोडर, हिंदू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शश्वत मिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एस., पर्स.एफ.एस., मुर्ख; सुशी नुजहत हयन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री चेहिल धनकर, निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग ने साचिव, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अशोक चावडेरी, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा प्रभारी पंकज प्रेम, श्री-28, इंडीस्ट्रियल एरिया, स्कॉट-ए, मधुत 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-टीट)

978-81-7450-861-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सत्रों और चाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्दी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' को सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यक्रम के हरेक क्षेत्र में संलग्नतम् लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशन की पूर्वजनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को लापता तथा इसका अन्यान्य वितरण, प्रसारण, फोटोग्राफी, विकासित अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संदर्भण अवश्य प्राप्त कर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैप्स, ले. अपरिव चौरा, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 109 चौटे गेह, होली एक्सप्रेस, होलीकोट, नवलकरी 310 001 फोन : 066-261085
फोन : 060-26725740
- नवलकरी इट चौरा, उत्कम नवलकरी, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- गोल्डन्यूटी, कैप्स, निकट: चमकन कम एंट्री पहली, कोलकाता 700 114
फोन : 033-25530434
- गोल्डन्यूटी, कॉम्प्लेक्स, नवलकरी, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2614869

प्रकाशन सहयोग

अप्पल, प्रकाशन विभाग ; पी. एवाकुमार
मुख्य संपादक : शंखर अप्पल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य अध्यक्ष अधिकारी : गीता सुनी

मिठाई



गधा

मिठाई



एक दिन गधे का मन मीठा खाने का हुआ।



गधे ने दोस्तों से कुछ मीठा खाने को माँगा।



4

भालू ने कहा – शहद खा लो।



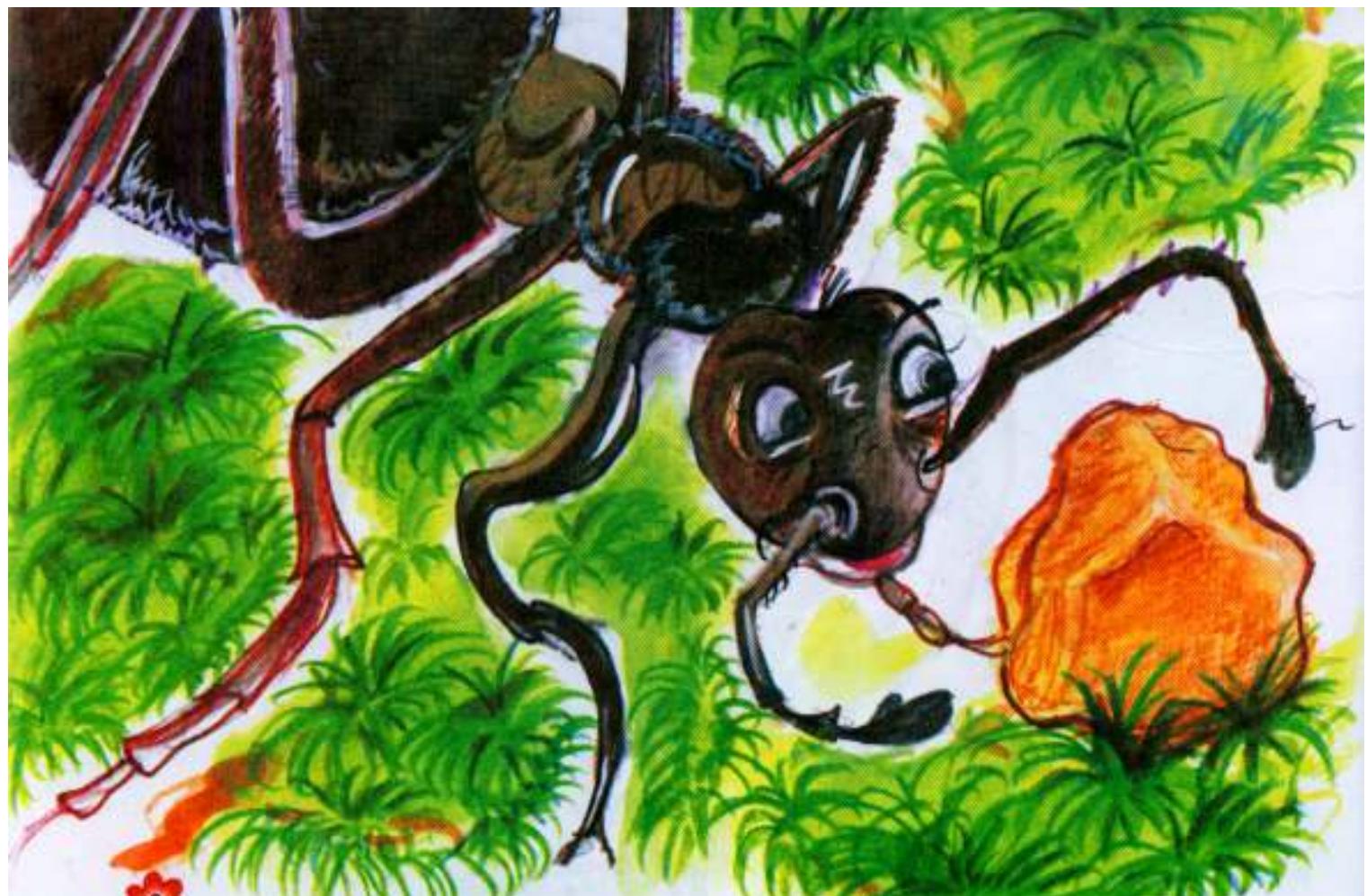
गधे ने मना कर दिया।



खरगोश ने कहा – गाजर खा लो।



गधे ने मना कर दिया।



8

चींटे ने कहा - गुड़ खा लो।



गधे ने मना कर दिया।



हाथी ने कहा – गना खा लो।



गधे ने मना कर दिया।



12

गिलहरी ने कहा – आम खा लो।



गधे ने मना कर दिया।



14

बिल्ली बोली – हलवाई की दुकान पर चलो।

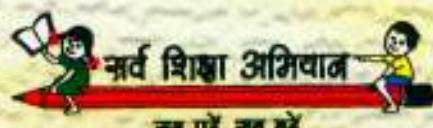


गधे को यह बात पसंद आ गई।



16

सब मिठाई खाने चल पड़े।



₹.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरला - से२)

978-81-7450-861-4



गिल्ली-डंडा



© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन मंटी, कृष्ण कुमार, ज्योति मंटी, दुलदुल विभाग, नुकेगा नालवीय, शैक्षिक भेन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति कर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लिंगिका गुप्ता**चित्रांकन - निधि वाधवा****सञ्ज्ञा तथा आवरण - निधि वाधवा**

डी.टी.पी. ऑफिसर - अर्जन गुप्ता, नीलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कुमार कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर बघुरा कामध, संकुल निदेशक, कन्द्रीय शैक्षिक प्रोवाइली संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वरिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर एमबब्न शार्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर बघुरा मधुरा मधुर, अध्यक्ष, रोडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वावडेही, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्षा; प्रोफेसर फरीदा, अच्छुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, आविष्या निलिया इस्लामिक, दिल्ली; डा. अपूर्विन, रोदर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ.शब्दनम मिनार, मीरा आ., आई.एल.एच.एस., मुर्दः; सुश्री नृशंहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री सेहित घनकर, निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

10 डी.एस.एम. पैपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संविच, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अविनंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पैकेज विलिंग ट्रेस, डी-28, ईडमिटपत एरिया, साड़े-८, मधुर 281004 द्वारा मुद्रित।

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका दृष्टिकोण बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पैंच कथाओंमें संस्थापित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की सुनील के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्मा की छोटी-छोटी घटनाएं कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चयों के होरेक्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार संस्कृत

प्रकाशक की पूर्वानुसूती के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन तथा इलेक्ट्रॉनिको, मरोहे, फोटोफॉलोफोटोग्राफी विकारी अथवा लिपि में पुनः प्रयोग व्यक्ति द्वारा उपकरण संशोधन अथवा प्रसारण भवित्व नहीं है।

एन.सी.डे.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.डे.आर.टी. कैम्प, श्री अविनंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 100, 100 पौरे गोद, रोटी एस्टेटेशन, लोडोंगोरे, बालाकोटी III भौज, चंडीगढ़ 560 085 फोन : 080-26725740
- नवदीपन ट्रस्ट घरम, दारभया नवदीपन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- श्री उमरु श्री कैम्प, निकट, भालकर यस चौराज़ चौकी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- श्री उमरु श्री कैम्पस, प्रसारार्थी, गुरुग्राम 781 021 फोन : 0161-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पौरे नवदीपन मुख्य संचारक	पूर्व उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार मुख्य अध्यक्ष अधिकारी : गौलप सर्कार
--	--

गिल्ली-डंडा



जीत

बबली

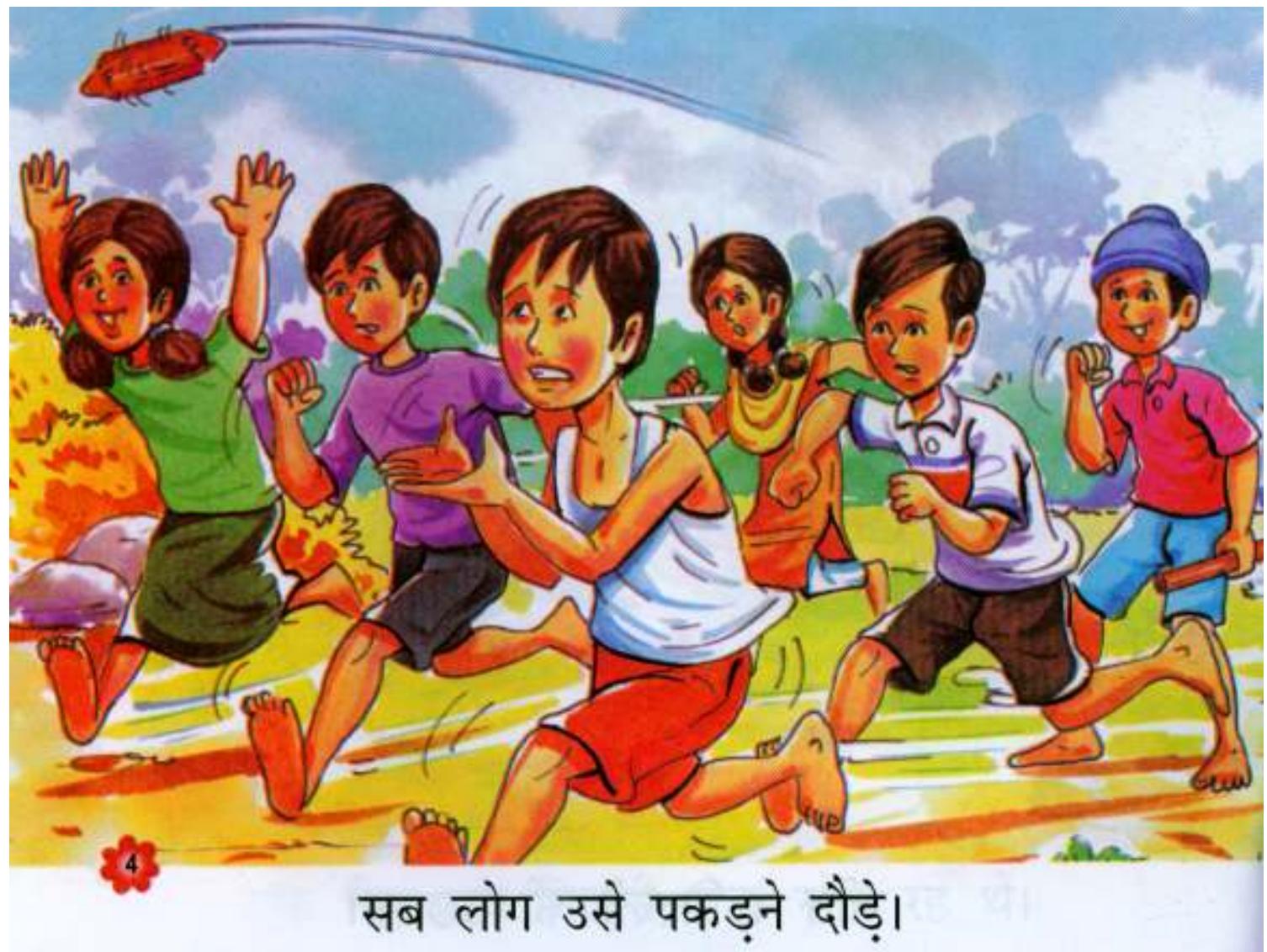


2

एक दिन सब गिल्ली-डंडा खेल रहे थे।



जीत ने गिल्ली को उछाला।



4

सब लोग उसे पकड़ने दौड़े।

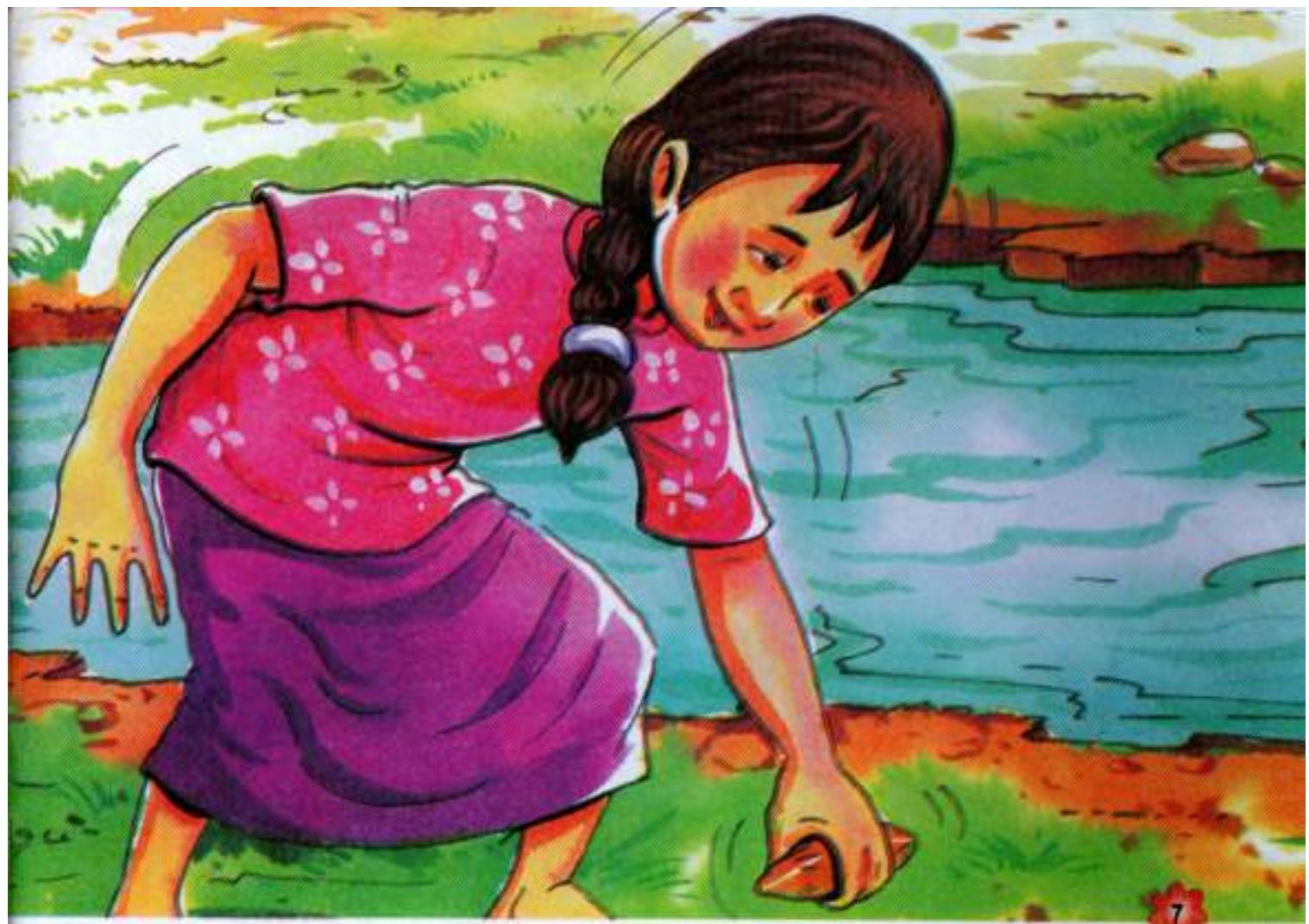


गिल्ली तालाब के पार चली गई।



6

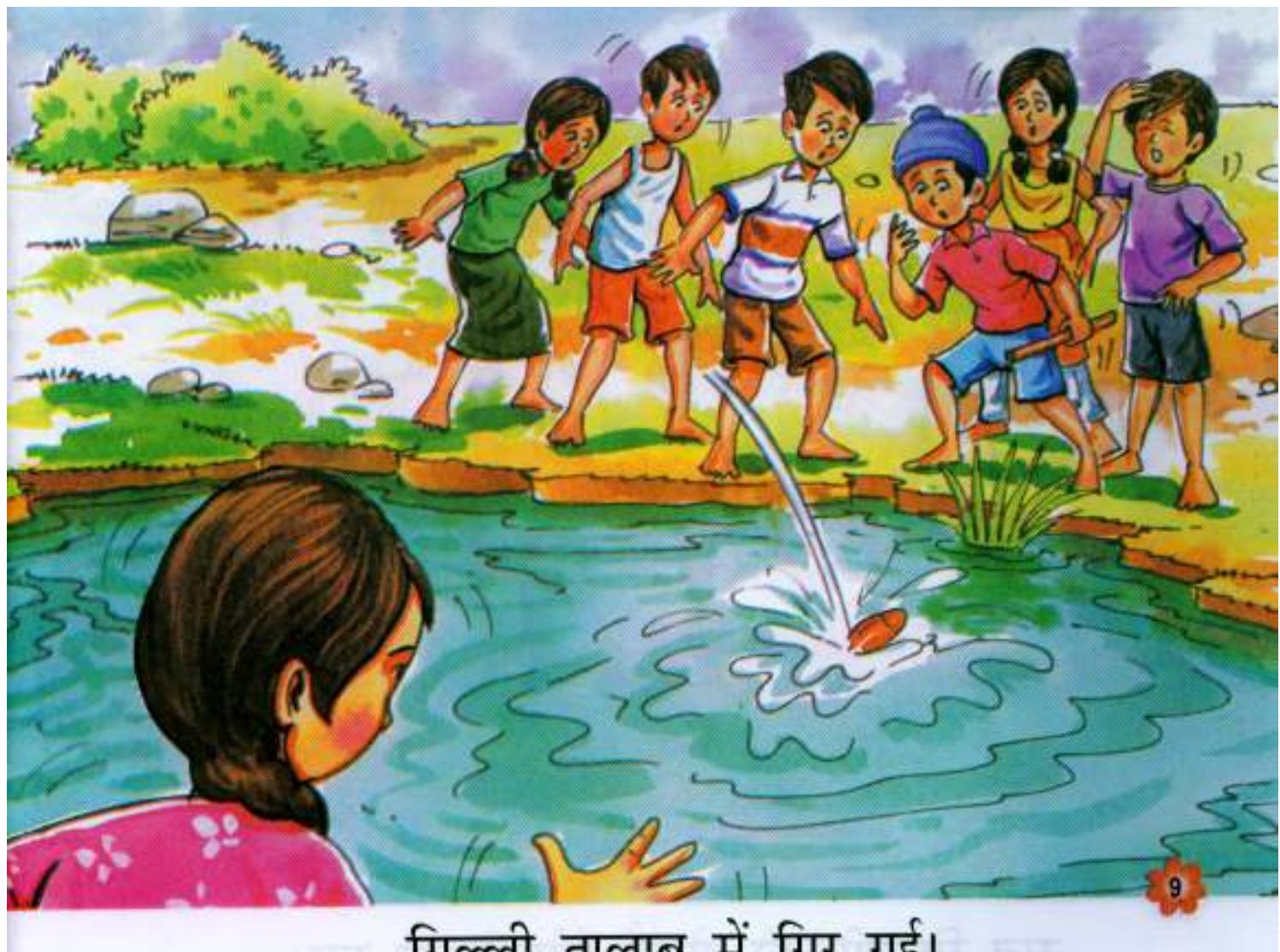
गिल्ली बबली के पास जा गिरी।



बबली ने गिल्ली उठाई।



बबली उसे तालाब के पार फेंकने लगी।



गिल्ली तालाब में गिर गई।



10

सब गिल्ली को लेकर परेशान हो गए।



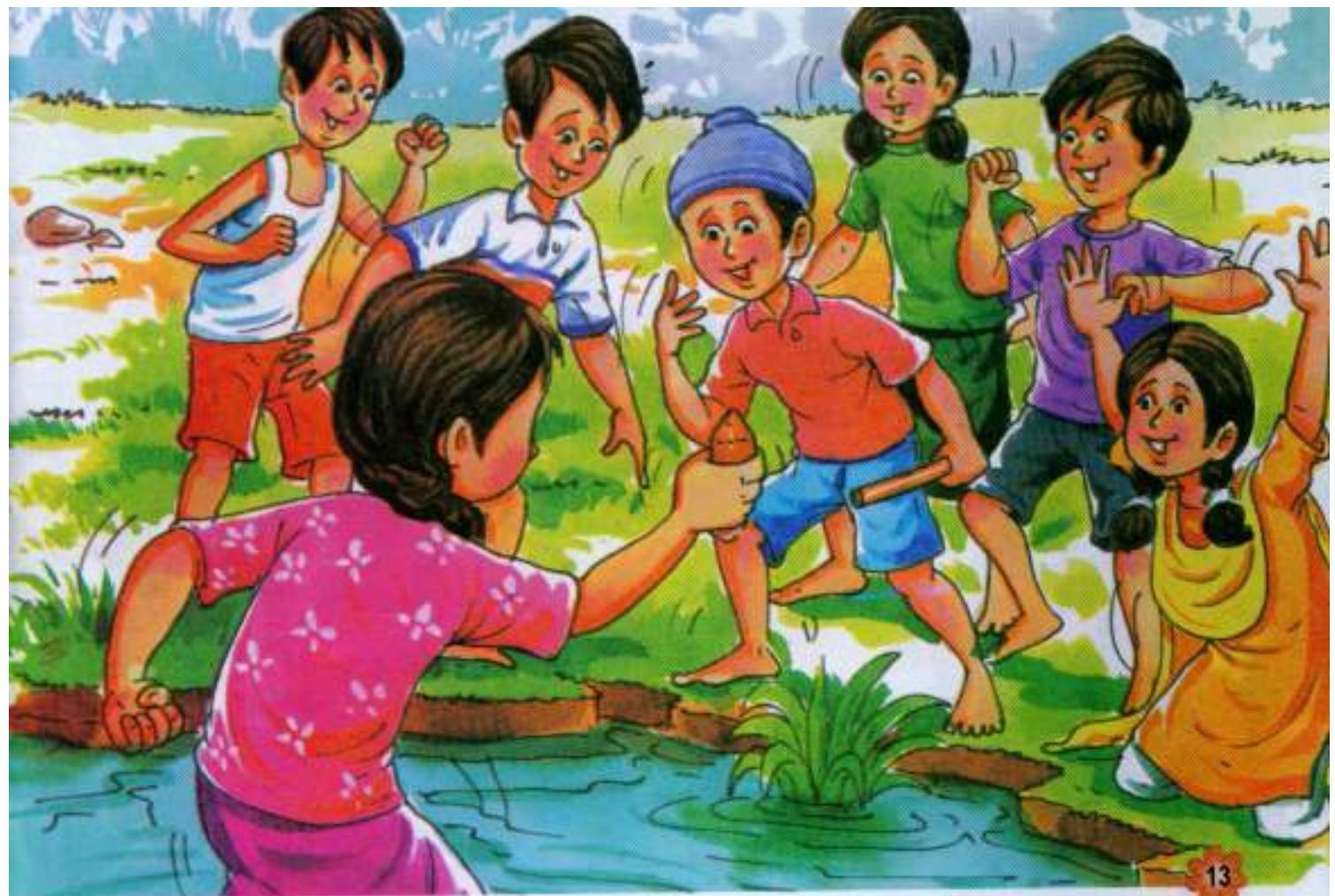
11

बबली को तैरना आता था।



12

वह तालाब में कूदी और गिल्ली ले आई।



13

सब खुशी से चिल्लाने लगे।

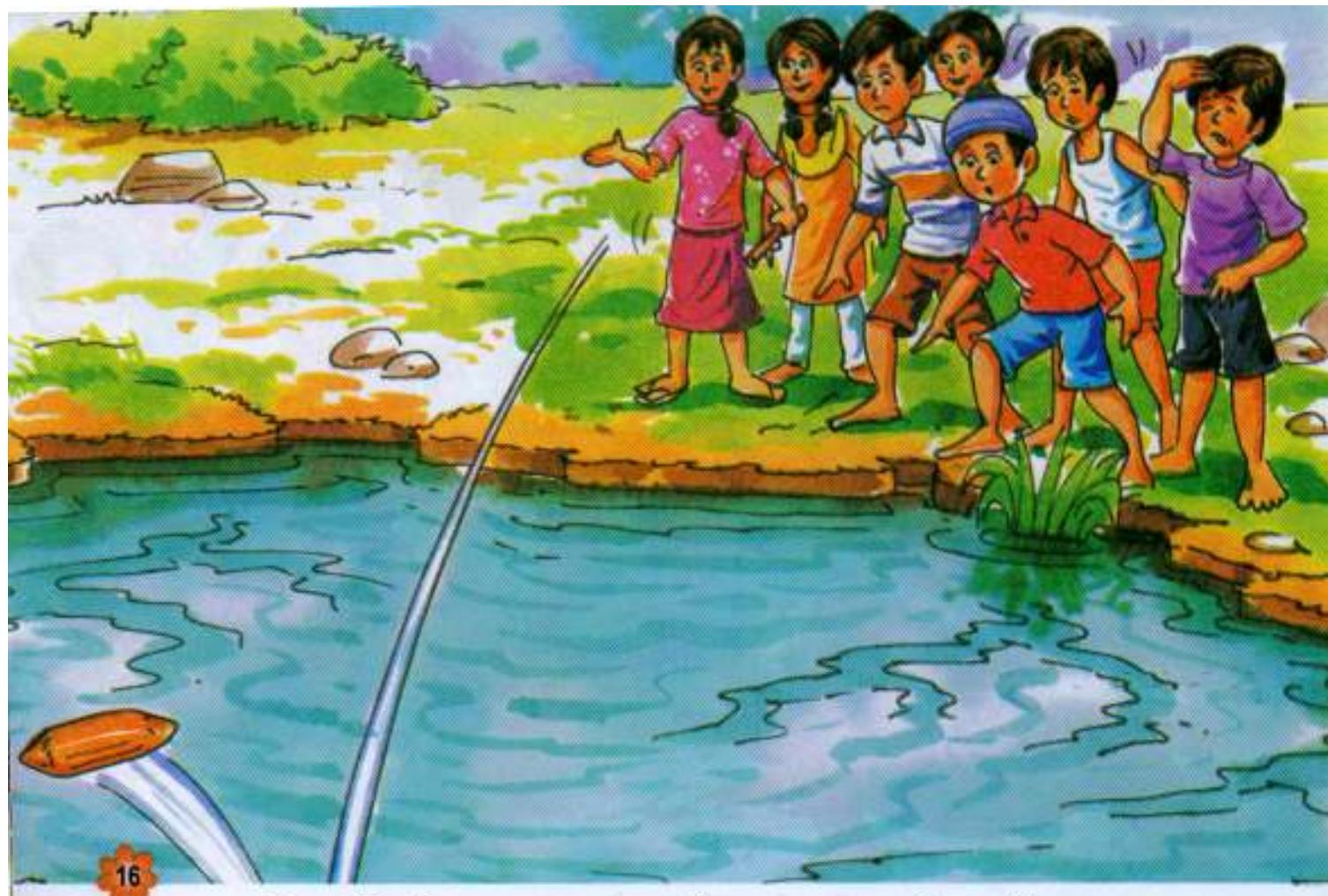


14

बबली सबके साथ गिल्ली-डंडा खेलने लगी।



बबली ने ज़ोर से डंडा घुमाया।



16

गिल्ली फिर तालाब के पार चली गई।



2061



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरला-मैट)

978-81-7450-862-1

छुपन-छुपाई



पढ़ना है ममझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 197 NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति चर्मा, सारिका वाणिष्ठ, सीमा कुमारी, सांचिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

विभागकरन – निधि बाध्यका

संस्था तथा आवरण – निधि बाध्यका

डी.टी.पी., ऑफिसर – अर्वन गुप्ता, मानसी सिन्हा, अमृत गुप्ता

आभार छापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर लम्बुला कामल, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोवोगिकी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वे. के. वाणिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रार्थिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर गणभग्न शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, गिरिधर देवलैपवेट मैल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

बी अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, कल्पी; प्रोफेसर फरहिदा अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वनंद, गीवर, हिंदू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनय मिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल.एव.एफ.एस., मुमर्द; सुशी नुवाहत हसन, निदेशक, विश्वविद्यालय कुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री राहित घनकर, निदेशक, दिगंबर, जबपुर।

80 जी.एस.ए.प. पेपर पर महिला

प्रकाशन विभाग में सचिव, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, बी अशोक नारा, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडिपेंडेंस परिया, स्ट्रीट-ए, मथुरा 281004 द्वारा प्रकृति।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-मैट)

978-81-7450-863-8

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मार्के देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को सोशमर्ग की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

गण्डीयकार सुरक्षा

प्रकाशक की दूर्वानुपत्ति के बिना इस प्रकाशन के किसी भग्न को छापन तथा इन्टरनेटी, बर्सी, पोर्टफोलिओ, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग गम्भीर द्वारा उत्तम संरक्षण अथवा प्रसारण बर्खित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस, बी अशोक नारा, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-28562708
- 108, 100 फैल रोड, डेसी एस्टेट्स, हैम्पटोर, बनारसगढ़ 221 006 फोन : 080-26723740
- नवीन ट्रस्ट घर, दालाल वालीघर, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.इ.एस.पी. कैम्पस, निकट: याकबगंज सड़क पहिली, कोलकाता 700 114 फोन : 033-24330454
- सी.इ.एस.पी. कैम्पस, मार्टिनेस, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674369

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संचालक : स्वेत उपला मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गोप्ता

छुपन-छुपाई



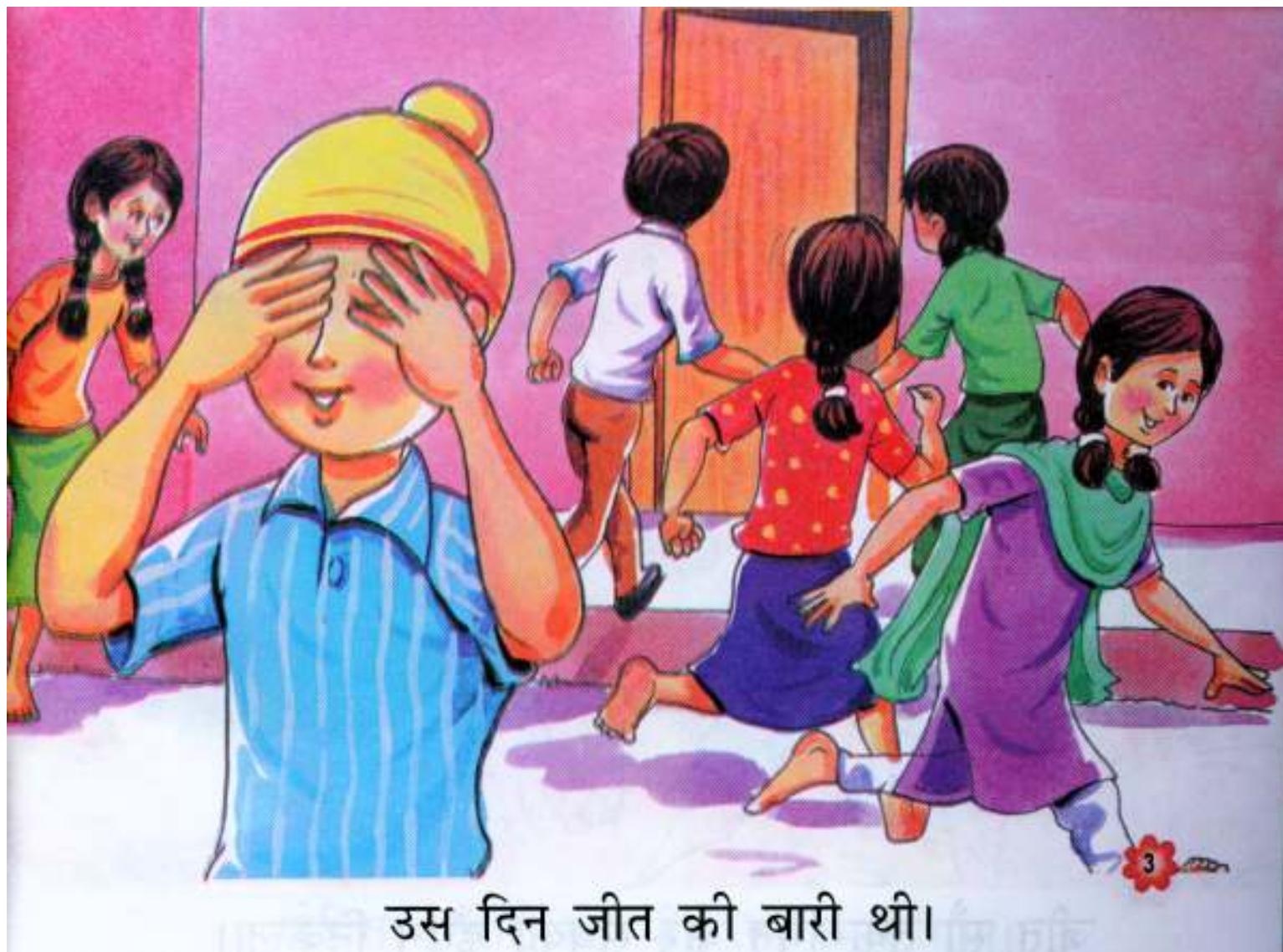
बबली



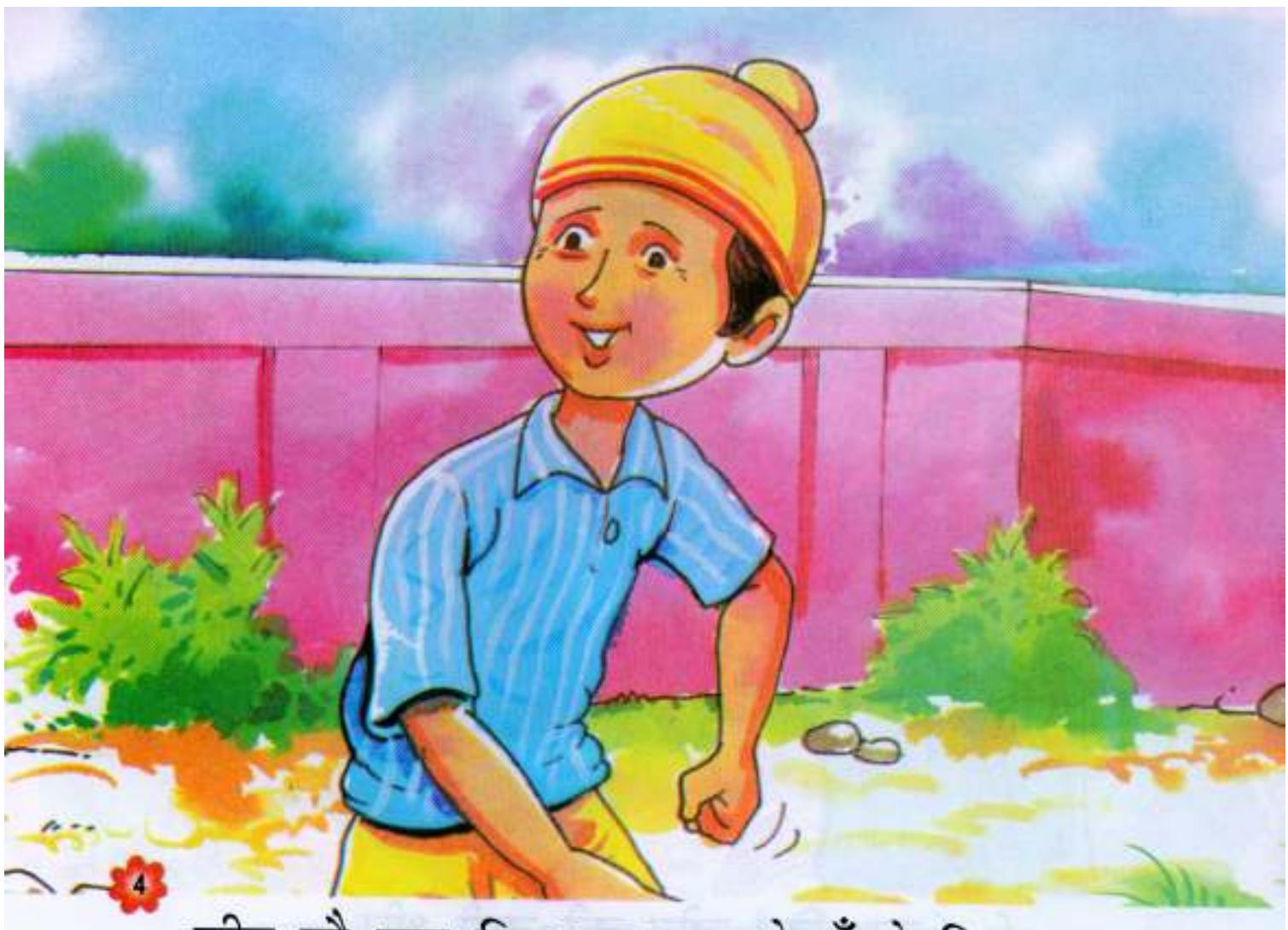
जीत



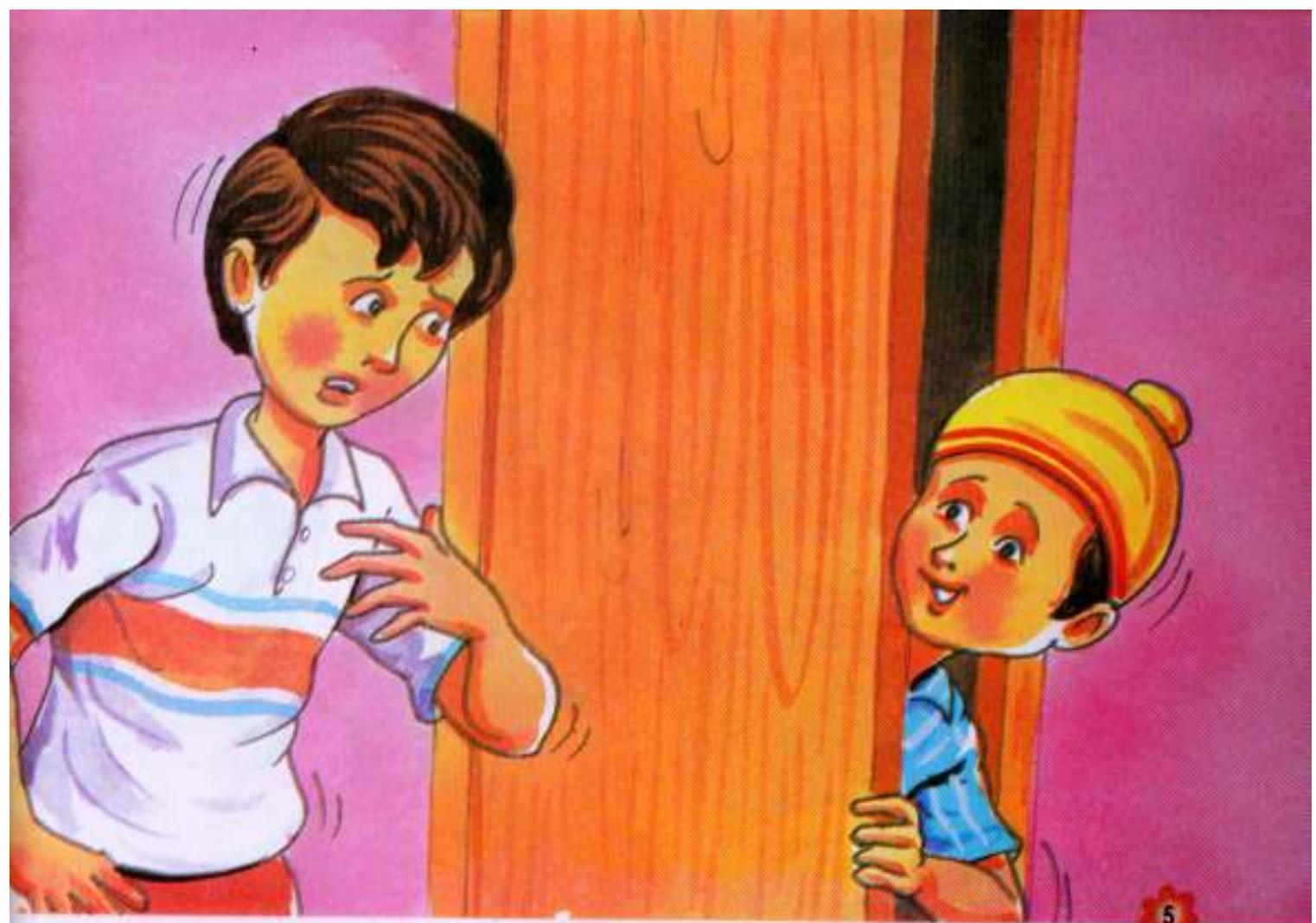
एक दिन सब छुपन-छुपाई खेल रहे थे।



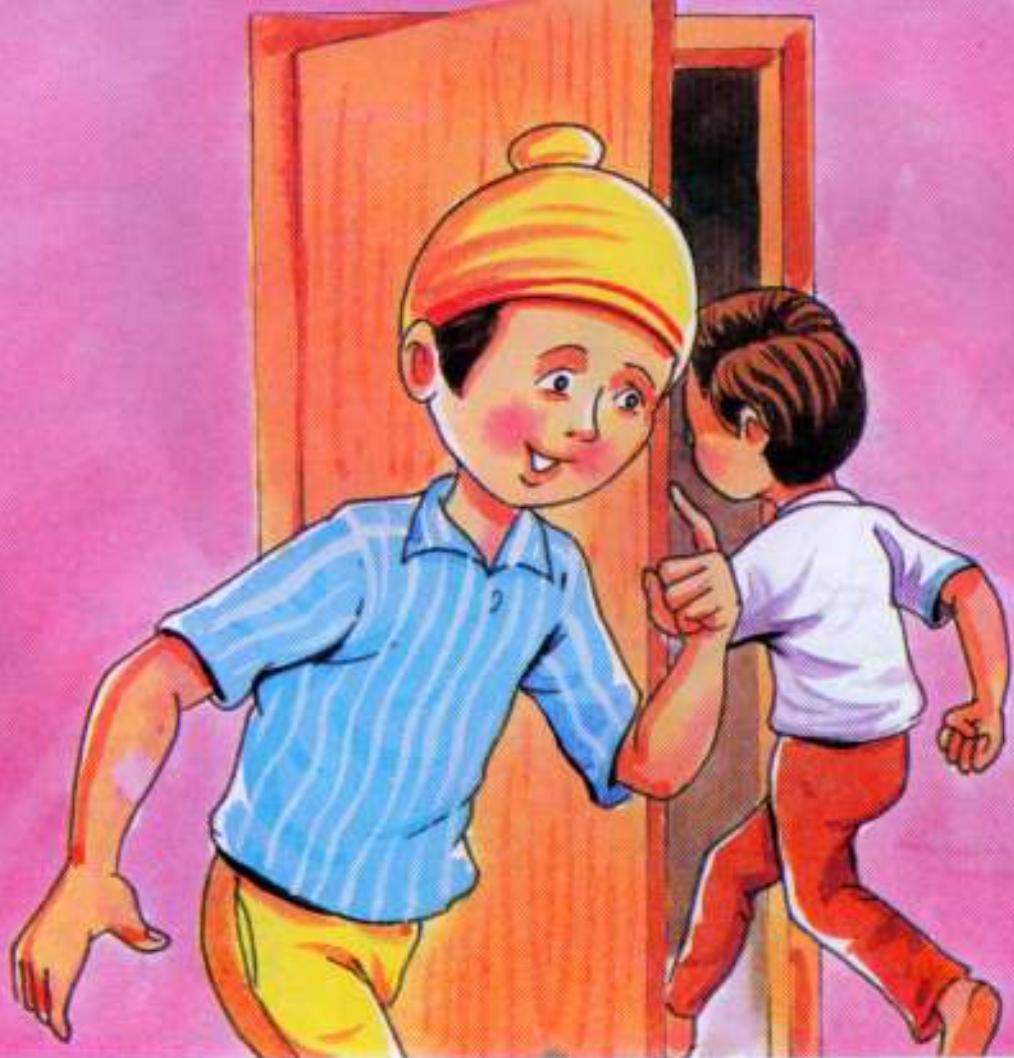
उस दिन जीत की बारी थी।



जीत सौ तक गिन कर सबको ढूँढ़ने निकला।



मोहित दरवाजे के पीछे ही मिल गया।



6

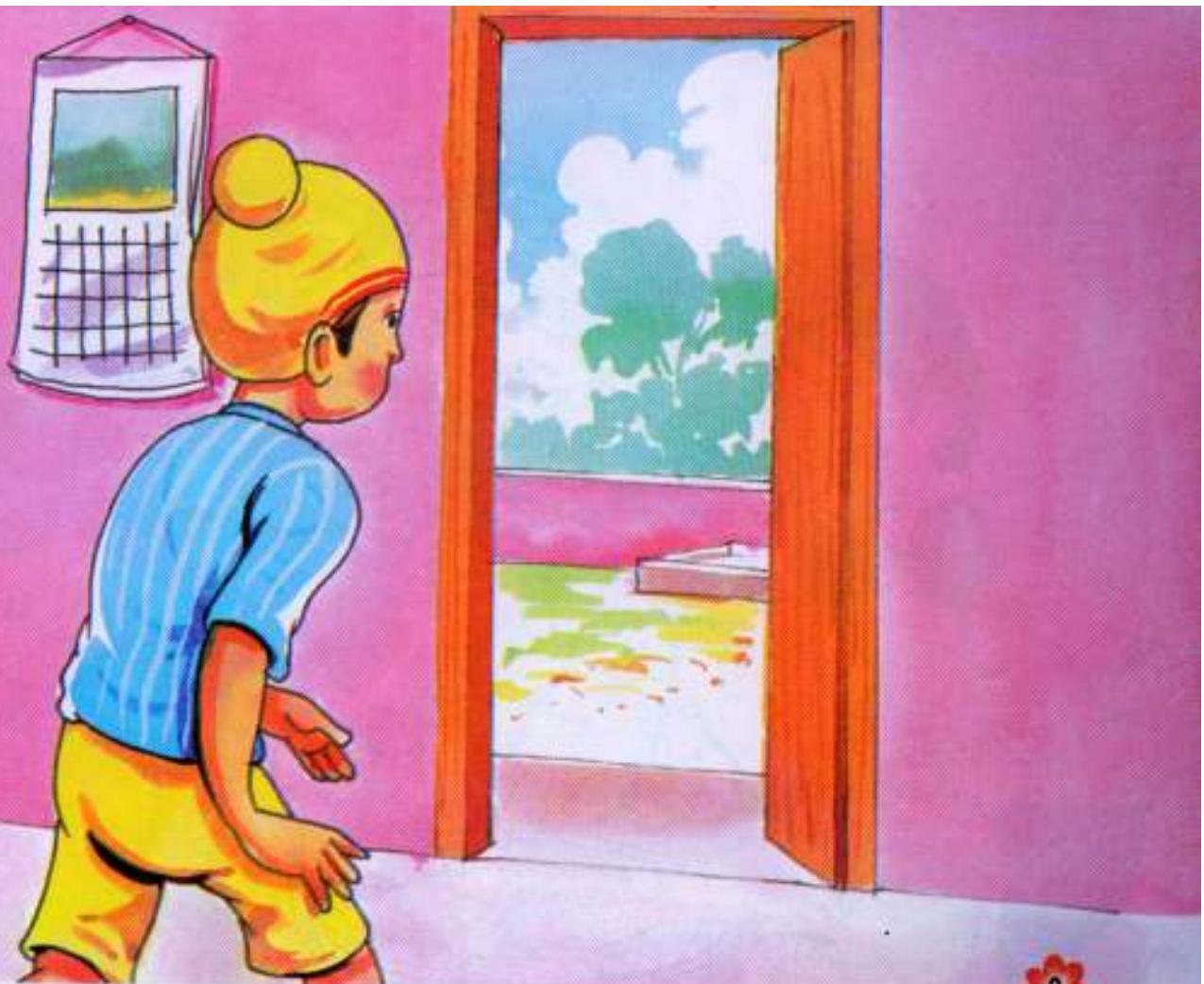
जीत बाकी सबको कमरे में ढूँढ़ने लगा।



बबली अलमारी के पीछे मिल गई।



उमा पलंग के नीचे मिल गई।



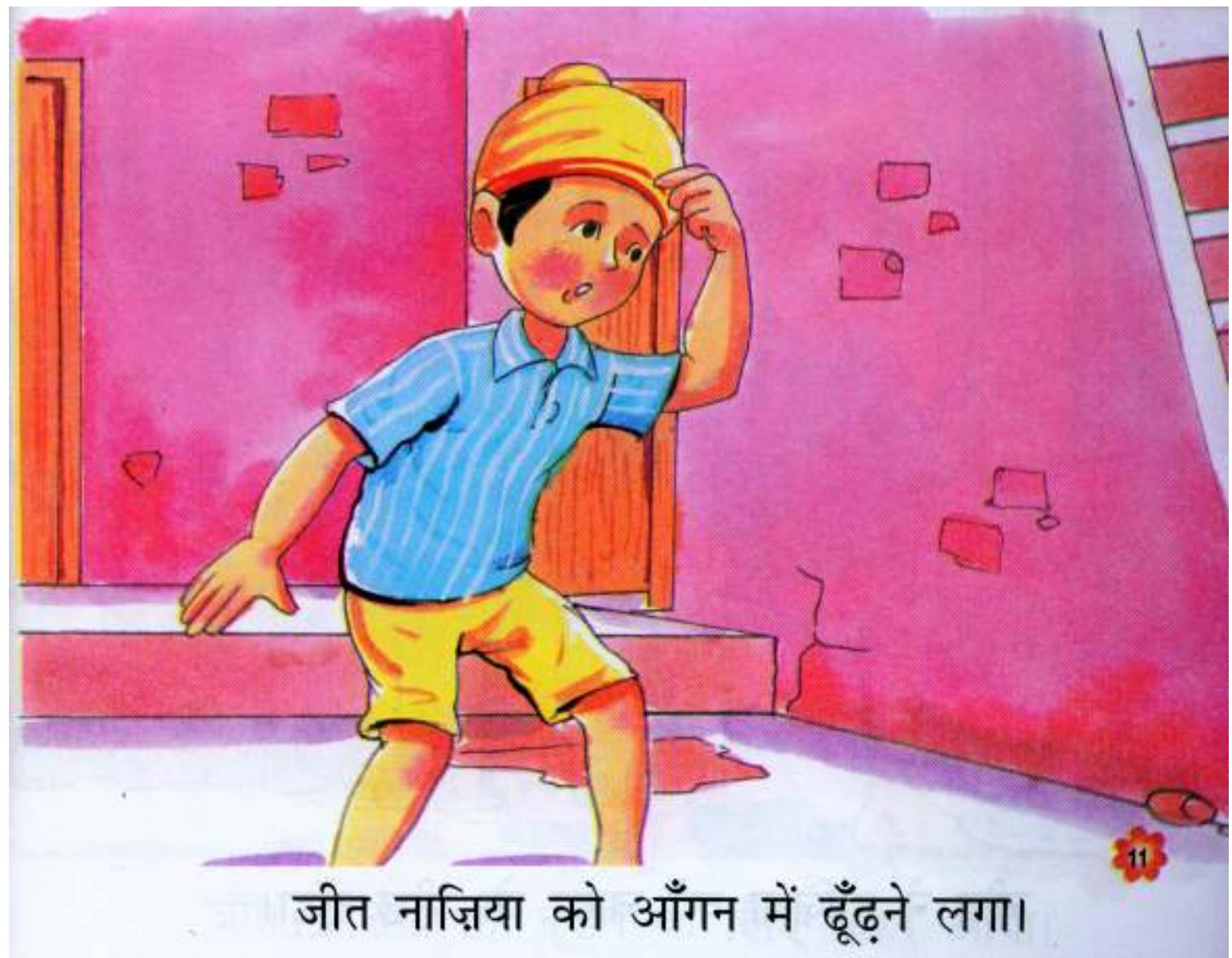
9

उसके बाद जीत आँगन की तरफ़ गया।



10

मीता दादी के पीछे मिल गई।



जीत नाज़िया को आँगन में ढूँढ़ने लगा।

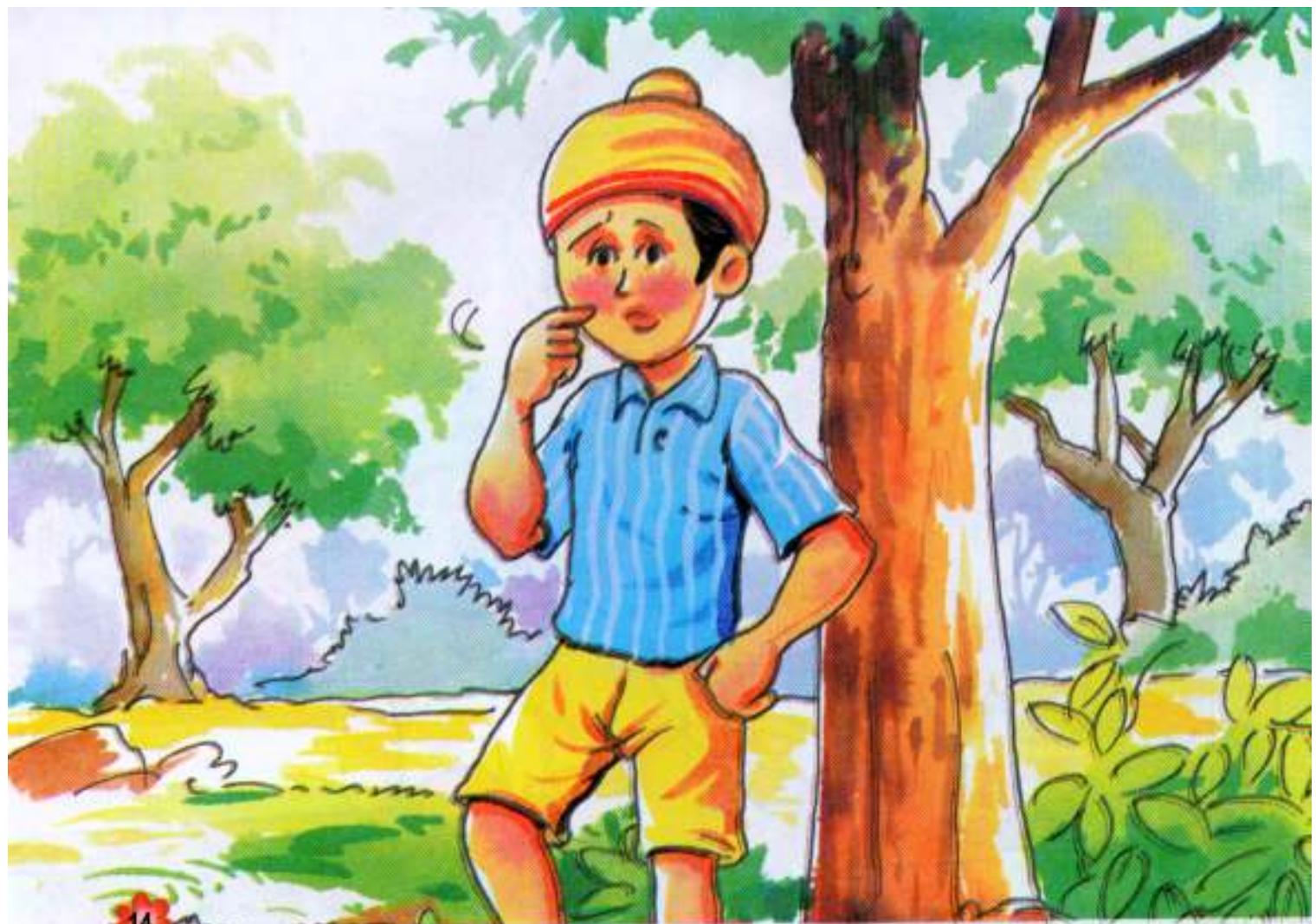


जीत ने नाजिया को चादर के पीछे ढूँढ़ा।



13

जीत नाजिया को ढूँढ़ने के लिए बाहर आया।



14

वह पेड़ के नीचे खड़ा होकर सोचने लगा।



नाजिया ने ऊपर से कूदकर उसे धप्पा कर दिया।



16

जीत दुबारा गिनती गिनने चल दिया।



2062



राष्ट्रीय शिक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बर्खा-सेट)

978-81-7450-863-8

₹.10.00



पढ़ना है समझना

मज़ा आ गया



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्माण मर्मिति

कवचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वाम, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, सता पाण्डे, स्वाति चर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

संवाद-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कनक शशि

सज्जा तथा आवरण - निधि बाध्वा

दी.टी.पी., ऑफिसर - अवना गुप्ता, मानसी सिन्हा, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामय, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीय मंड़ब्जन, गांधीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रार्थनिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शार्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मनुजला माधुर, अध्यक्ष, शैक्षिक उन्नतीयपर्याय सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा मर्मिति

श्री अशोक नारायणी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्षा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वकेन्द्र, रोडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनग सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.ए.ए. एवं एफ.एस., मूर्वा; सुश्री नृत्यज्ञ हसन, निदेशक, नैशनल चुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री गोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एप, पैरा पर शुद्धि

प्रकाशन विभान में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अशोक नारायणी, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज ग्रिटिंग प्रेस, दी-३४, इंडस्ट्रियल परिय, राष्ट्र-ए, मधुपुरा 281004 द्वारा शुद्धित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-864-5

बरखा' ग्रन्थिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोलर्स्ट्री की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छाटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रबुर भात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हारे क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

स्वाधिकार शुद्धि

प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को लापक तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रिस्टिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पूँँ प्रयोग प्रदर्शित होना उसका संप्रहरण अथवा प्रसारण बहिर्भूत है।

इन जी.ई.आर.टी. के प्रकाशन किया गए कार्यालय

- स.प्री.इ.अर.टी. कैम्प, श्री अशोक नारायणी नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फैले रोड, बैंसी प्रसारालय, बैंसीकोट, कालाकरी III स्टेट, बंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवीनन द्वारा भवन, दाकघर नवीनन, भारतवास 380 014 फोन : 079-27541446
- श्री.उच्चारी, कैपा. निकट, चक्रवर्ती चार स्ट्रीट अंगूठी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25510454
- श्री.उच्चारी, चौमोलील, मानोगांव, तुम्हारी 781 021 फोन : 0361-26348669

प्रकाशन महायोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री गवाकुमार
सुख प्रसादक : श्रीराम उपला

मूल्य उपलन अधिकारी : शिव कुमार
मूल्य लापार अधिकारी : गीता गांगुली

मज़ा आ गया



चिड़िया



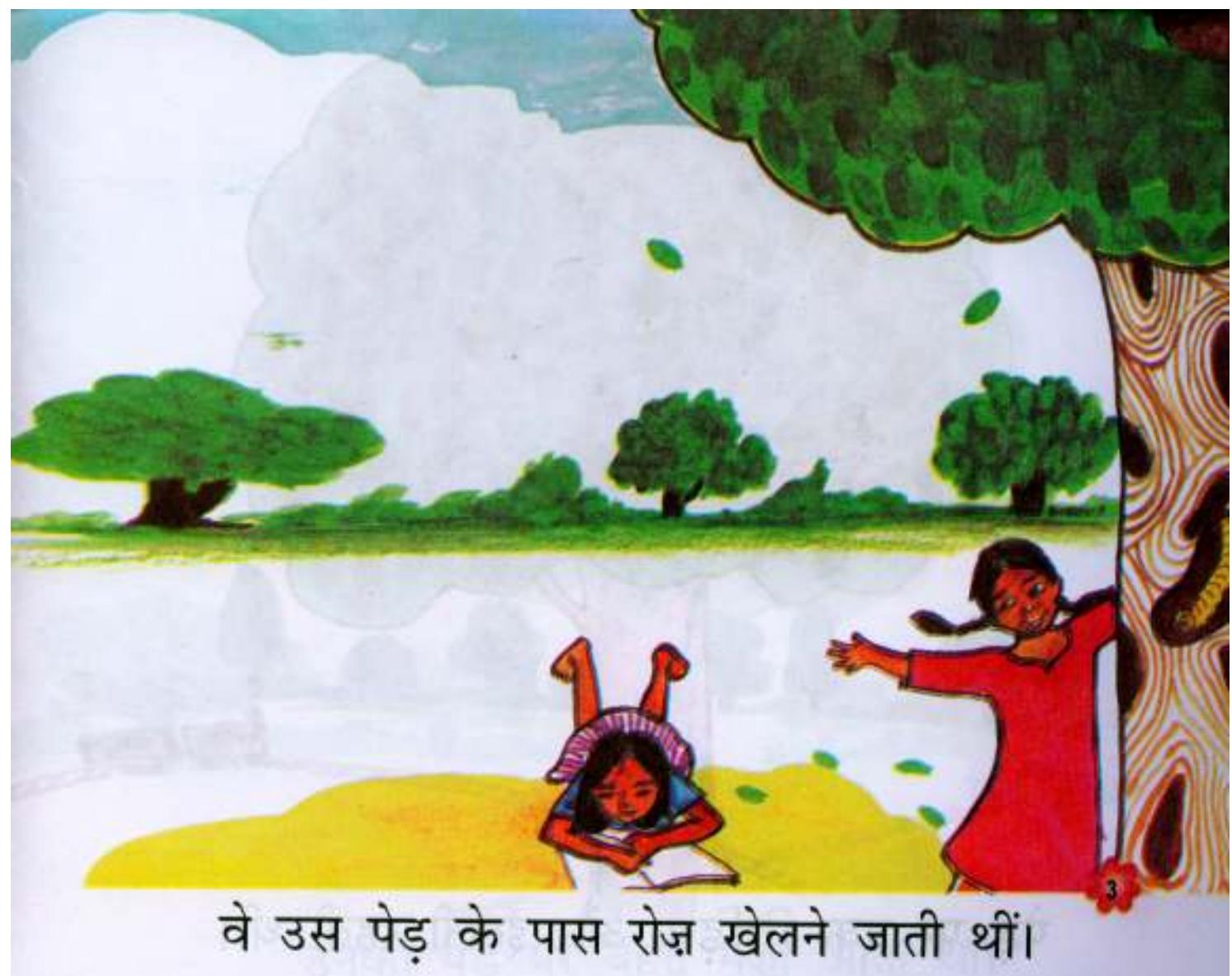
इल्ली



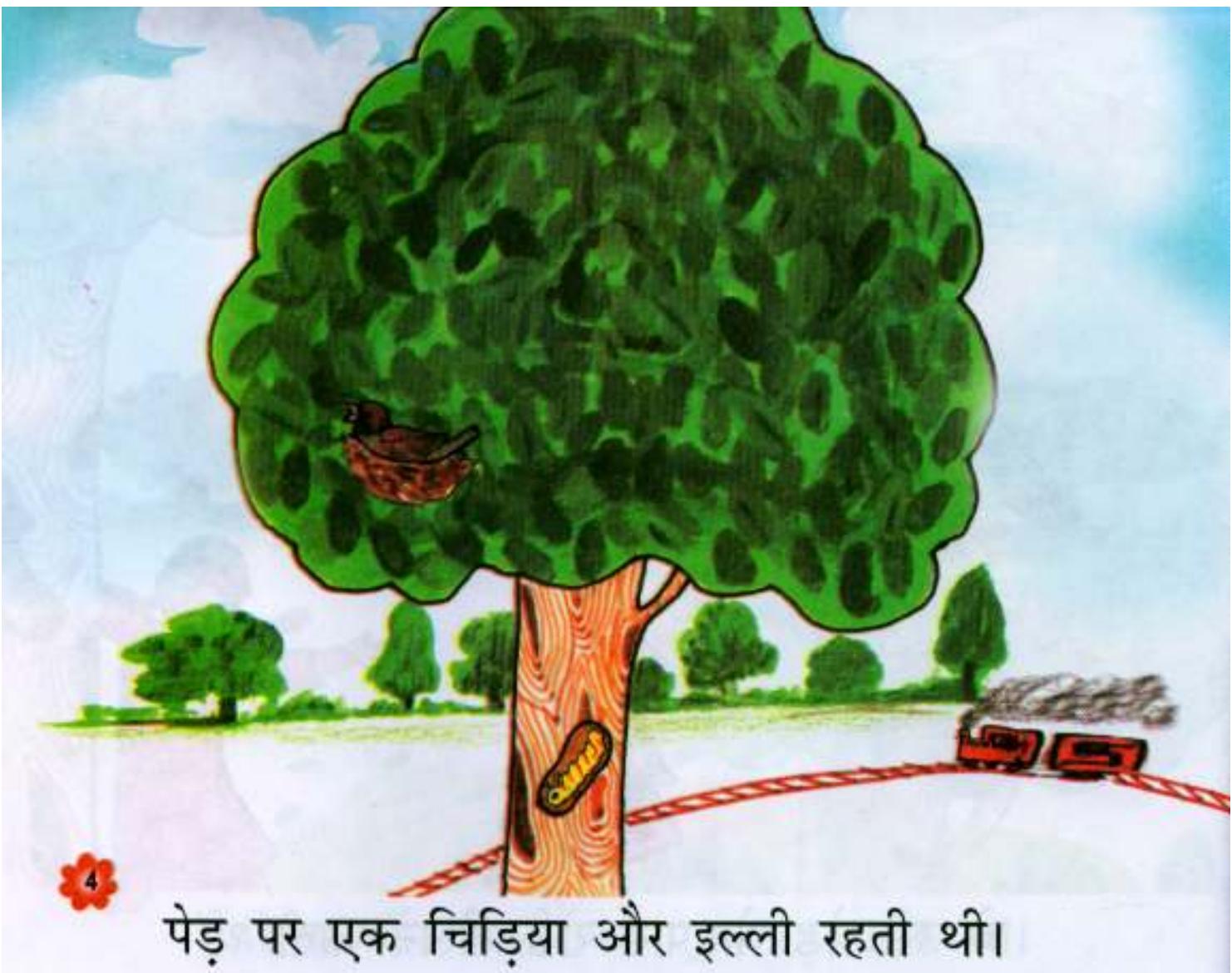
पेड़



तोसिया और मिली को एक पेड़ पसंद था।



वे उस पेड़ के पास रोज़ खेलने जाती थीं।



4

पेड़ पर एक चिड़िया और इल्ली रहती थी।



उनको पेड़ पर बहुत मज़ा आता था।



एक दिन ज़ोर से हवा चली।

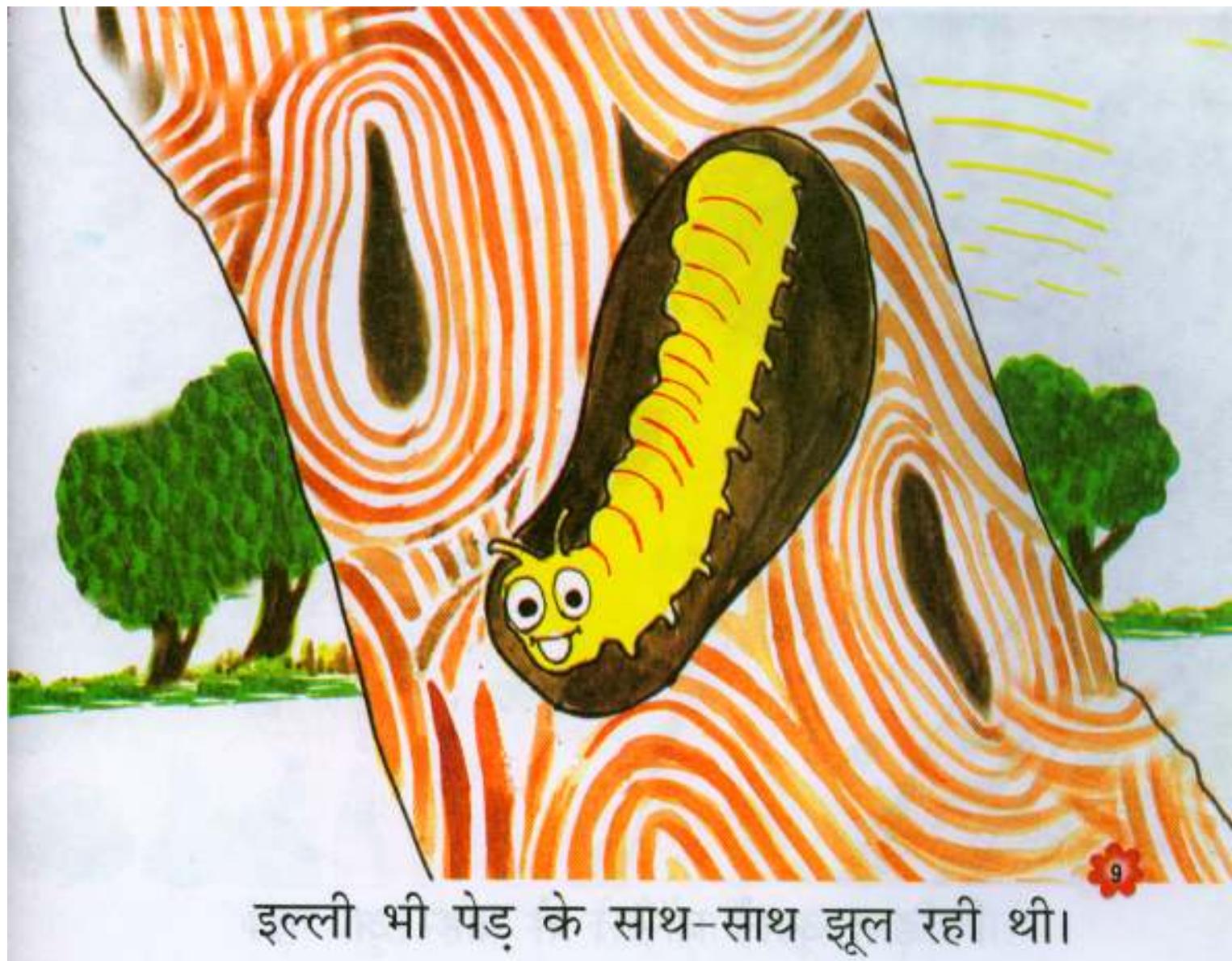


पेड़ कभी दाएँ कभी बाएँ झूलने लगा।



8

इल्ली और चिड़िया का घर भी झूलने लगा।



इल्ली भी पेड़ के साथ-साथ झूल रही थी।



चिड़िया अपने घोंसले से बाहर आ गई।



पेड़ बहुत ज़ोर से दाएँ-बाएँ झूल रहा था।



12

इल्ली को मज़ा आ रहा था।



चिड़िया पेड़ के चारों तरफ उड़ रही थी।



14

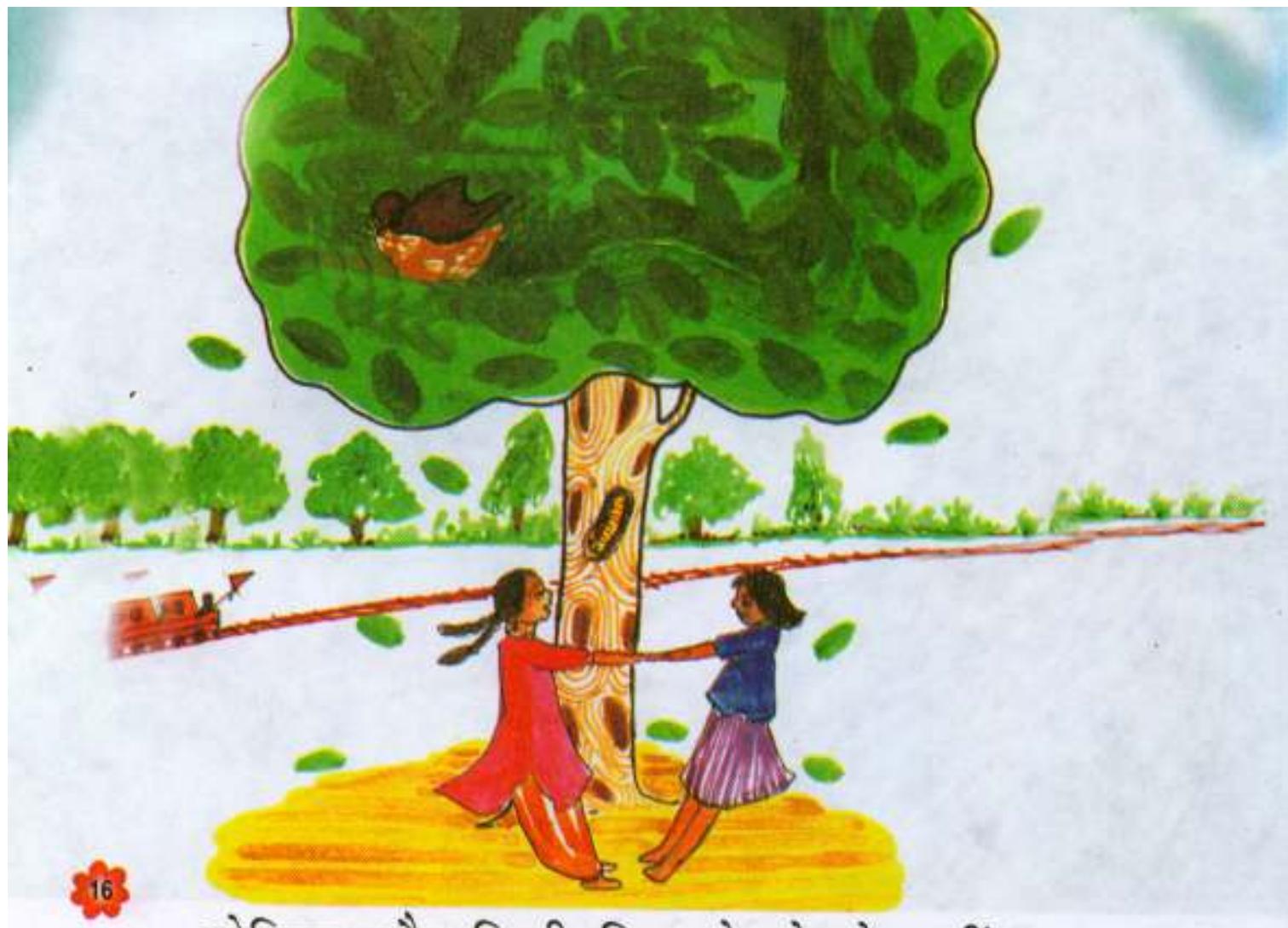
थोड़ी देर में हवा रुक गई।

स्थौली



15

चिड़िया को घोंसले में जाकर राहत मिली।



16

तोसिया और मिली फिर से खेलने लगीं।



2063



रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरचा-सी2)

978-81-7450-864-5

मिली का शुब्बारा



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 गौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कवचन मेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वाम, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति चर्मा, खारिका चक्रवर्ण,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-सम्बन्धक - ललिता गुप्ता

चित्रांकन → कनक शशि

मन्जु तथा आवरण - निधि जाधवा

बी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, मानसी शिंहा, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निरेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर, वसुपा कावय, वसुका निरेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण को संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के, कै. विशानु, विभागाध्यक्ष, प्रार्थनिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रमेश शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला मासुर, अभ्यन्तर, रोडिंग इंवेलीपर्सेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय सभीक्षा समिति

श्री अरांग बानपेंटी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपती, महाराष्ट्र गोपी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अभ्यन्तर विभाग, ज़ामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. जबननम मिहा, सी.ई.ओ., अई.एल. एवं एफ.एस., मुख्य; सुशी नुकहत हसन, निरेशक, वेशनल युक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री सेहित धनकर, निरेशक, दिग्गज, अयगुरा।

80 श्री.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी गोपी, नई दिल्ली 110016 द्वारा ब्राउनिट तथा पंकज चिंहिंग डेम, डी-28, इंडिस्ट्रियल परिया, बाईट-ए, न्यूज़ 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-865-2

बरखा काग्जिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सालों और पांच काथावस्तुओं में विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजगर की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ ऐनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यबद्धी के हरेक सेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार मुद्रिता

प्रकाशक की पूर्वभूमिति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन या डिजिटलिंग, डिजिटली, फोटोप्रिलिंग, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग जैसे द्वारा उसका संप्रहण अथवा प्रसारण नहीं हो।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- * एन.सी.ई.आर.टी. कैपा, श्री अधिकारी गोपी, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- * 108, 100 फोट गोप, हैली एक्स्टेंशन, बैंगलोरे 560 085 फोन : 080-26725740
- * नवीन ट्रांस गोप, वारकर नवीन, नवीमद्देश 380 014 फोन : 079-27541446
- * श्री.एस.पू.से. कैपा, विकास गोप, बैंगलोरे 560 085 फोन : 080-25530454
- * श्री.एस.पू.से. कौमीम, मालवीय, नुवाबादी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन महाद्वय

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. एस.कुमार

मुख्य संपादक : श्रीता उपाल

मुख्य डायाप्ट अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गंगुली

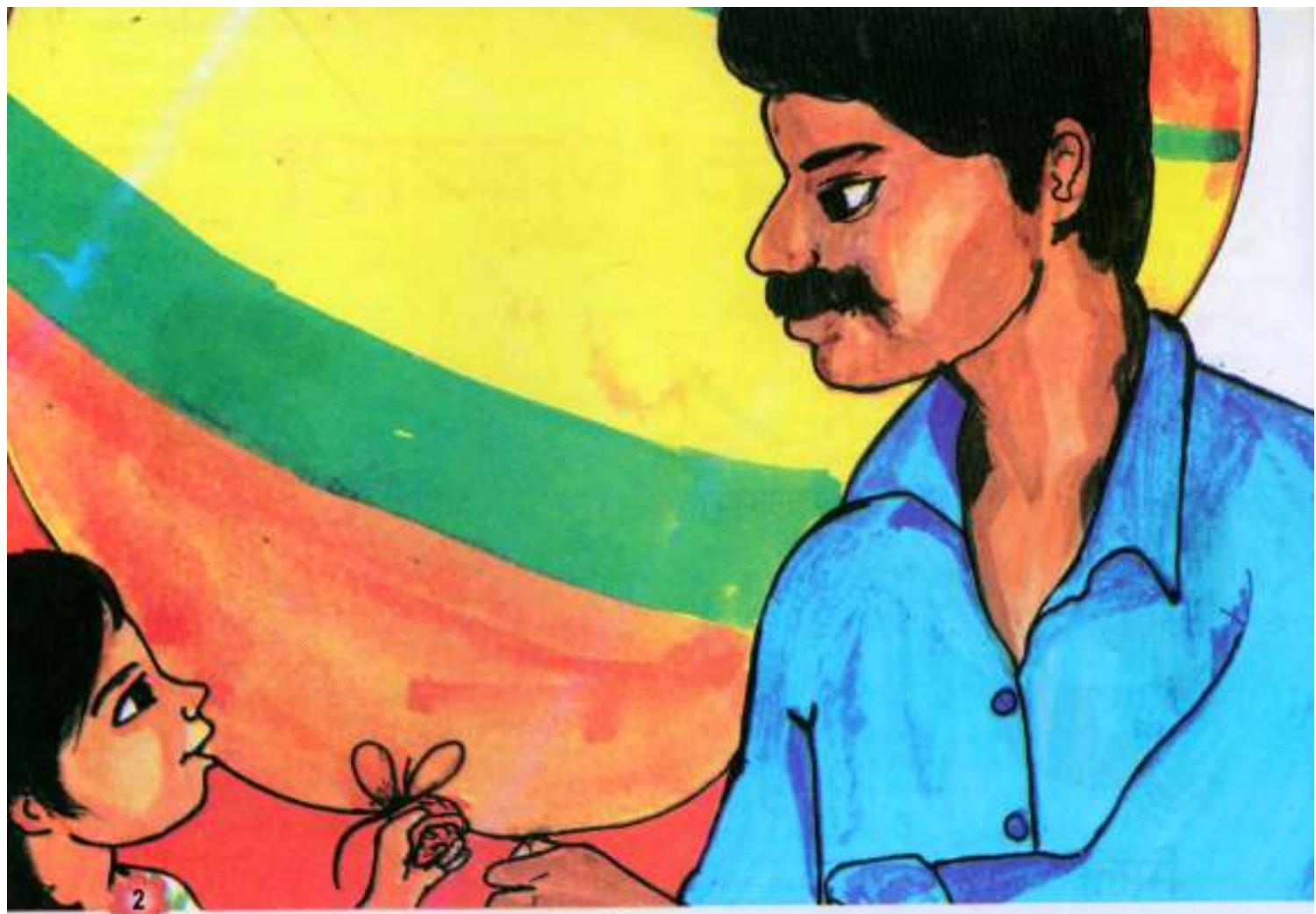
मिली का गुब्बारा



मिली



पापा



एक दिन मिली के पापा गुब्बारा लाए।



मिली ने गुब्बारा हवा में उछाल दिया।



गुब्बारे की हवा धीरे-धीरे निकलने लगी।



5

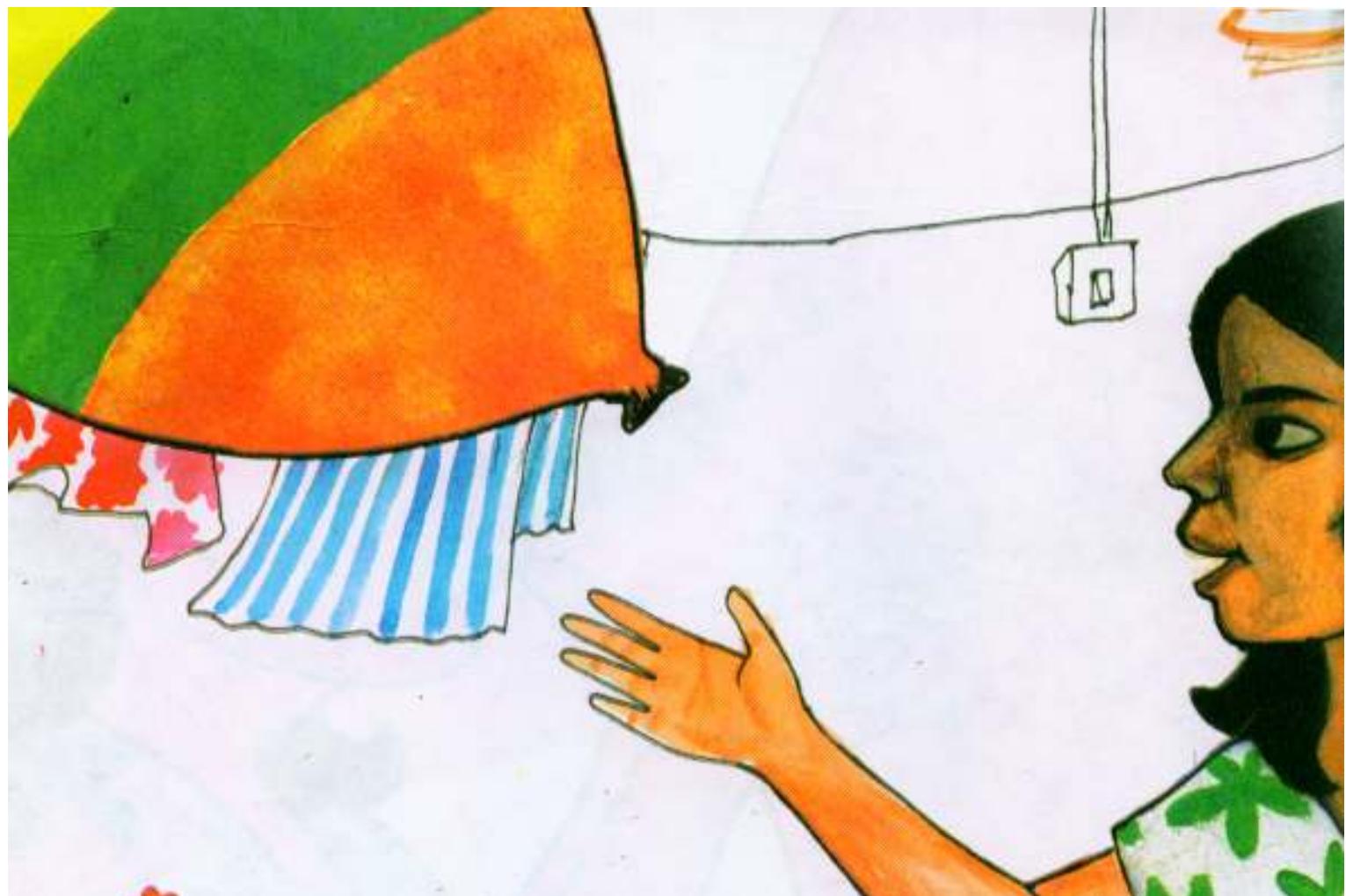
पिचकता हुआ गुब्बारा छत से टकराया।



गुब्बारा पिचक कर नीचे गिर गया।



मिली ने गुब्बारा फिर से फुलाया।



8

मिली ने गुब्बारा फिर से हवा में उछाल दिया।

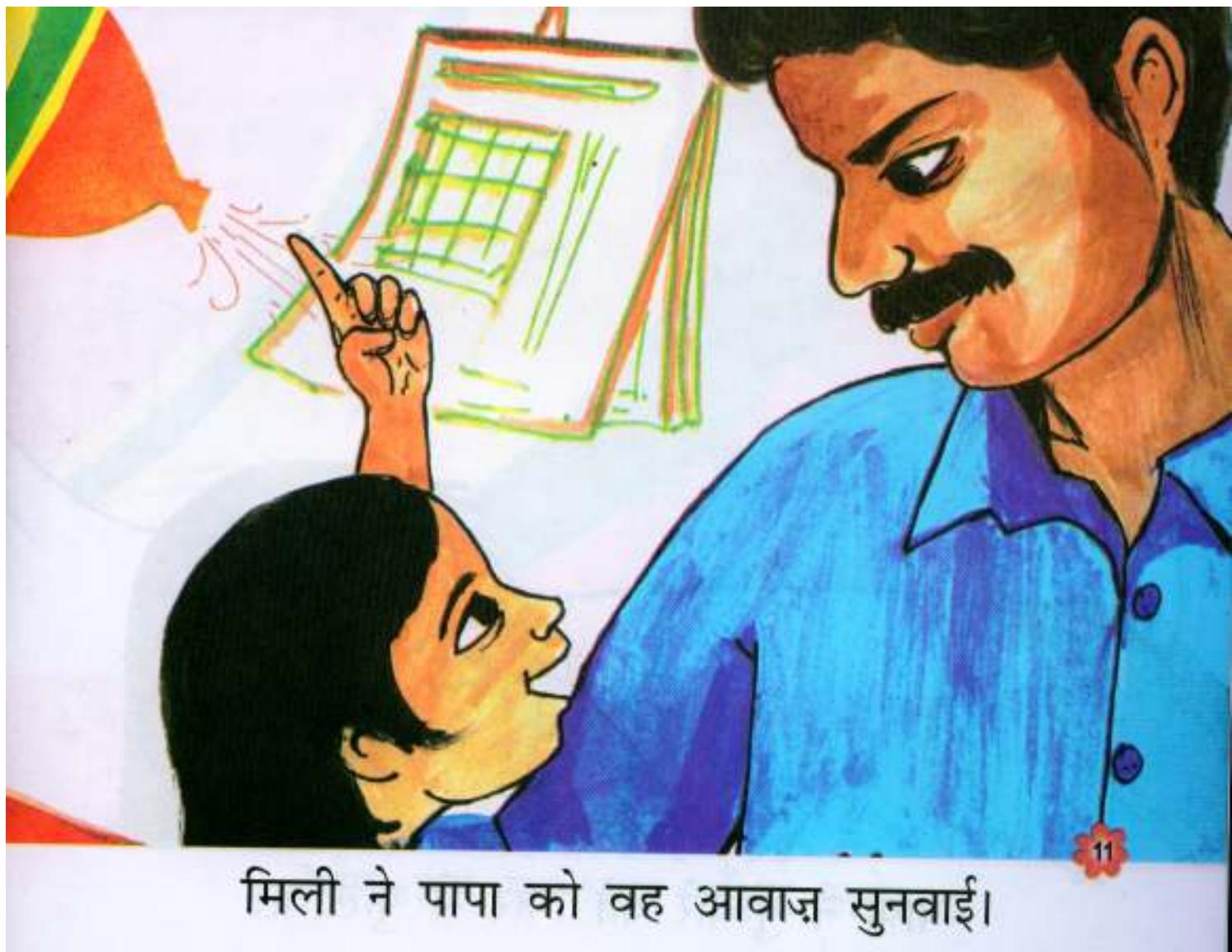


गुब्बारा सूँ-सूँ-सूँ की आवाज़ करने लगा।



10

मिली गुब्बारे की आवाज़ से बहुत खुश हुई।



मिली ने पापा को वह आवाज़ सुनवाई।

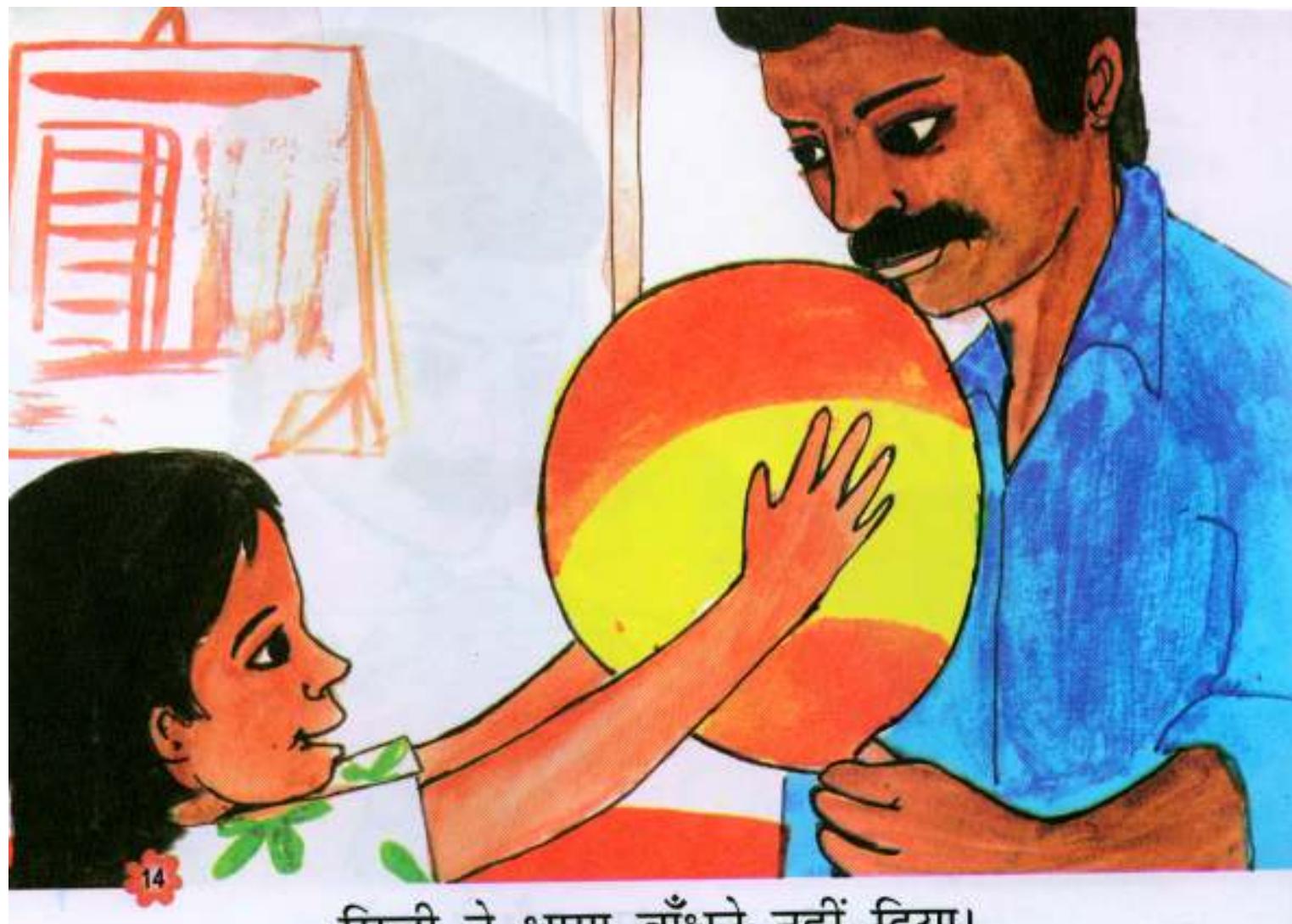


12

पापा ने गुब्बारे को फिर से फुलाया।



पापा उस पर धागा बाँधने लगे।

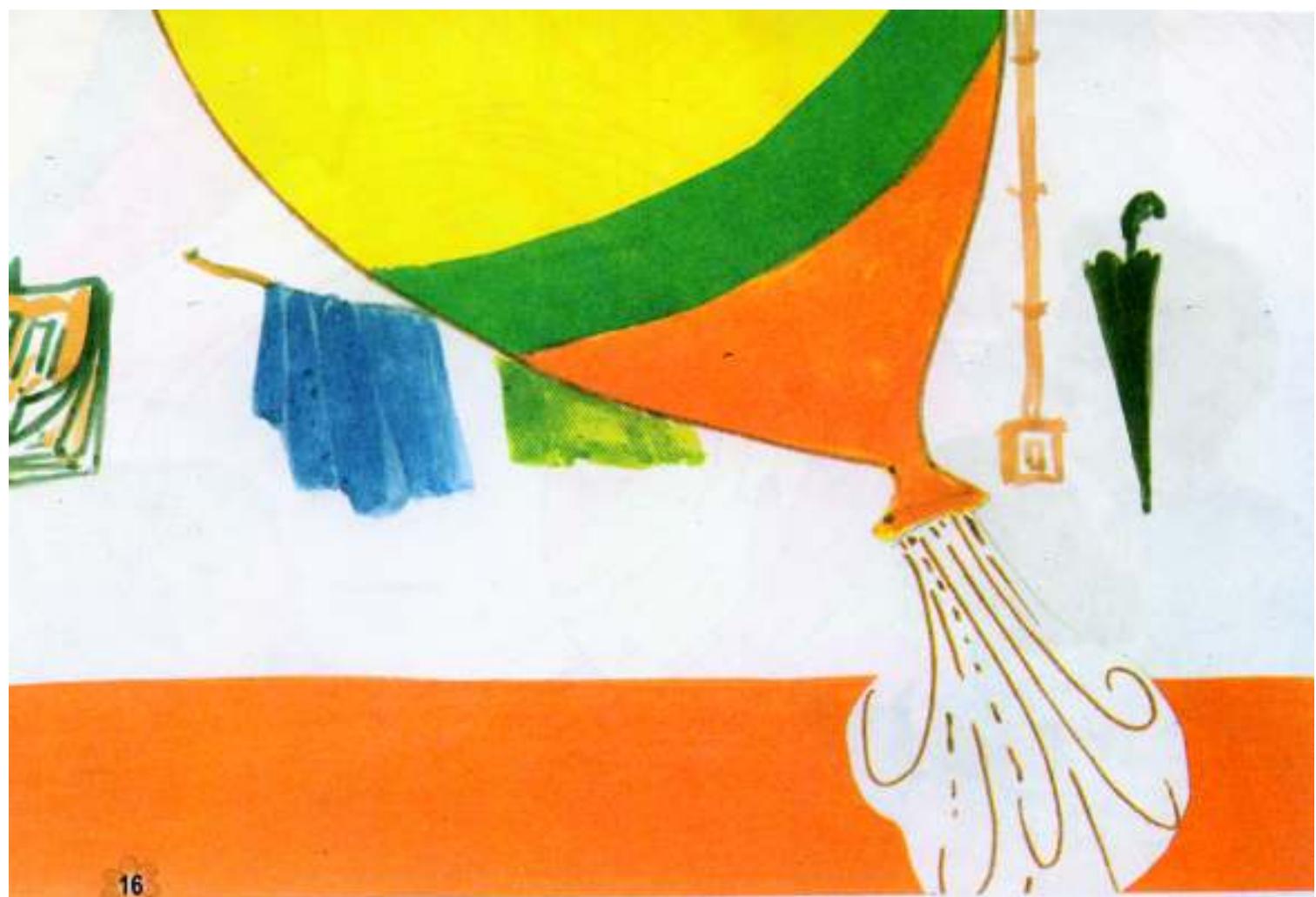


मिली ने धागा बाँधने नहीं दिया।



15

धागा बाँधने से आवाज़ नहीं निकलती।

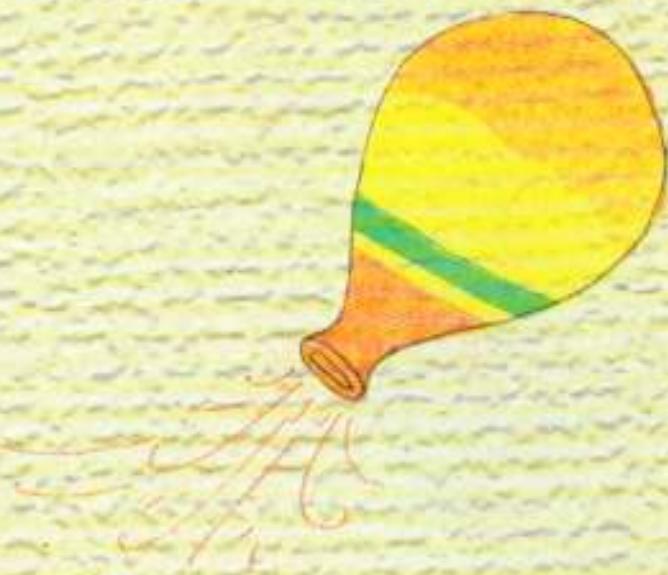


16

मिली को पिचकते हुए गुब्बारे की आवाज़ पसंद है।



सतर 1
सतर 2
सतर 3
सतर 4



2064



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

₹.10.00

ISBN 978-81-7450-898-0 (बर्ड-मैट)
978-81-7450-865-2



पढ़ना है समझना

मीठे-मीठे गुलगुले



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति बर्मा, सारिका विश्वास, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लहिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि चाधवा

संज्ञा तथा आवरण - निधि चाधवा

डी.टी.पी. ऑफिसर - अर्जन गुप्ता, अशुल गुप्ता, सीमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर चमुपा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर कं. क. विश्वास, विभागाध्यक्ष, प्रार्थिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला मधुर, आध्यात्मि, गीडिंग डेवलपमेंट सेल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री जगेश वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कूलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफेसर फरोदा, अन्त्युला, सान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अमूर्तिनंद, रीढ़र, हिंदू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शशनम रिन्हा, सीई.ओ., आई.एन. पर्स एफ.एम., मुम्बई; सुमी नुकहन इसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घण्टकर, निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

30 जी.एम.एस. पेस पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में शाखा, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अंतरिक्ष वार्ता, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल परिया, न्हाईट-ए, मधुर 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-866-9

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के लिए देना है। बरखा की कहानियाँ चार सत्रों और पाँच कथाओं समूहों में विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमरा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक शेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

संक्षिप्तकार सूचिता

प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को उपयोग तथा इन्वेन्टरीको, प्रशीली, प्रोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से गुनः प्रयोग प्रश्नित द्वारा उपयोग अथवा इमारण नीतित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के बहुरोप

- एन.सी.ई.आर.टी. कैप्स, बी.सरिंद मार्ल, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 और 98 रोड, हैंडे प्रसारण, सोर्टेको, काशीवाली III सेत्र, बंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवीनीक इट एवं प्रकाशन विभाग, नवीनीक, अमरपुर 180 014 फोन : 079-27541446
- बी.इ.एस.पी.सी. कैप्स, निकट, लालकल बज रोड परिहासी, बोलकला 700 114 फोन : 033-25530454
- बी.इ.एस.पी.सी. कैप्स, नवीनीक, गुरुदासी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. गजेश्वर

मुख्य संपादक

मुख्य डिपार्टमेंट अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य संपादक अधिकारी : गौतम शर्मा

ਮੀਠੇ-ਮੀਠੇ ਗੁਲਗੁਲੇ



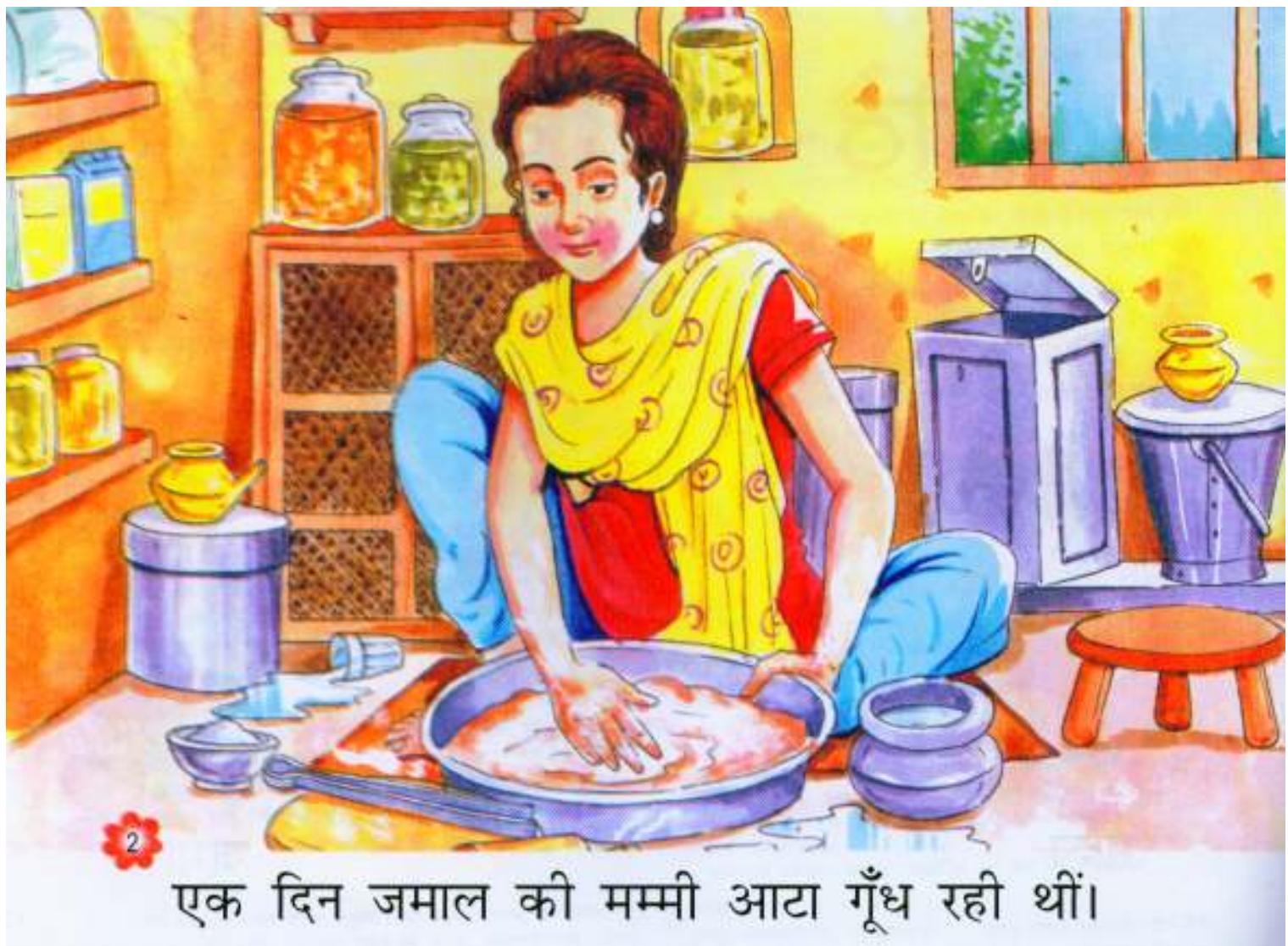
ਮਦਨ



ਮਸ਼ੀ



ਜਮਾਲ



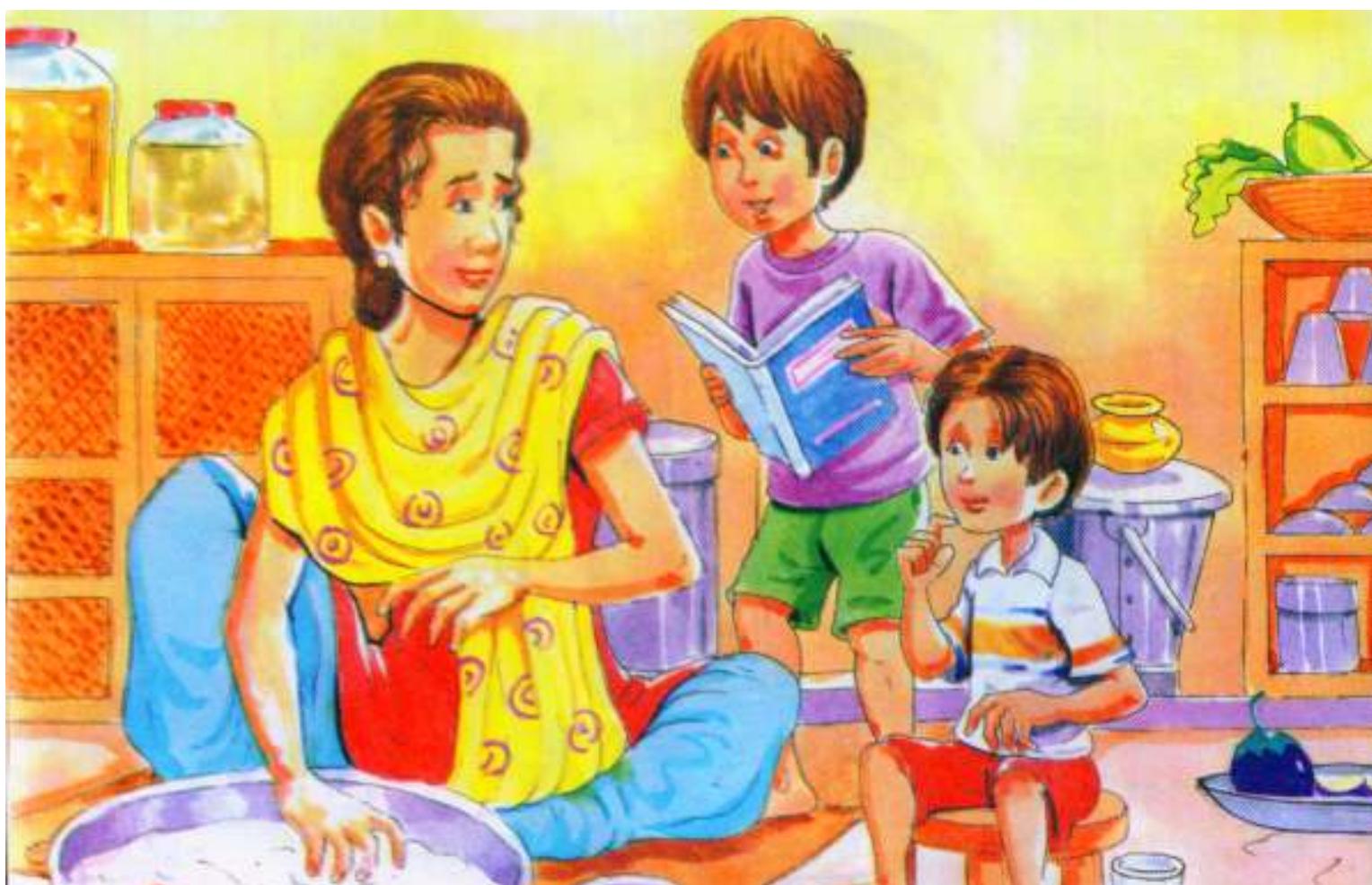
2

एक दिन जमाल की मम्मी आया गूँध रही थीं।



3

जमाल पास ही बैठा हुआ था।

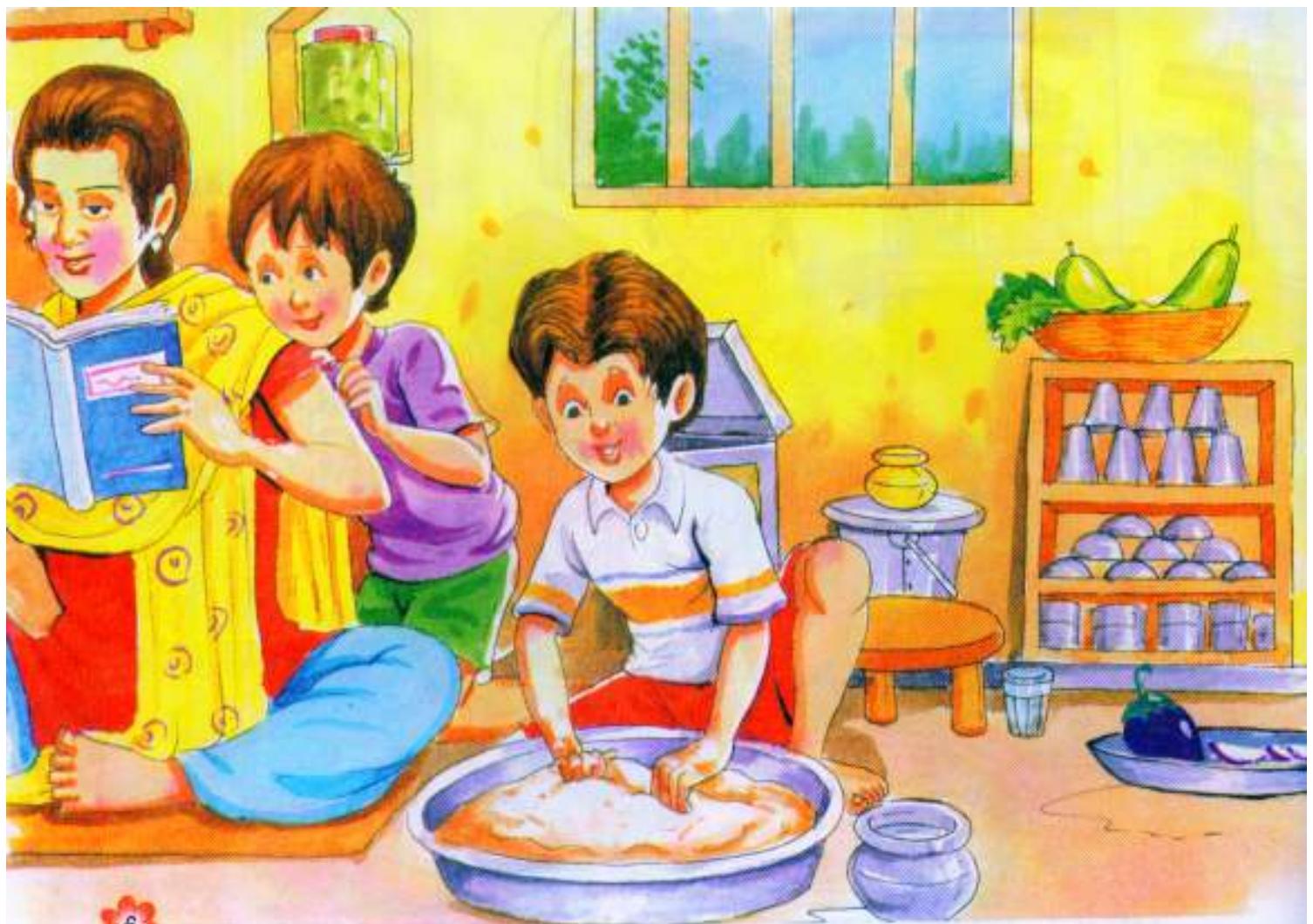


4

पड़ोस का मदन मम्मी से एक सवाल पूछने आया।



मम्मी मदन को सवाल समझाने लगीं।

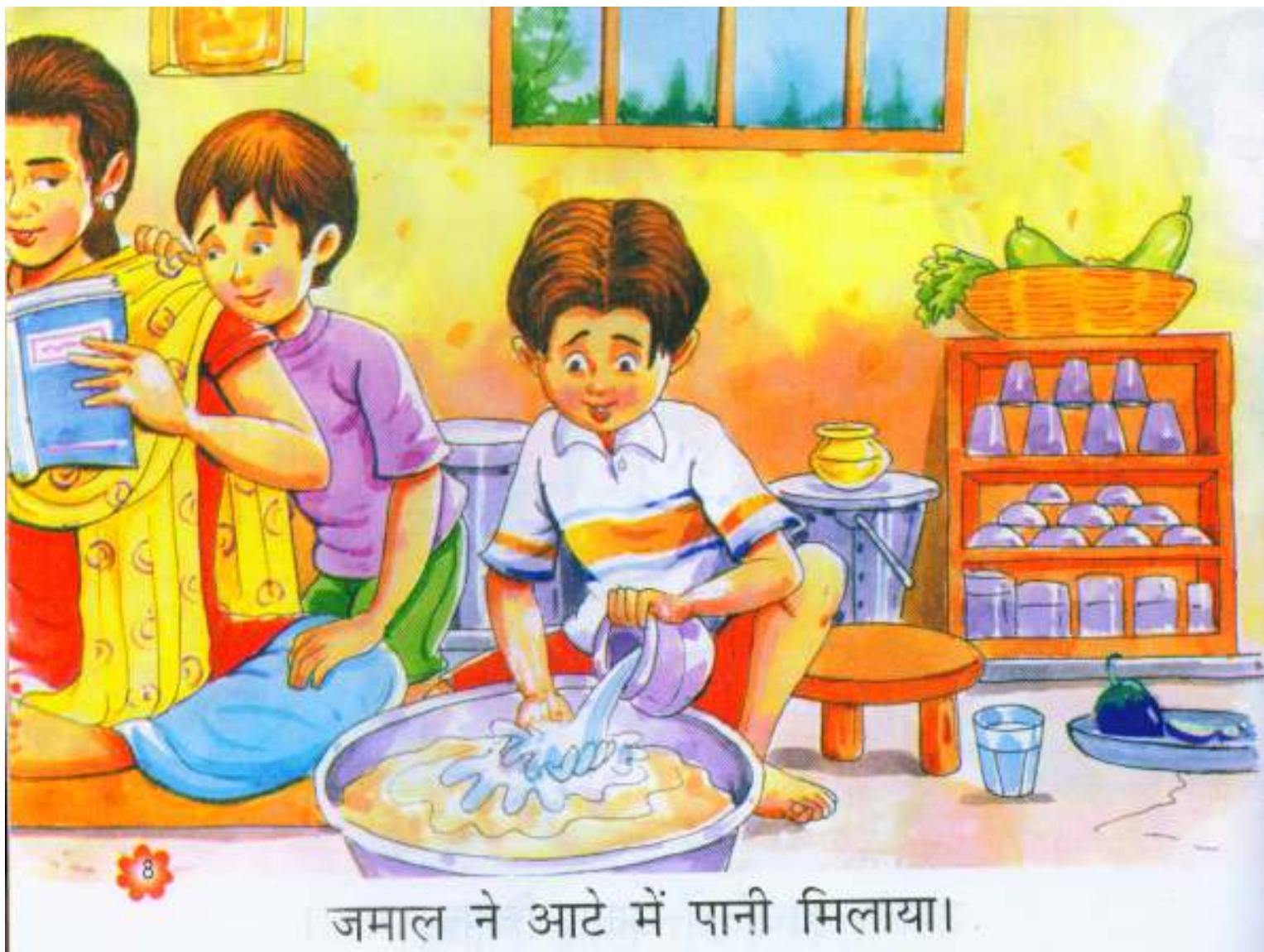


6

जमाल आटा गूँधने लगा।



उसके हाथों में आटा चिपक गया।



जमाल ने आटे में पानी मिलाया।

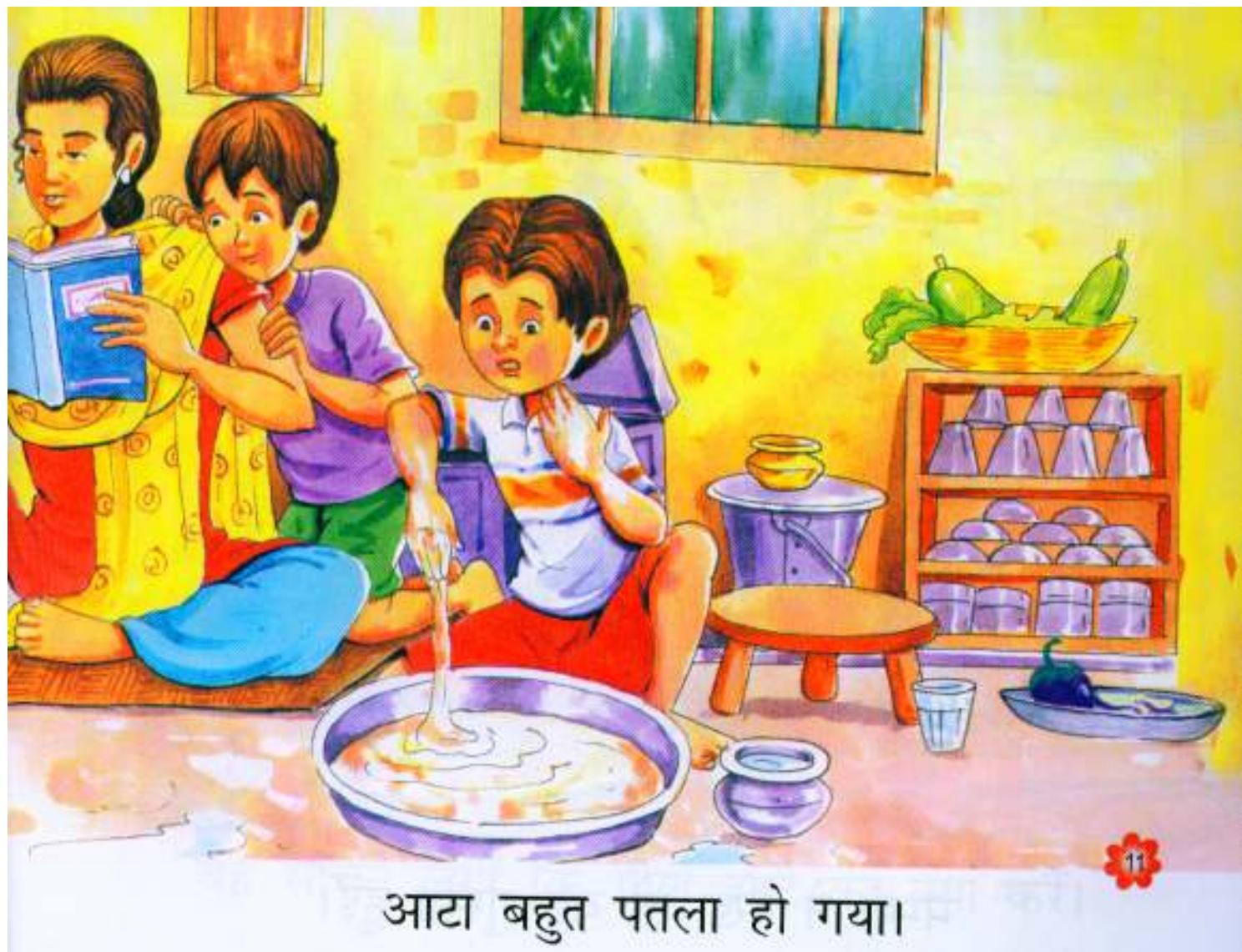


उसके हाथों में आटा और चिपक गया।

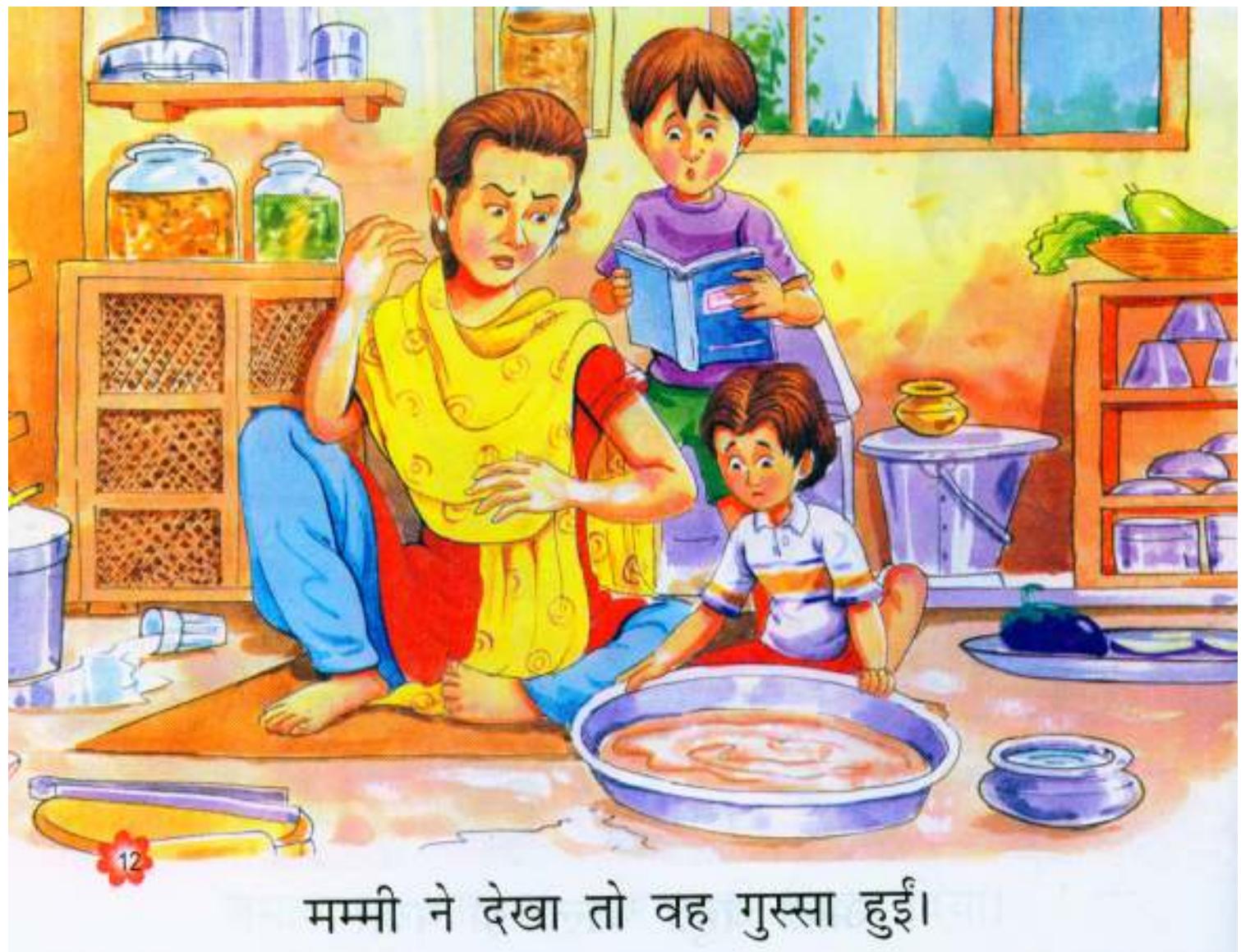


10

जमाल ने आटे में और पानी मिला दिया।

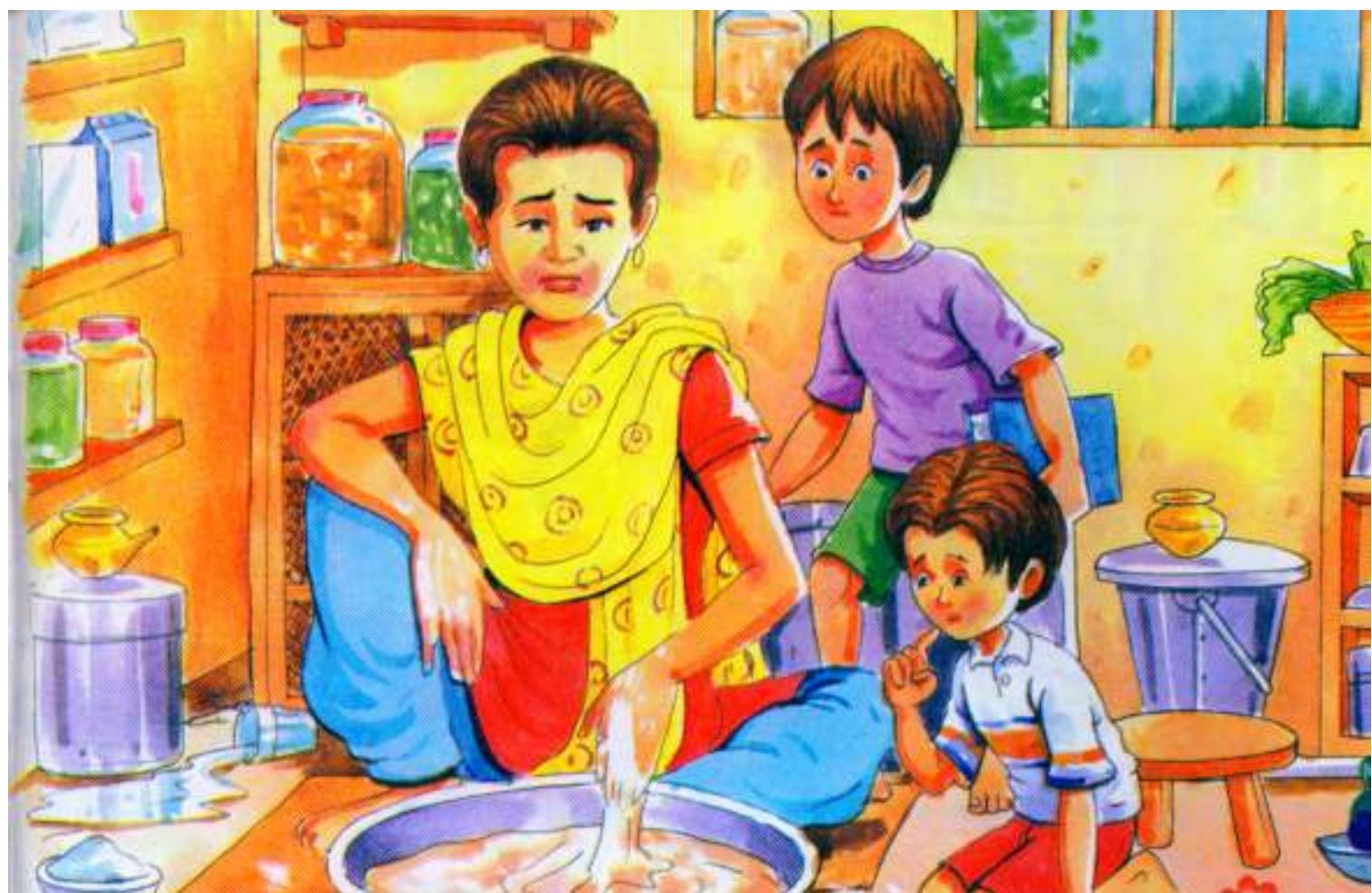


आटा बहुत पतला हो गया।

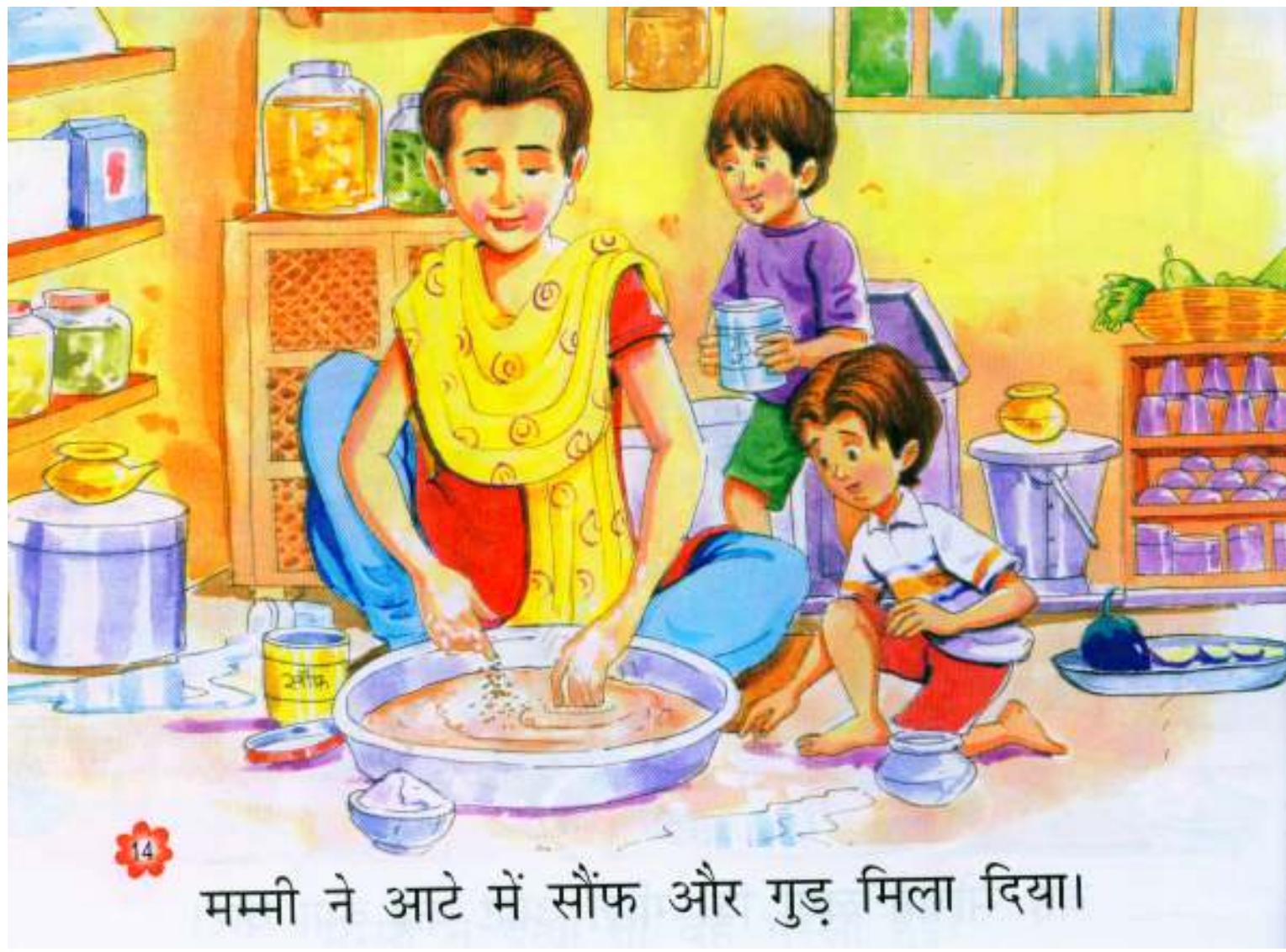


12

मम्मी ने देखा तो वह गुस्सा हुई।

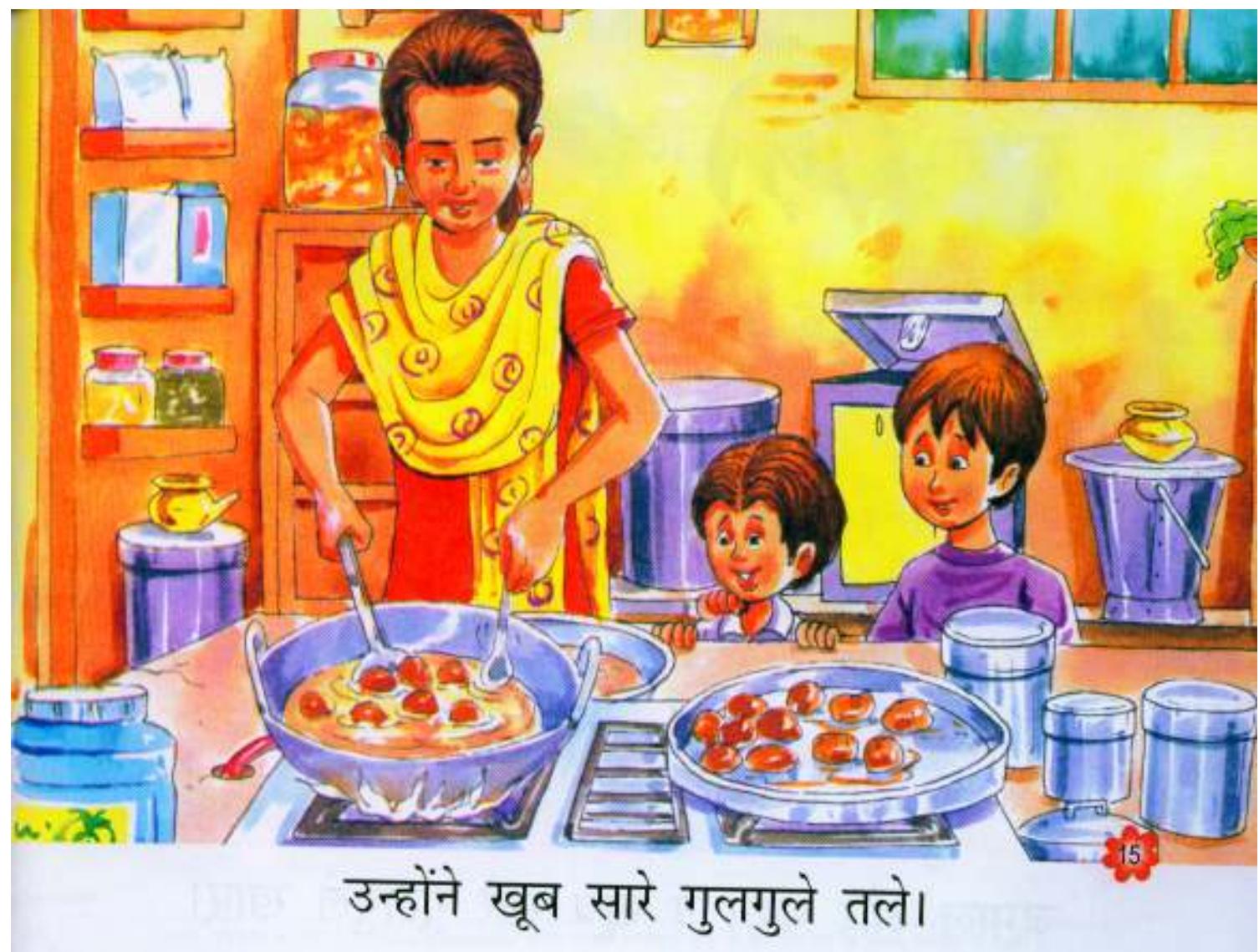


वह सोचने लगीं कि गीले आटे का क्या करें।



14

मम्मी ने आटे में सौंफ और गुड़ मिला दिया।



उन्होंने खूब सारे गुलगुले तले।



16

जमाल और मदन ने खूब सारे गुलगुले खाए।



2065



₹. 10.00

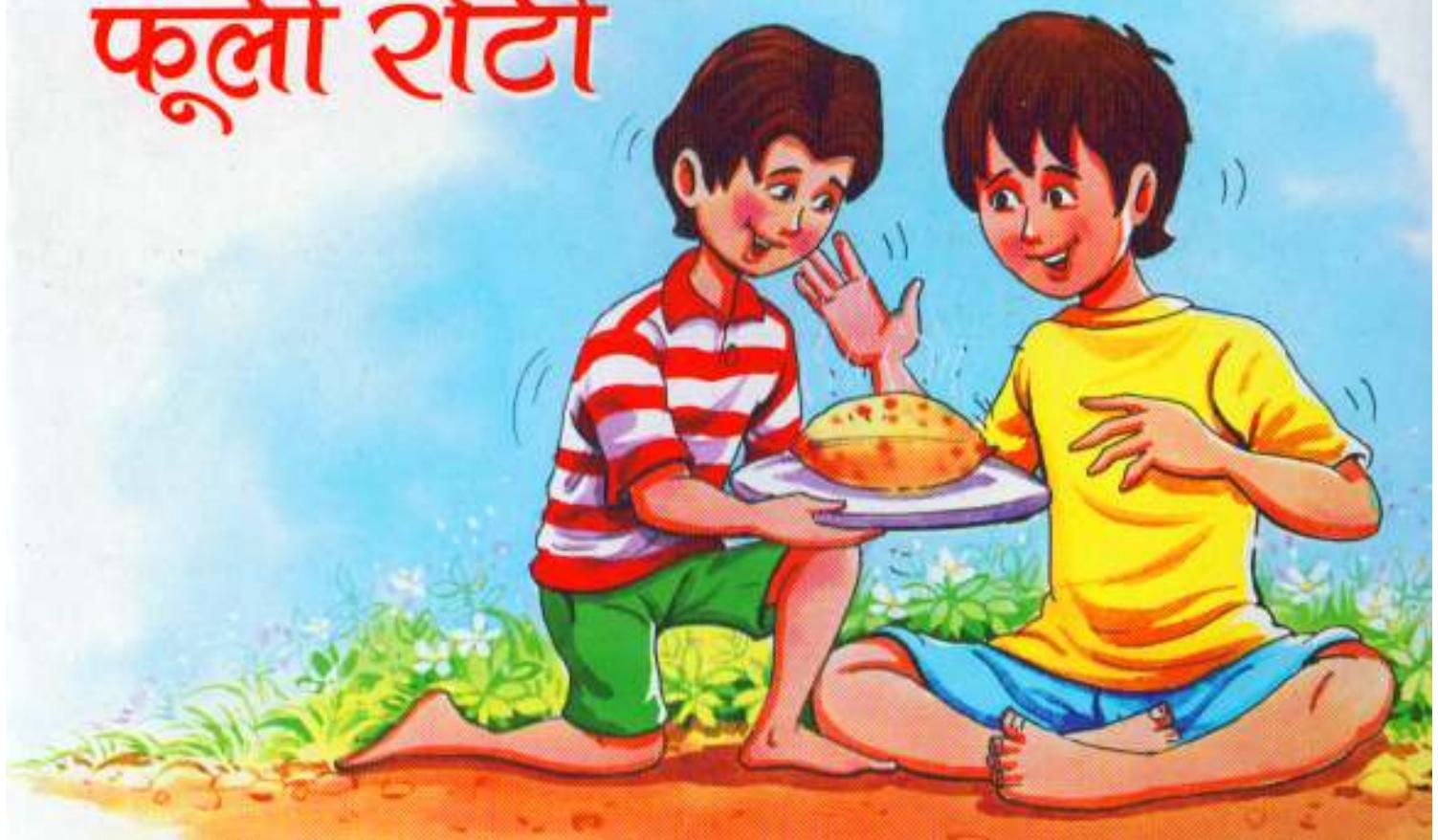
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-866-9



पढ़ना है समझना

फूली रोटी



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 धैय 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला नियोग समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वर्षाचार्य, सीमा कुमारी, सौनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

संवाद्य-समन्वयक – लिपिका गुप्ता

विभागिकन – निधि वाधवा

संज्ञा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी., ऑफिसर – अर्चना गुप्ता, बीलम बौधरी, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, कैन्डीय शैक्षिक प्रोत्योगिकी अनुसंधान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. खशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर यमजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मनुल माथूर, अध्यक्ष, रोडिंग इंकलेप्मेंट मैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महालक्ष्मा गांधी अताराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफेसर फरोदा, अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अशूरीनद, रोहर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनग मिनाहा, सी.ई.ओ., आई.ए.ए. एवं एक.एम., मुर्दः; सुशील नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित खनकर, निदेशक, दिग्ंगत, जयपुर।

80 जी.एस.एप. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग ने समिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी वर्षी, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज लिंगपत्र प्रेस, दी-28, इंडिपेंडेंस परिष, सड़क-ए, मध्या 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)

978-81-7450-867-6

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के भौतिक देना है। बरखा की कहानियाँ चार सत्रों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को गोलमर्यादी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी सेवक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सूचित

प्रकाशन की पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को ज्ञापन तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मरीनी, फोटोग्राफीलिंग, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से उन्नीस प्रयोग पद्धति द्वारा उपकरण संग्रहात् अथवा प्रस्तरण बर्तित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैप्स, श्री अधिकारी वर्षी, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 109 औट एंड, टेली इम्प्रेसरेट, होम्सेटरी, कलाकारी III स्टेज, बंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवरीन ट्रस्ट पर्स, इंडिया नवरीन, महाराष्ट्र 400 014 फोन : 079-27541446
- श्री.उम्पूर्णी, कैप्स, निकट: बनकल चौर स्ट्रीट पनिहाली, बोलगडा 560 114 फोन : 033-25530454
- श्री.इम्पूर्णी, बोलगडा, बालीनी, पुलाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन घूमोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार

मुख्य संयोजक : रामेश उपल

मुख्य कल्पन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य व्यापार अधिकारी : गीता पांडुली

फूली रोटी





2

एक दिन मम्मी रोटी बना रही थीं।



जमाल भी रोटी बनाना चाहता था।



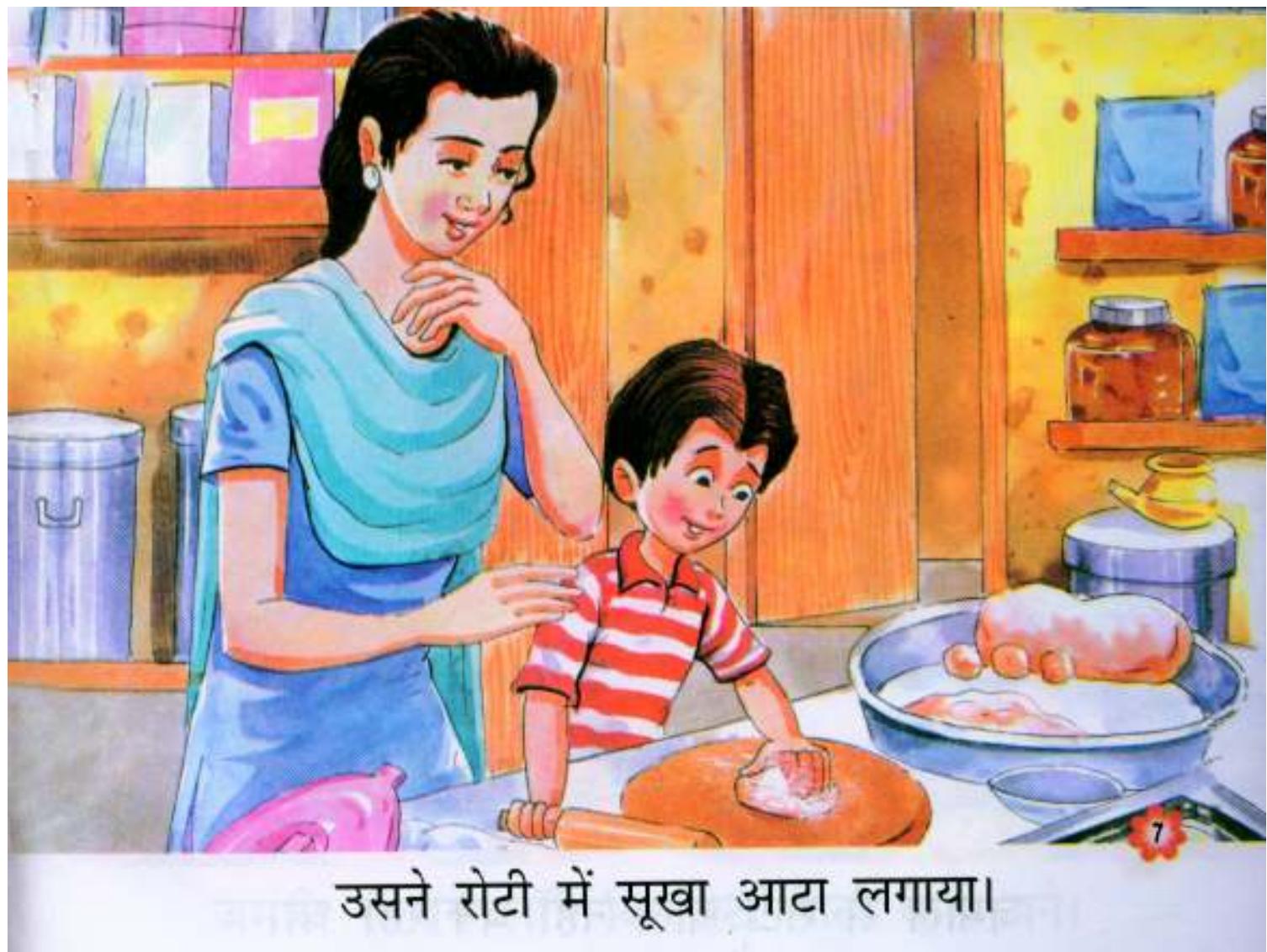
उसने मम्मी से आटा माँगा।



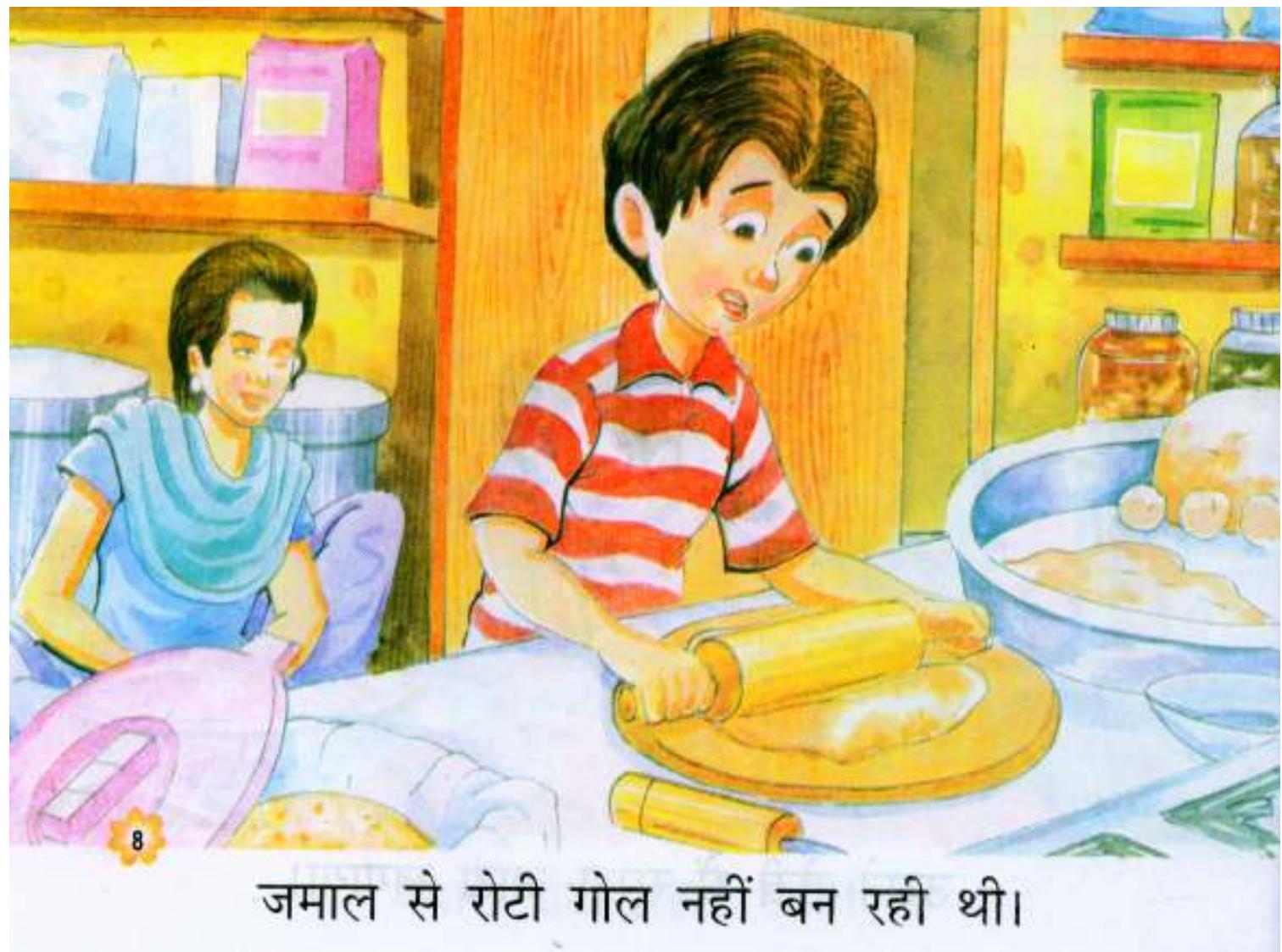
मम्मी ने उसे छोटी-सी लोई दे दी।



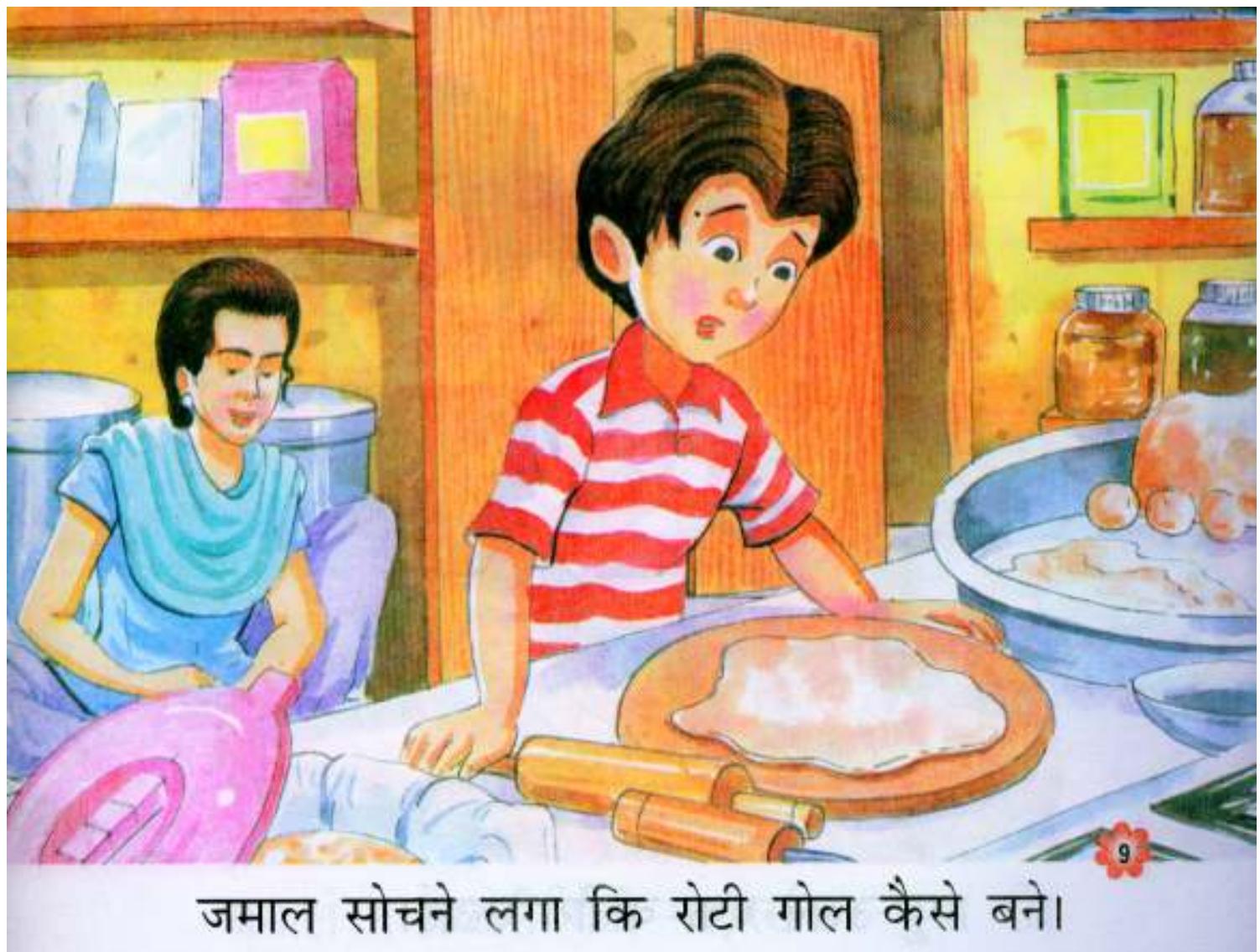
जमाल रोटी बेलने लगा।



उसने रोटी में सूखा आटा लगाया।



जमाल से रोटी गोल नहीं बन रही थी।

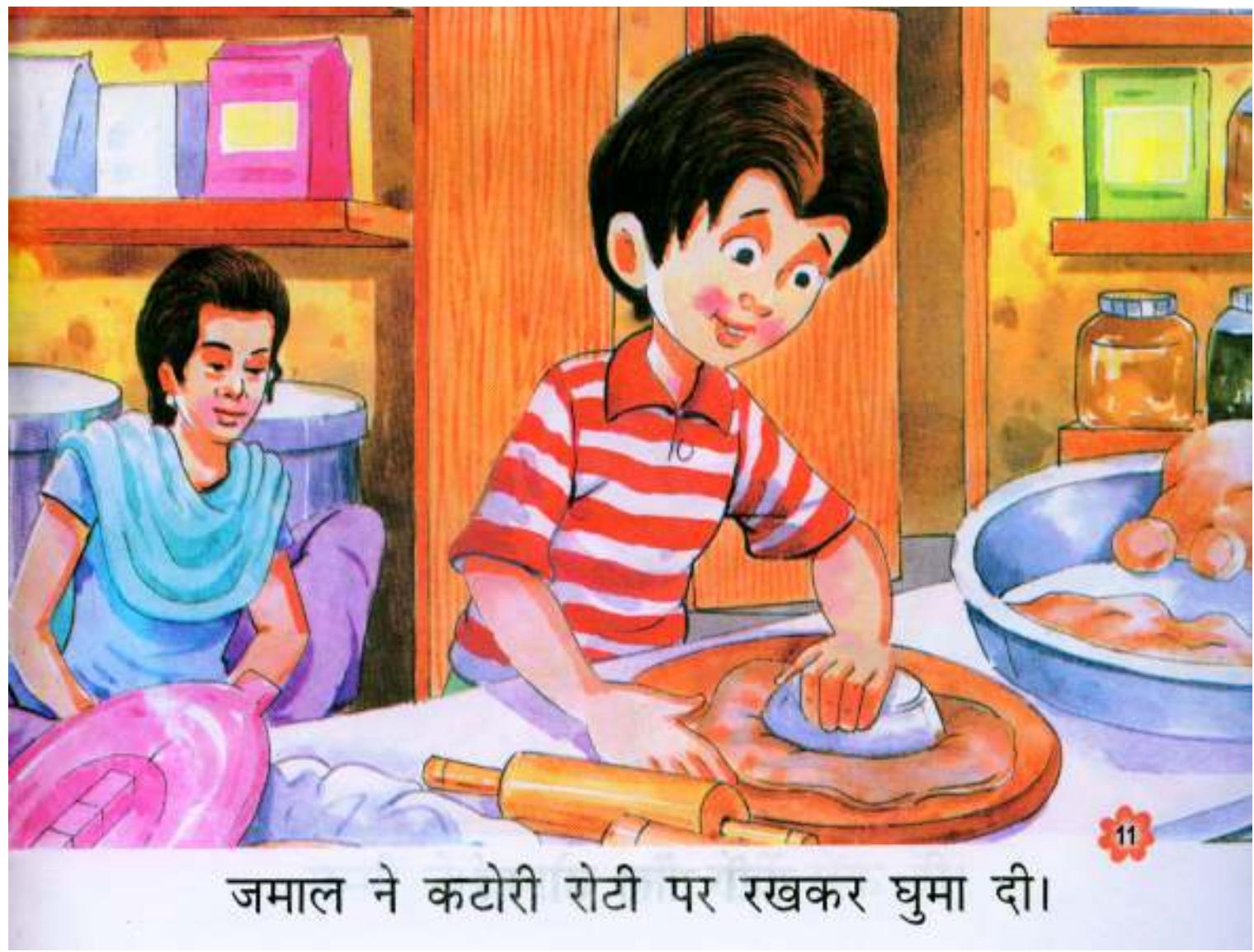


जमाल सोचने लगा कि रोटी गोल कैसे बने।



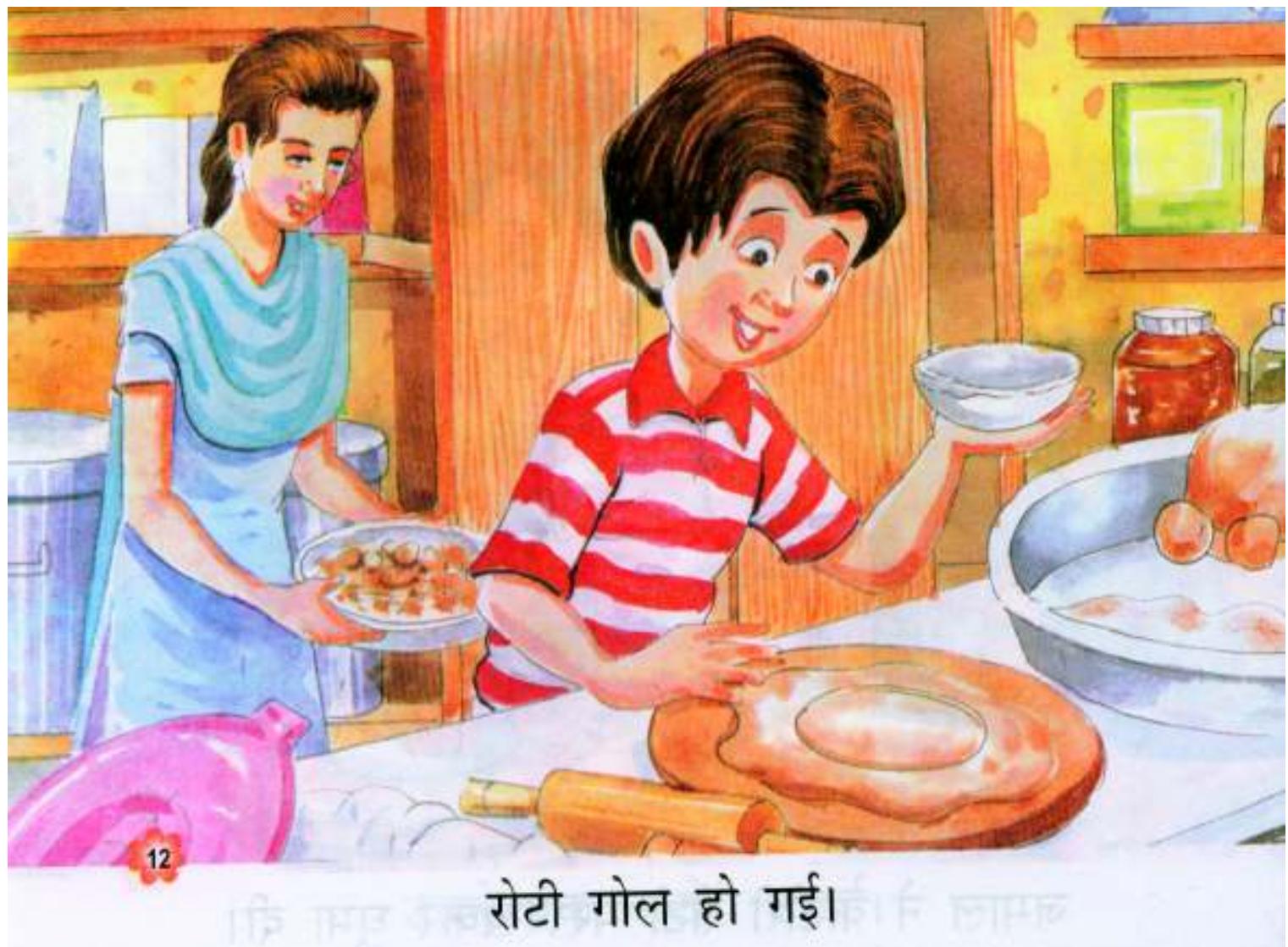
10

उसने एक कटोरी उठाई।



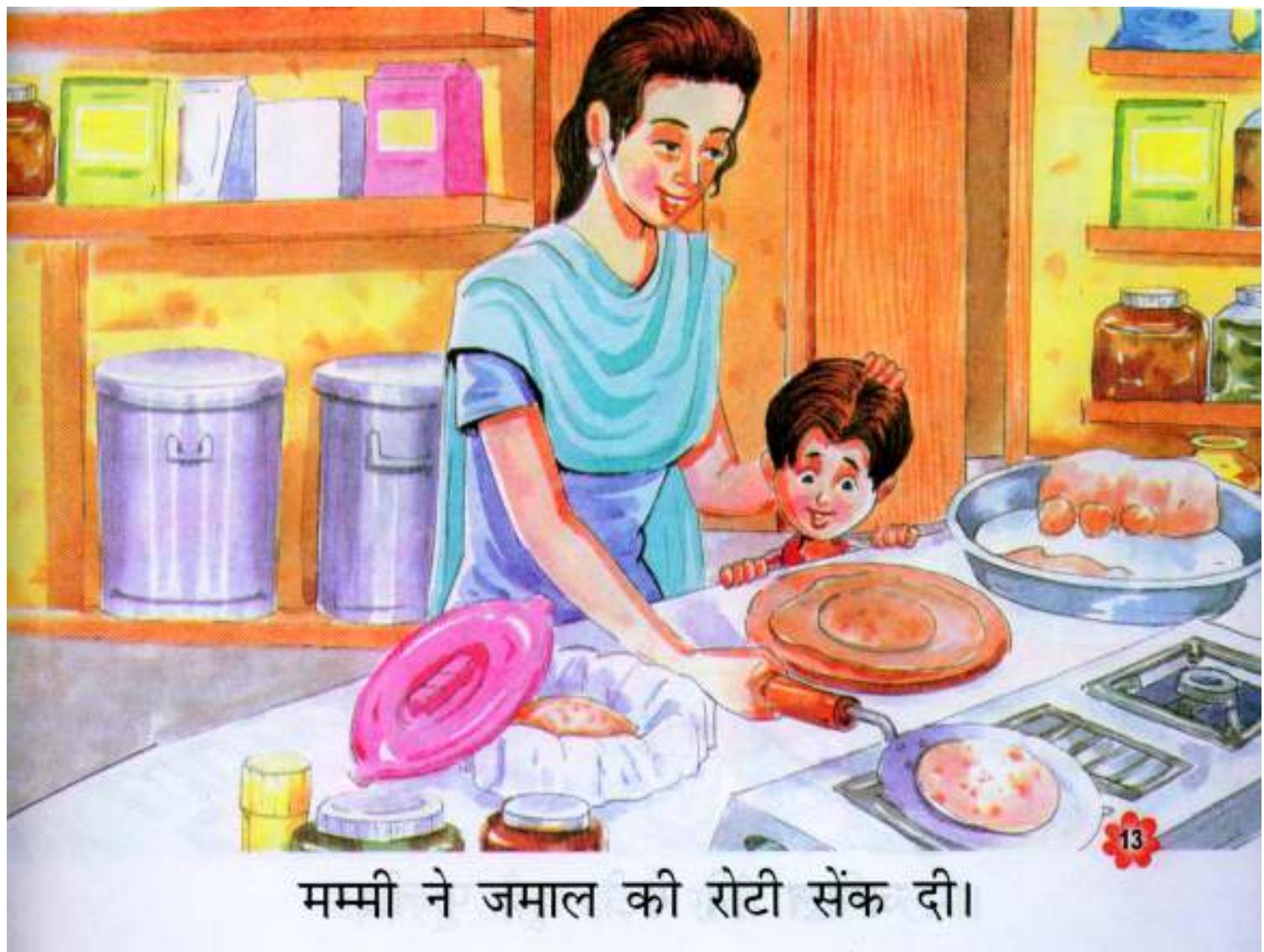
11

जमाल ने कटोरी रोटी पर रखकर घुमा दी।

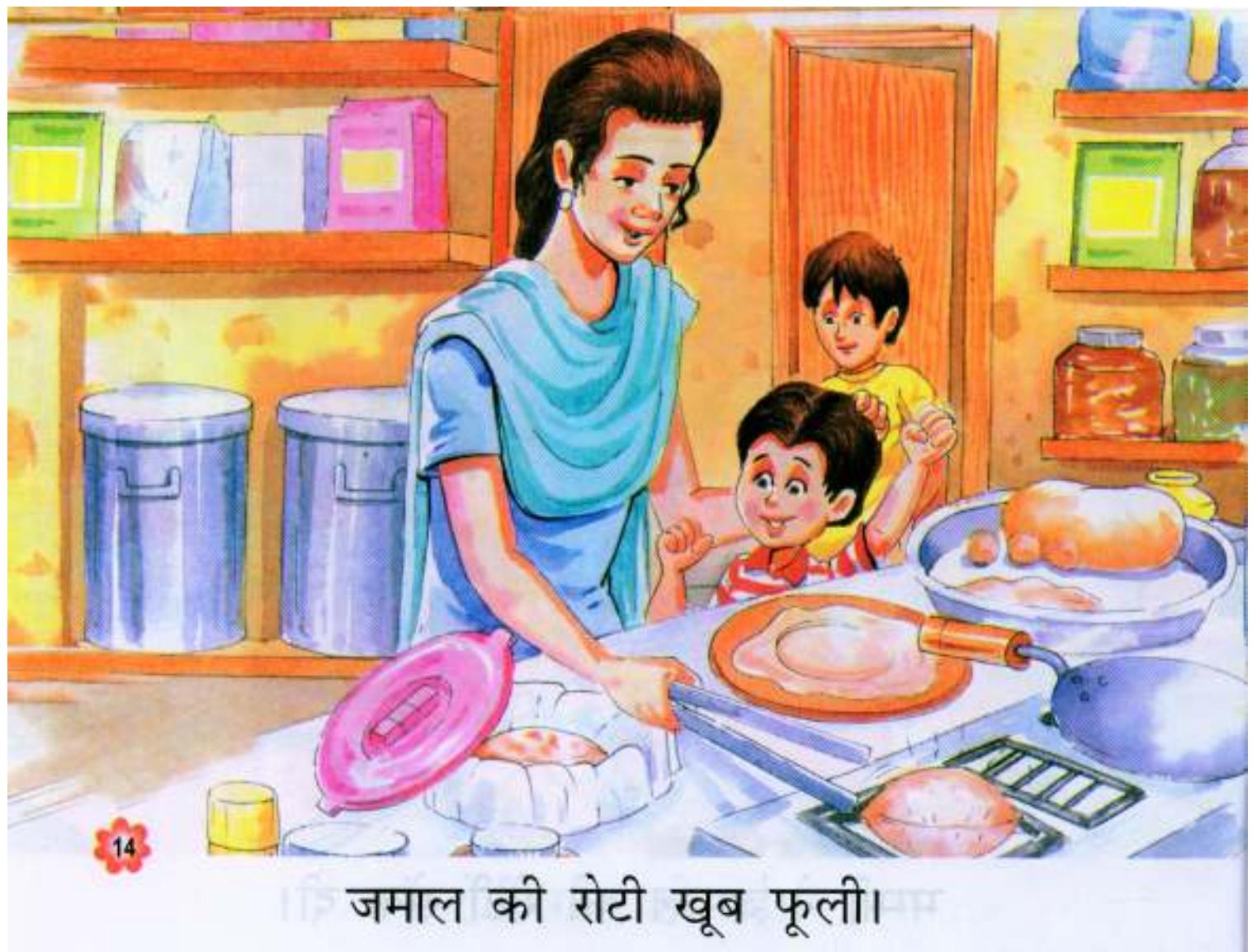


12

रोटी गोल हो गई।

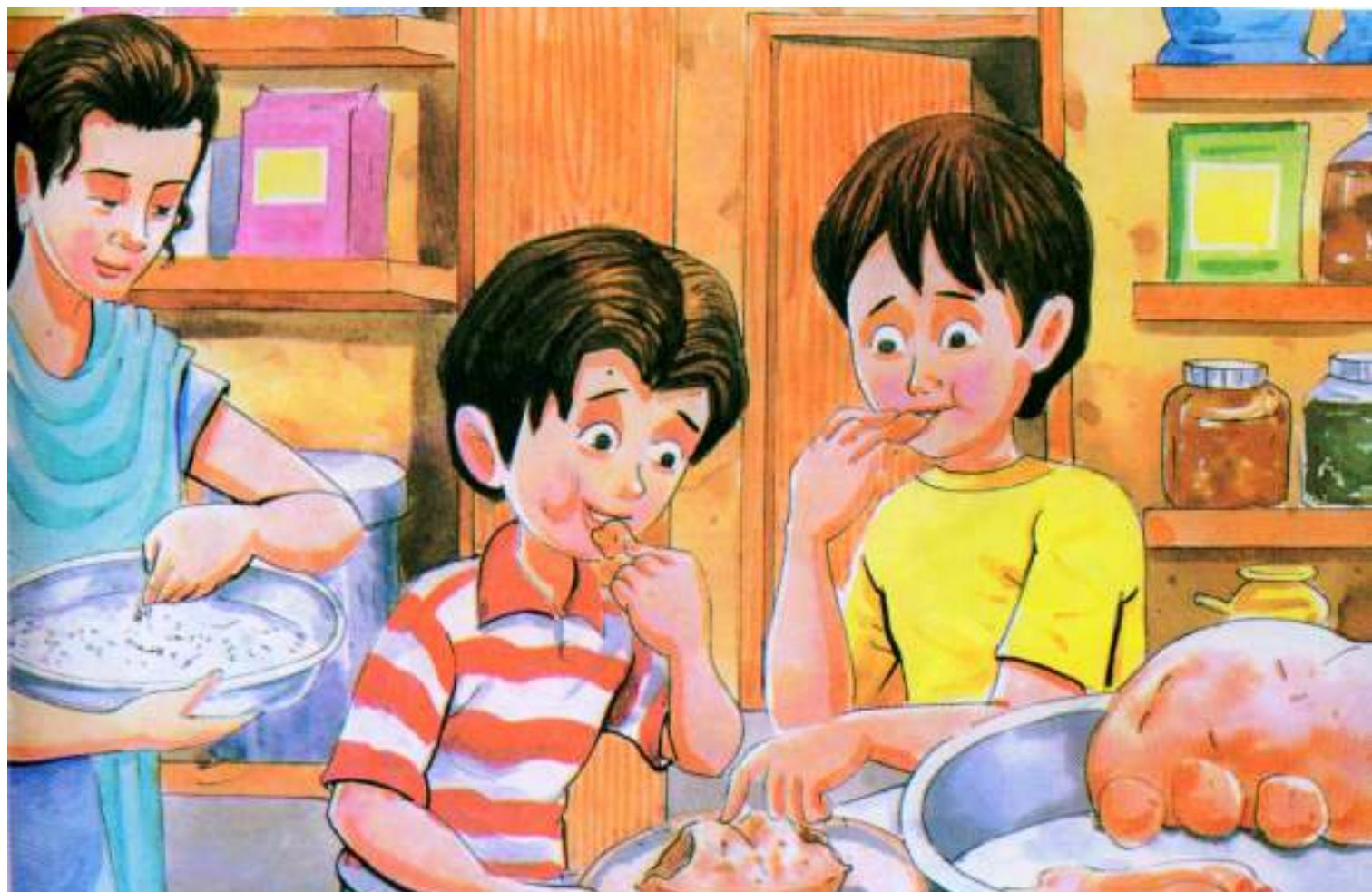


मम्मी ने जमाल की रोटी सेंक दी।



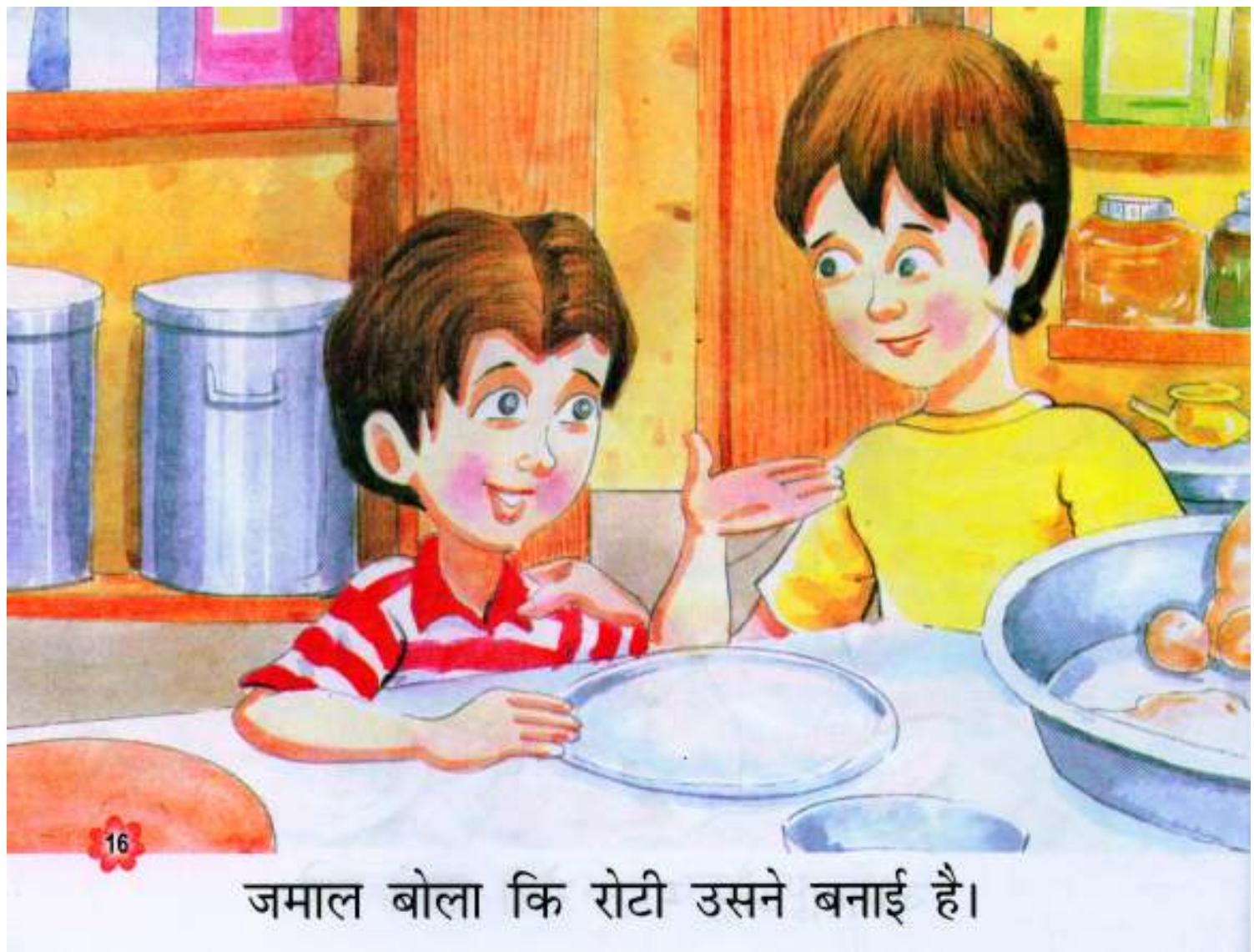
14

जमाल की रोटी खूब फूली।

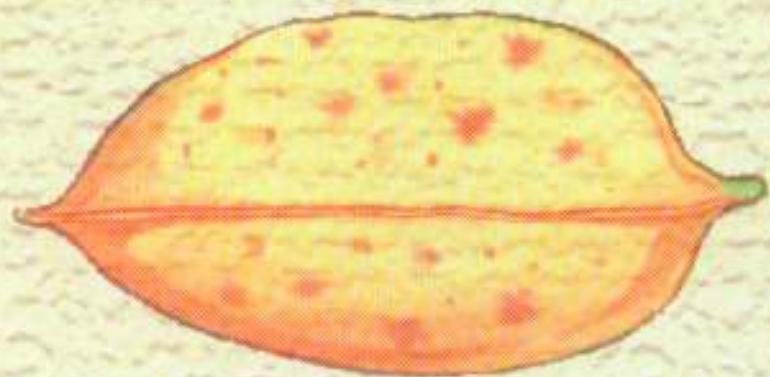


15

जमाल और मदन रोटी खाने लगे।



जमाल बोला कि रोटी उसने बनाई है।



2066



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरला-सेट)

978-81-7450-867-6



पढ़ना है समझना

छन का बोला



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

युनन्द्रेण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्धारण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका भंडव, शालिनी शर्मा, लता याण्डे, स्वाति बर्मा, सारिका अश्विनी, सीमा कुमारी, खोनिका कौशिक, मुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लालिका गुप्ता

विप्रांगन – जोएल गिल

सम्बन्ध तथा आखरण – निधि बाधवा

डी.टी.पी., ऑफरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार झापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर चमुथा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणिकी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रार्थिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर चंद्रुला माधुर, अभ्यश, गिरिधर देवलीपंडेट मैन, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय सर्वीक्षा समिति

श्री अशोक कलवर्णी, अभ्यश, पूर्व कुलाचारि, महालक्ष्मा गोपी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा, अच्छुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अभ्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वनंद, रीढ़र, किंचि विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनम विना, सीईओ, आई.एल.एव.एफ.एस., पुण्डे; सुशी नुकाहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक टर्स, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निदेशक, दिगंबर, जबलपुर।

80 ओ.एस.एस. पर पूर्णित

प्रकाशन विभाग में सचिव, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी नवर, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित उपर पक्ष विभाग प्रेस, दी-28, इंडिस्ट्रियल परिष, बालू-ए., मध्य 281004 द्वारा पूर्णित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)

978-81-7450-868-3

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोडमर्टी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर स्थें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार मुरासिल

प्रकाशक नौ पूर्वनुभवी के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा डोक्यानिकी, मरीजी, पारोप्राप्तिगति, लिक्विडेशन अथवा किसी अन्य विधि से पूँँ प्रयोग या व्यापार द्वारा उसका संप्रहार अथवा द्वायारण नवीनत है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैनस, श्री अधिकारी नवर, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 106, 100 फ्लैट नं. 1, नई एसटीएस, होटलेंगे, बनश्चरी 111 फ्लैट, बगलूरु 560 065 फोन : 080-26725740
- नक्कील टूर्न भवन, डाकघर नवीनीपुर, अमरावती 380 014 फोन : 079-27541446
- श्री.इक्कलूमी. कैप्टन, निकट: बनकल चांदी परिवाटी, बोनकल 700 114 फोन : 033-25590454
- श्री.इक्कलूमी. कौमूली, चलीगांव, गुरुग्राम 781 021 फोन : 0661-2674869

प्रकाशन महाप्रबोध

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार मुख्य उत्पादक : स्कॉल उपल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : श्री. कुमार मुख्य उत्पादक अधिकारी : नीतम गांगुली

ऊन का गोला



नानी



मुनमुन

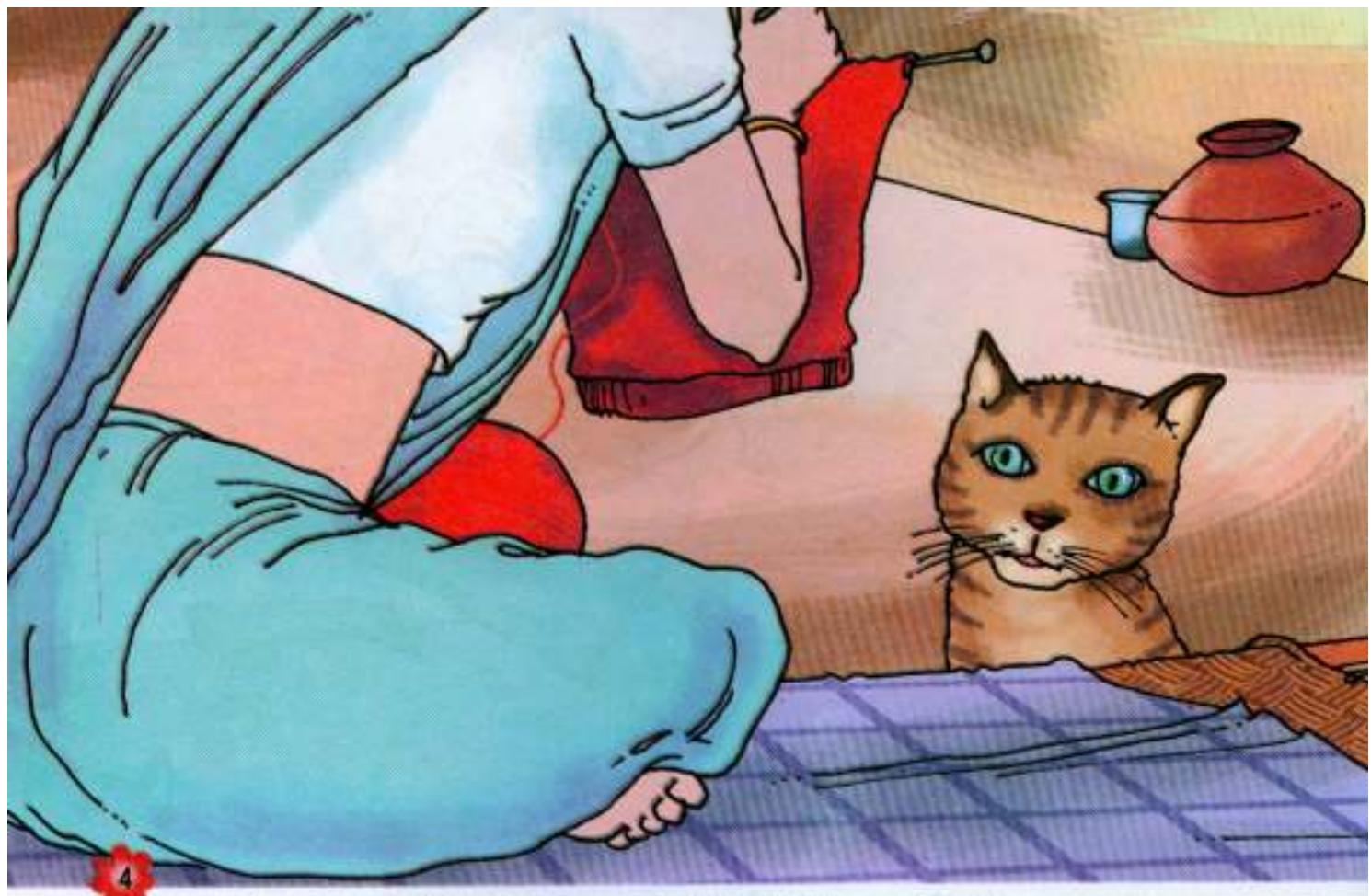


2

एक दिन मेरी नानी धूप में स्वेटर बुन रही थीं।
नानी के पास लाल ऊन का गोला था।

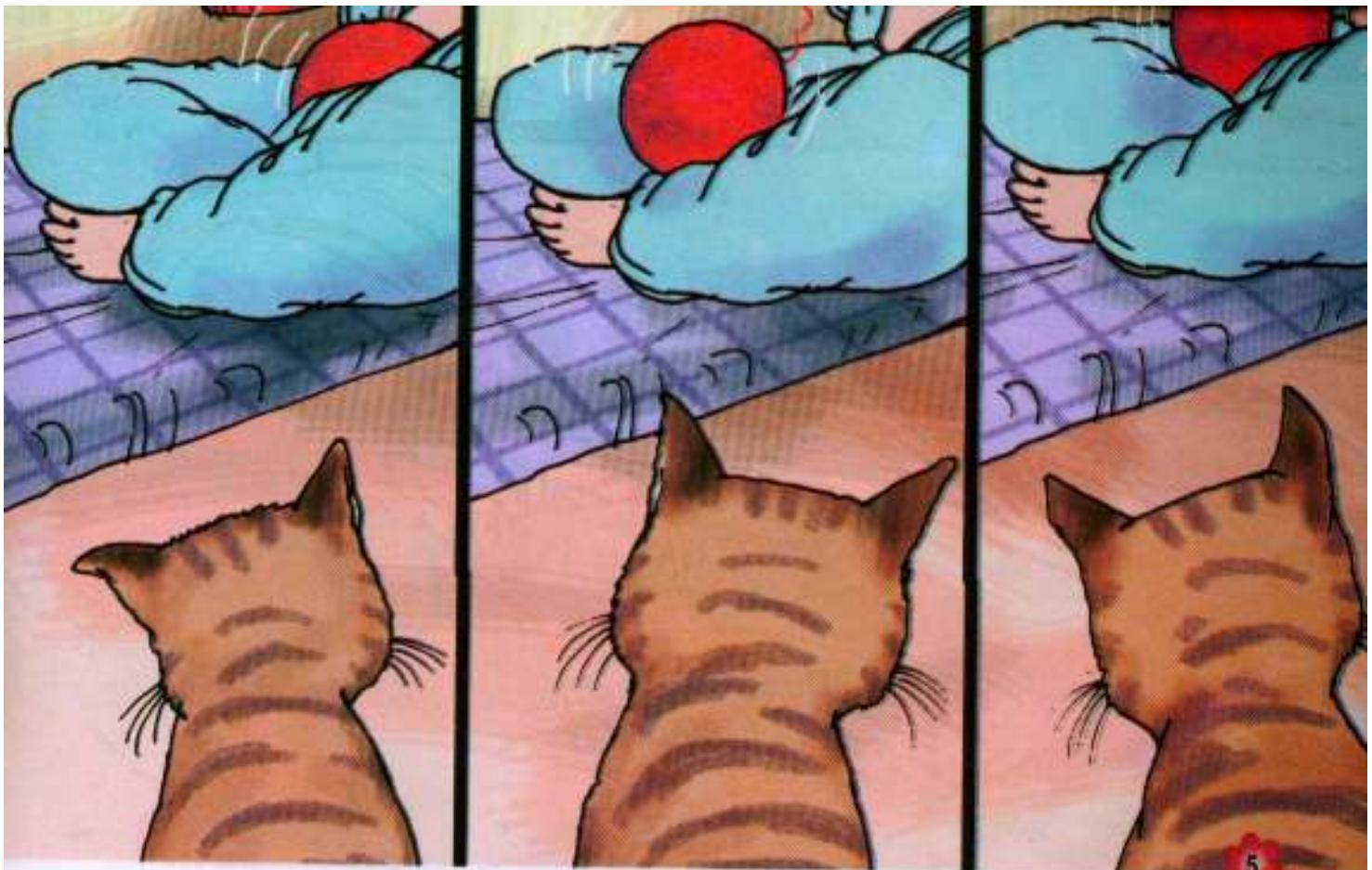


नानी आँगन में बैठकर स्वेटर बुन रही थीं।
गोला उनकी गोद में पड़ा हुआ था।

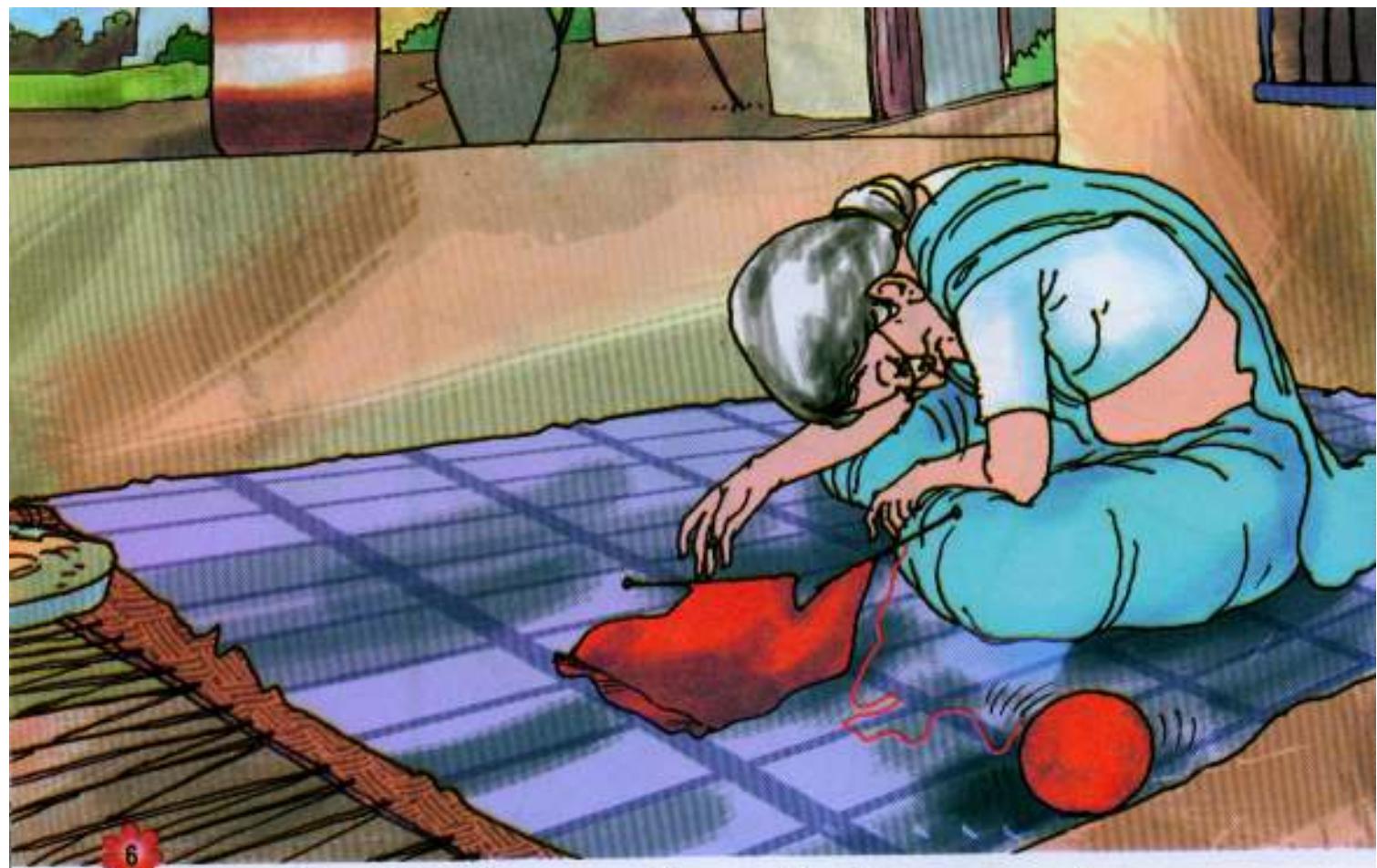


4

मुनमुन नानी के पास ही बैठी हुई थी।
वह ऊन के गोले को गौर से देख रही थी।

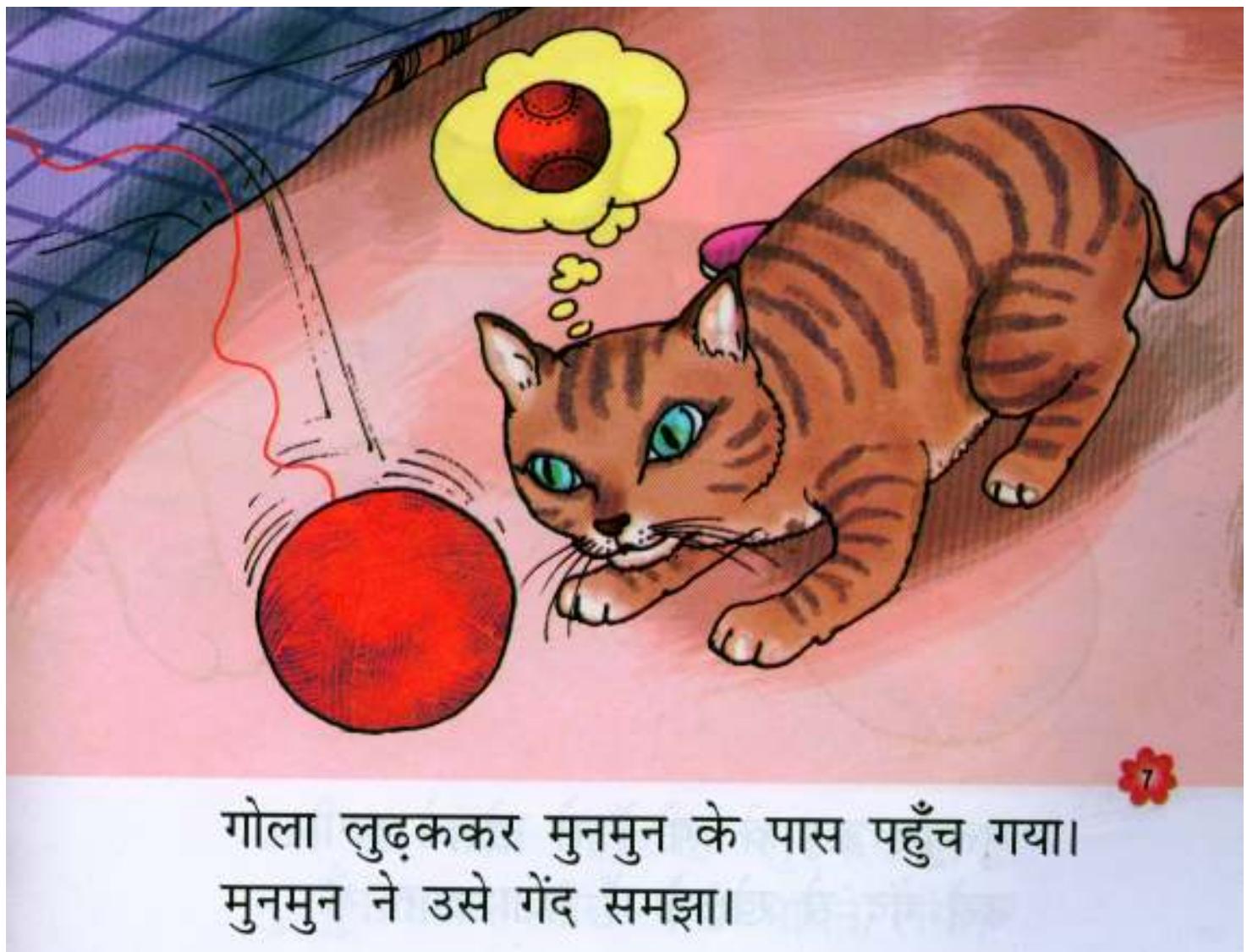


गोला धीरे-धीरे हिल रहा था।
मुनमुन भी अपना सिर धीरे-धीरे हिलाती थी।

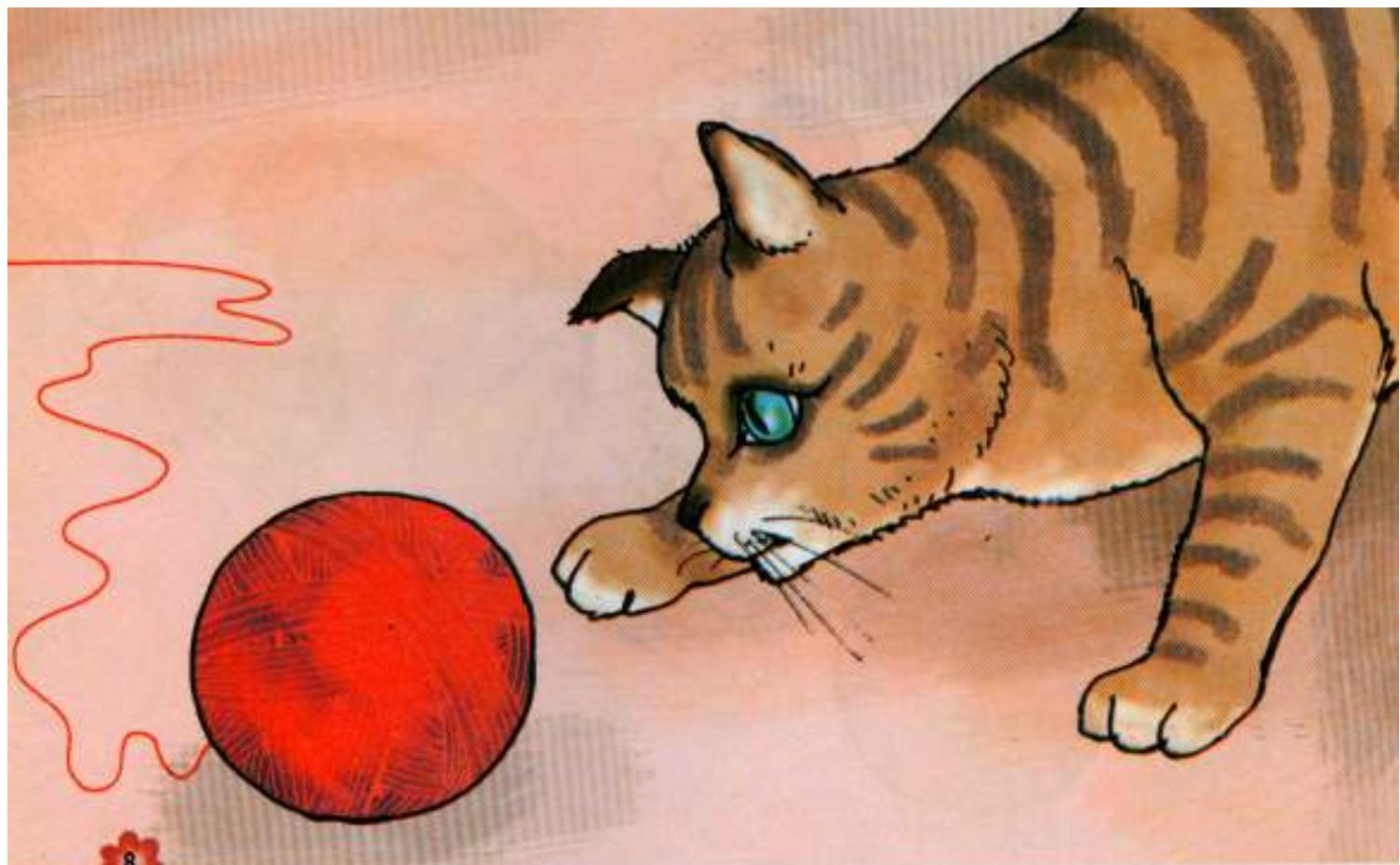


6

नानी को स्वेटर बुनते-बुनते नींद आ गई।
उन का गोला नीचे लुढ़क गया।



गोला लुढ़ककर मुनमुन के पास पहुँच गया।
मुनमुन ने उसे गेंद समझा।



8

मुनमुन ऊन के गोले से खेलने लगी।
उसे गेंद से खेलने में मज़ा आता है।

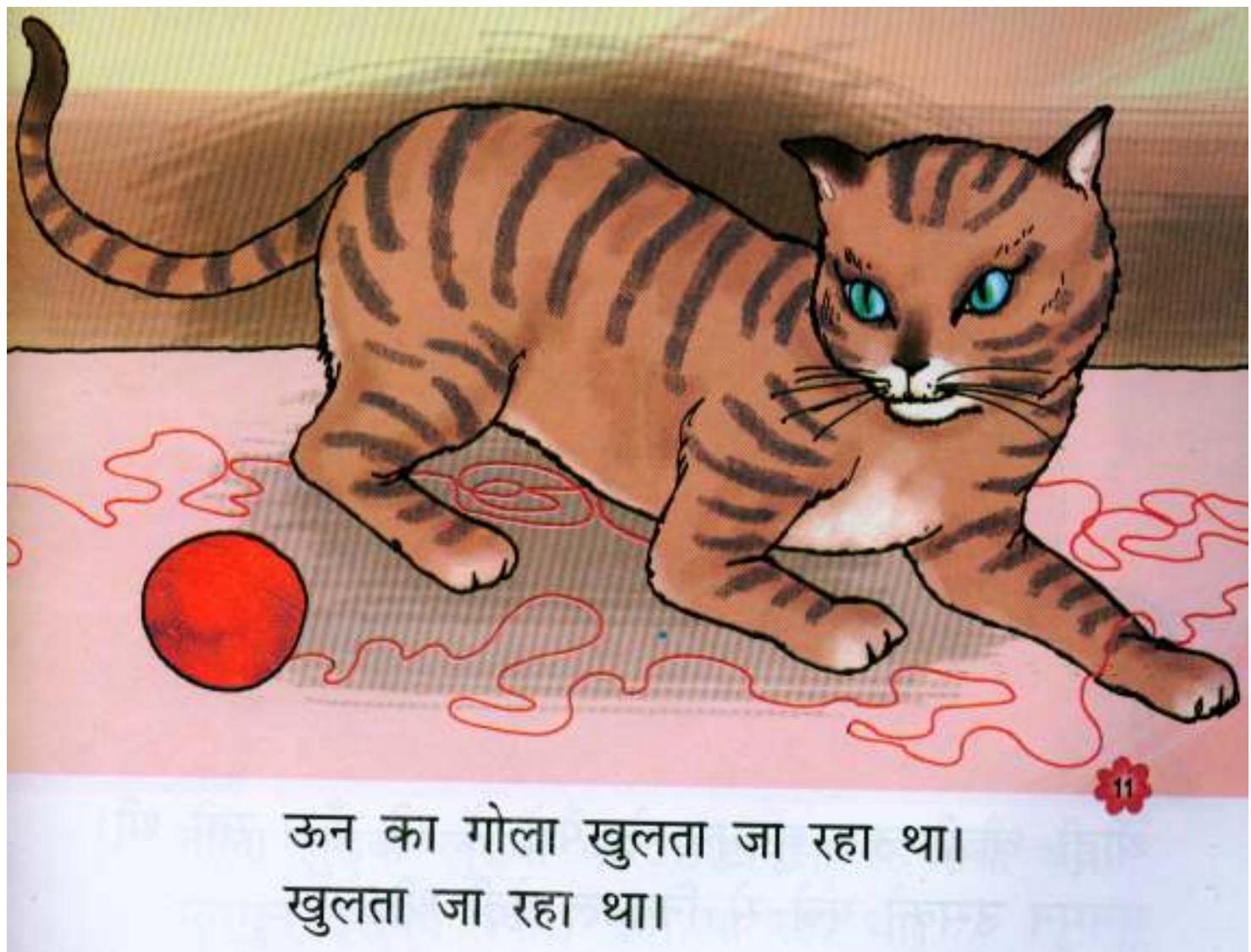


ऊन का गोला यहाँ-वहाँ लुढ़कने लगा।
मुनमुन उसके पीछे-पीछे भागने लगी।



10

ऊन का गोला छोटा होता जा रहा था।
मुनमुन उसके पीछे-पीछे भाग रही थी।

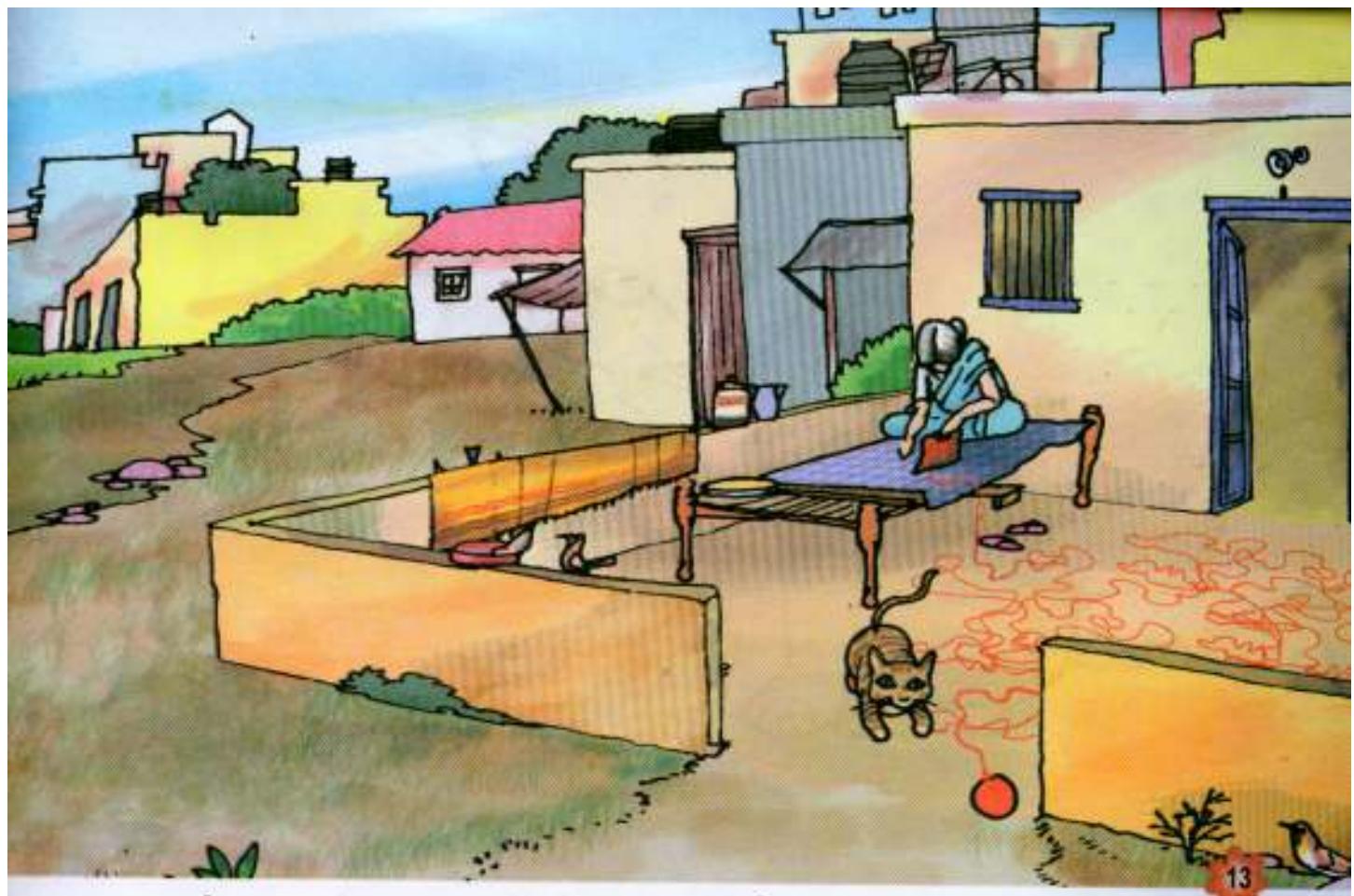


ऊन का गोला खुलता जा रहा था।
खुलता जा रहा था।

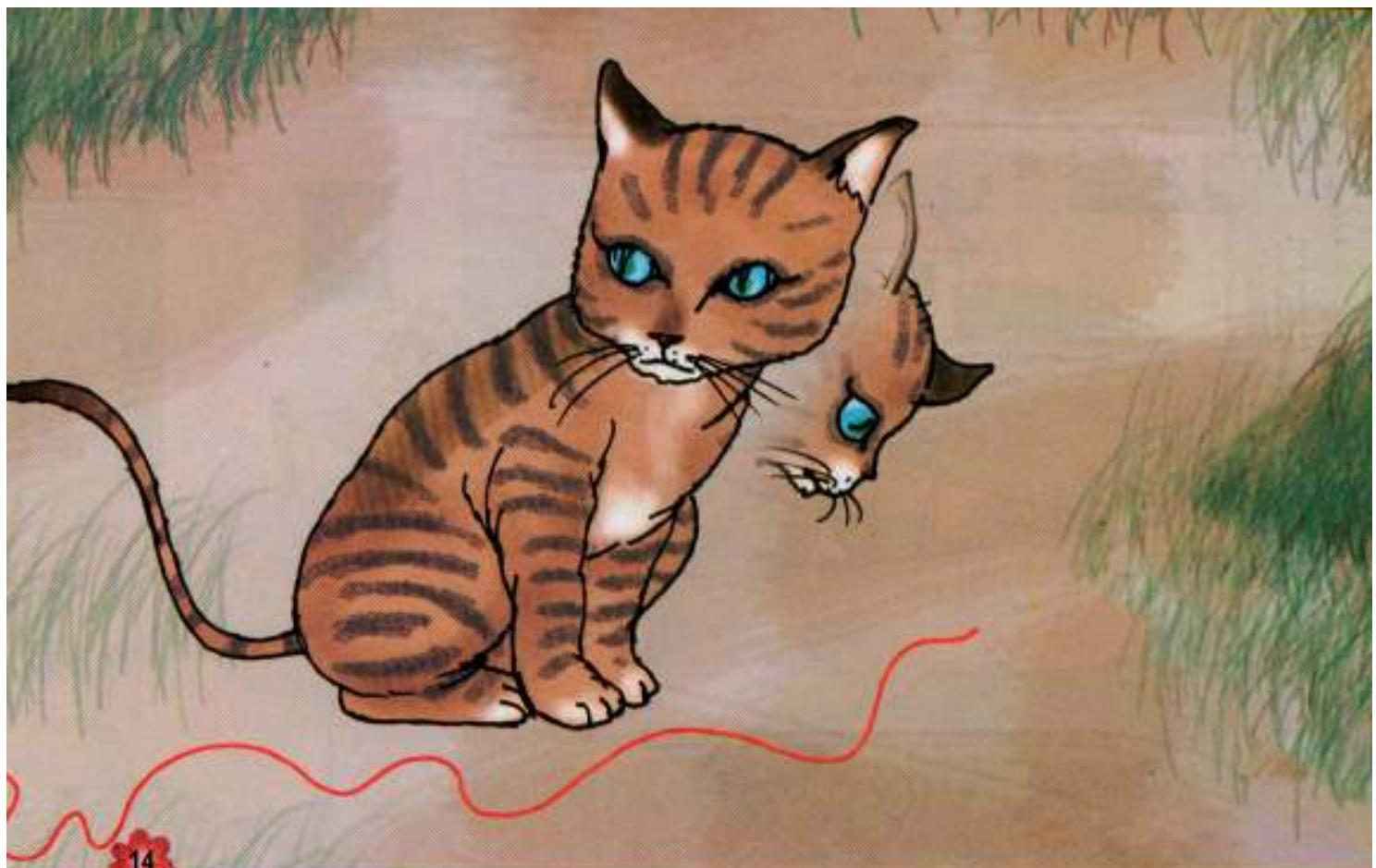


12

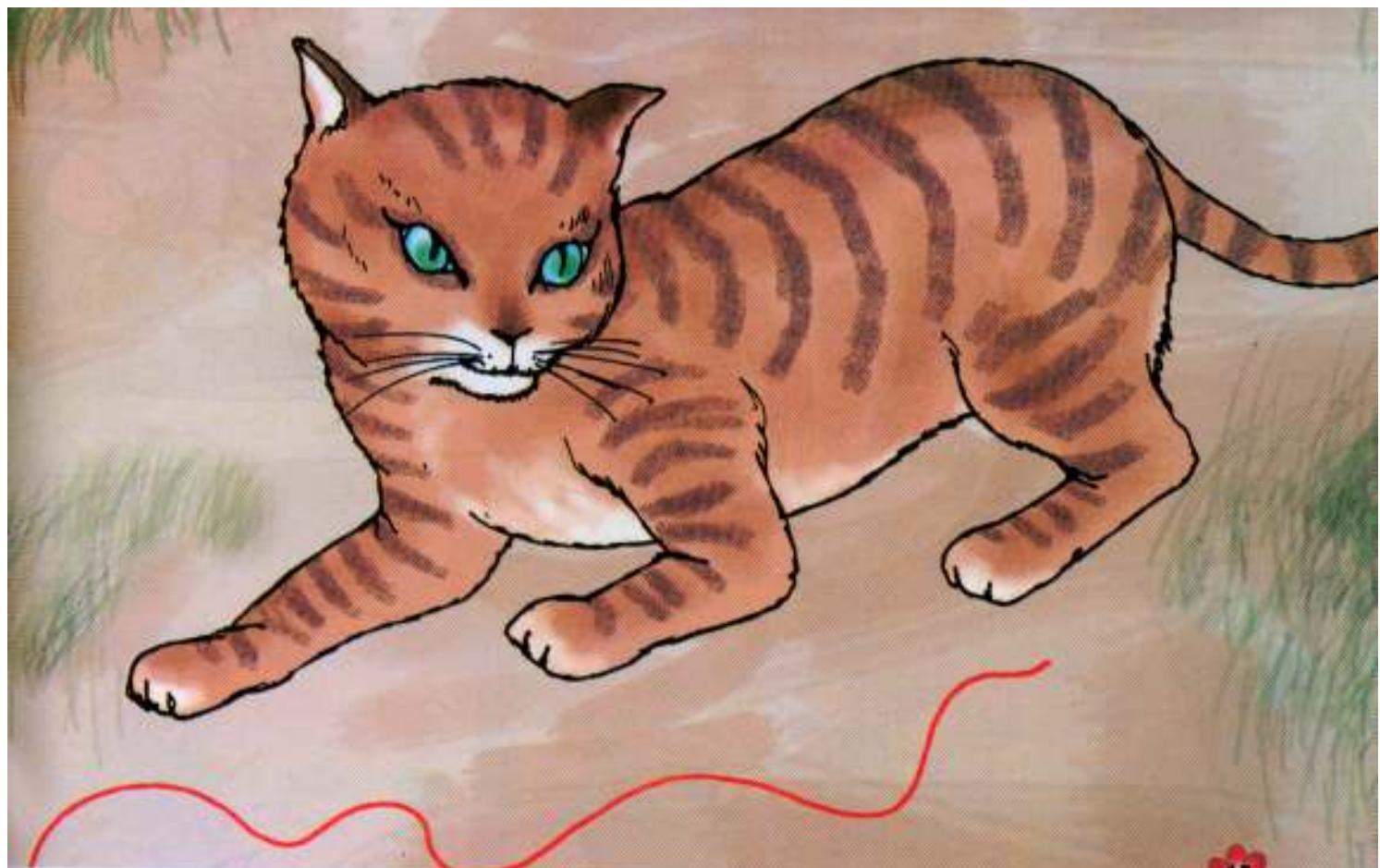
थोड़ी-थोड़ी ऊन मुनमुन के पैरों में भी फँस रही थी।
मुनमुन उसको पंजे से निकाल देती थी।



गोला लुढ़क-लुढ़क कर छोटा-सा रह गया था।
मुनमुन उसको पकड़ नहीं पा रही थी।

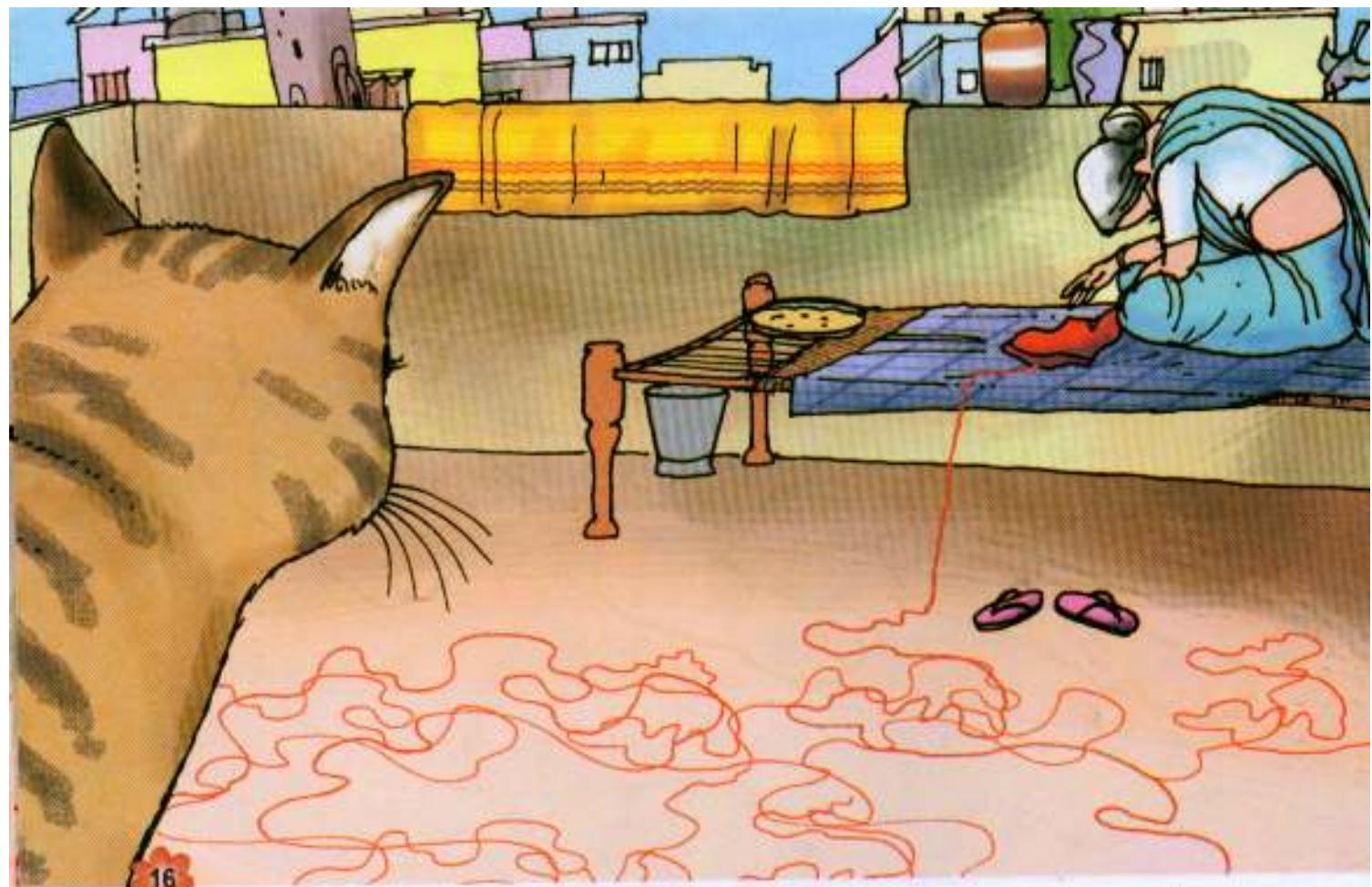


गोला जब पूरा खुल गया तो गायब हो गया।
मुनमुन परेशान होकर गोले को ढूँढ़ने लगी।



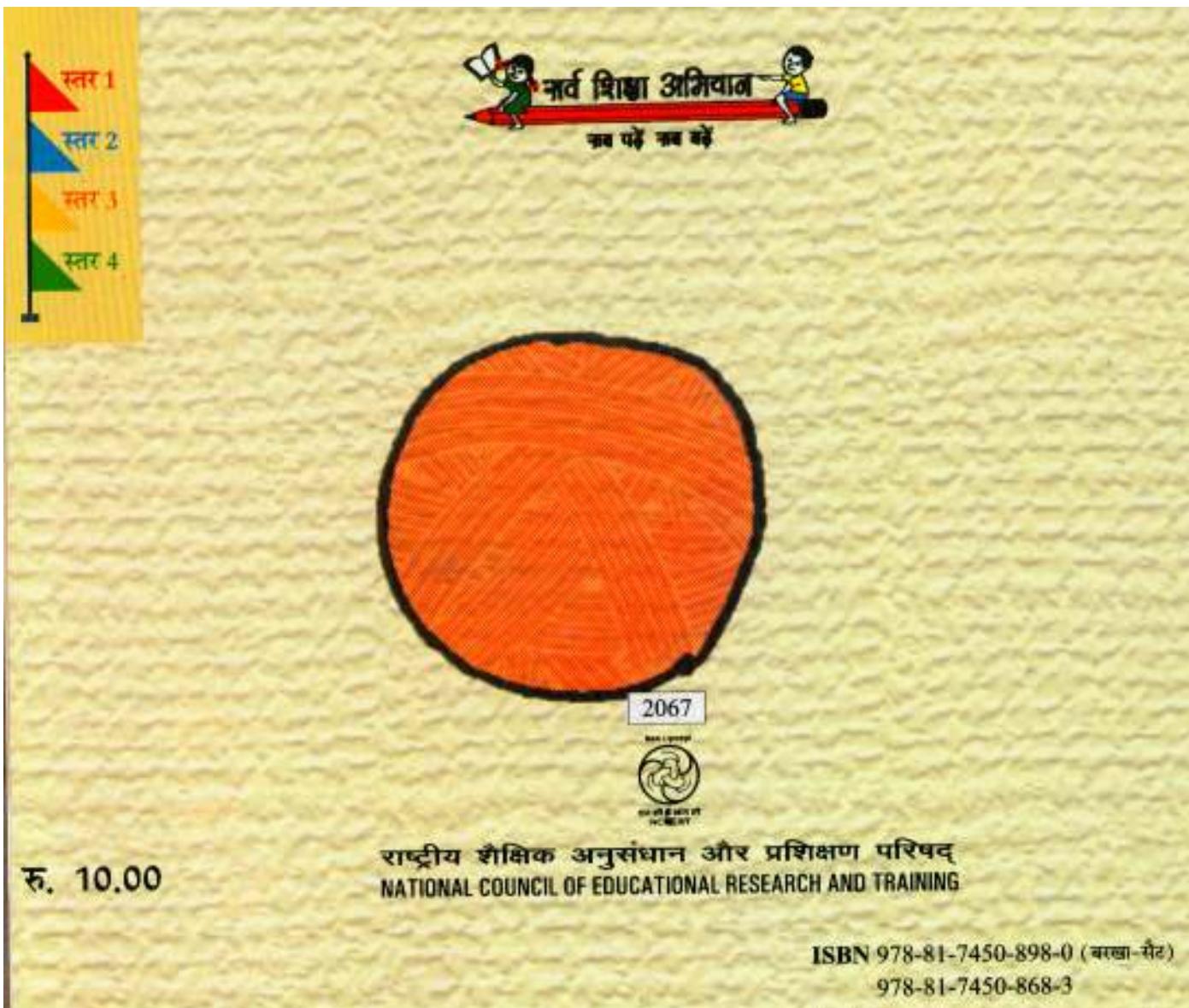
15

मुनमुन कभी आगे देखती कभी पीछे।
पर गोला उसे मिला नहीं।



16

मुनमुन भागकर नानी के पास वापस चली गई।
नानी अब भी गहरी नींद में सो रही थीं।



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बाला-मैट)

978-81-7450-868-3

हिच-हिच हिचकी

पढ़ना है समझना



प्रकाशन संस्करण : दिसंबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 107 NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कवचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका बेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशोल शुक्ल

सबस्थ-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - जोएल गिल

संज्ञा तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.टी.यो. ऑफिसर - अर्चना गुप्ता, गीतम चौधरी, अंगूल गुप्ता

आभार झापण

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निरेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त नियंत्रणक, कन्दीय शैक्षिक प्रोलोगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. गोपाल, विभागाध्यक्ष, प्रार्थक शिळ्प विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर बंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेये, अध्यक्ष, पूर्व कृतपति, महालमा गोभी अतिराष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वर्षो; प्रोफेसर फरीद, अद्यत्तल, लाल, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अनुसंधान विभाग, जामिया निलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, सीडर, हिंदू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनम सिन्हा, सोईओ., आई.एल, एवं एफ.एस., मुख्य; सुशी नुजहत हसन, नियंत्रणक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री राहित धनकर, नियंत्रणक, दिग्ंगर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पंपर पर गुहित

प्रकाशन विभाग में समिति, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी गर्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा संक्ष प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मुम्बई 400004 द्वारा पुढ़ित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बर्खा-मैट)

978-81-7450-869-0

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के बौके देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की सुशीला के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को गोजमर्दी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यवर्चय के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

समीक्षक सूचित

प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग के साप्तांत्रिक अनुकूलितों, मरणी, जोटाप्रतिलिपि, लिपाविहित अवया किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग प्रतिकृति द्वारा उसका संग्रहण अवया प्रयोग नहीं है।

इन गैरि.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कारबिलद

- एन.सी.ई.अर.टी. कैरेस, श्री अवलिन मर्ग, नगी विल्सनी 110 016 फोन : 011-26362708
- 108, 100 फॉट एंड, हैनी एम्प्लोइमेंट, हास्टेक्स, बलाकरी III स्ट्री, बांगलुरु 560 085 फोन : 080-26723740
- नवरीमन ट्रैट भवन, नालास नवरीमन, नालास भवन 380 014 फोन : 079-27541446
- श्री.इन्द्रपूर्णी. वैष्णव, निकट: बनकल वडा वडोदरा, काशीकाल 400 114 फोन : 023-25530454
- श्री.उम्मीदवार, बांगलोरम, नवरीमन, नालास 380 021 फोन : 080-26743869

प्रकाशन सहचरों

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजेश्वर

मुख्य संपादक : श्री. राहित धनकर

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य अवगत अधिकारी : शीतल गांगुली

हिच-हिच हिचकी



रमा



रानी



मम्मी



2

एक दिन मम्मी ने कचौड़ियाँ बनाईं।
रमा ने पूरी चार कचौड़ियाँ खाईं।



रमा को ज़ोर-ज़ोर से हिचकियाँ आने लगीं।
हिच-हिच-हिच-हिच



4

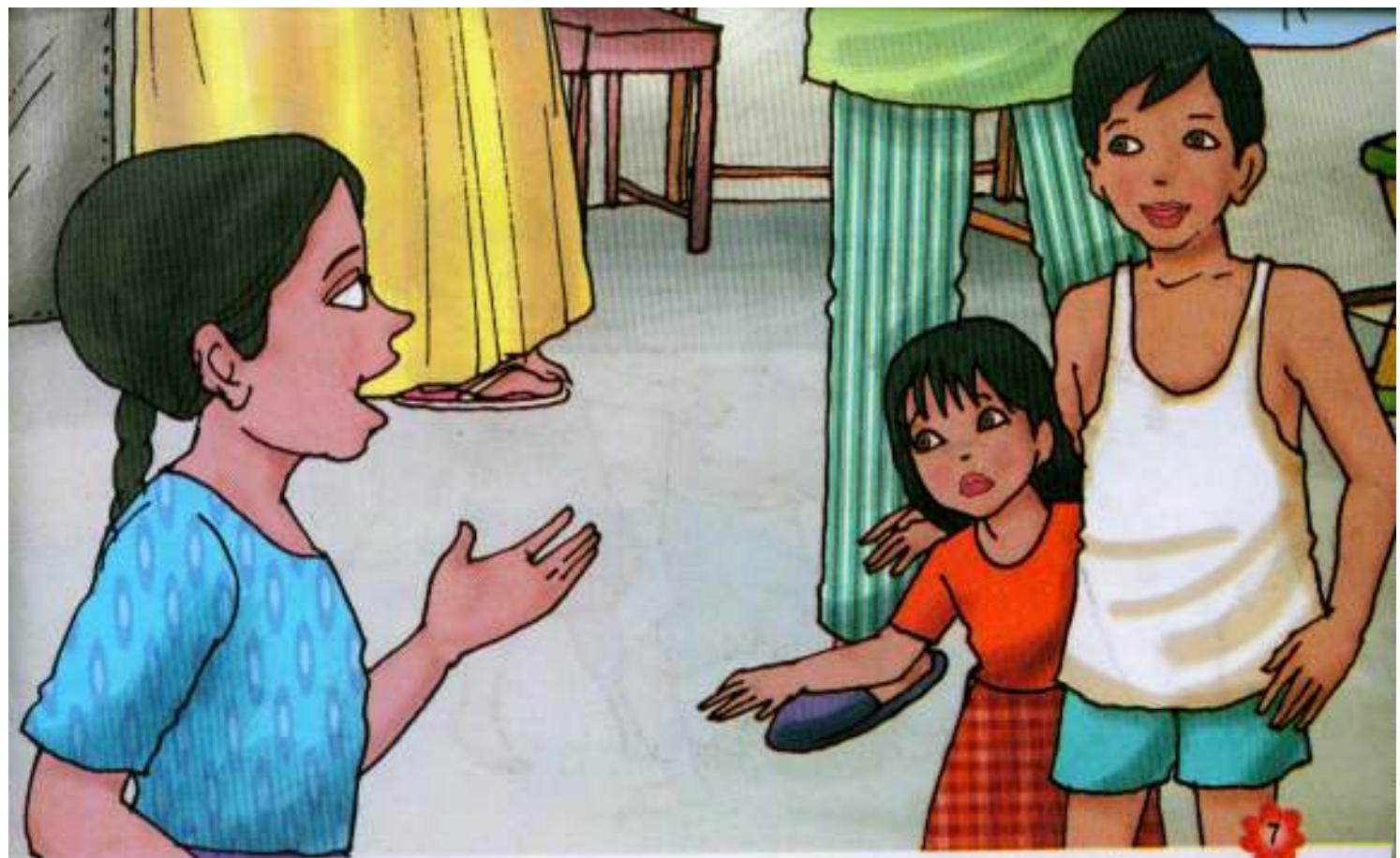
दादी जग में पानी भरकर ले आई।
दादी ने खूब सारा पानी पीने को कहा।



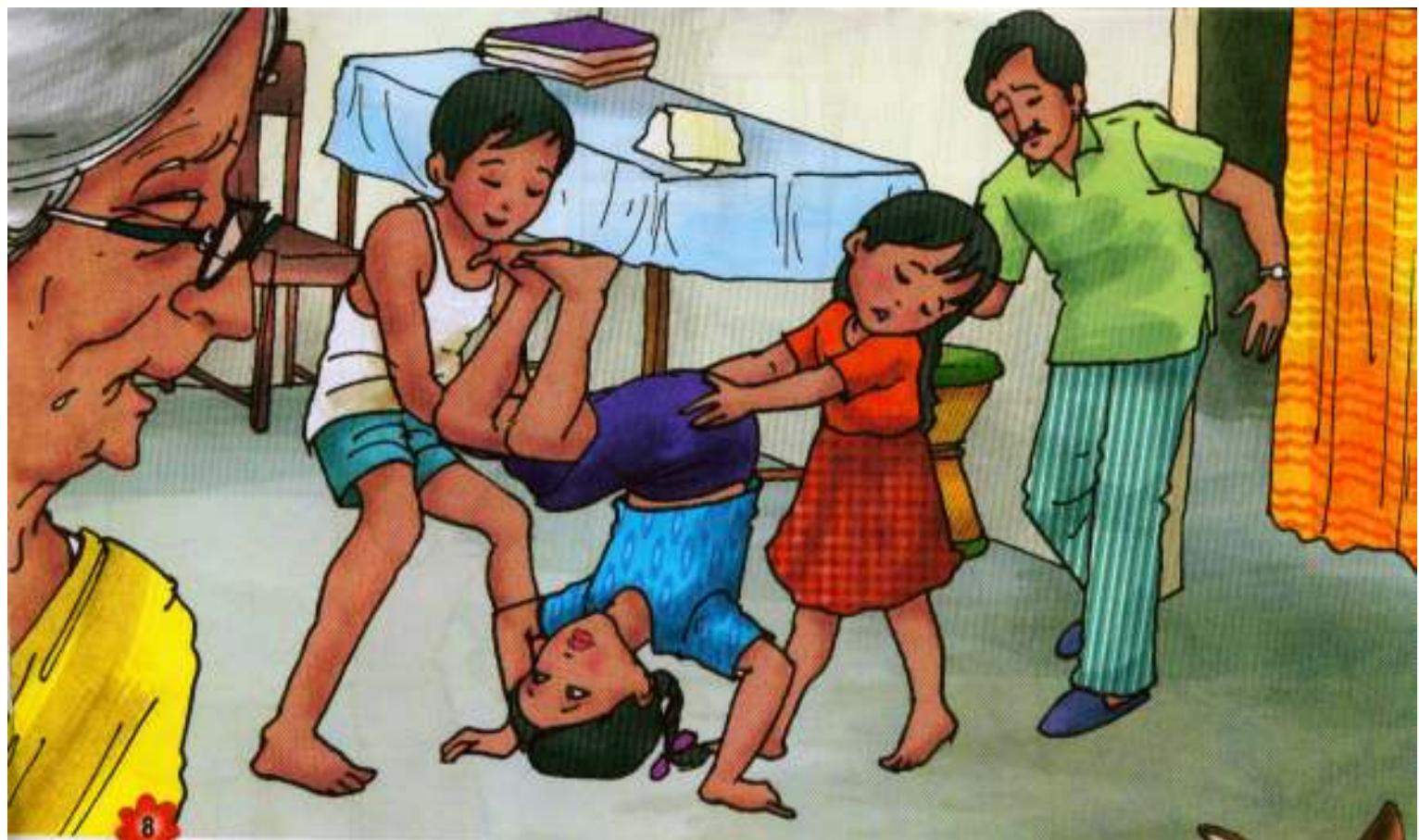
रमा ने पानी पी लिया पर हिचकी नहीं रुकी ।
हिच-हिच-हिच-हिच



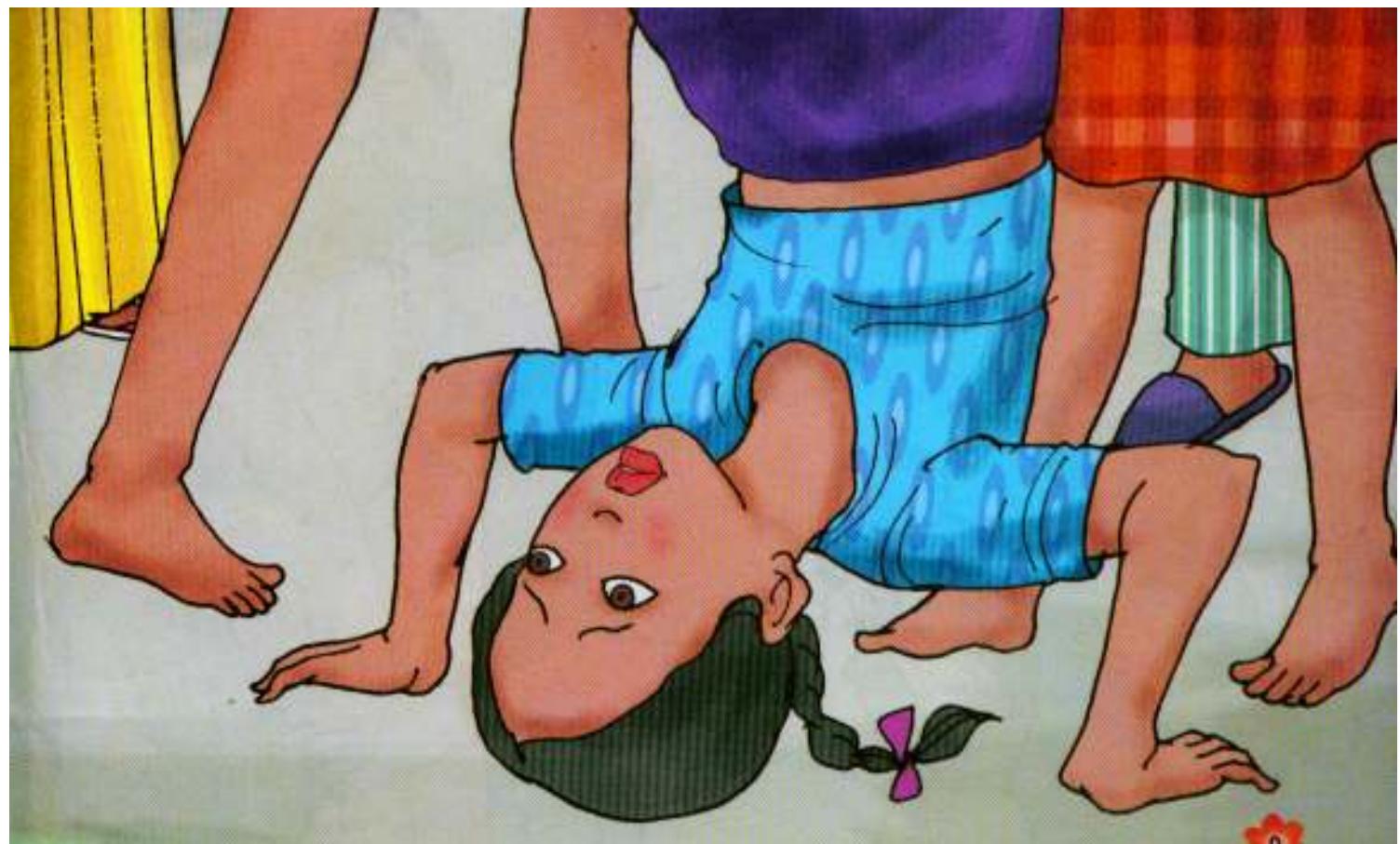
पापा ताली बजाने लगे।
पापा ने गाना गाने को कहा।



रमा ने गाना गाया पर हिचकी नहीं रुकी ।
हिच-हिच-हिच-हिच



भैया ने सिर के बल खड़े हो जाने को कहा।
भैया ने रमा को सिर के बल खड़ा कर दिया।



9

रमा उल्टी हो गई पर हिचकी नहीं रुकी ।
हिच-हिच-हिच-हिच



मम्मी भी रसोई से बाहर आ गई।
मम्मी ने कदम-ताल करने को कहा।



11

रमा ने ज़ोर-ज़ोर से कदम-ताल की पर हिचकी नहीं रुकी।
हिच-हिच-हिच-हिच



12

तभी रानी रसगुल्ले का डिब्बा ले आई।
रानी ने कहा कि रमा ने दो रसगुल्ले खाए हैं।



रमा ज़ोर से चिल्लाई- नहीं।
वह बोली- मैंने रसगुल्ले नहीं खाए।



14

यह बोलकर रमा एकदम से चुप हो गई।
सब लोगों को हँसी आ गई।



15

सबने देखा कि रमा की हिचकी बंद हो गई थी।
हिचकी गायब।



16

रमा एक और कचौड़ी खाने बैठ गई।
घर के बाकी लोग भी अपनी-अपनी कचौड़ी खाने लगे।



जार्व शिक्षा अभियान
जब पढ़े जब बढ़े



2068



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बर्खा-सेट)

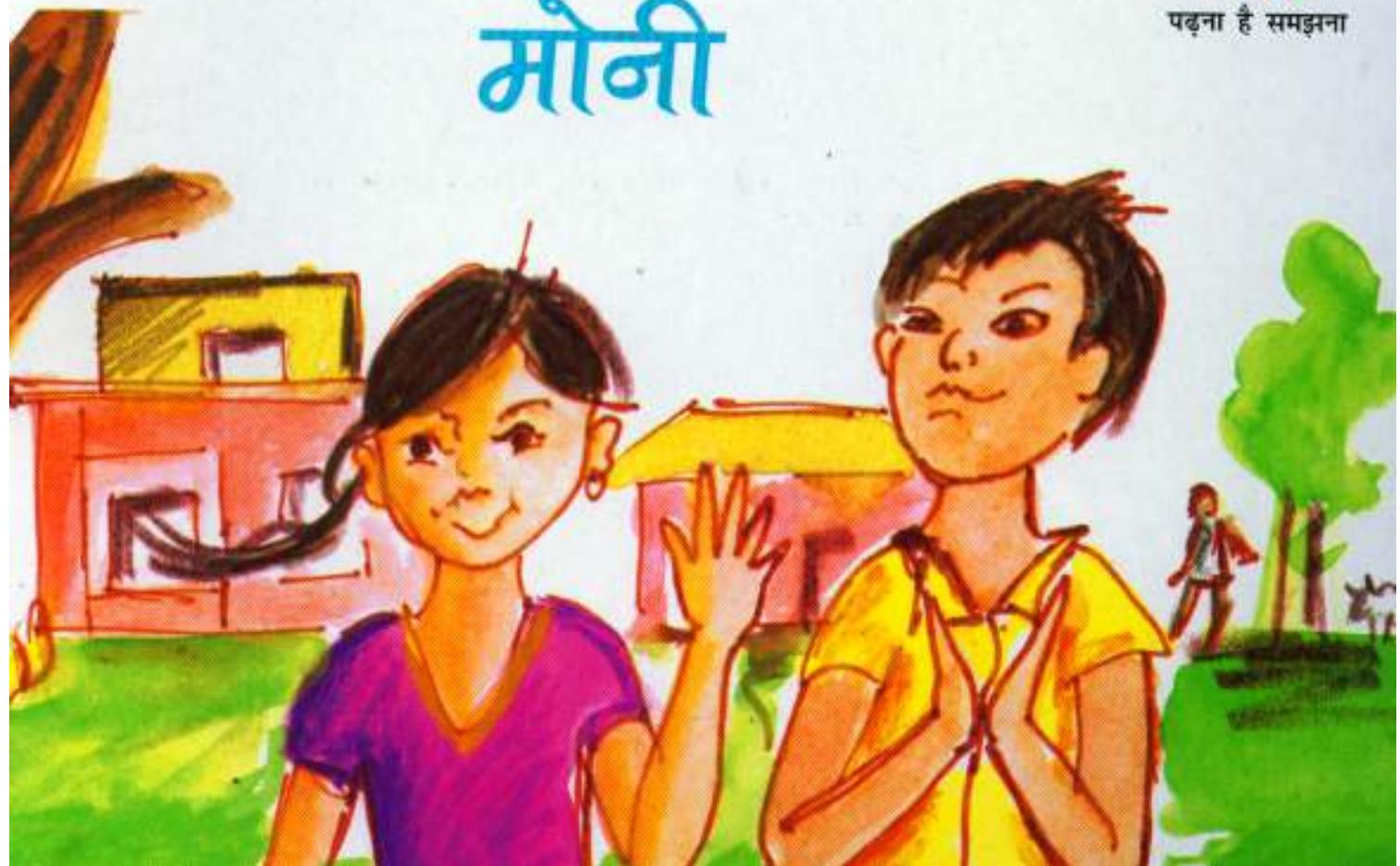
978-81-7450-869-0

रु.10.00



पढ़ना है समझना

मोनी



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 गौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 200T NSV

पुस्तकमाला नियोग समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्वेति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, गण्डिका भेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सरिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – ललिता गुप्ता

चित्रांकन – कृतिका एस. नरला

सम्पादन तथा आवरण – निधि चाहवा

डी.टी.पी. ऑफिटर – अर्जना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर चमुणा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. विशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रोडिंग ट्रैकलाइंट नील, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक चावलेशी, अध्यक्ष, पूर्व कृलपति, महाराष्ट्रा शोधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा अद्युल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया निलाया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वनंद, रोडर, हिंदू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एस. एवं एफ.एस., मुर्दा; मुक्ति नुवाहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री योहित घनकर, निदेशक, दिल्ली, ब्रह्मपुरा।

80 नी.एस.प्यू. येपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अंतर्राष्ट्रीय मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडिस्ट्रियल एरिया, साइट-३, नवधा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा सेट)

987-81-7450-870-6

बरखा ड्रामिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के माध्य' स्वर्य पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वर्य को खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्या की छोटी-छांटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यक्रमों के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षा

प्रकाशक को पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को लापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मालीनी, फोटोग्राफिलिप, रिकार्डिंग अवयव किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग एवं/या द्वारा उसका संदर्भण अवयव प्रत्याप बरित है।

एन.डी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.डी.ई.आर.टी. कैम्पस, श्री अंतर्राष्ट्रीय मार्ग, नई दिल्ली 110 016 कोन : 011-26562708
- 108, 100 फॉर्म सेट, श्री एमलोन, होमटेक्नो, बवालकरी III रोड, बैंगलुरु 560 085 कोन : 080-26725740
- बवालकरी टट्टू बाजार, दामोदर नववीन, अहमदाबाद 380 014 कोन : 079-27541446
- श्री.इलूटी, कैम्पस, निकट: भवाल बाजा बाटी परिवारी, कैलालाल 700 114 कोन : 033-25530454
- श्री.इलूटी, श्री.कामलीबास, मालीगांव, नुसारामी 781 021 कोन : 0361-2674869

प्रकाशन संस्करण

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार

मुख्य संसादक : रघुवीर उपराजन

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य स्वापादक : गौहर यादव प्रकाशक

मोनी



काजल

माधव



मोनी



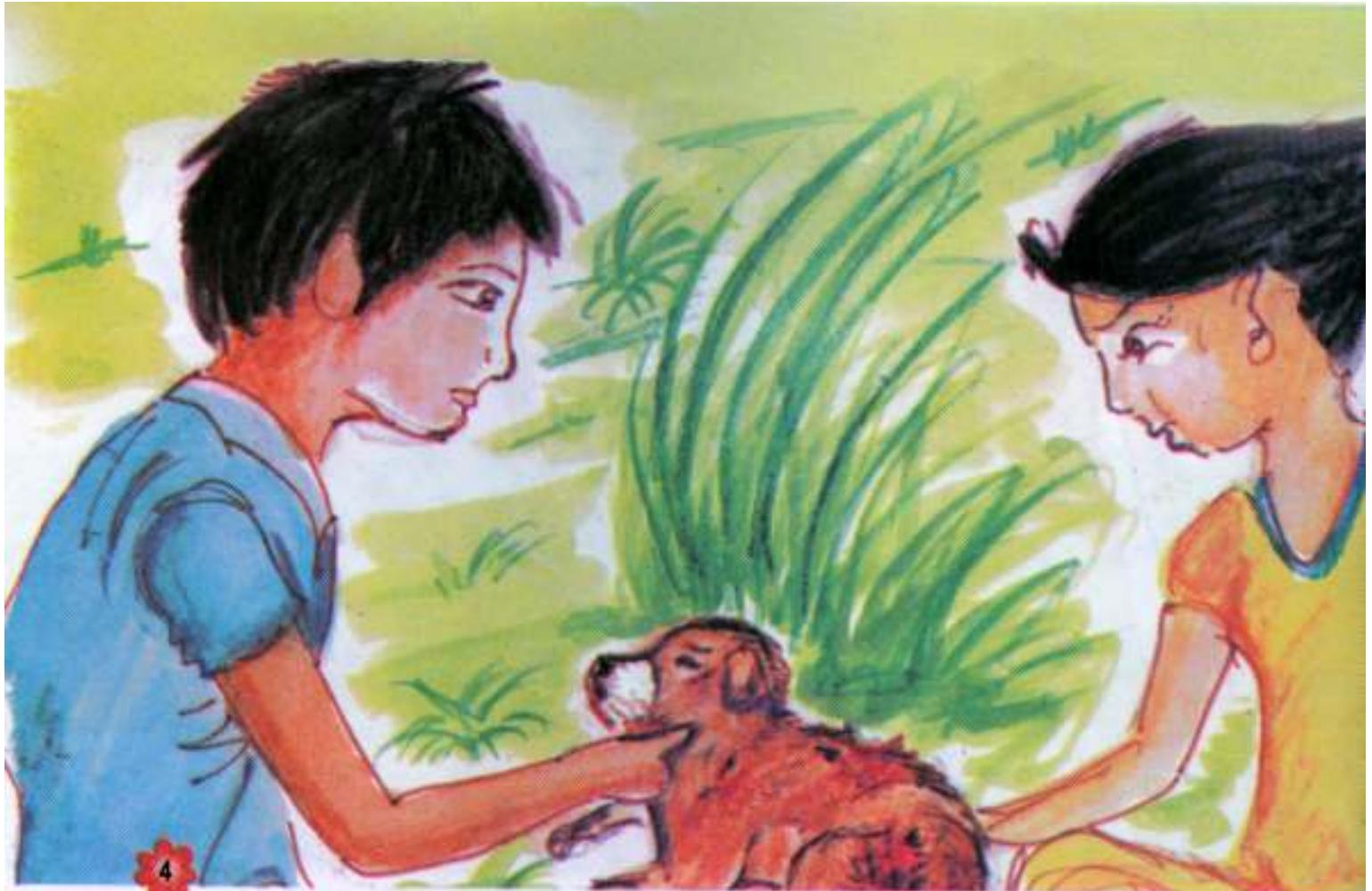
2

एक दिन काजल और माधव खेल रहे थे।
खेलते हुए उन्हें कूँ-कूँ की आवाज सुनाई दी।

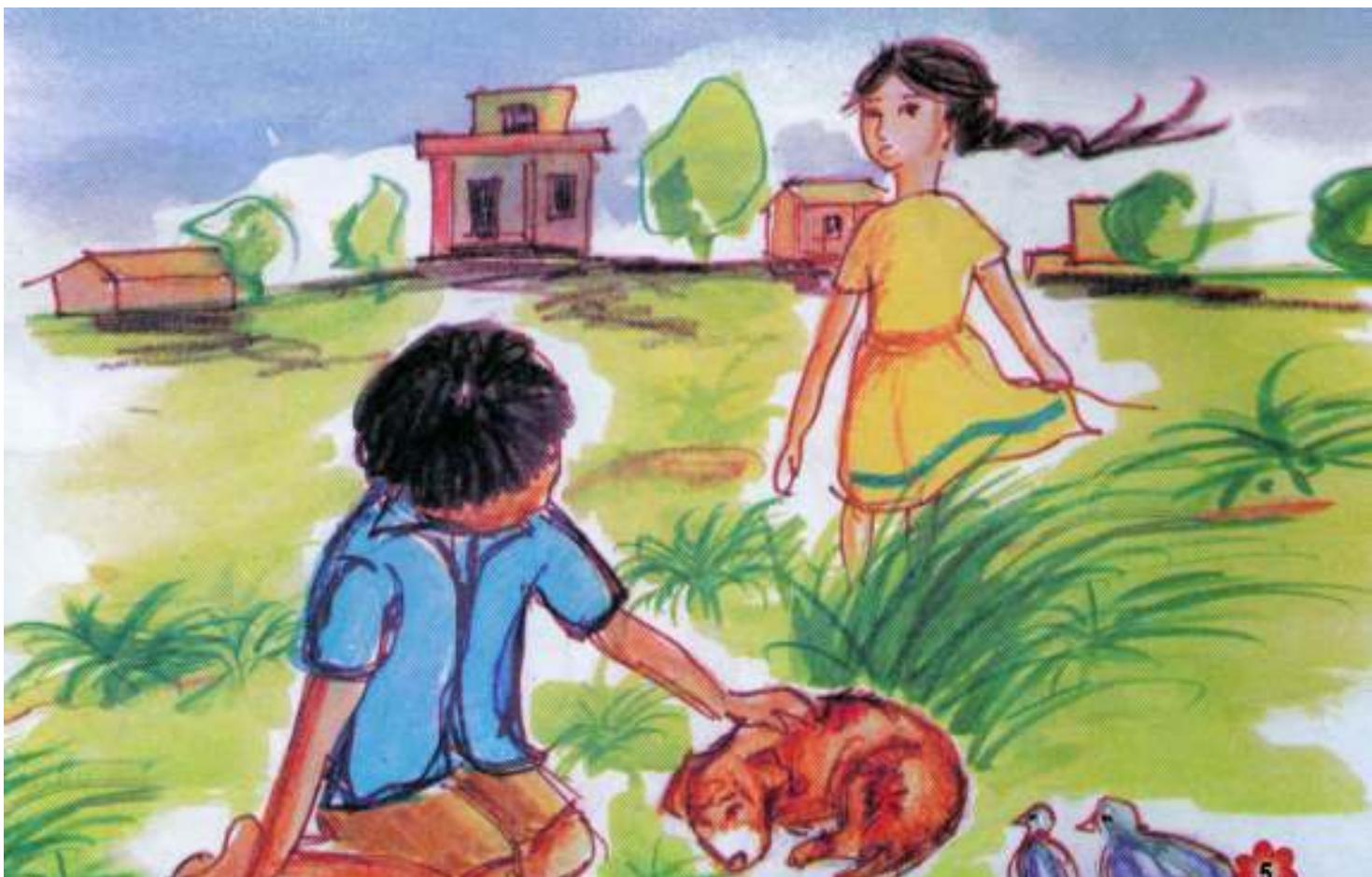


3

काजल को वहाँ कोने में एक पिल्ला दिखाई दिया।
पिल्ले को कई जगह चोट लगी हुई थी।

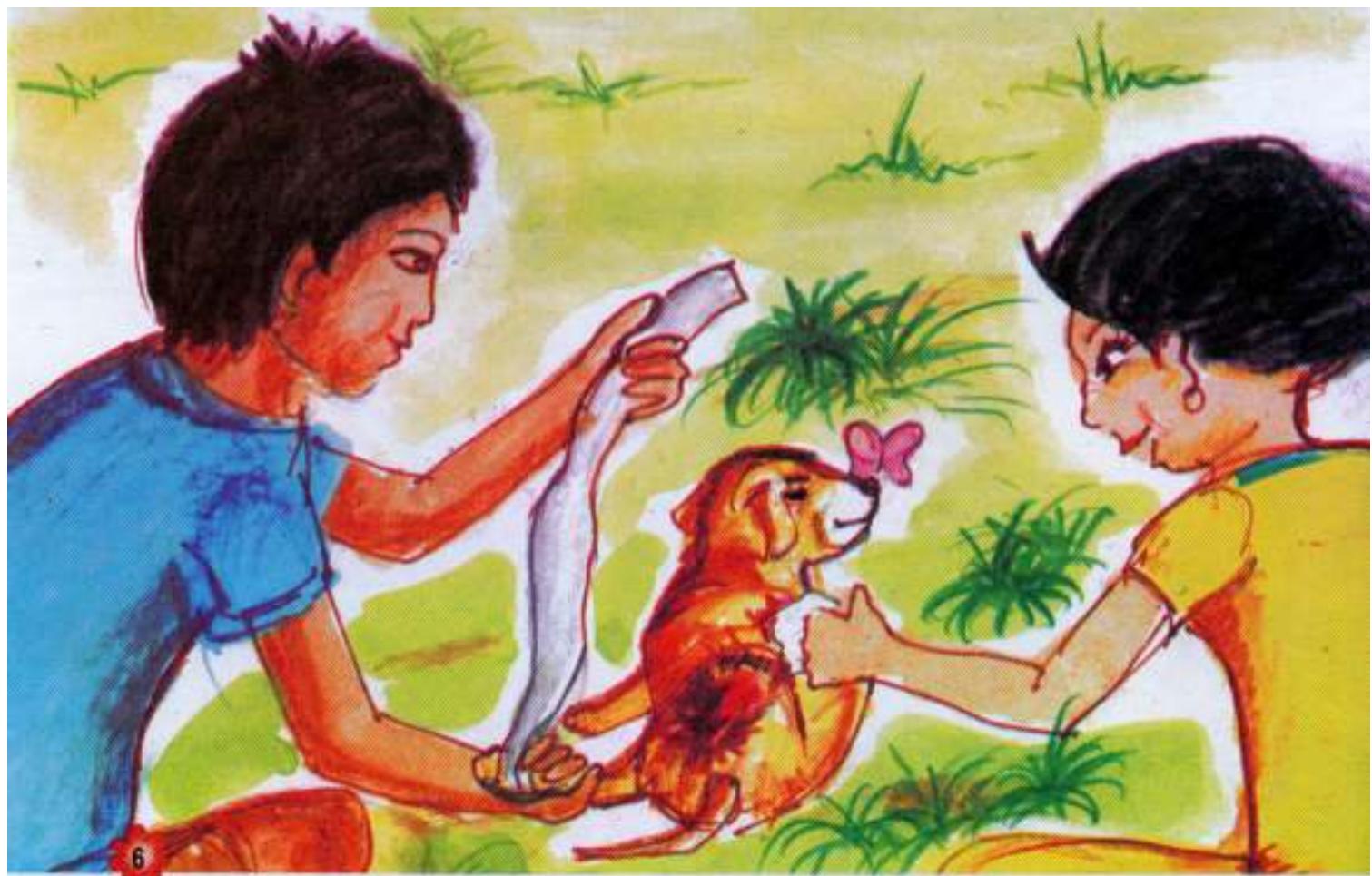


माधव ने पिल्ले को प्यार से सहलाया।
पिल्ले की चोटों से बहुत खून बह रहा था।



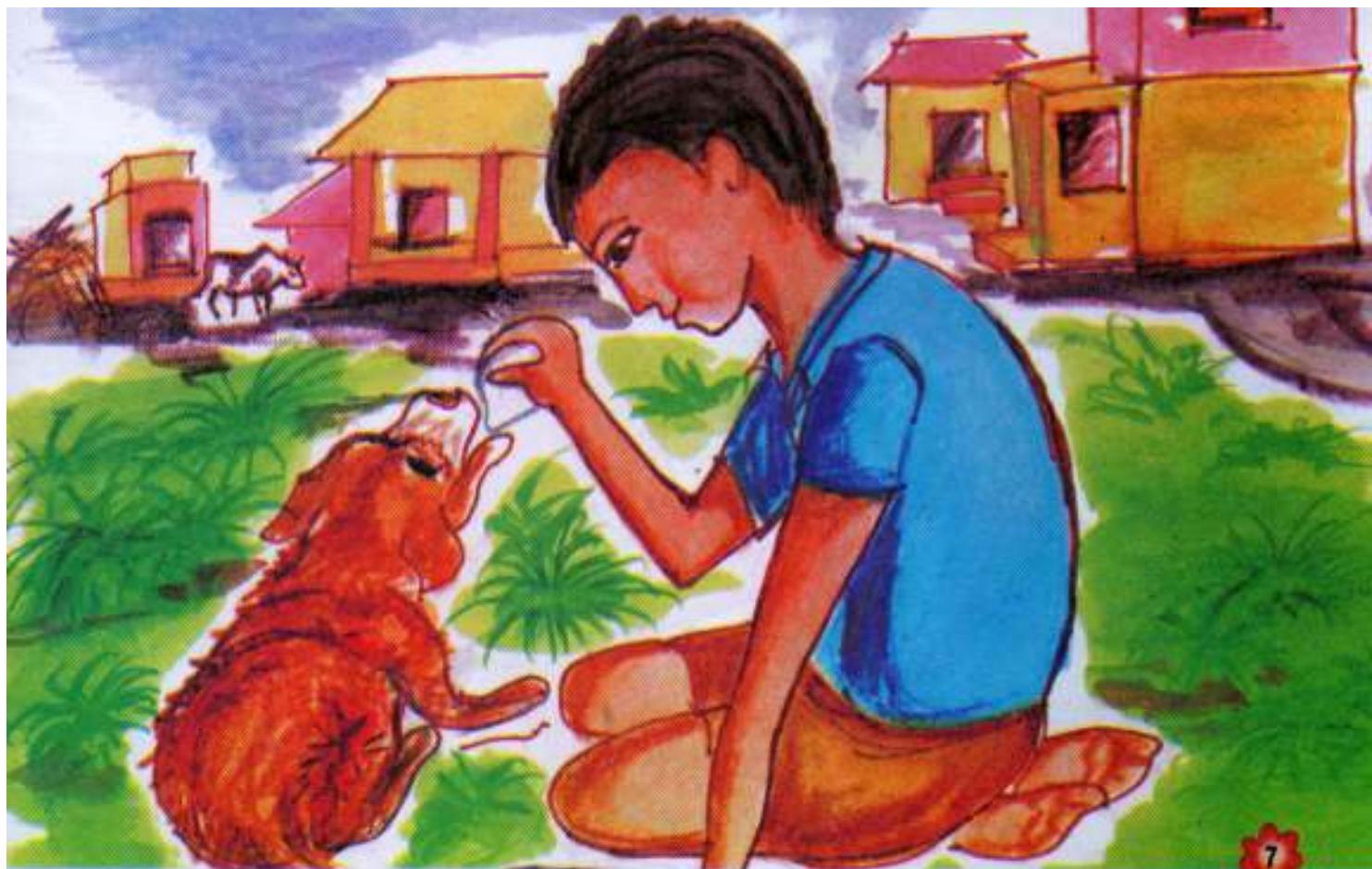
5

काजल दवाई लाने घर गई।
माधव पिल्ले को प्यार से सहलाता रहा।



6

काजल और माधव ने मिलकर पिल्ले के घाव साफ़ किए।
फिर उसके घावों पर पट्टी बाँधी।



माधव पिल्ले के लिए घर से थोड़ा दूध लाया।
उसने पिल्ले को रुई से धीरे-धीरे दूध पिलाया।



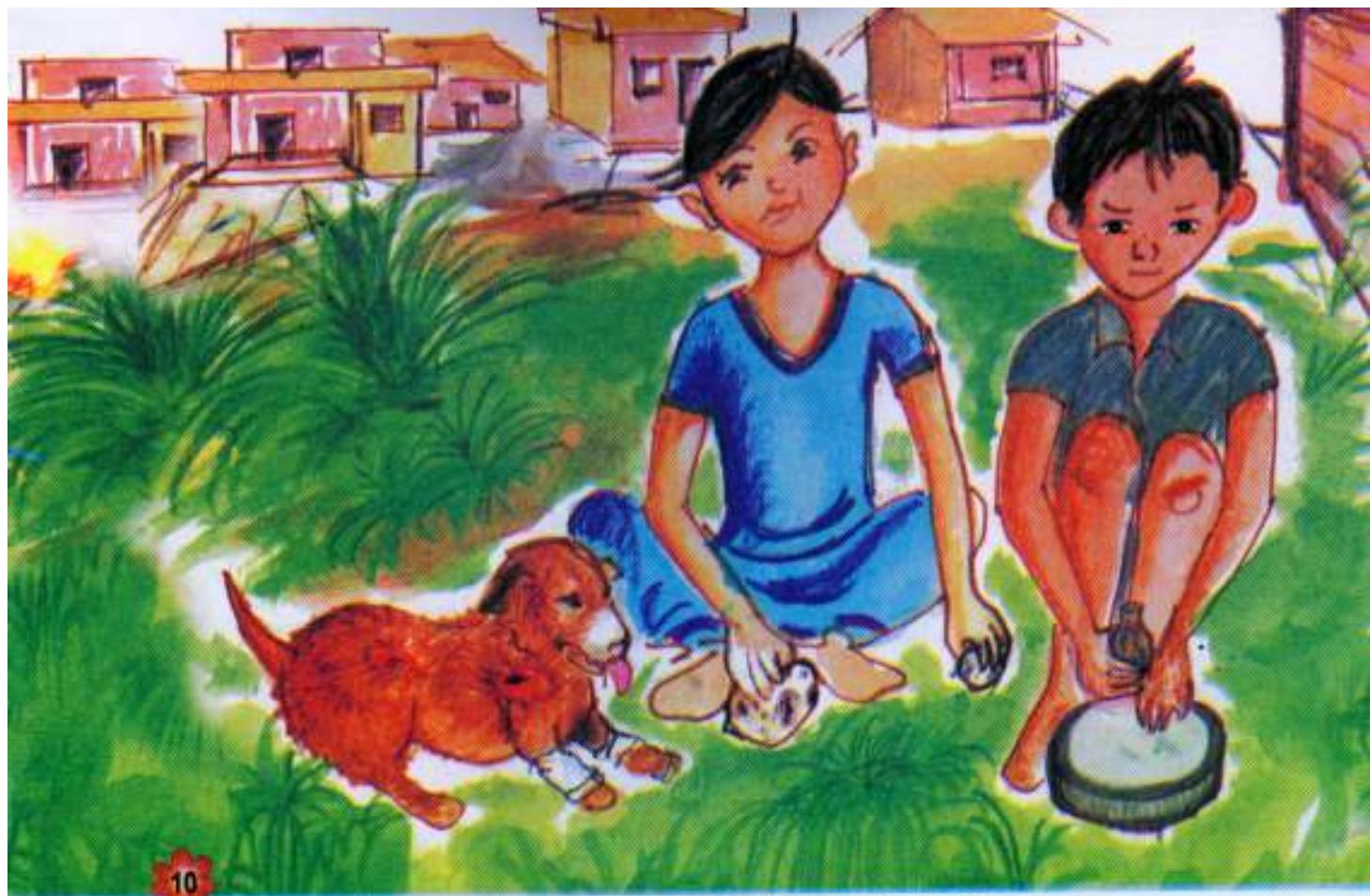
8

काजल और माधव रोज़ पिल्ले को देखने जाने लगे।
उन्होंने उसका नाम मोनी रख दिया।



9

काजल रोज़ मोनी के लिए एक रोटी बनवाती थी।
माधव रोज़ मोनी को अपने गिलास में से दूध देता था।



10

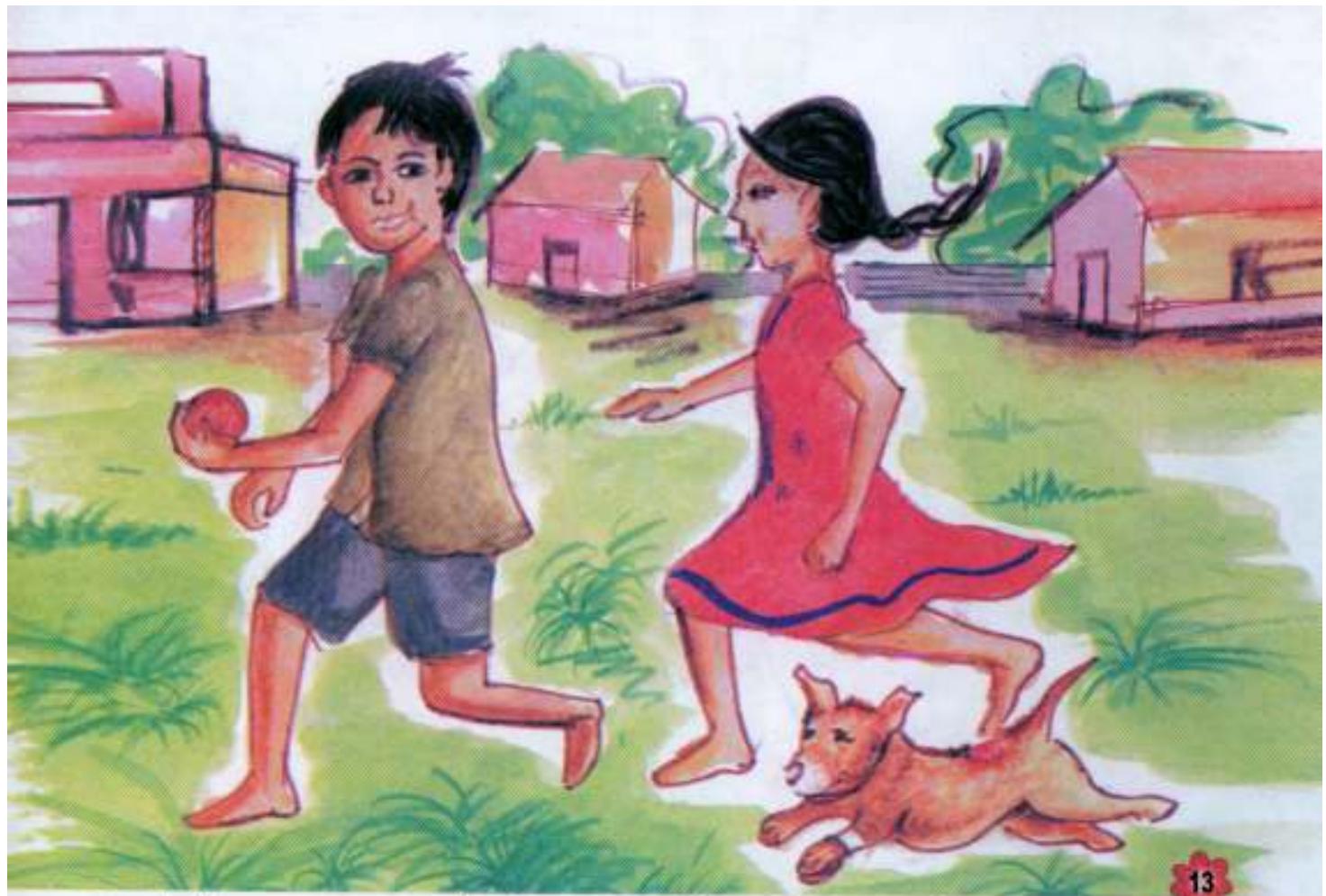
मोनी अब ठीक होने लगी थी।
वह खड़ी होकर खुद दूध पीने लगी।



दोनों मिलकर मोनी की पट्टी हर दूसरे दिन बदलते थे।
काजल और माधव उसके घाव भी साफ़ करते थे।



मोनी अब काफी ठीक हो गई थी।
वह दौड़ने-भागने लगी थी।



13

मोनी काजल और माधव के पीछे-पीछे भागती थी।
वह उनके साथ खेलती थी।



14

माधव नीचे बैठता तो मोनी उसकी गोदी में चढ़ जाती।
मोनी को काजल और माधव की गोदी बड़ी पसंद थी।



15

मोनी ने उनके घर का रास्ता भी देख लिया था।
मोनी खुद ही काजल और माधव से मिलने आ जाती थी।



16

मोनी अब काजल और माधव की दोस्त बन गई थी।
वह उनको स्कूल छोड़ने भी जाती थी।



नव शिक्षा अभियान

नव यहें नव बढें



2069



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पढ़ना है समझना

चिमटी का फूल



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्णय समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विभास, मुकेश मालवीय, गण्डिका भेगन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति चर्मा, मारिका बिश्वास,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लालिका गुप्ता

चित्रांकन – कृतिका एम. नरला

सन्धा तथा आवरण – निधि वाधवा

झी.टी.यी, ऑफिटर – अर्जन गुप्ता, नीलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संस्कृत निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक ग्रौवागिको संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. बिश्वास, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर यमजन्म जार्मा, विभागाध्यक्ष, याचा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर यशवत् याथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय सहायका समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महाराष्ट्रा याची अत्यरिक्तीय हिंदी विभागीयशास्त्रालय, याची; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जीविया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्णवें, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शशवत्तम सिन्हा, सीई.ओ., अर्थ.एन. एवं एक.एस., मुंबई; सुधी नुकहत हसन, निदेशक, नेशनल कुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिग्गज, जगपुर।

६० जी.एस.एम. पेपर प्रमुखित

प्रकाशन विभाग में संचिव, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली ११००१६ द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिटिंग प्रेस, दो-२८, इंडिस्ट्रियल परिषय, सहर-ए-मधुग २८१००४ द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-मैट)

978-81-7450-871-3

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला फहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के बीके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की शुश्री के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को संज्ञानीय की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यवर्चय के हरेक क्षेत्र में सहानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

शत्रुघ्निकार मुद्रित

प्रकाशक को पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को ज्ञापना लगा होनेवाली नियमों, नियमों, फॉलोअप्स विकार्ड अथवा किसी अन्य मिशन से पुनः प्रयोग कर्त्तव्य होना उसका संग्रहण अवका प्रसारण चर्चित है।

एन.सी.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.आर.टी. कैप्स, श्री अरविंद याची, नई दिल्ली ११० ०१६ फोन : ०११-२६५६२३१६
- १०८, १०९ नील योद, हैंडी प्राइवेटेल, होमसेटेज, वाराणसी ३१० ००३ फोन : ०५२-२६७२५३४०
- नवबीजन द्वारा भवन, हाफकर नवबीजन, जलमदाबाद ३८० ०१४ फोन : ०७९-२७५४०४४६
- श्री.इन्द्रपुरी, कैप्स, निकट: भनकल सम. स्ट्रीप एनीटी, कोलकाता ७०० ११४ फोन : ०३३-२५३३०४५४
- श्री.इन्द्रपुरी कैप्स, निकट, युवासाई ७८१ ०२१ फोन : ०३६१-२६७४८६९

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पौ. गजलकुमार

मुख्य संपादक : श्वेता उपाधी

मुख्य उपाधन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य अध्यक्ष प्रबन्धक : गौतम नारायण

चिमटी का फूल



काजल



तितली



सोफिया



2

एक दिन काजल बगीचे में गई।
बगीचे में बहुत सारी तितलियाँ थीं।



3

तितलियाँ फूलों पर मंडरा रही थीं।
वे फूलों का रस पी रही थीं।



4

काजल सबसे बड़ी तितली के पीछे-पीछे भागी।
उस तितली के पंख नीले, पीले और लाल रंग के थे।



तितली उड़कर गुलाब के फूल पर बैठ गई।
काजल उसके पीछे भागी।



6

तितली उड़कर गेंदे के फूल पर बैठ गई।
काजल उसके पीछे भागी।



7

तितली उड़कर चमेली के फूल पर बैठ गई।
काजल उसके पीछे भागी।



तितली उड़कर सदाबहार के फूल पर बैठ गई।
काजल उसके पीछे भागी।



9

तितली उड़कर सूरजमुखी के फूल पर बैठ गई।
काजल उसके पीछे भागी।



10

सोफिया भी बाग में थी।
उसने बालों में फूलवाली चिमटी लगायी हुई थी।



11

चिमटी का फूल गुलाबी रंग का था।
फूल के नीचे हरी पत्तियाँ भी थीं।



12

तितली उड़कर सोफिया के बालों की चिमटी पर बैठ गई।
तितली उसको असली फूल समझ रही थी।



13

तितली उड़ गई तो काजल ने सोफ़िया से चिमटी ले ली।
उसने अपने बालों में वह चिमटी लगा ली।



14

काजल चिमटी लगा कर वहीं बैठ गई।
वह चुपचाप बिना हिले-डुले बैठी रही।



15

काजल तितली का इंतज़ार करती रही।
काजल बैठी-बैठी इंतज़ार करती रही।



16

अचानक उसके पास बहुत सारी तितलियाँ आ गईं।
एक तितली उसकी चिमटी पर भी बैठ गई।



2070



₹.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-पैट)

978-81-7450-871-3

जीत की पीपड़ी



पढ़ना है समझना



प्रक्षम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला विभाग समिति

कचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका चंशिष्ठ,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, मुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लिखिका गुप्ता

विप्रांकन - निधि वाधवा

सज्जा तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.टी.पी., ऑफिसर - अर्जन गुण, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रमेश कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणिकी भवन, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. चंशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रार्थक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मनुजा माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग हायरेन्सेट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, गहाना गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदौ विश्वविद्यालय, चंडीगढ़; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वीनद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शक्तम सिन्हा, सीई.ओ., आईएल. एवं एक.एस., भूवर्ष; सुमी नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित भनकर, निदेशक, दिग्ंग, जगन्नाथ।

30 जून 2008, एपर पर मुद्रित

ज्ञापन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी वार्ष, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा एकज ग्रिटिंग ड्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल परिषद, साइट-ए, मुमुक्षु 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-872-0

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथाओं सहस्रारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोमांच की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार मुद्रित

प्रकाशक की पूर्वज्ञानी के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन तथा इलेक्ट्रॉनिकी, यांत्रीय, फोटोप्रिलिमिपि, रिफल्फिंग अथवा किसी अन्य विधि से पूँँ प्रयोग ज्ञापन द्वारा उल्लंघन अथवा प्रसारण की जाती है।

एस.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के क्रमांक

- एस.सी.ई.आर.टी. कैपा, श्री अधिकारी वार्ष, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 105, 100 बीट एड, हैंडे एपस्टोलन, रामलीला, नई दिल्ली 110 085 फोन : 010-26725740
- नवीनीय इट बक्स, नवीनीय बक्स, नवीनीय बक्स, नवीनीय बक्स 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.इलू.सी. बैप्स, निकट: पालकल बन 621 रोड, कॉलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.इलू.सी. कामोदी, कामोदी, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2624869

प्रकाशन महत्वोंग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री रामकृष्णराम, निवास उपलक्ष्मी : श्रीमति रमेश चंशिष्ठ

मुख्य उल्लंघन अधिकारी : श्रीमति रमेश चंशिष्ठ

जीत की पीपनी



जीत



बबली



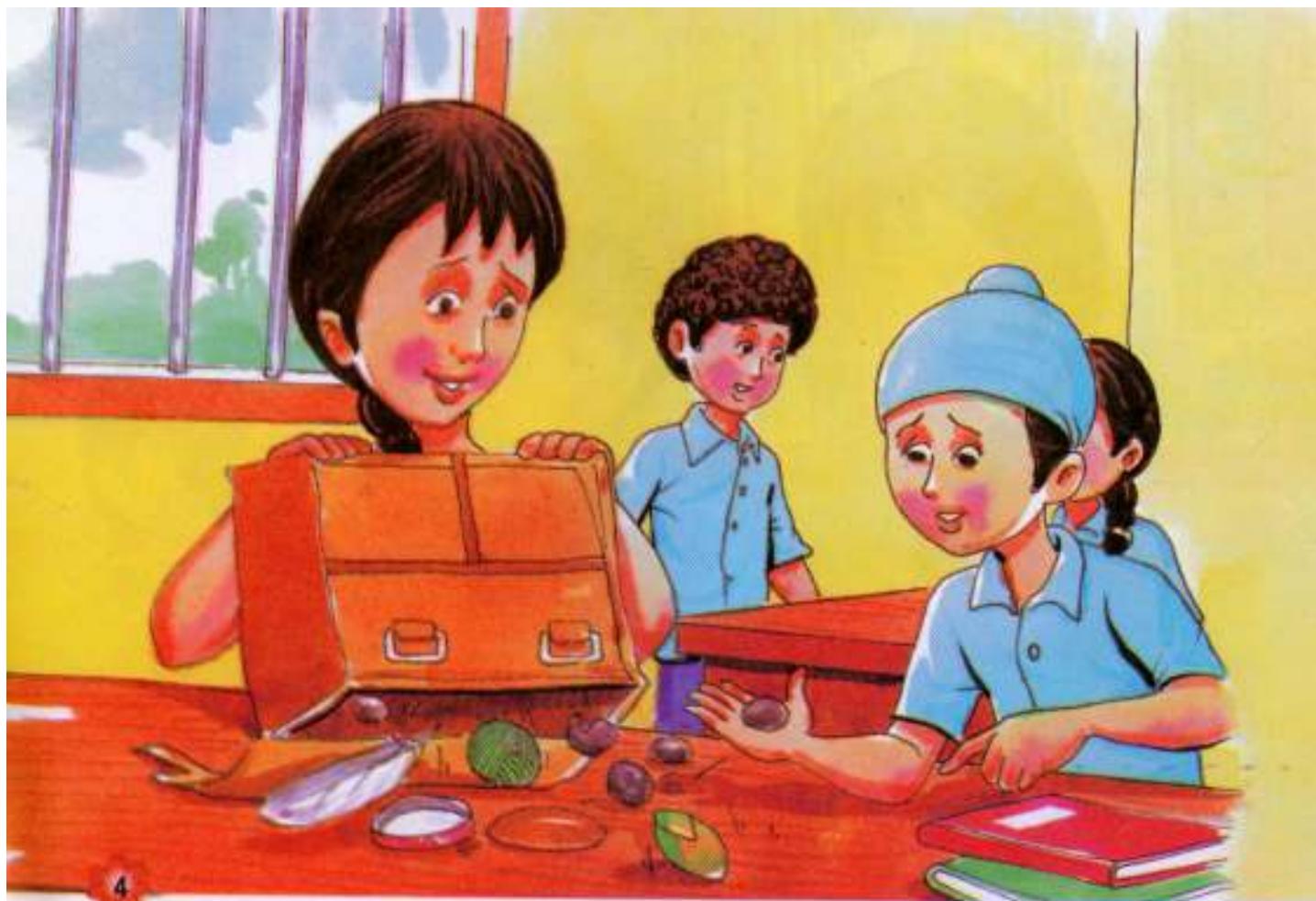
2

एक दिन जीत की पेंसिल कहीं खो गई।
उसने अपनी पेंसिल हर जगह ढूँढ़ी।



3

जीत ने पेंसिल अपने बस्ते में ढूँढ़ी।
उसके बस्ते में बहुत सारा सामान था।



4

बबली ने जीत का बस्ता उलट दिया।
उसमें से गिल्ली, पंख, धागे, ढक्कन और पत्थर गिर पड़े।



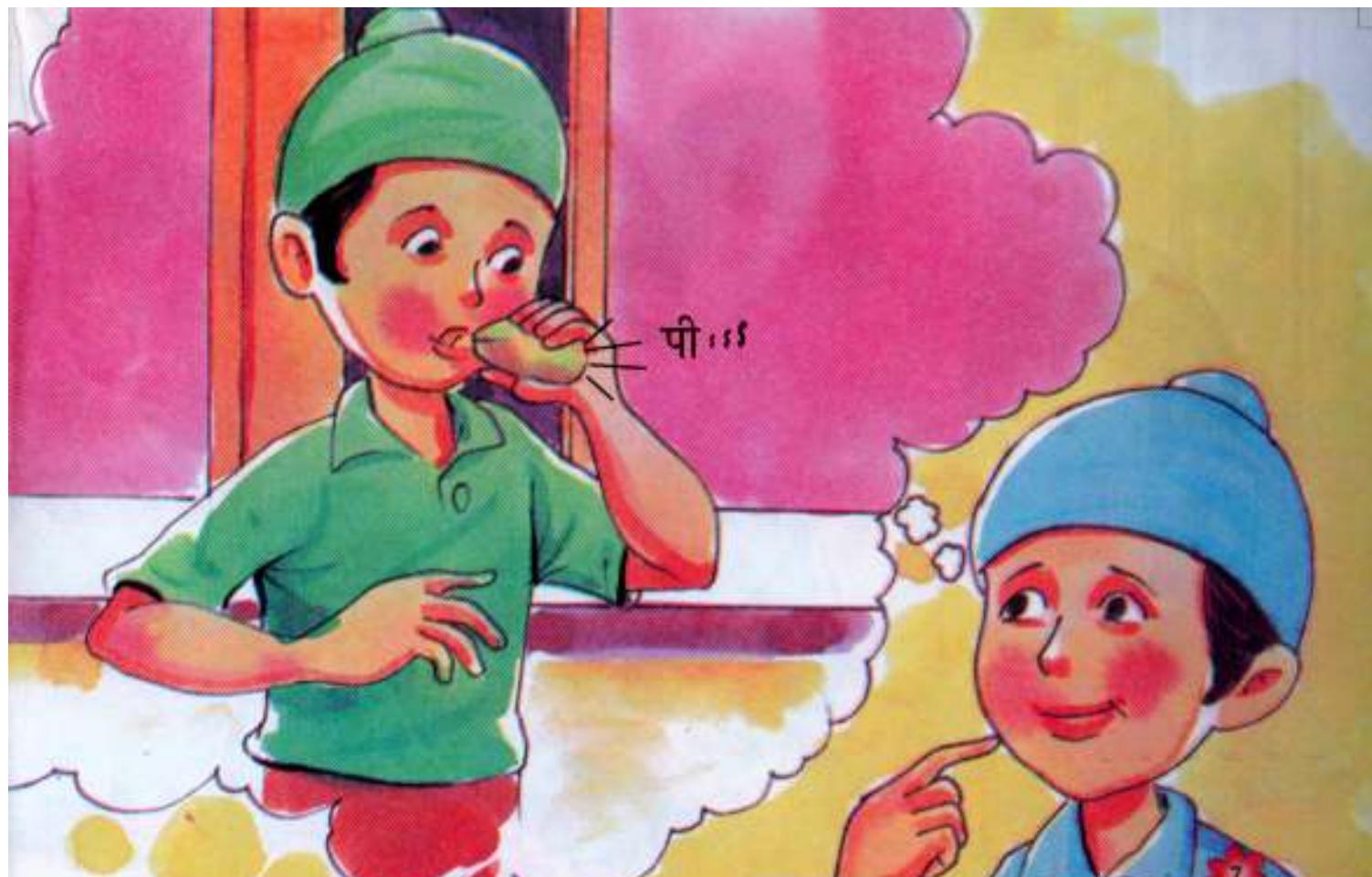
5

जीत के बस्ते में से और कई चीजें निकलीं।
बबली ने आम की एक गुठली उठा ली।



6

समीर आम की गुठली को देखने लगा।
जीत ने बताया कि वह पीपनी है।



जीत ने आम की गुठली को घिसकर पीपनी बनाई थी।
पीपनी से बहुत ज़ोर की आवाज़ निकलती थी।



8

जीत ने पीपनी बजाने को कहा।
बबली ने ज़ोर से पीपनी बजाई।



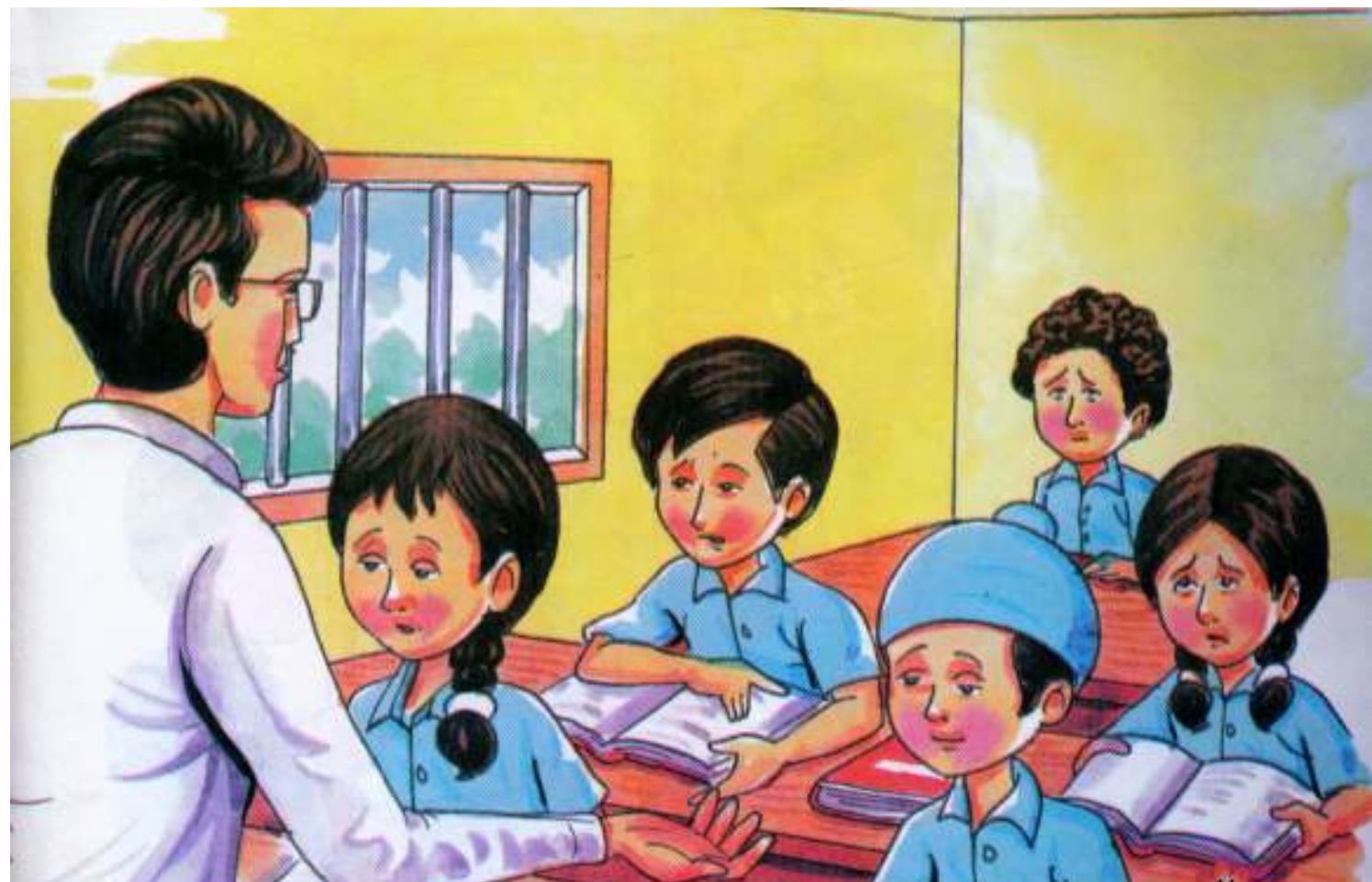
9

इतने में मास्टर जी आ गए।
उन्होंने पीपनी की आवाज़ सुन ली थी।



10

सारे बच्चे अपनी जगह पर वापिस बैठ गए।
सबने अपनी-अपनी किताब निकाल ली।



11

मास्टर जी ने पूछा कि आवाज़ कौन कर रहा है।
सब चुप रहे।



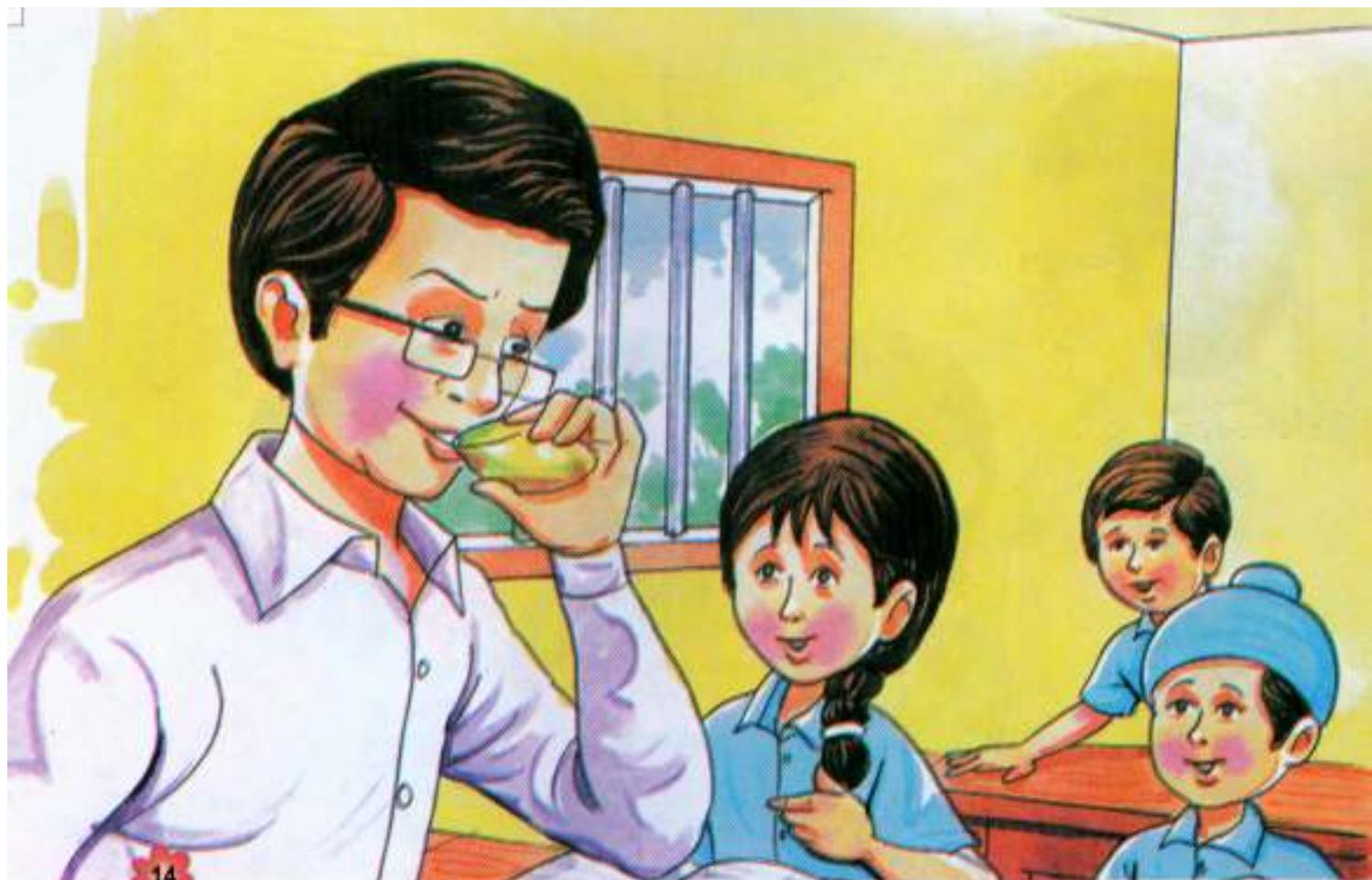
12

मास्टर जी ने दुबारा पूछा।
बबली ने बता दिया कि जीत पीपनी लाया था।



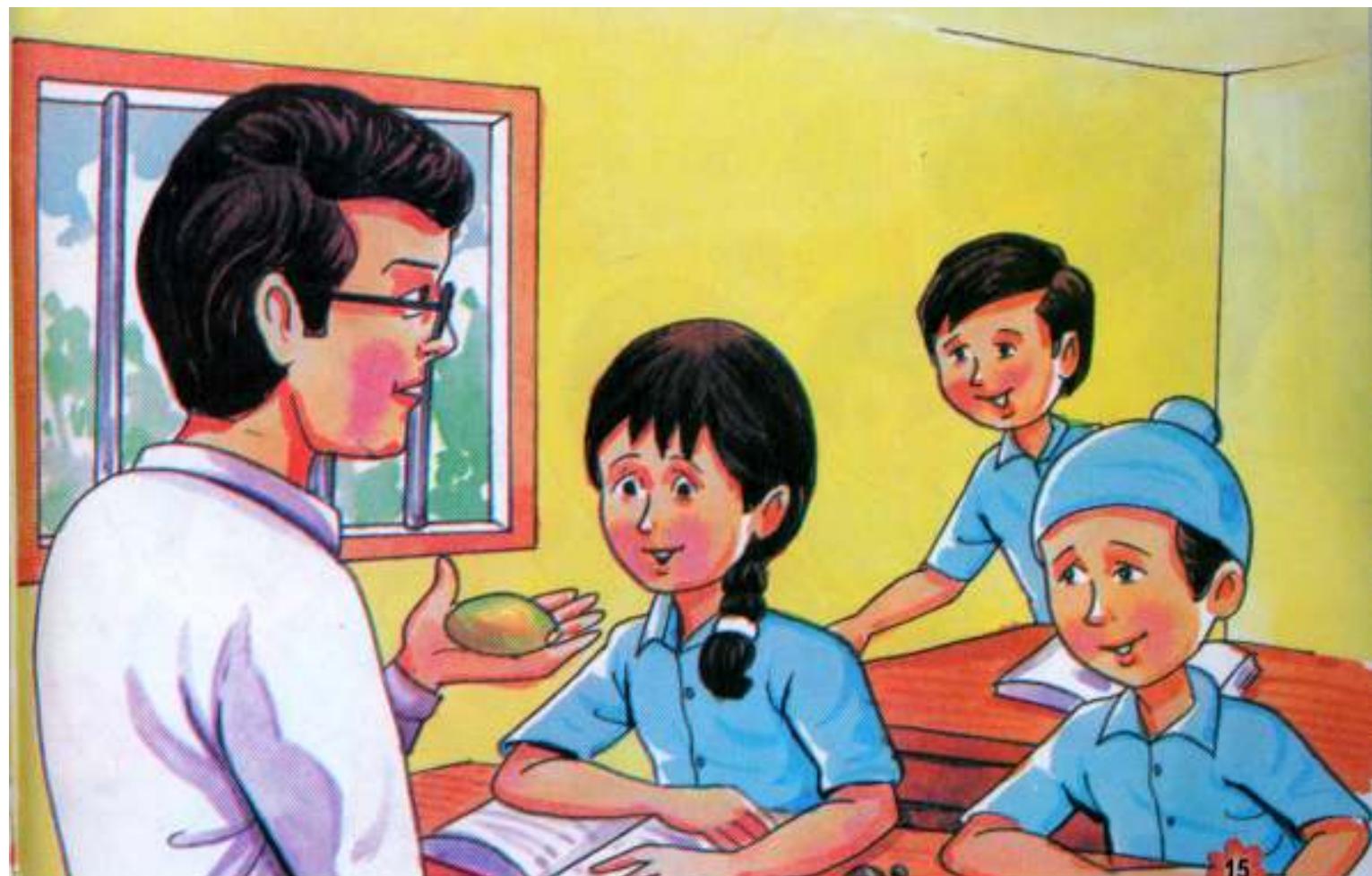
13

मास्टर जी ने पीपनी माँगी।
बबली ने डरते-डरते पीपनी मास्टर जी को दे दी।



14

मास्टर जी ने पीपनी बजाने की कोशिश की।
पीपनी बजी ही नहीं।



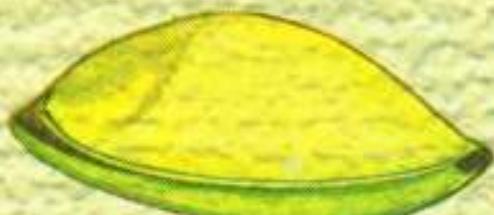
15

मास्टर जी बोले कि कोई बजाकर दिखाओ।
उन्होंने पीपनी देते हुए हाथ बढ़ाया।



16

बच्चे पीपनी बजाने के लिए मास्टर जी की तरफ़ दौड़े।
हम बजाएँगे -हम बजाएँगे -हम बजाएँगे।



2071



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरेली-सीट)

978-81-7450-872-0



पढ़ना है समझना

आठट



प्रश्न संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 101 NSV

पुस्तकमाला विधायन समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश भालवीय,

गधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति चन्द्र, सारिका विशाल

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुरजील शुक्ल

सरस्य-समव्यक्त - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि बाख्या

मन्जु तदा आवरण - निधि बाख्या

डी.टी.पी., अपीलर - अर्चना गुप्ता, लीला चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,

नई दिल्ली; प्रोफेसर बसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणिकी

मंस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. ए.

विशिष्ट, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण

परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर यमजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक

अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर भवुला भाषुर, अध्यक्ष, रीडिंग

डेवलपमेंट सेल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय संबीक्षा समिति

श्री अशोक जलापेंटी, अभ्यर्ता, पूर्व कूलपती, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विद्या

विश्वविद्यालय, वार्ष; प्रोफेसर फरीदा, अल्लूसला, स्कान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन

विभाग, जामिया विलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वनंद, रीडर, शिवि विभाग,

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम सिन्हा, सी.ई.सी., अई.एस. एवं एस.एस.

सूर्य; सूर्य नुक़हत हसन, निदेशक, नेशनल सुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री चंद्रित धनकर,

निदेशक, दिग्ंगत, जयपुर।

१० और एस.एस.एस. पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अविनेश मार्ग,

नई दिल्ली ११००१६ द्वारा प्रकाशित गवर्नर पक्का विलिं प्रेस, बी-२४, इंडिस्ट्रियल एरिया, माइट-ए.

मुद्रा २६१००४ द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-गंड)

978-81-7450-873-7

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कधावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को संज्ञानीय की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' को सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित है। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पादव्यवर्या के होरेक शंक्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

कालाक को लूपज्युति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को खाली तथा उल्लेखनीय, वर्णनी, फोटोप्रिलिंग, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण नहीं है।

कृति के लिए ज्ञापन विभाग के कार्रवाई

- नवीनी भारती कैम्पस, श्री अविनेश मार्ग, नई दिल्ली ११० ०१६ फोन : ०११-२६६२७०८
- १०८, ११८ गोपी नगर, संस्कृत प्रसारालय, लालकोटी, नवाखाली III स्तर, नेपाल ५७० ०६५ फोन : ०१०-२६७२५७४०
- नवीनी भारती कैम्पस, विभाग विश्वविद्यालय, नेपालकोट, नेपाल ५७० ०१४ फोन : ०१२-२३३४१४५६
- श्री इन्द्रधनु भारती, विभाग विश्वविद्यालय, नेपालकोट नेपाल ५७० ०१४ फोन : ०१३-२५३३४५४
- संस्कृत भारती, विभाग विश्वविद्यालय, पुल्कोटी ७५१ ६२१ फोन : ०१६-२६७४८०९

प्रकाशन महायोग

अभ्यर्ता, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार

मुद्रा संस्थापक : श्री लला उपलु

मुद्रा उपलु अधिकारी : श्री कुमा

मुद्रा उपलु अधिकारी : श्री लला उपलु

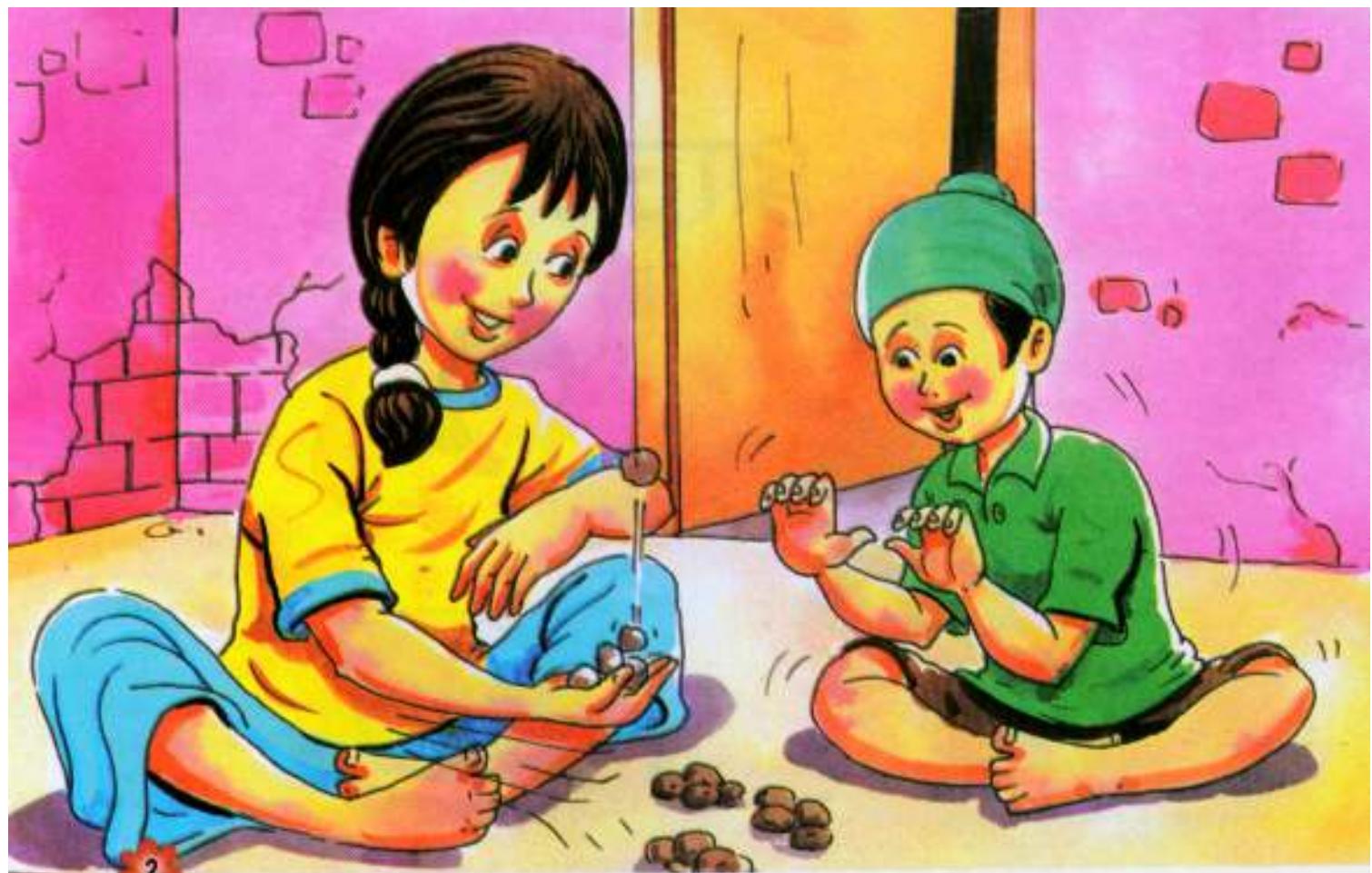
आउट



जीत

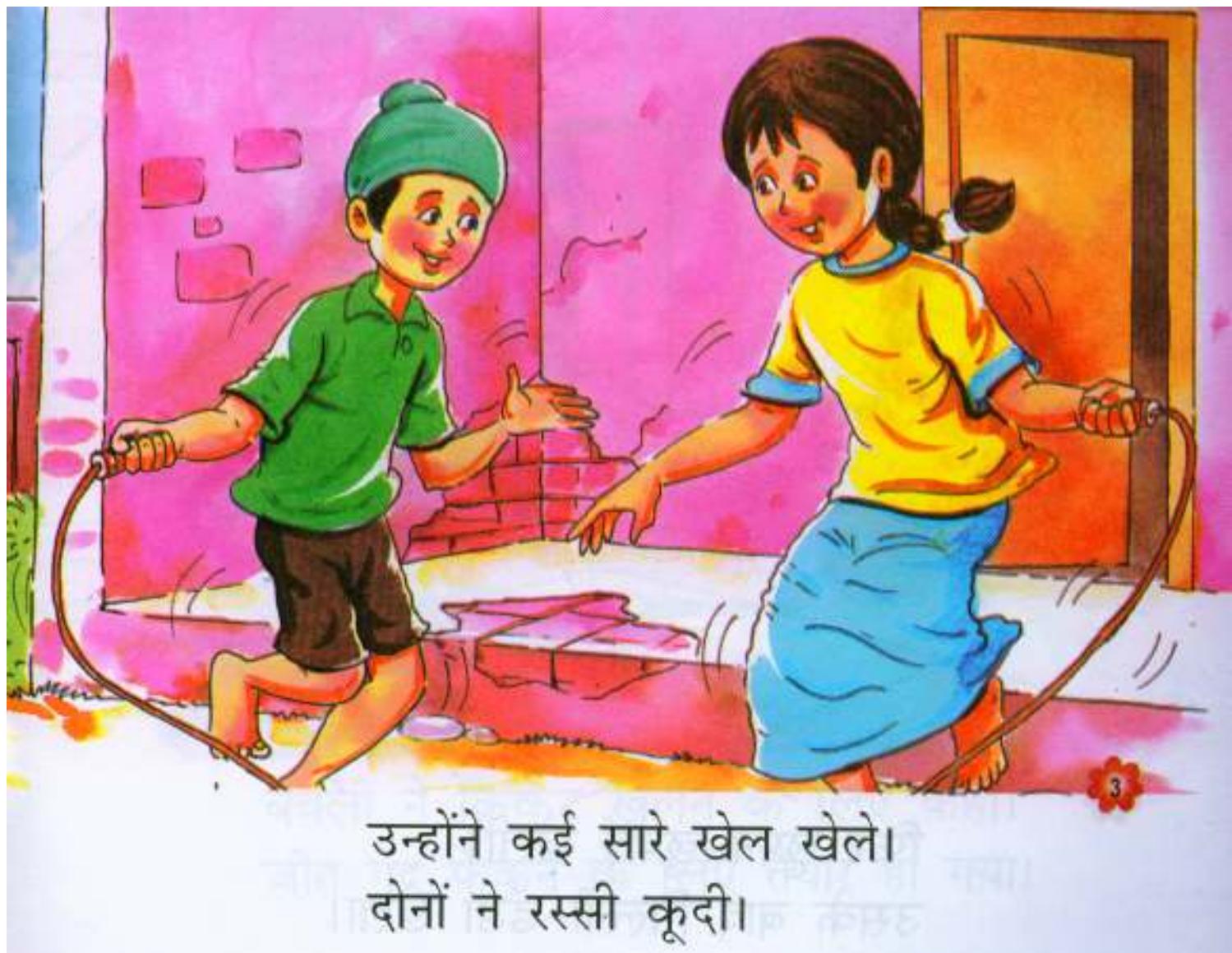


बबली

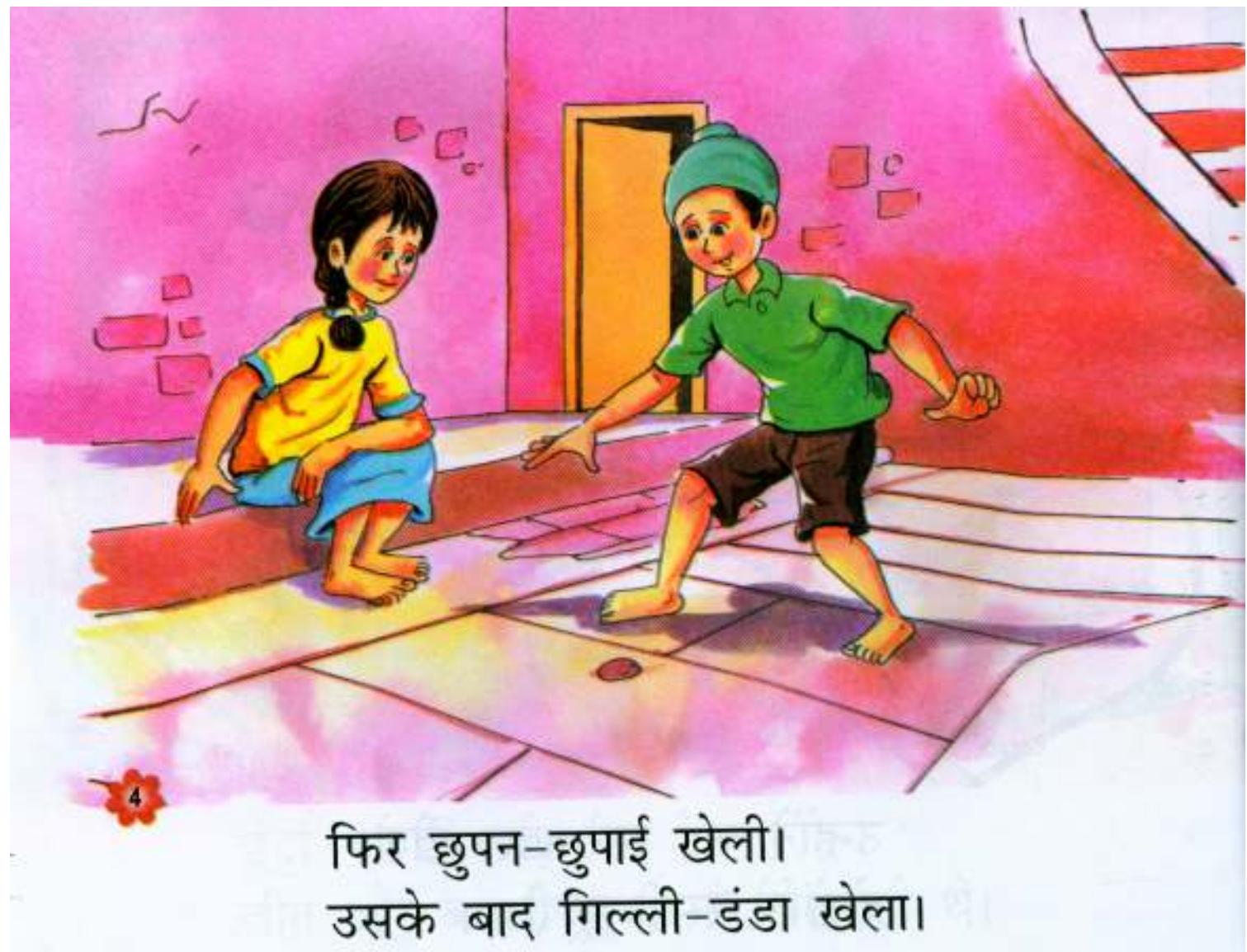


2

छुट्टी का दिन था।
जीत और बबली सुबह से खेल रहे थे।



उन्होंने कई सारे खेल खेले।
दोनों ने रस्सी कूदी।



4

फिर छुपन-छुपाई खेली।
उसके बाद गिल्ली-डंडा खेला।



बबली ने क्रिकेट खेलने के लिए कहा।
जीत गेंद फेंकने के लिए तैयार हो गया।



6

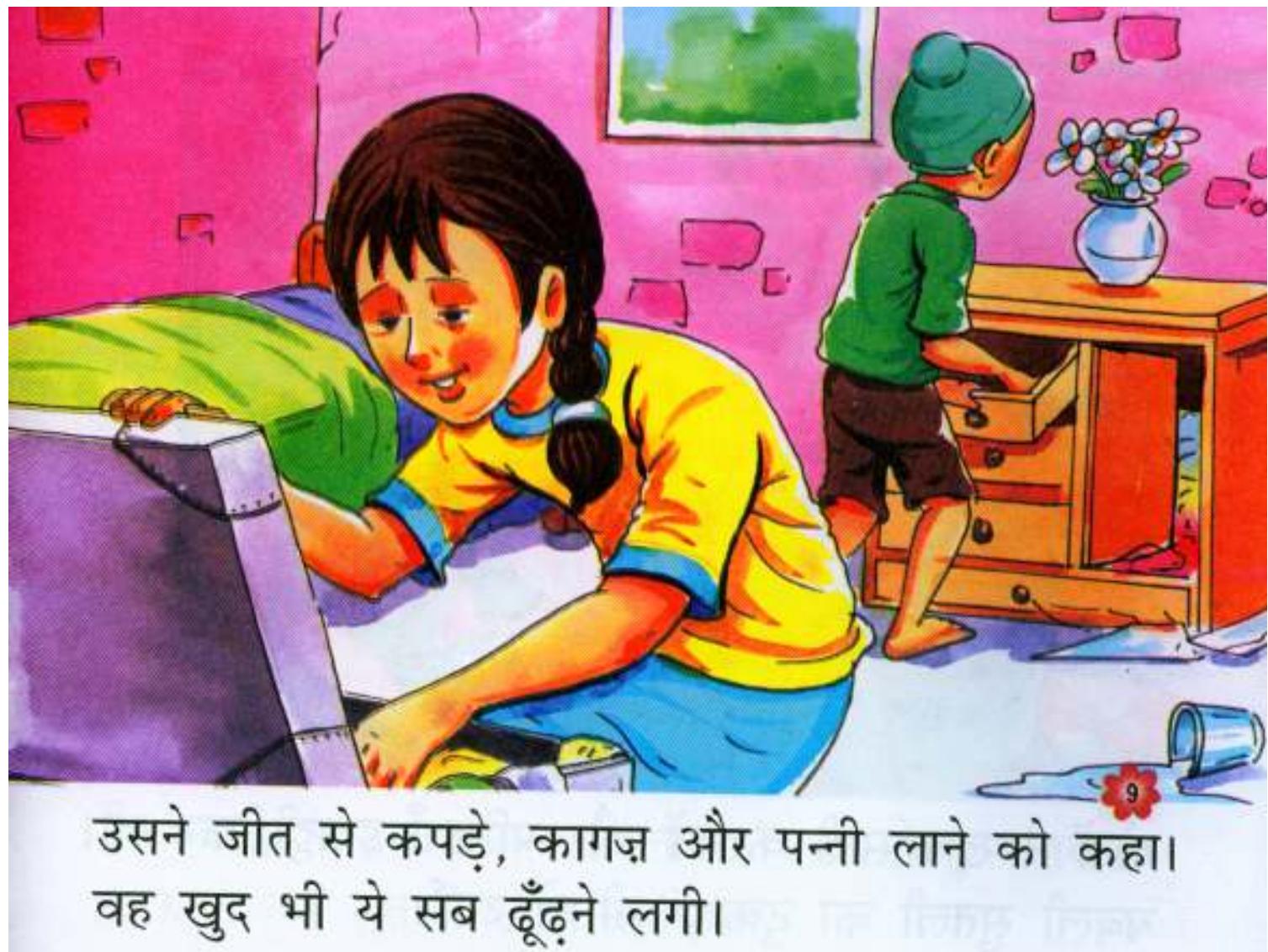
जीत ने गेंद फेंकी।
बबली ने ज़ोर से बल्ला घुमाया।



गेंद मोहित के आँगन में चली गई।
मोहित के घर ताला लगा हुआ था।



जीत और बबली का खेल रुक गया।
बबली बोली कि उसे गेंद बनानी आती है।



उसने जीत से कपड़े, कागज़ और पन्नी लाने को कहा।
वह खुद भी ये सब ढूँढ़ने लगी।



10 दोनों ने खूब सारी कतरनें और पन्नियाँ इकट्ठी कर लीं।
बबली सुतली का टुकड़ा भी ले आई।



बबली ने उन सबको मिलाकर एक गोला बनाया।
गोले को सुतली से कस दिया।



12

दोनों की पसंद की गेंद बन गई।
खेल फिर से शुरू हो गया।



13

इस बार बबली ने गेंद उठाई।
जीत ने बल्ला उठाया।



बबली ने गेंद फेंकी।
जीत ने ज़ोर से बल्ला घुमाया।



15

गेंद खुलकर हवा में फैल गई।
बबली ने उछलकर एक कपड़ा पकड़ लिया।



16

बबली उछल-उछलकर आउट-आउट चिल्लाने लगी।
वह हाथ में कपड़ा लेकर आउट-आउट कहते हुए दौड़ी।



2072



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बाल्य-मौल)

978-81-7450-873-7

हमारी पतंग



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पर्याप्तिशः दिसंबर 2009 पैथ 1931

© गांधीय सैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD-19T NSV

प्रस्तावमाला निर्माण समिति

कचन सेठी, कण्ठ कुमार, ज्योति सेठी, तुलदुल विश्वास, मुकेश भालबीथ,
राधिका मेनन, शाहिलनी शर्मा, लक्ष्म पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,
सीमा कमरी, सोरेनिका कौशिक, मधुरील शर्मा

महारथ-मधुन्धवक्ता – ललिका गुप्ता

विश्वाकृत = कर्तव राष्ट्र

सरकार ने आयतन = विधि बाधित

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ - ਅਚੰਭਾ ਪਾਣਾ ਸਾਜ਼ਦੀ ਬਿਜਲਾ ਅਤੇ ਲੁਗਾ

प्राचीन राजा

प्रोफेसर कृष्ण चूमार, निदेशक, गार्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर यशोधा कामवर, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. विश्वास, विभागाध्यक्ष, प्रार्थक प्रिया विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजनम शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर बगुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेये, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महालया नांगी ओरंगादीय हिंदी विश्वविद्यालय, खड्डा; प्रोफेसर फरीद, अनुल्लन्ता, खान, विश्वामित्र, शैक्षिक अध्यक्ष विभाग, जमिया विलिया इस्लामिया, गिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीढ़ा, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शशेन्द्र मिहाना, सोईजो., आई.एल. एवं एफ.एस., मुर्बई; सूझी नवाहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री गेहित भनकर निदेशक, हिंदूर, ब्राह्मण।

४० जी.एम.एम. पंपर पर बांदिज

फ्रेक्षन विभाग में स्थित, गृहीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री आर्पिन्द गार्ग,
वडा विल्ली 110016 द्वारा फ्रेक्षन लगा पंकज चिंहिण प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल परिषद्, सहौल-प
मथुरा 281004 द्वारा मर्जित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरला - सेट)

978-81-7450-874-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के लिए देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की सुशोश्न के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजगार की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों परआधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रधार मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चाएँ के हरके क्षेत्र में सज्जानालयक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सार्वाधिकार सरकार

प्रकाशक को पूर्णतया लिखने वाले प्रकाशन के किसी भी अन्य को लागतना बहुत संभव नहीं। यदि एक लेखक अपनी विचारधारा अन्य लेखकों की विचारधारा से अलग होती है, तो उसका मानना अन्य लेखकों की विचारधारा से अलग होता है।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन सी ई अर टैक्सिम, जी एवेंजर मार्ग, नवी मुंबई 400 016. फोन : 021-26562708
 - 108, 100 फॉट मोड, हेल्पर व्हायटेक्न, डोल्डेने, कालांकरी III मंदिर, मांगलूरु 560 085.
फोन : 080-26725740
 - नवाबीन इन्डस्ट्रीज, बाबाम पार्किंग, अहमदाबाद 380 014. फोन : 079-27341446
 - मी.इन्डिया, कैपल, निकट: चमड़ाल बास स्टॉप चिंचटी, कोलकाता 700 114
फोन : 033-25530454
 - मी.इन्डिया, कैपल, मार्गोडी, वाराणसी 281 021. फोन : 0561-2674369

प्रकाशन संस्थान

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पौ राजाकुमार
सचिव संपादक : अवैष्टि उपन

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य व्यापार अधिकारी : रमेश कुमार

हमारी पतंग



मिली की मम्मी



मिली



2

एक दिन मिली छत पर गई।
आसमान में बहुत सारी पतंगे उड़ रही थीं।



3

मिली का मन हुआ कि वह भी पतंग उड़ाए।
वह फौरन नीचे आ गई।



मिली ने माँ से पतंग उड़ाने के लिए कहा।

अँ घर में पतंग नहीं थी।



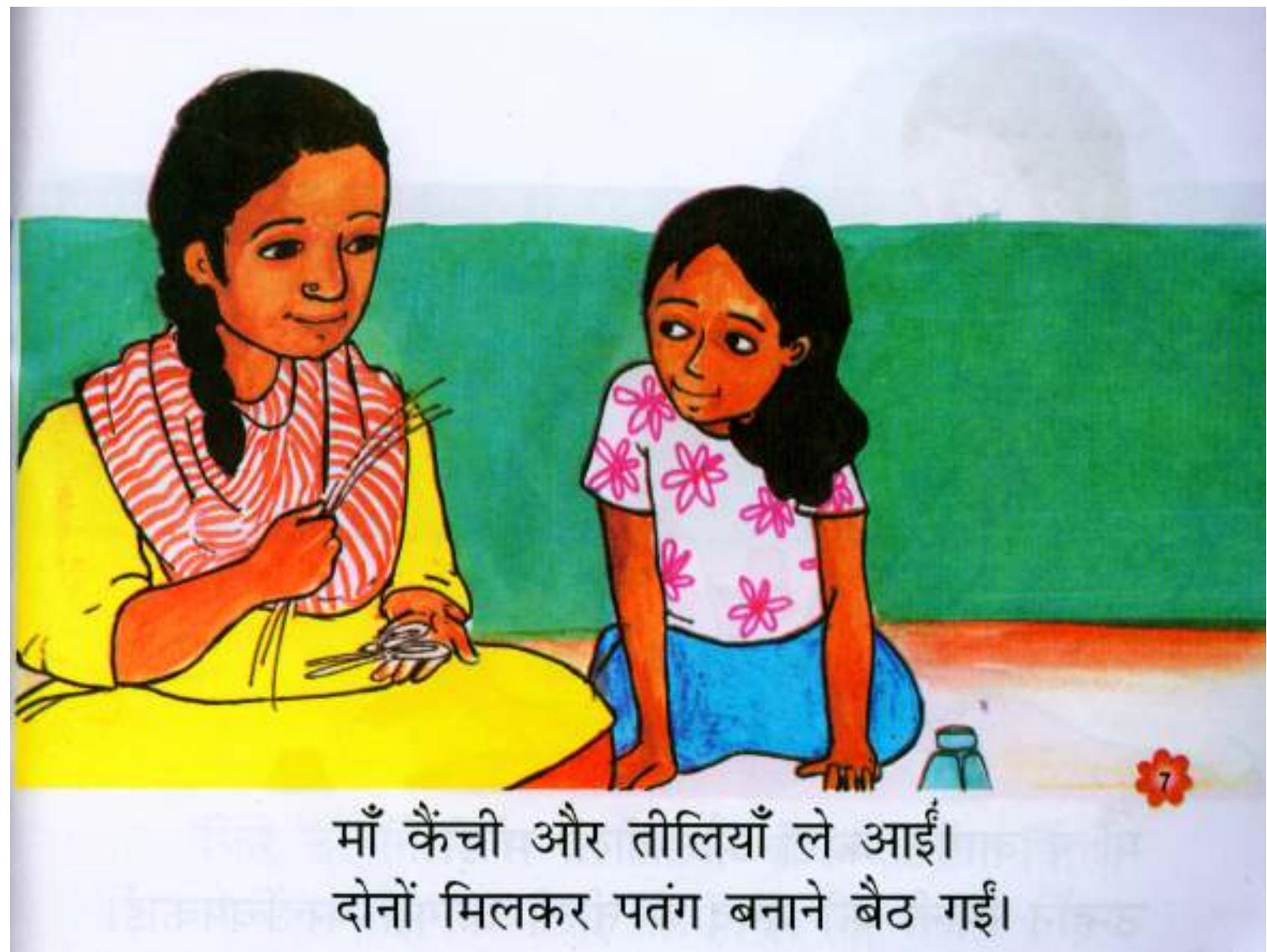
5

माँ ने कहा कि चलो पतंग बनाते हैं।
मिली यह सुनकर खुश हो गई।



6

मिली माँ के साथ पतंग बनाने लगी।
वह कागज़ और गोंद ले आई।

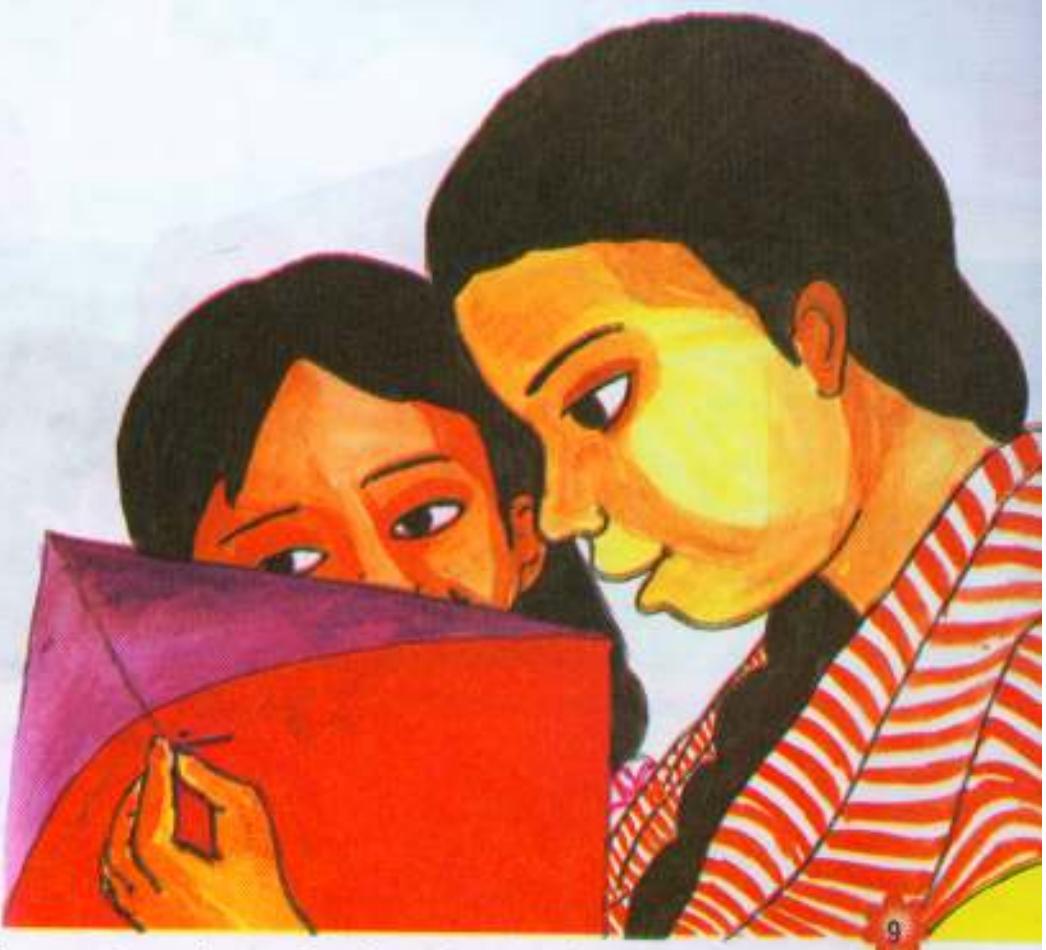


माँ कैंची और तीलियाँ ले आईं।
दोनों मिलकर पतंग बनाने बैठ गईं।



8

माँ ने कागज़ काटा और तीली मोड़ी।
उन्होंने मिली की मदद से तीली कागज़ पर चिपकाई।

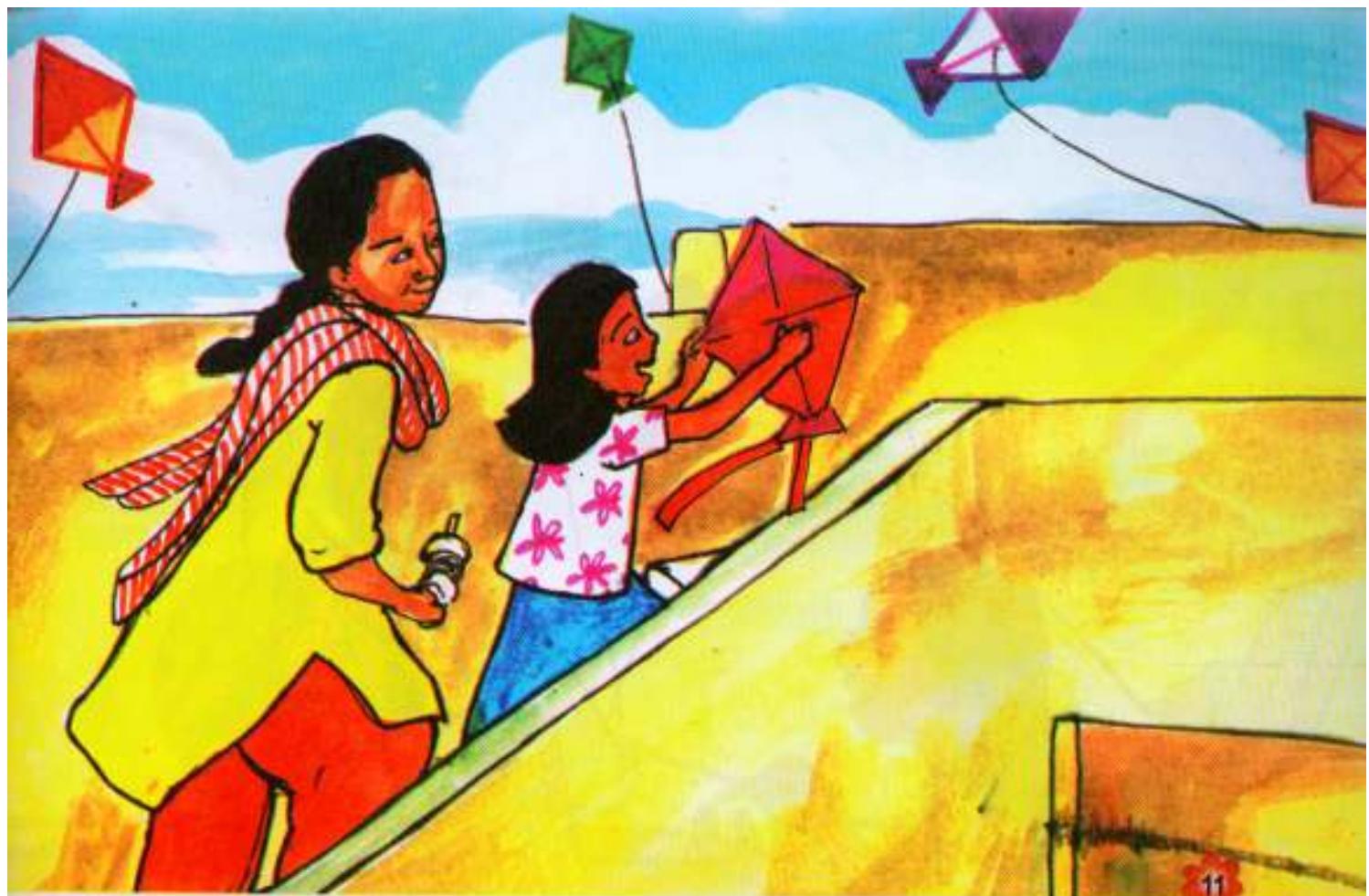


फिर उन्होंने पतंग के बीचों-बीच दो छेद किए।
ये छेद माँझे के लिए किए थे।



10

मिली ने पतंग के कोने पर अपना फीता लगा दिया।
उसने फूँक-फूँक कर गोंद सुखा दी।



दोनों छत पर पतंग उड़ाने पहुँच गई।

माँ ने छेदों में माँझा डाला।



12

माँ और मिली ने पतंग उड़ाना शुरू किया।
मिली ने चरखी पकड़ी।

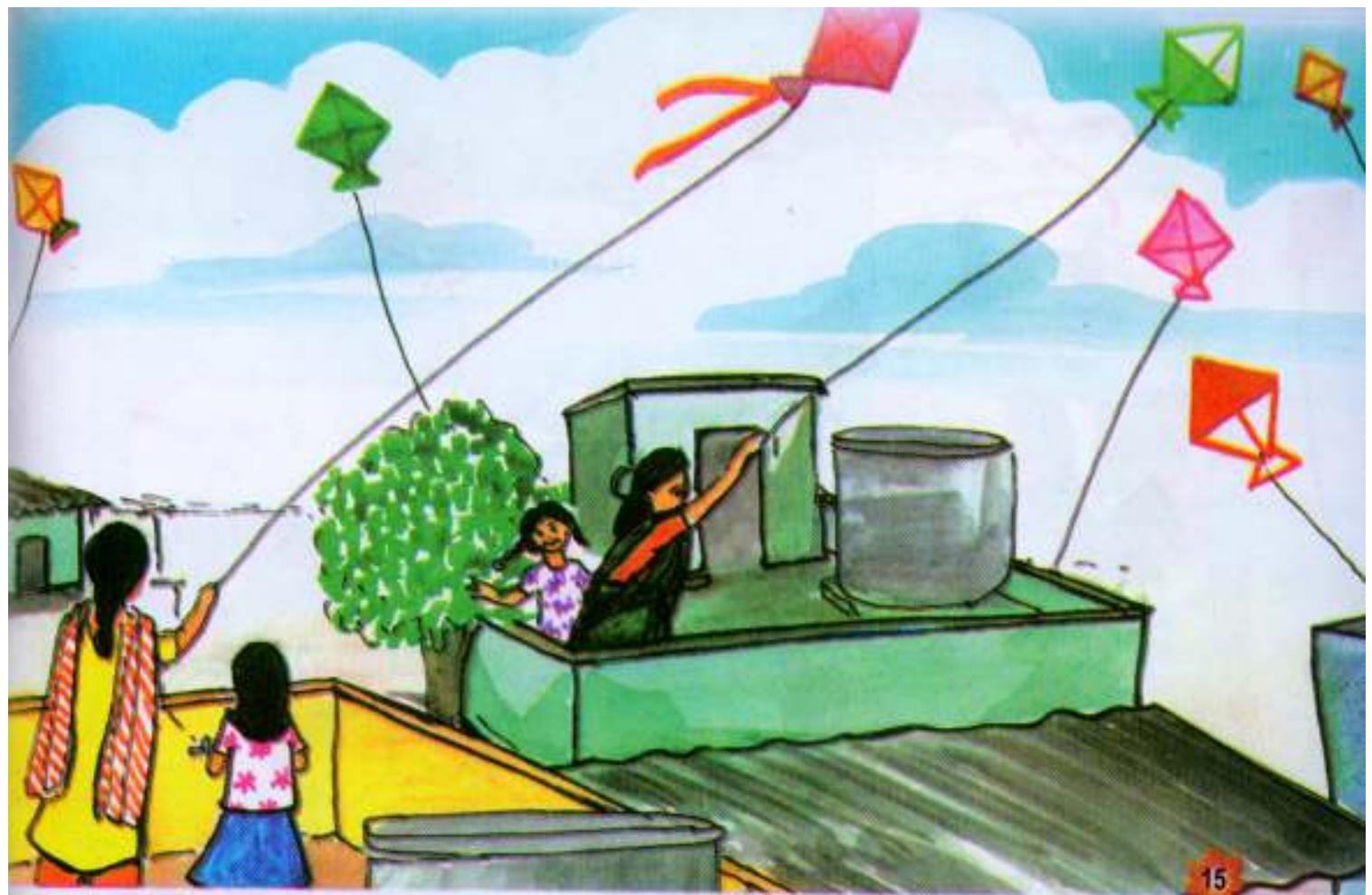


माँ ने माँझा ताना।
थोड़ी देर में पतंग आसमान में उड़ने लगी।



14

उनकी पतंग बहुत ऊपर चली गई थी।
मिली ताली बजा-बजा कर कूदने लगी।



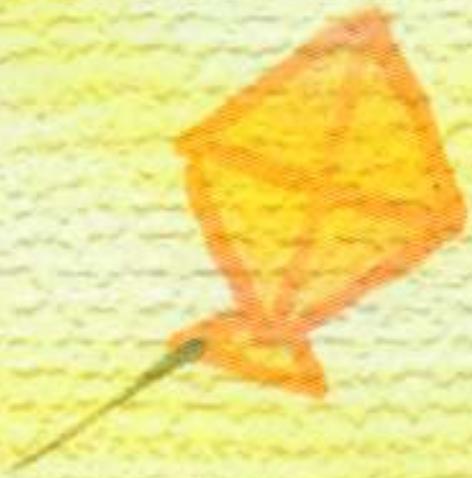
15

तोसिया भी अपनी मम्मी के साथ पतंग उड़ा रही थी।
दोनों पतंगें साथ-साथ उड़ने लगीं।



16

माँओं की पतंगें खूब ऊँची उड़ रही थीं।
तोसिया और मिली हाथ में चरखी पकड़े उछल रही थीं।



2073



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

₹.10.00

ISBN 978-81-7450-898-0 (बाला-सेट)
978-81-7450-874-4

शरबत



पहचान है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कवचन सेठी, राष्ट्रीय कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विभाग, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सरिका वार्षिक,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

संवाद्य-समन्वयक - लातिका गुप्ता

चित्रांकन - कठनक शर्मा

संज्ञा तथा आवरण - निधि खापड़ा

डी.टी.पी., ऑफिचर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निरेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुपा कामथ, संयुक्त विदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीय संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर बै. बै. वरिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामबन्ध शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला नाथर, अभ्यास, रीडिंग एंकलीपेट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक चाकोपाणी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महाराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धी; प्रोफेसर फरीदा, अमृतला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अभ्यास विभाग, जामिला मिलिया इम्नामिला, दिल्ली; डा. अपूर्णानंद, रीढ़र, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनग चिन्हा, सी.ई.ओ., आहुएल, एल.एफ.एस., मुंबई; सुशी नुस्हत ड्रग्स, निरेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रंगित धनकर, निरेशक, दिग्नर, जयपुर।

80 बी.एस.एस. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द गांग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, सहर-ए-महांग 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-875-1

बरखा द्रविक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की सुशीला के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को गोवर्धनी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगाती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ वैज्ञानिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि लोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यक्रमों के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ भिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सामाजिक शुद्धिकरण

प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को जास्त तथा इलेक्ट्रॉनिकों, मशीनों, फोटोप्रिन्टिंग, विकारींग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पूर्वानुमति द्वारा उसका नप्राप्त अवश्यक संवित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. नियम, श्री अरविन्द गांग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-24562778
- 108, 109 फोन नं. 108, नियम नियम, नियम नियम, नियम नियम 108 स्ट्री, बगूत 360 045 फोन : 086-26725740
- नियम नियम नियम नियम, नियम नियम नियम, नियम नियम 380 014 फोन : 071-27541446
- नई उत्तर सी. कैप्स, निकट, धनकर, यम सी. नियम नियम, नियम नियम 700 114 फोन : 071-25530454
- नई उत्तर सी. कैप्स, नियम नियम, नियम नियम, नियम नियम 781 021 फोन : 0361-2074869

प्रकाशन संहारण

नियम, प्रकाशन विभाग : श्री अरविन्द गांग
मुख्य उत्पादन अधिकारी : नियम
मुख्य उत्पादक : नियम

मुख्य उत्पादन अधिकारी : नियम
मुख्य उत्पादक : नियम

शरबत



तोसिया



मिली



2

एक दिन तोसिया और मिली ने शरबत बनाया।
दोनों ने पानी में लाल-लाल शरबत घोला।



3

शरबत में चीनी भी मिलाई।
उसमें खूब सारी बर्फ़ डाली।



तोसिया और मिली शरबत पीने बैठ गईं।
वे शरबत पीते-पीते बातें करने लगीं।



तोसिया हाथ हिला-हिलाकर बात कर रही थी।
उसका हाथ लगा और शरबत गिर गया।



मिली ने तोसिया को अपना आधा शरबत दे दिया।
दोनों फिर शरबत पीने लगीं।



तोसिया की नज़र गिरे हुए शरबत पर पड़ी।
उसे गिरा हुआ शरबत बादल जैसा लगा।



तोसिया ने शरबत में उँगली घुमाकर मछली बना दी।
उसने मछली की पूँछ भी बनाई।



मिली ने गिरे हुए शरबत से फूल बना दिया।
फूल के नीचे दो पत्तियाँ भी बनाईं।



तोसिया ने फूल मिटा के सूरज बना दिया।
तोसिया ने सूरज की लंबी-लंबी किरणें बनाईं।



11

फिर तोसिया ने एक नाव बनाई।
तोसिया ने नाव पर एक झंडा बनाया।



12

मिली ने उस झांडे में से एक पतंग बना दी।
तोसिया ने पतंग की लंबी डोर बनाई।



13

वह पतंग की डोर को पूरे कमरे में खींचती रही।
मिली उसके पीछे-पीछे चल रही थी।



14

तोसिया बोली कि ममता को बुलाकर लाते हैं।
उसको यह सब दिखाएँगे।



15

तोसिया और मिली ममता के साथ लौटीं।
शरबत की पतंग और डोर तो गायब थीं।



16

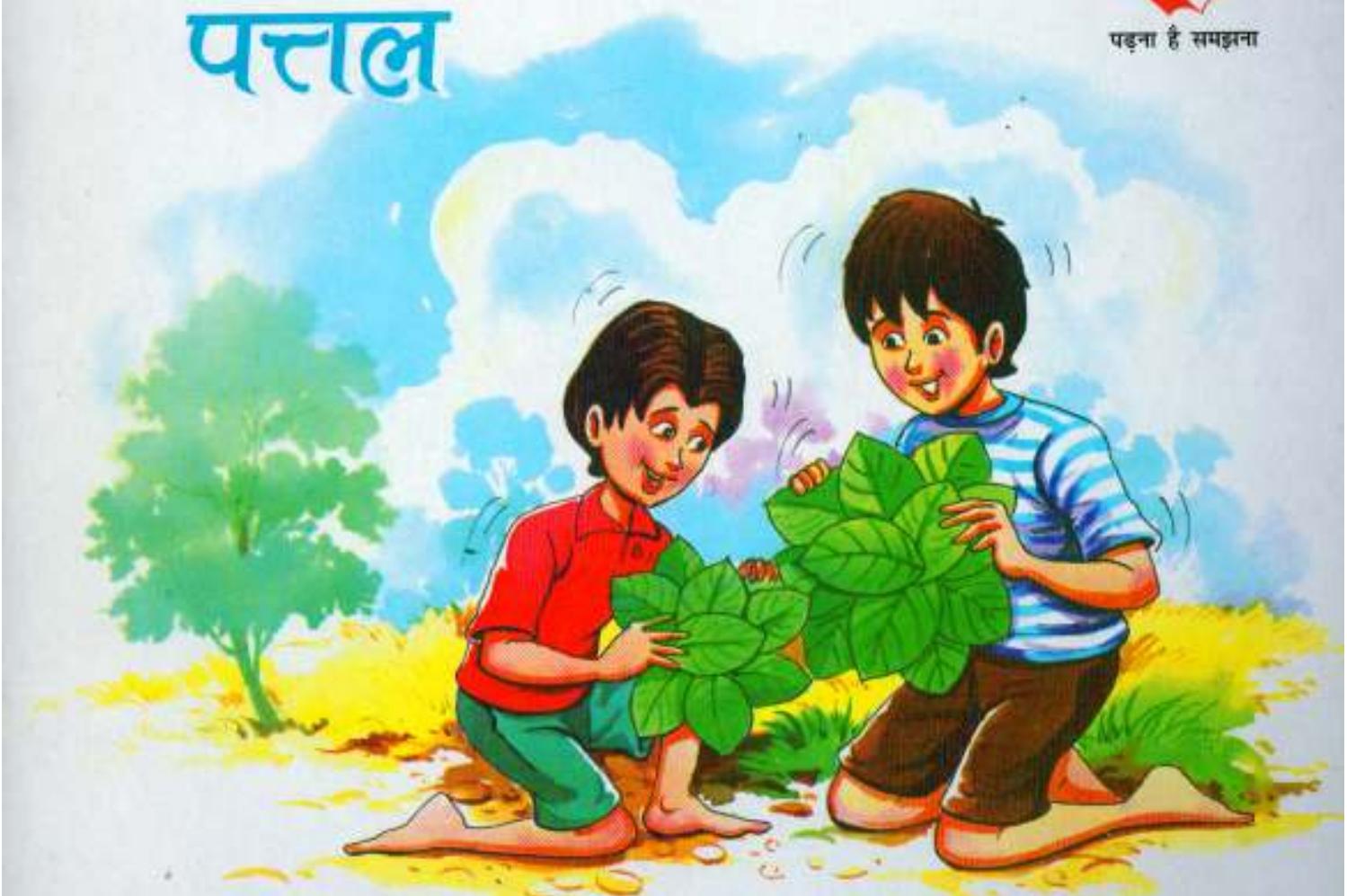
उन्होंने देखा कि मुनमुन सारा शरबत चट कर चुकी थी।
तोसिया और मिली जोर-जोर से हँसने लगीं।





पहना है समझना

पत्ताल



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

युनिवर्सिटी : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कण्ठ कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति चर्मा, सारिका बिश्वास,
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – ललिता गुप्ता

चित्रांकन – निधि बाधवा

मन्जा तथा आवरण – निधि बाधवा

डॉ.टी.पी. ऑफेडर – अर्वना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा पाल

आभार झापण

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुपा कामय, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीयकी
संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर डॉ. के. विश्वास, विभागाध्यक्ष, प्रार्थनीक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजय शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर चंद्रुला माधुर, अभ्यक्ष, रोडिंग
डेवलपमेंट सेल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक बाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू

विश्वविद्यालय, लखनऊ; प्रोफेसर फलीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन
विभाग, जामिया मिलियल इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपुर्वोदय, रीडर, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शब्दनम मिहादा, सोई ओ., आई.एल, एक.एम.,
मुर्छा; सुशी नुगाहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री गोहित धनकर,
निदेशक, दिग्ंगन, जमशुर।

8) जौ.एग.एग. पेपर चार मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा एक विट्टिंग पेपर, डी-28, इंडियन प्रिंटिंग, चाटौर, रामगढ़ २८०००४
द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (वर्षा-डे)

978-81-7450-876-8

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कक्षावस्थाओं में विस्तारित है। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोशनी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ ऐनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यक्रम के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ में बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सम्बोधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पृष्ठाओं पर किसी इम्प्रेसन के किसी भाग को लाना गलत
इलेक्ट्रॉनिकों, मोबाइल, कॉटोप्रोटोलोंपि, स्प्लाईइंग अथवा किसी अन्य विषय से पूर्ण:
प्रत्येक पृष्ठ प्राप्त उपकरण संग्रह अथवा प्रसारण बंदूक है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैफा, श्री अविद याद, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फॉट रोड, हैली एक्सेस, हांडेकोट, बचपनगढ़ 110 007 फोन : 966 063
फोक : 090-26725740
- गलतीन ट्रांस पार, बाबताल गलतीन, अमरावत 380 014 फोन : 079-27541446
- नॉ.लक्ष्मी मै. कैप्प, निवास, चनकल एम स्ट्रीट परिवारी, कोलकाता 700 114
फोक : 033-25530454
- नॉ.लक्ष्मी मै. कैप्परीम, जलोली, दुमारी 781 021 फोक : 0361-2674869

प्रकाशन महाद्योग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पौ. सज्जनकुमार
मुख्य संस्कारक : अनंत उपल

गुरु उत्तमन अधिकारी : विज कुमार
मुख्य व्यापार अधिकारी : गीतांग गांगुली

पटाल



दीदी

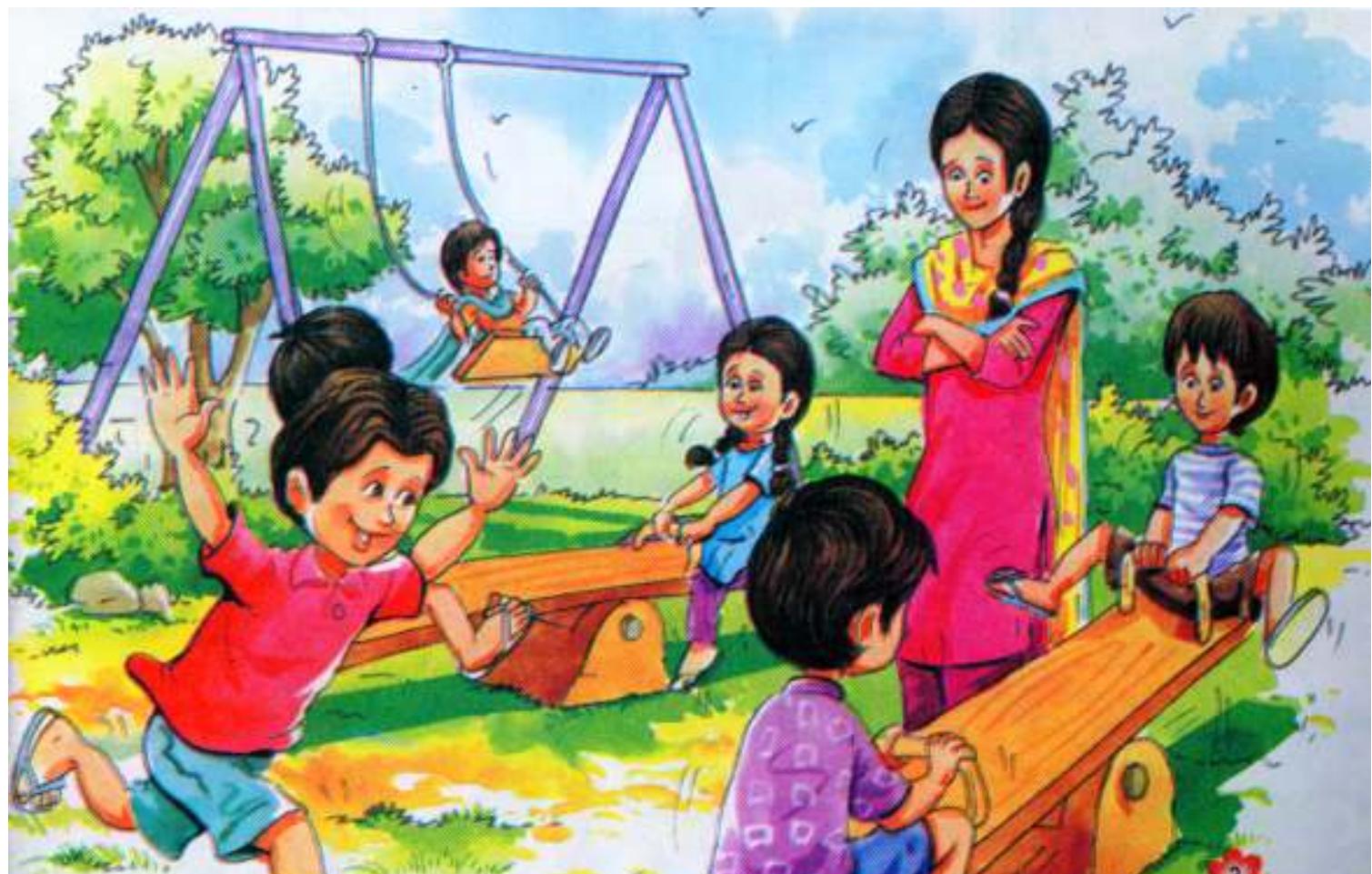
मदन

जमाल

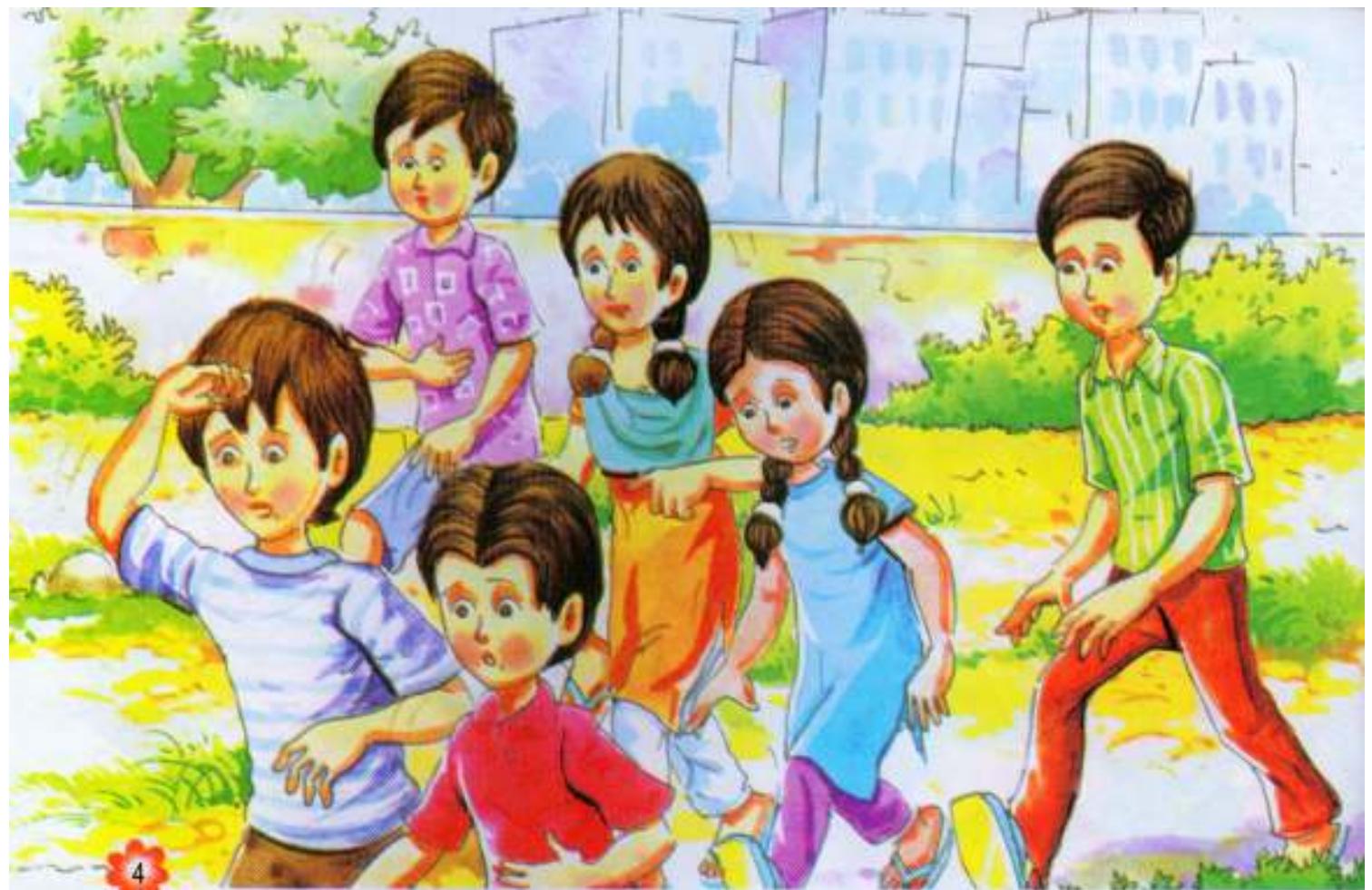


2

एक दिन सब बच्चे दीदी के साथ पिकनिक पर गए।
वे सब पास के एक पार्क में गए थे।

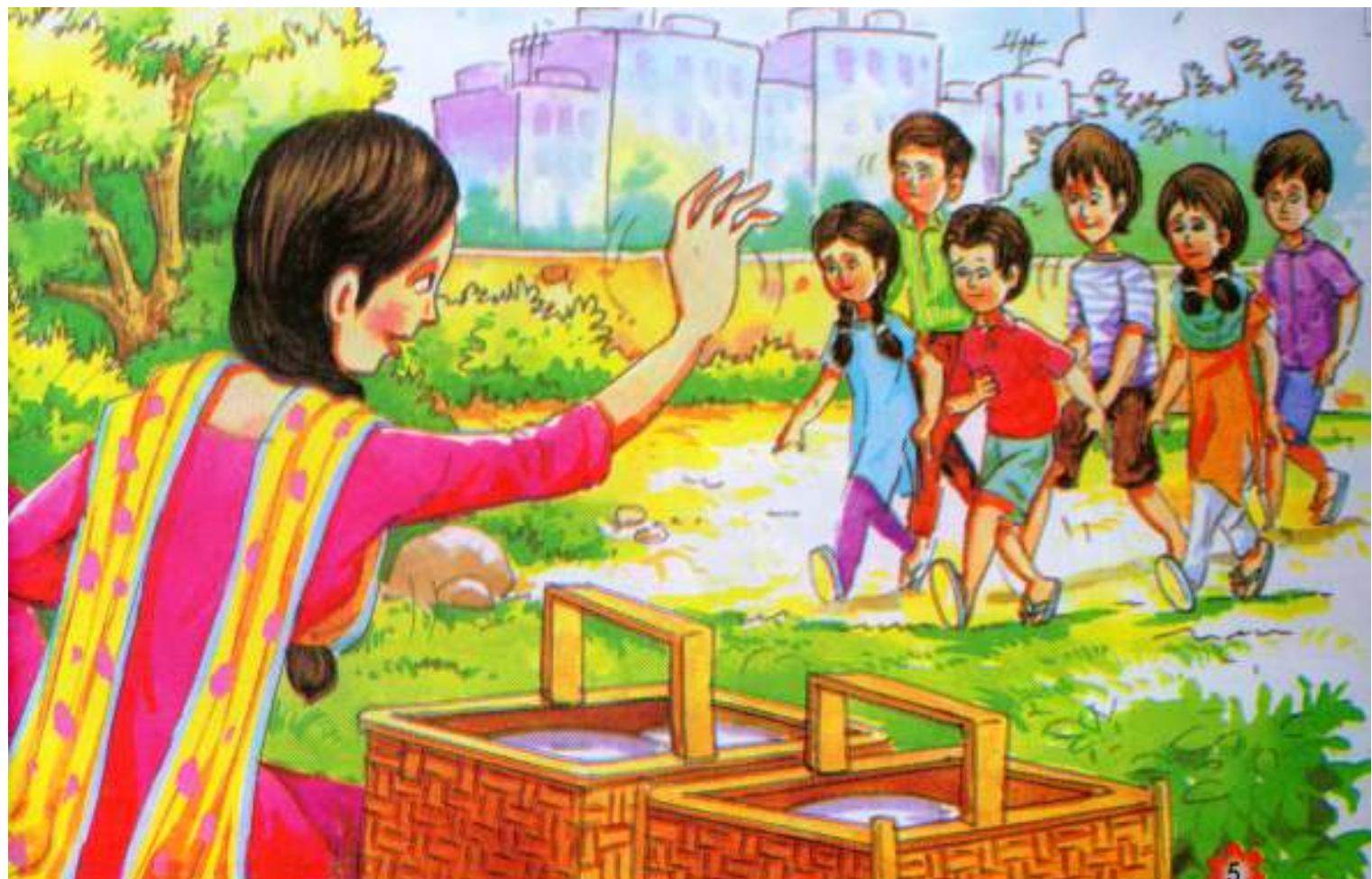


पार्क में सब खूब दौड़े और कूदे।
सबने खूब सारे खेल खेले।



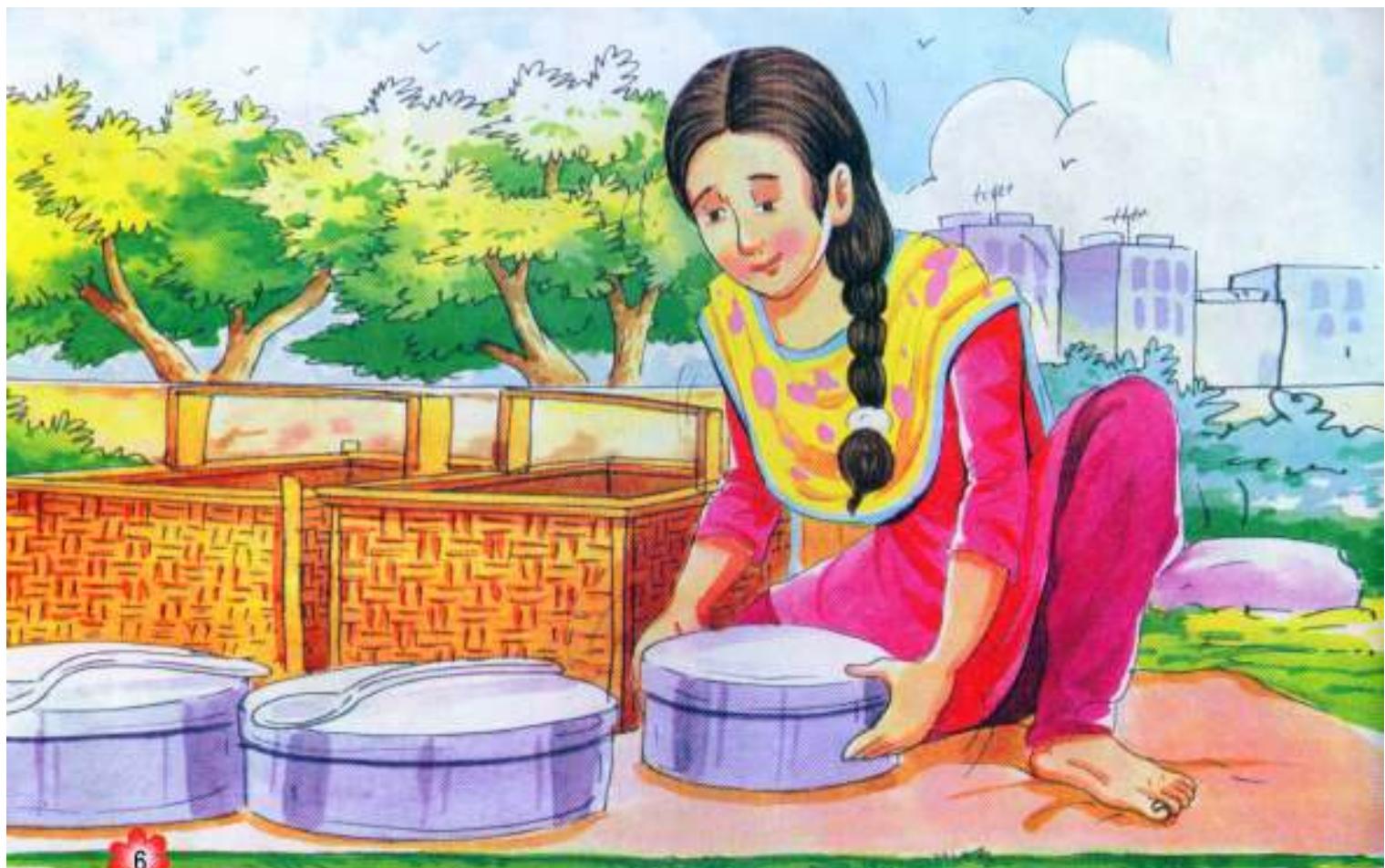
4

खेलते-खेलते सब थक गए।
सारे बच्चों को ज़ोर से भूख लगने लगी।



5

दीदी खूब सारा खाना लाई थीं।
उन्होंने सबको खाने के लिए बुलाया।



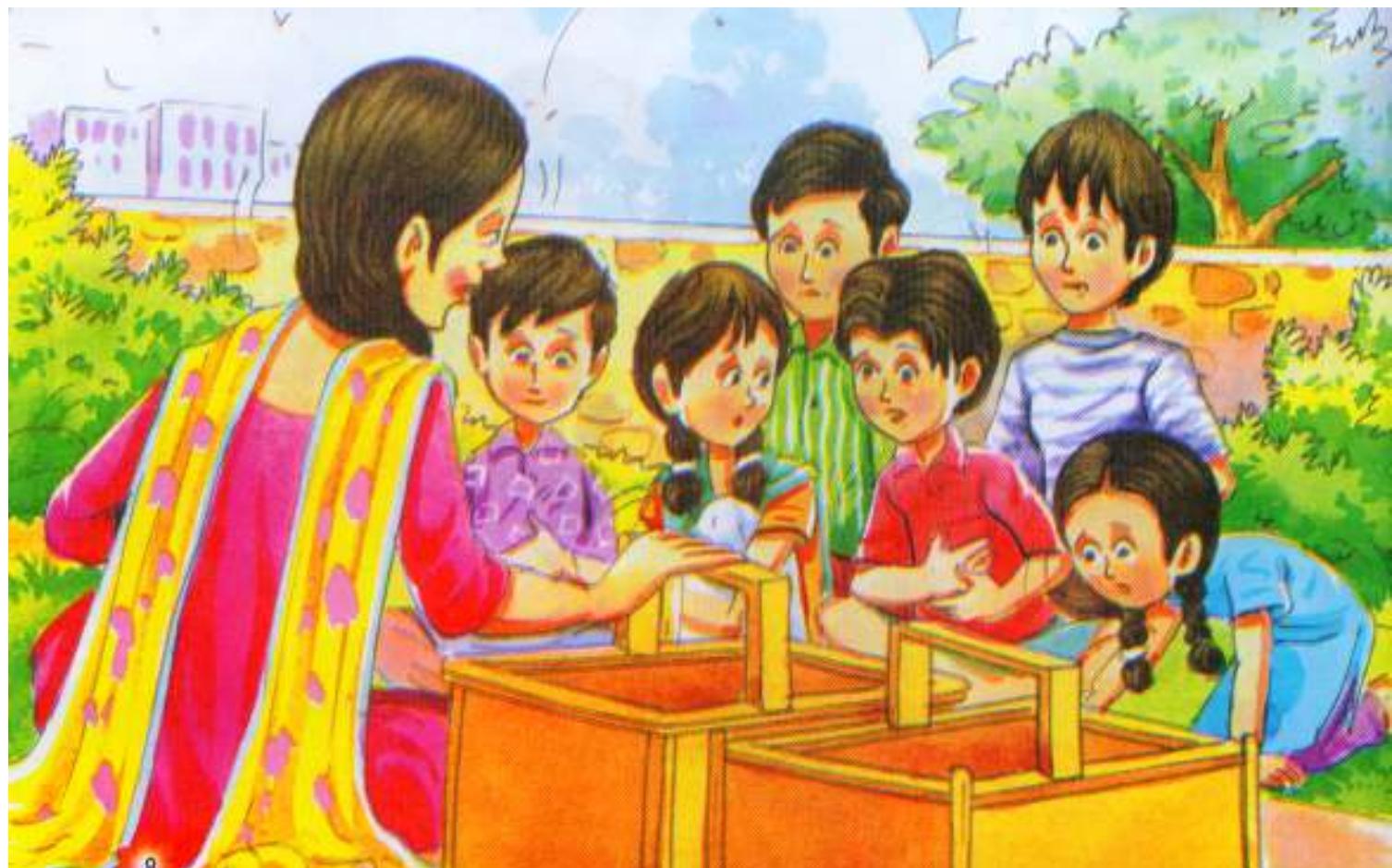
6

दीदी ने बड़े-बड़े डिब्बे लाइन से लगा दिए।
डिब्बों पर बड़े-बड़े चमचे रखे हुए थे।



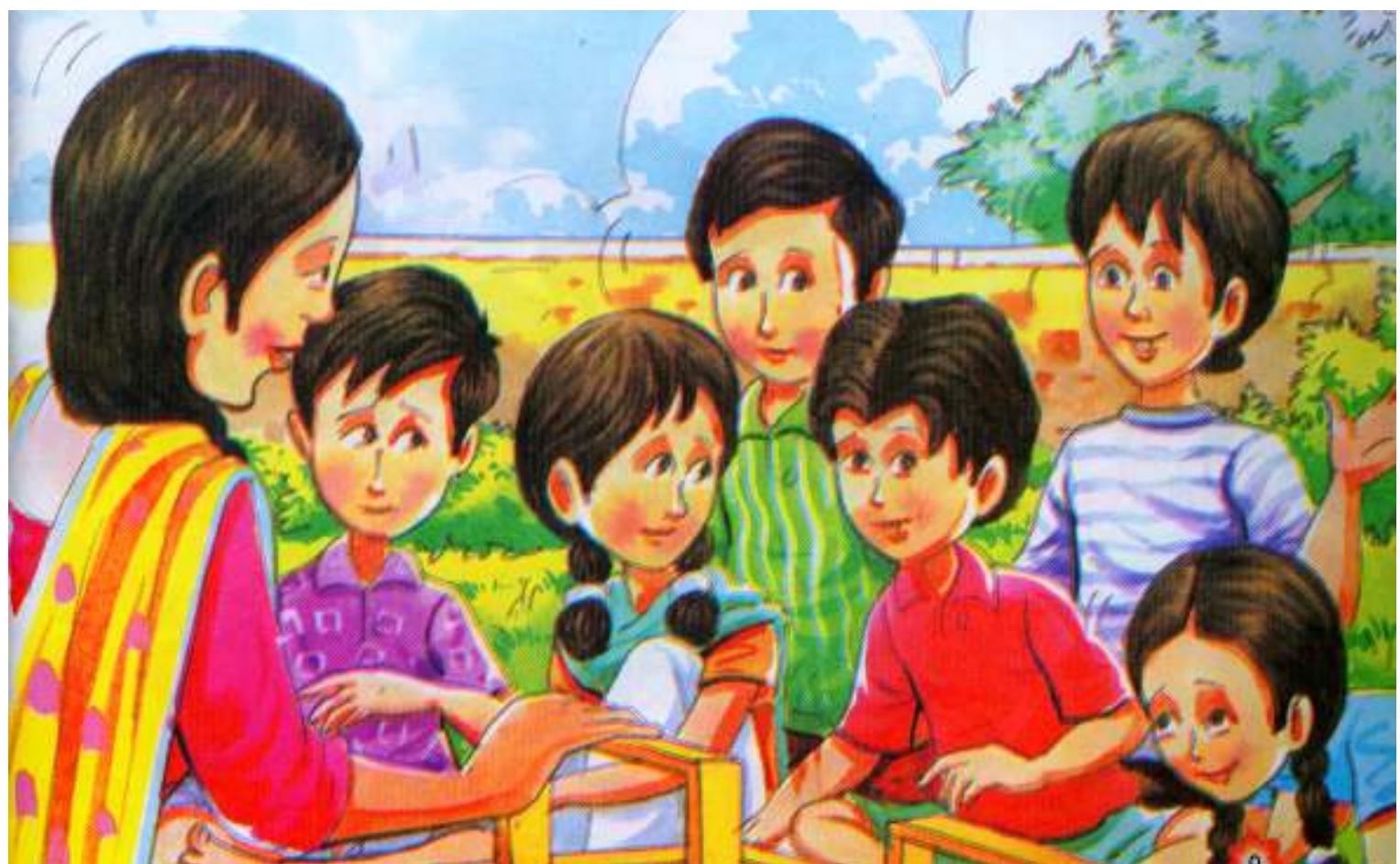
7

दीदी इधर-उधर कुछ ढूँढ़ने लगीं।
वह बर्तनों का झोला घर भूल आई थीं।



8

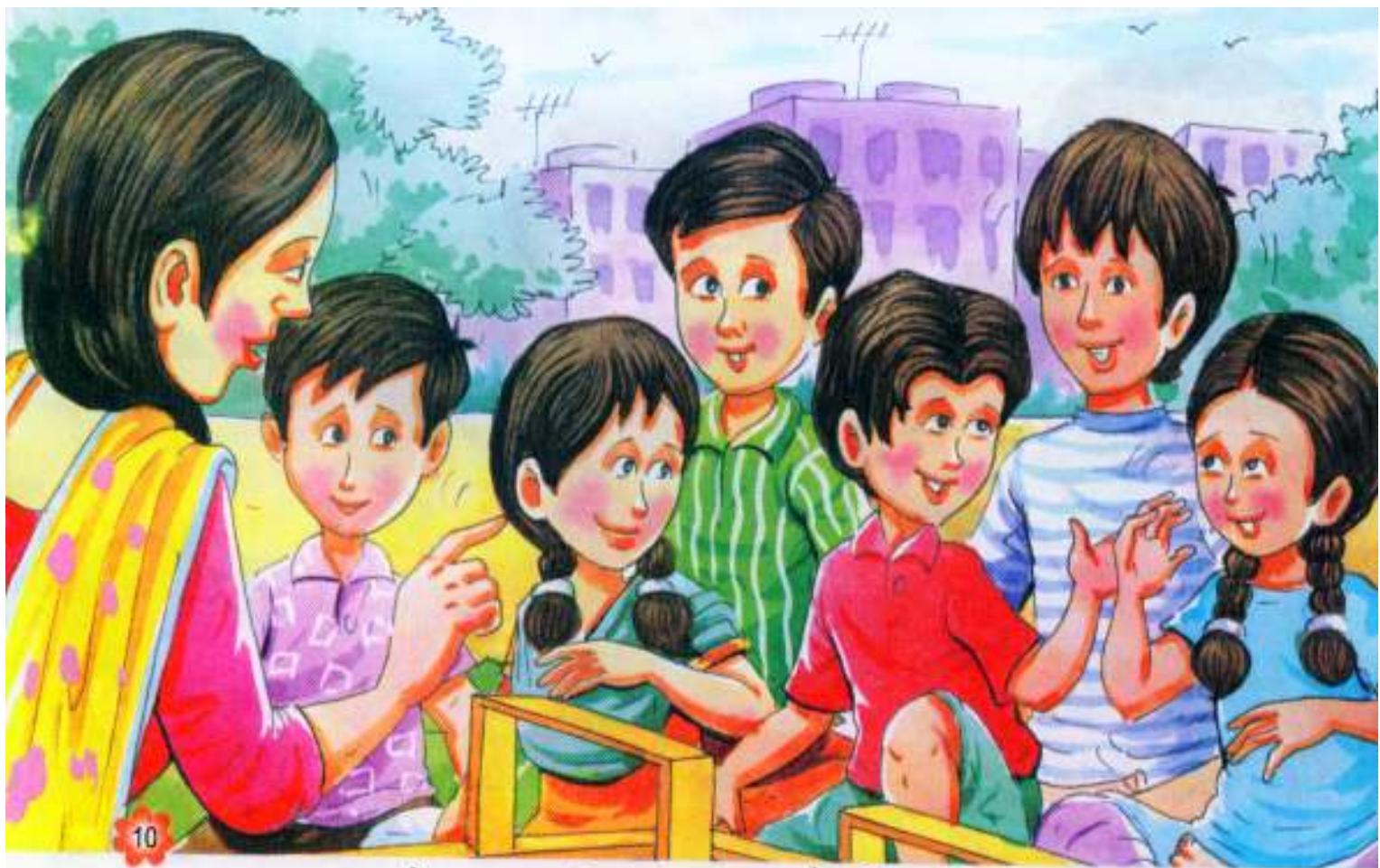
खाना खाने के लिए बर्तन नहीं थे।
सब शोर मचाने लगे।



9

मदन बोला कि पत्तल बना लेते हैं।

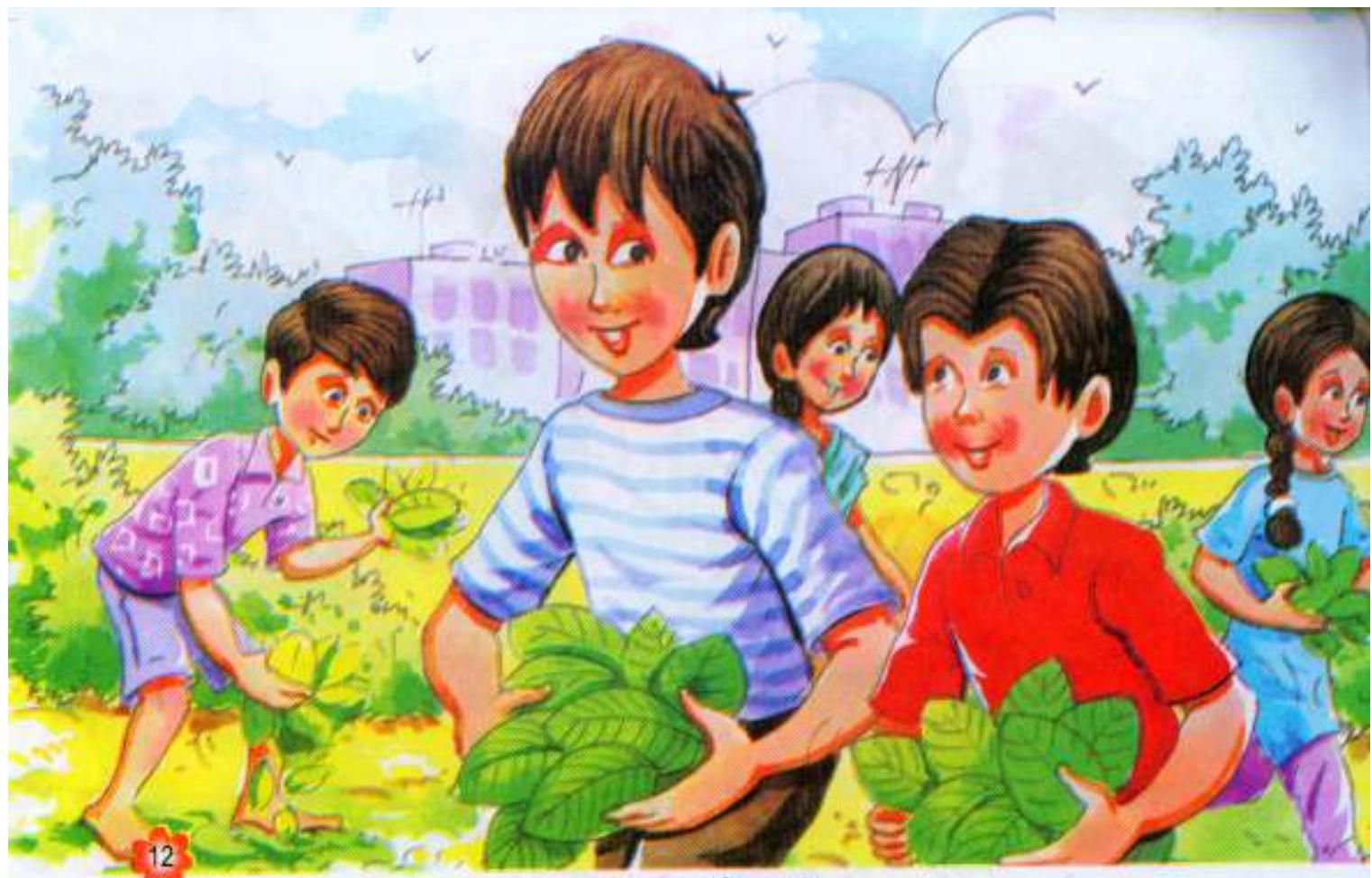
पत्तल पर खाना खा लेंगे।



जमाल ने पूछा कि पत्तल कैसे बनेंगे।
मदन ने कहा कि पत्ते बीनकर ले आएँगे।

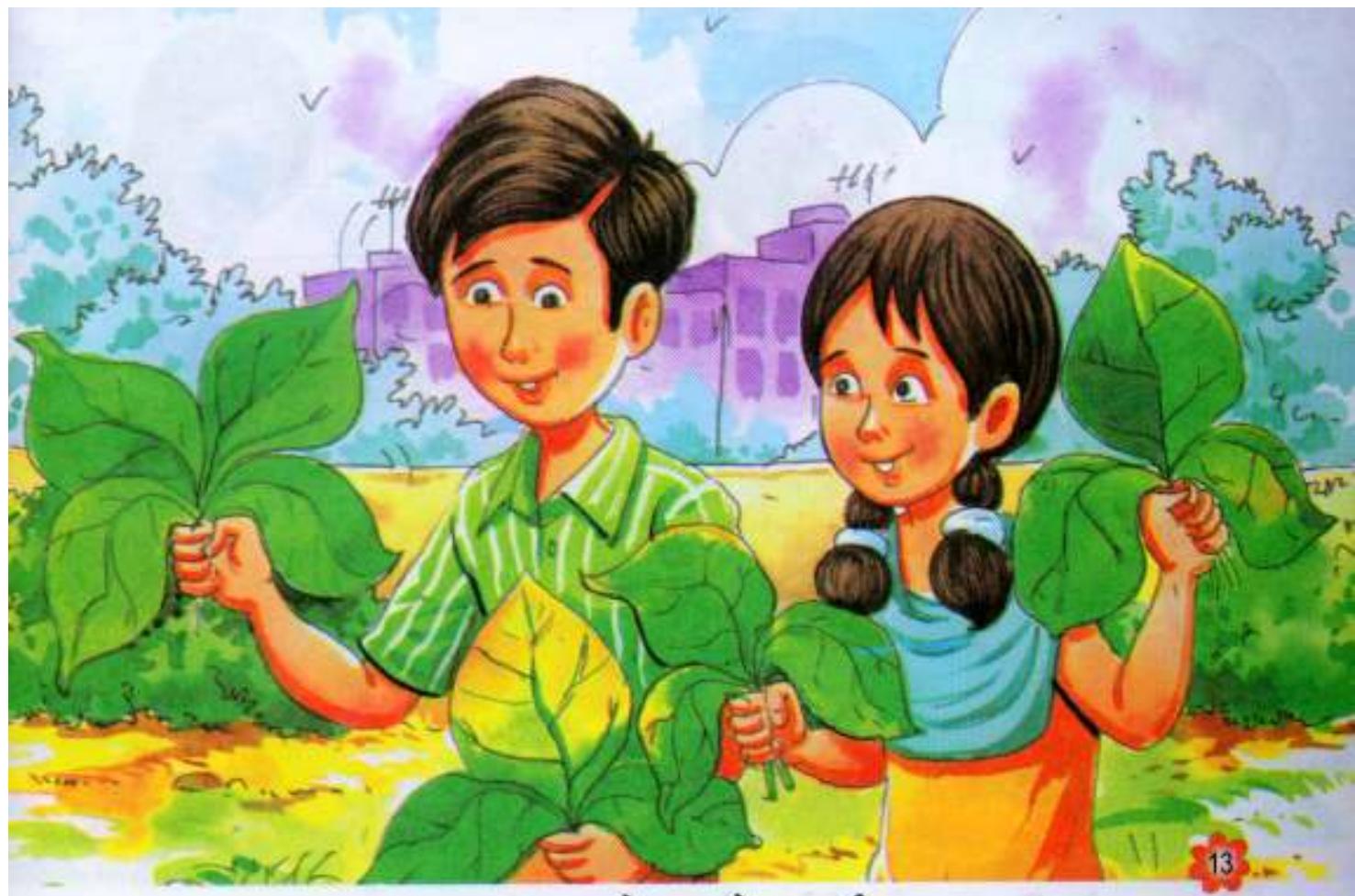


सारे बच्चे पत्ते लाने दौड़े।
सबने नीचे पड़े हुए साफ़ पत्ते बीन लिए।



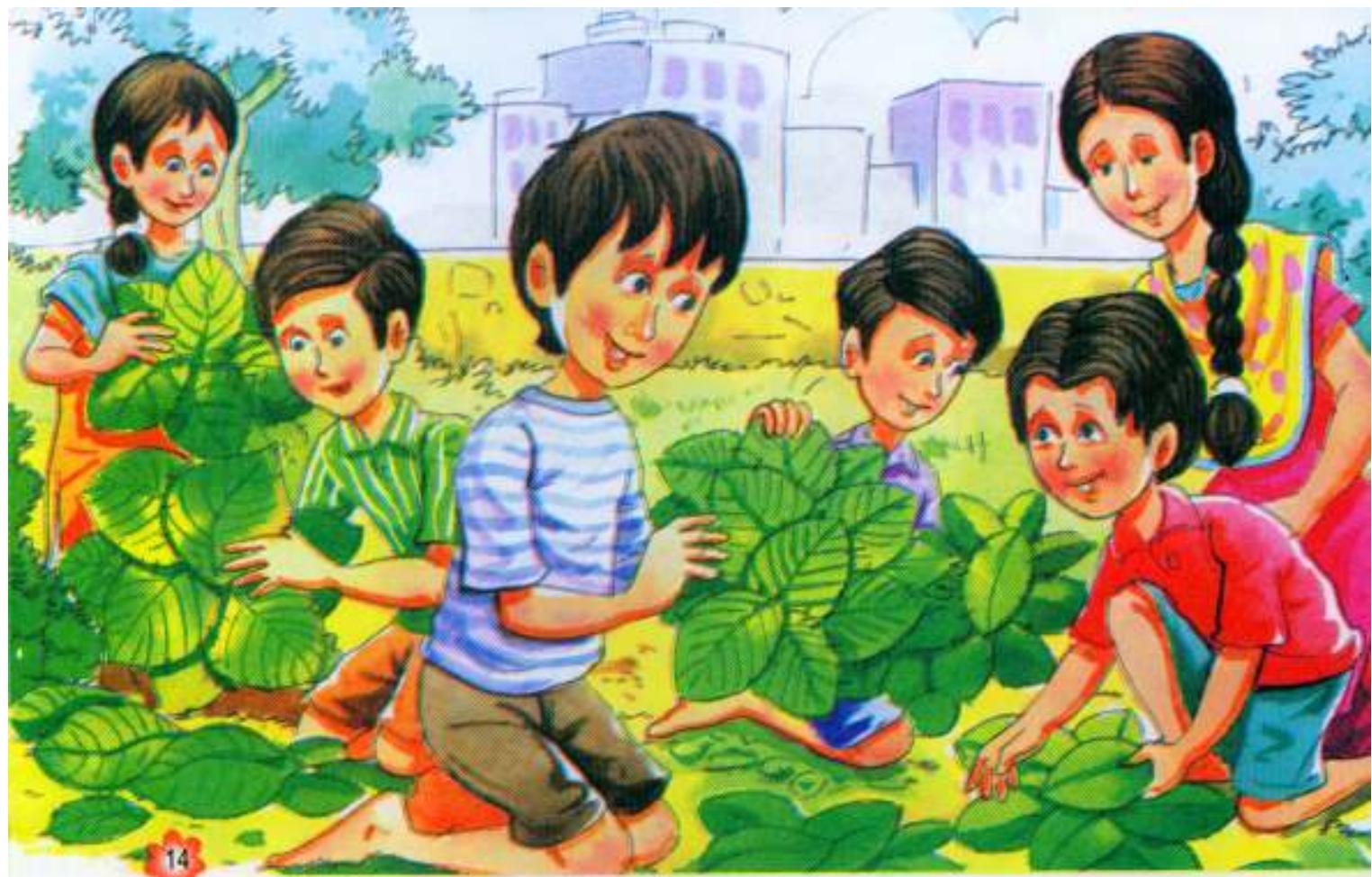
12

जमाल बड़ के पत्ते बीन लाया।
मदन भी बड़ के पत्ते बीन लाया।



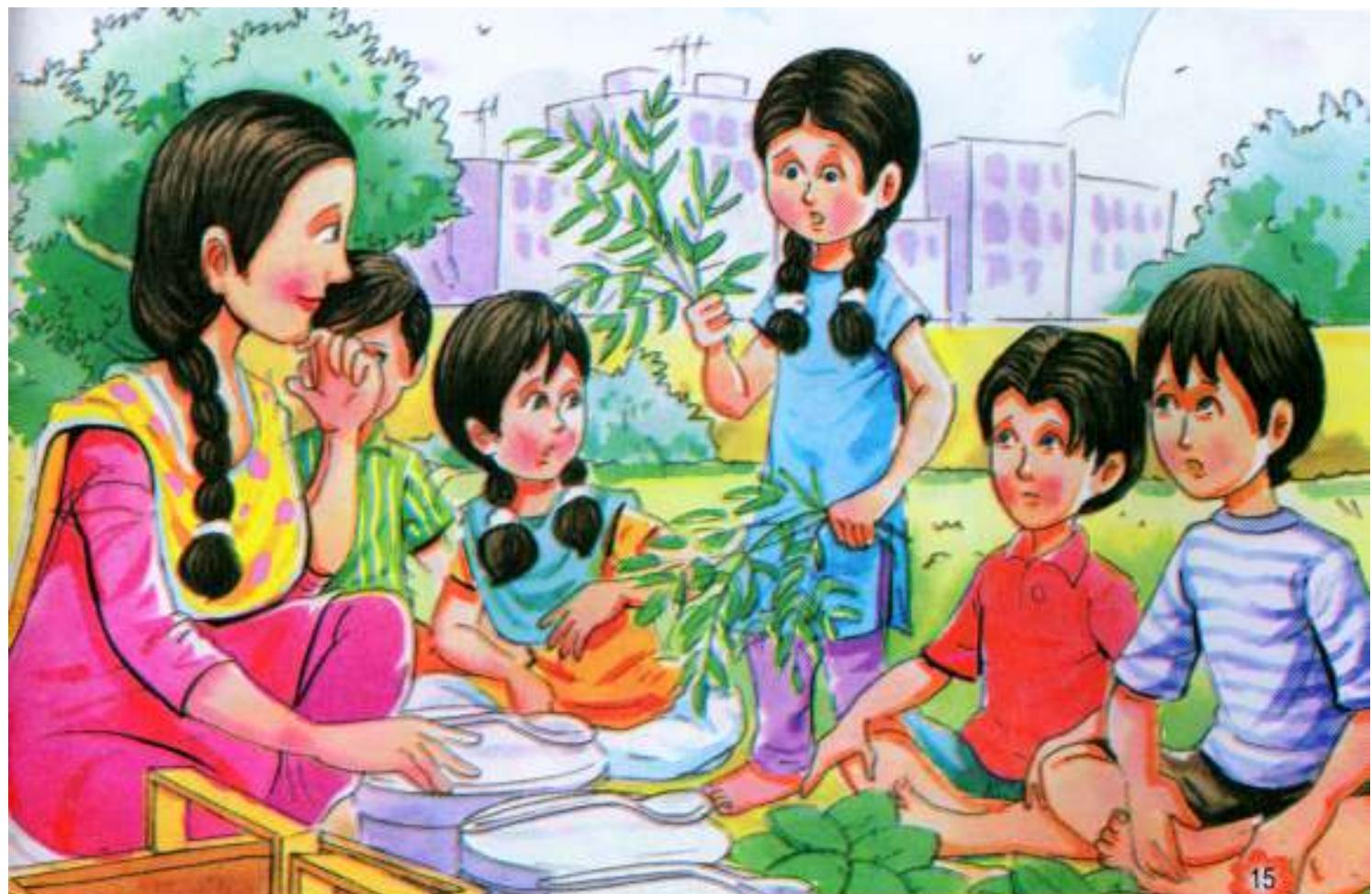
13

पूजा ढाक के पत्ते लाई।
राजा भी ढाक के पत्ते लाया।



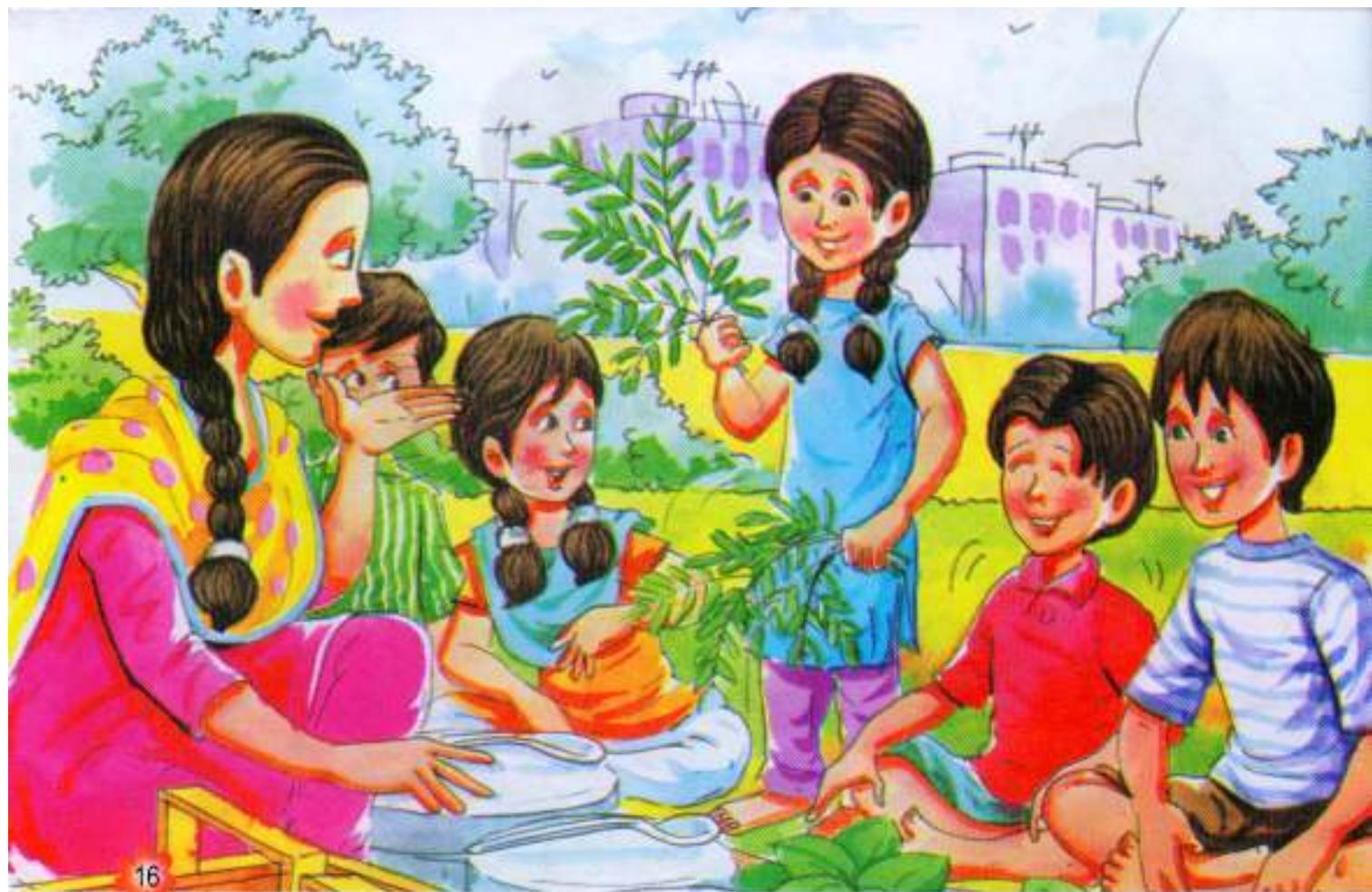
14

सबने मिलकर पत्ते धोए
पत्तों को सींकों से जोड़-जोड़ कर पत्तले बनाई।



15

सब पत्तल लेकर खाना खाने बैठ गए।
रानी हाथ में नीम की पत्ती लिए खड़ी थी।

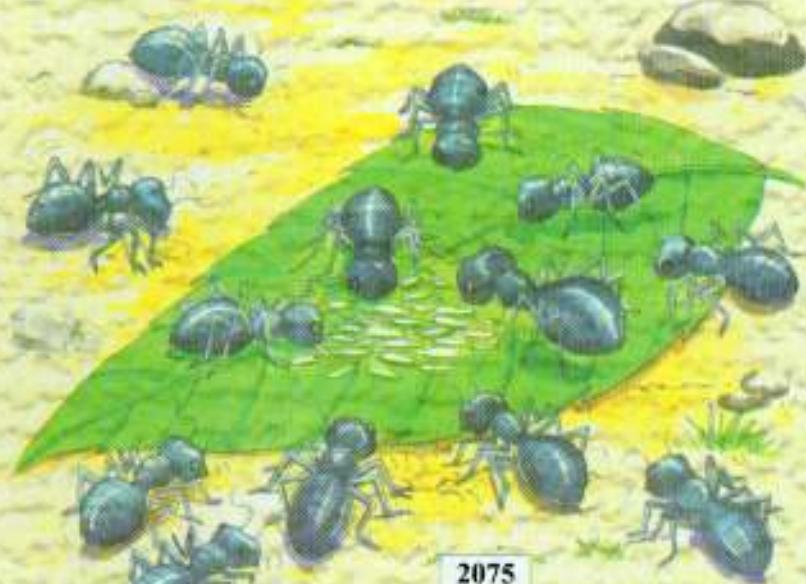


16

सब हँसने लगे कि नीम की पत्ती पर कौन खाना खाएगा।
दीदी ने कहा कि चींटी खाएगी।



नव दिल्ली अग्रियाल
जल पर्वे जल कर्मे



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पढ़ना है समझना

चावल



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 षष्ठ 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्ञानेति मंडो, दुलदुल विश्वास, मुकेश महलवीय,
गणिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति बर्मा, सारिका वशिष्ठ,
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, मुशाल शुक्ल।

संवर्धन-समन्वयक - लातिका गुप्ता

चित्रांकन - जोएल गिल

सञ्ज्ञा तथा आवरण - निधि वाथवा

डी.टी.पी. ऑफरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर नमुदा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक ग्रीष्मोणिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. विश्वास, विभागाध्यक्ष, प्रार्थक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर एमजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग एक्सप्रेस गैलरी, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक लालपेटी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, बर्धमा; प्रोफेसर फरहीदा अब्दुल्लाह खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अप्कानद, गोडर, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शब्दनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुर्हई; सुश्री नुरहत हसन, निदेशक, नेशनल लुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निदेशक, दिग्ंगर, जयपुर।

80 जोएल गिल द्वारा मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी गांगा, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित वसा नंकड़ प्रिंटिंग एंस, डी-28, इंडिस्ट्रियल शॉप्स, नाइट-ए, मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (भाग-में)

978-81-7450-878-2

बरखा इतिहासिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सत्रों और पाँच कक्षावस्थाओं में विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोकमरी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना मीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक शेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें तड़ा सकें।

समीक्षिका सूचित

प्रकाशक की सूचनामूलि के बिंदा इस प्रकाशन के किसी भाग को जापन तथा छापनकालीन, बर्तावी, फोटोप्रार्तितापि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पूनः प्रयोग पर्याप्ति द्वारा उपकरण संग्रहण अथवा प्रयोग की जाए।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैपा, श्री अधिकारी गांगा, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फॉट लेट, इन्डी एक्स्ट्रेल, होम्सेलेने, बबलाकरी 113 स्ट्रीट, कलकत्ता 560 085 फोन : 033-26725340
- नवरीका इमैट ब्रॉड, बाबापार नक्कीस, जहामानाबद 380 014 फोन : 079-27541446
- पी.इ.एम.पी.सी. बैम्प, विक्ट, बनकल बस स्टॉप चैम्पटी, बैलाकाल 700 114 फोन : 033-25530454
- गोल्डन्यू सी. कॉम्पोन्स, यातीरीप, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674989

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार

मुख्य संपादक : श्रीतो डम्पार

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य व्यवसाय प्रबंधक : गौतम गुप्ता

चावल



माझे निफ डॉक्टर के लागूना चावल का
जमाल प्राणी के निष्ठा प्राप्त करना चाहता



2

एक दिन जमाल के घर कोई नहीं था।
मदन उसके घर खेलने के लिए आया हुआ था।



3

उन दोनों को ज़ोर से भूख लग रही थी।
रसोई में कुछ भी पका हुआ नहीं था।



4

जमाल ने सारे बर्तन खोल-खोलकर देखे।
मदन ने डिब्बों में कुछ खाने के लिए ढूँढ़ा।

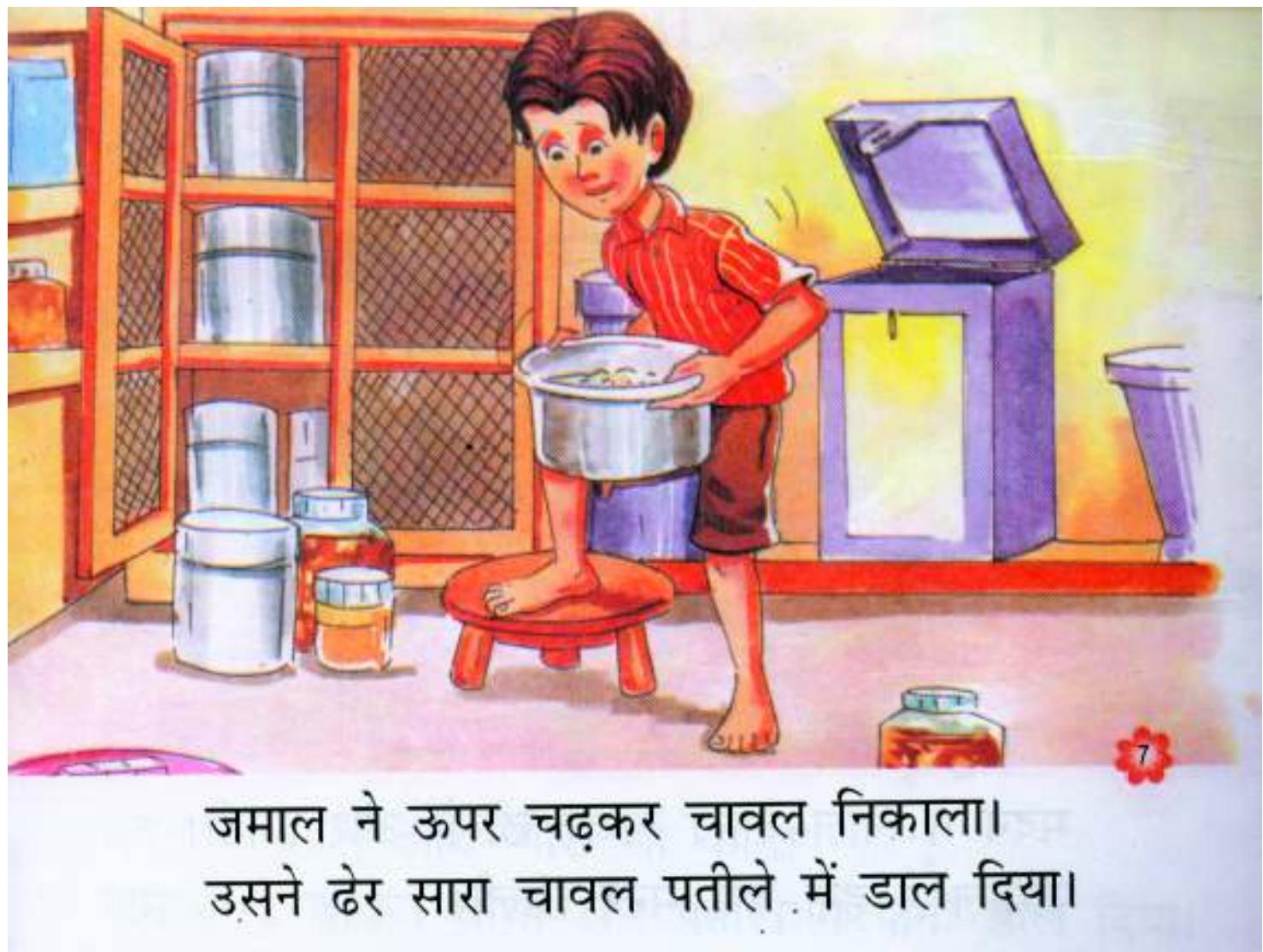


उनको खाने के लए कुछ नहीं मिला।
दोनों सोचने लगे कि क्या बनाया जाए।

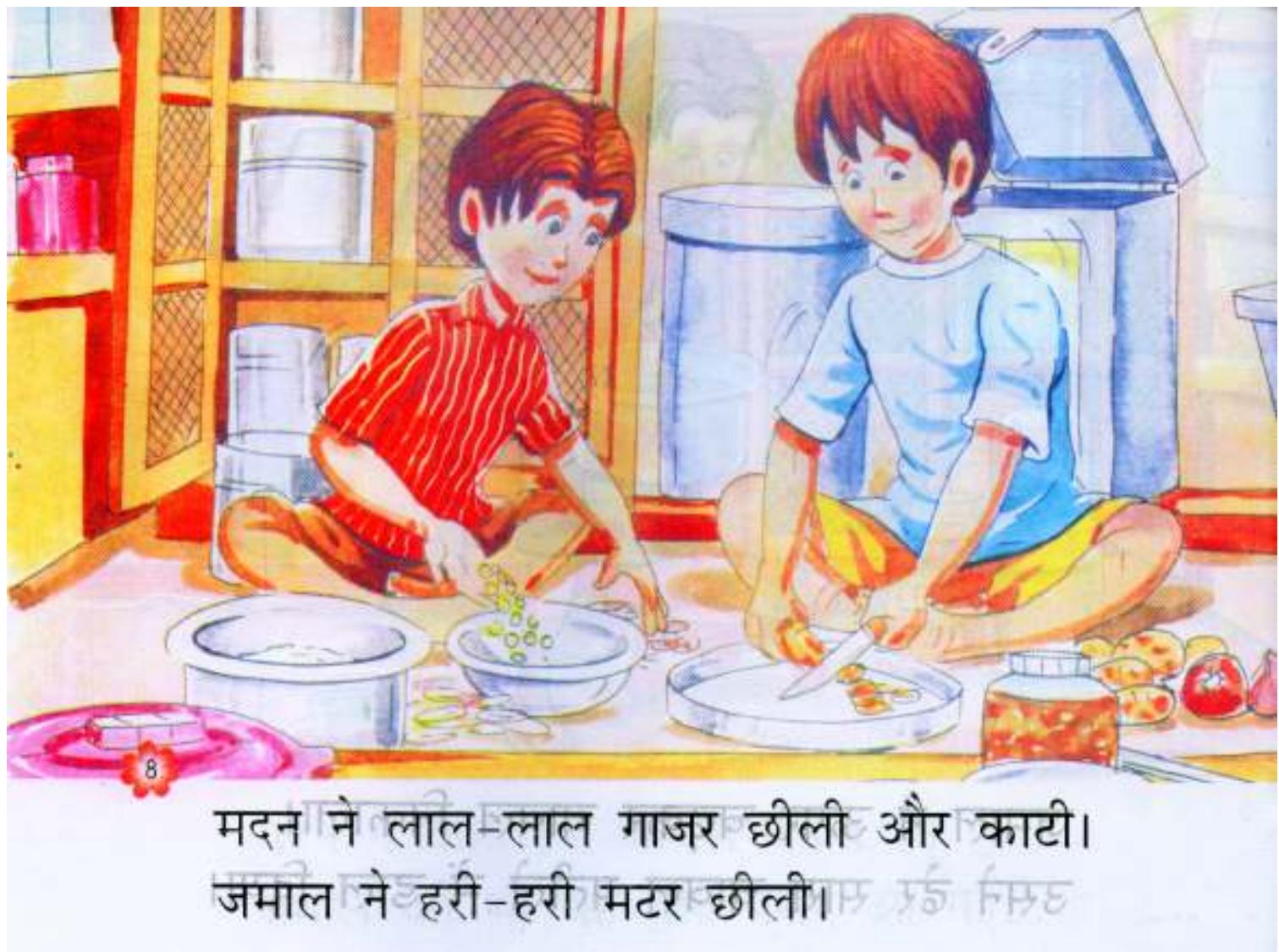


6

मदन ने कहा कि चावल बनाते हैं।
जमाल को भी यह बात पसंद आ गई।

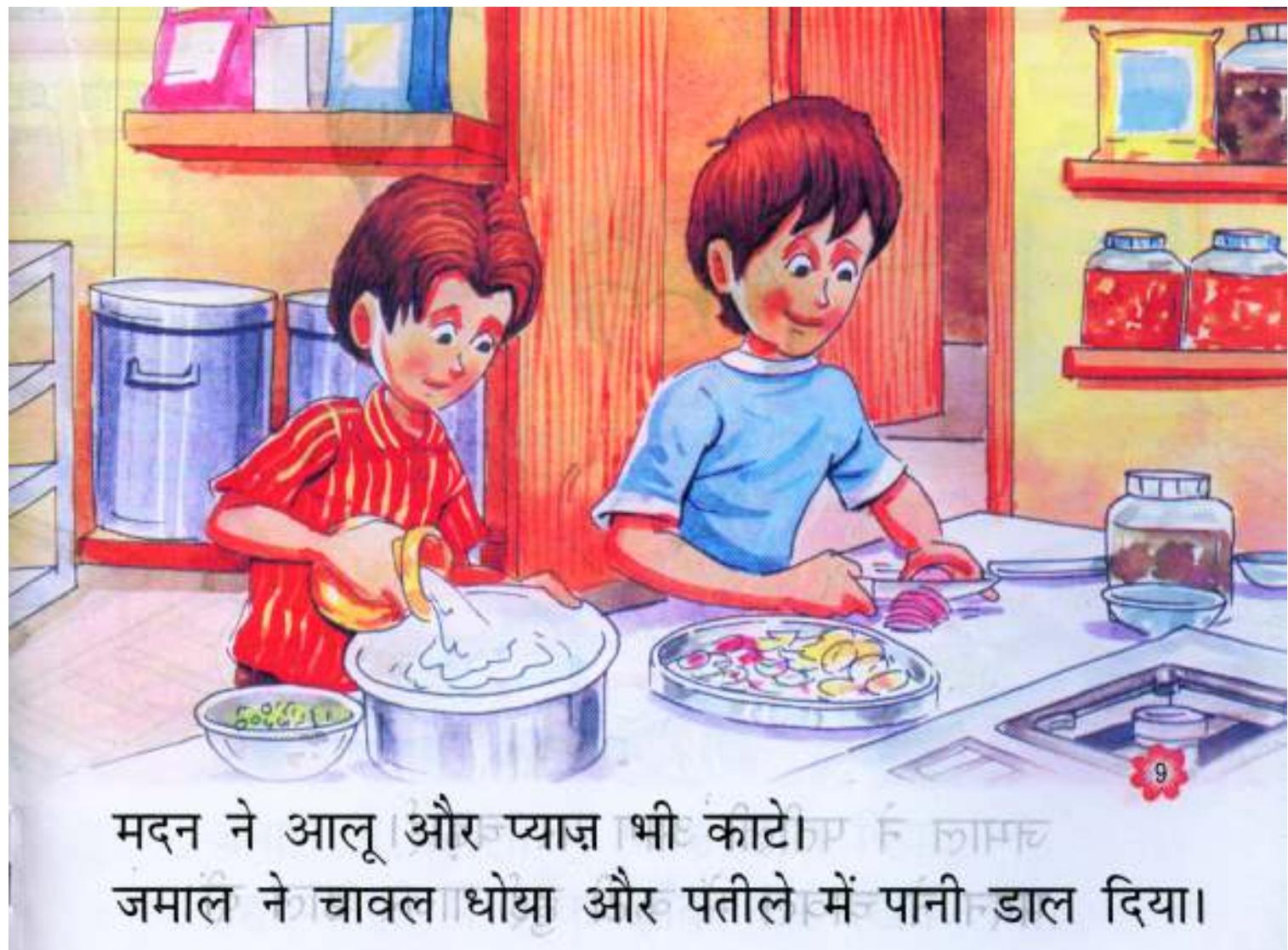


जमाल ने ऊपर चढ़कर चावल निकाला।
उसने ढेर सारा चावल पतीले में डाल दिया।

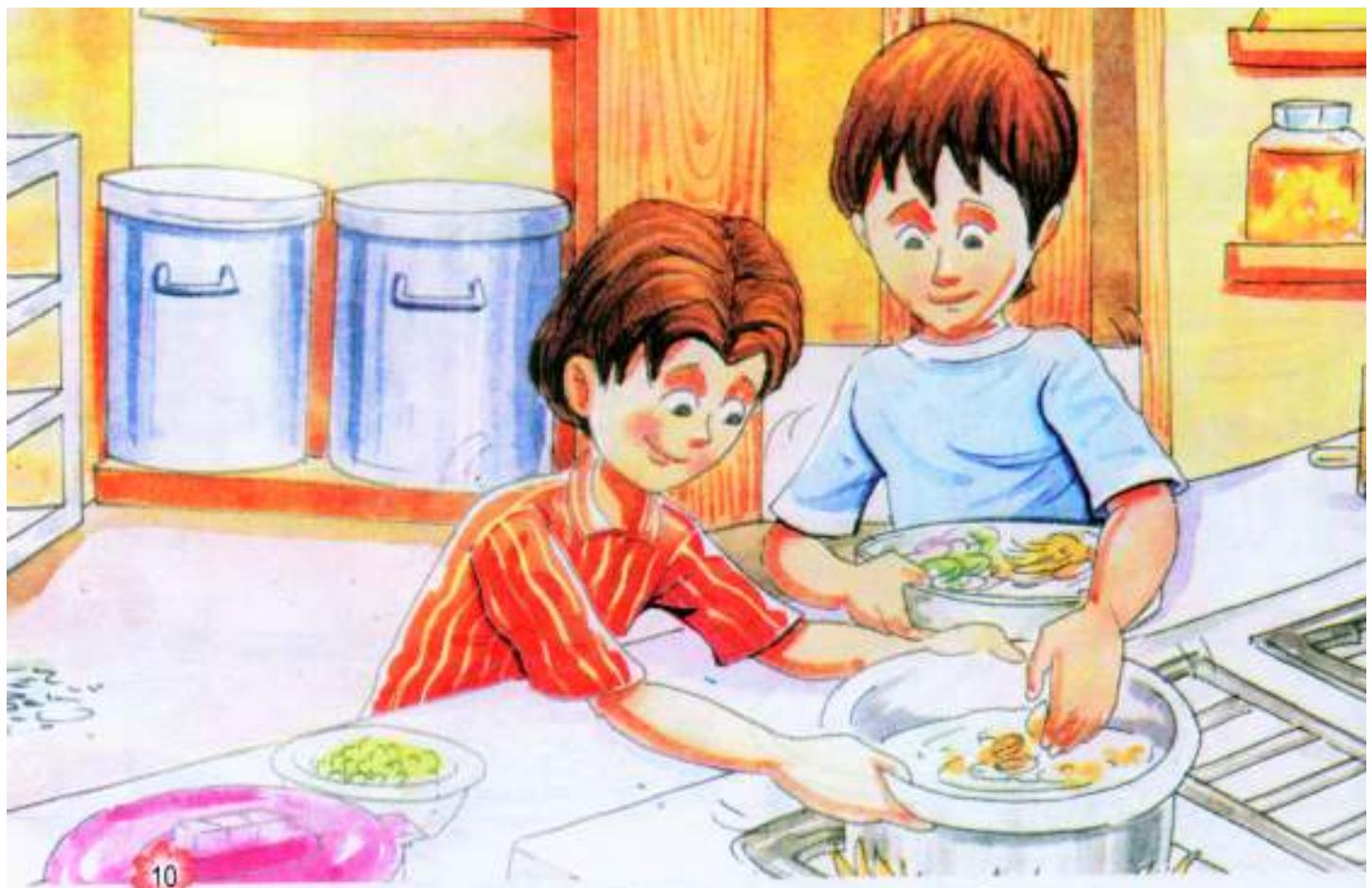


8

मदन ने लाल-लाल गाजर छीली और काटी।
जमाल ने हरी-हरी मटर छीली।



मदन ने आलू और प्याज़ भी काटे।
जमाल ने चावल धोया और पतीले में पानी डाल दिया।



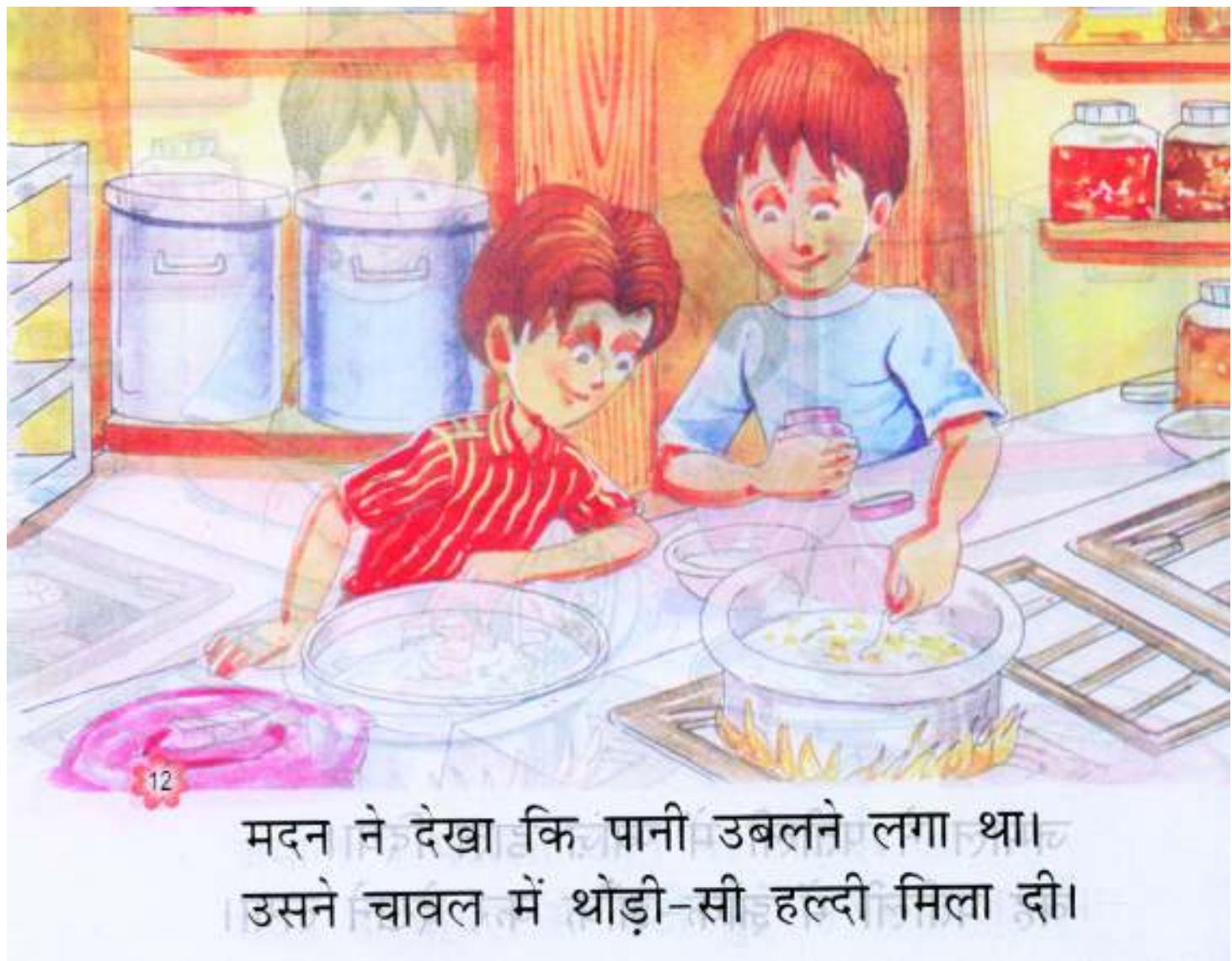
10

जमाल ने पतीली आग पर चढ़ाई।
मदन ने चावल में कटी हुई गाजर डाल दीं।



11

जमाल ने पतीली में प्याज़ डाल दिया।
वह पतीली में झाँक-झाँक कर देखने लगा।



12

मदन ने देखा कि पानी उबलने लगा था।
उसने चावल में थोड़ी-सी हल्दी मिला दी।



13

दोनों पीले-पीले चावल को उबलता हुआ देखते रहे।
मदन ने चावल निकालकर जमाल को चखाया।



14

जमाल को चावल कच्चा लगा।
उन्होंने चावल को और उबाला।



15

दोनों चावल खाने बैठे।
मदन ने ऊपर का चावल लिया जमाल ने नीचे का।



16

मदन के चावल पीले-पीले थे। जमाल के चावल काले-पीले थे।



2076



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बर्ज-मेट)

978-81-7450-877-5



पढ़ना है समझना

मौसी के मोड़े



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्टिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10/T NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, गणिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति चर्मा, स्थारिका ब्रह्मिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, मुख्तील शुक्ल.

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चिकित्सक – जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण – निधि याभवा

डी.टी.पी. ऑफिसर – अर्पणा गुप्ता, नीलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आधार ज्ञापन

ग्रोकेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोकेसर चमुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, कैन्डीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोकेसर के. के. वर्षाचार, विद्यालयक्षम, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोकेसर रामकृष्ण शर्मा, विद्यालयक्षम, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोकेसर मधुला माझर, अध्यक्ष, रोडिंग हॉबलपर्सेंट मैल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वारपेंटी, अध्यक्ष, पूर्व कूलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वारी; ग्रोकेसर कर्गिला अस्तुल्ता खान, विभगाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, आमिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वकेंद्र, रोडर, हिंदू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.ए.ए.ए.ए.एस., मुर्हई, सुशी नुरहत हसन, निदेशक, नेशनल युक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निदेशक, विंगेट, जयपुर।

80 श्री.एस.एम. गोपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संस्कृत, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद गांग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडियन प्रीस, माइट-ए, नक्का 231004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा रीड)

978-81-7450-878-2

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के छव्वों के लिए है। इसका उद्देश्य छव्वों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सत्रों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा छव्वों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। छव्वों को रोजमरा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ ऐनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे छव्वों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ छव्वों को पाठ्यचर्चा के हारेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार मुरीदित

प्रकाशक को पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को ज्ञापन तथा इलेक्ट्रॉनिक, मरोने, फोटोप्रिसिपिंग, स्काइडी अवलोकनी अन्य विधि से पुनः प्रयोग उत्पत्ति द्वारा उल्लंघन अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस, श्री ज्ञानिद पार्क, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562306
- 108, 100 फौट रोड, बैली एस्टेटेशन, होमेंटेर, बालाकोटी III संकेत, बैंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्राट एवन, दाकघर, लखनऊ, अहमदाबाद 380 004 फोन : 079-27541446
- गोपनीय दूरध्वंसी, कैम्पस, विकास अवलोकन अवलोकनी, बीतकला 300 114 फोन : 033-25530454
- गोपनीय सी.आर.पी.ए.पी. कैम्पस, गुडलली 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन गहरोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : डॉ. राजाकुमार
मुख्य समाप्तक : ज्येष्ठ उप्पल

पूर्व उत्पादन अधिकारी : विष्णु कुमार
मुख्य ज्ञापात्र प्रबन्धक : गीता गोपनी

मौसी के मोड़े



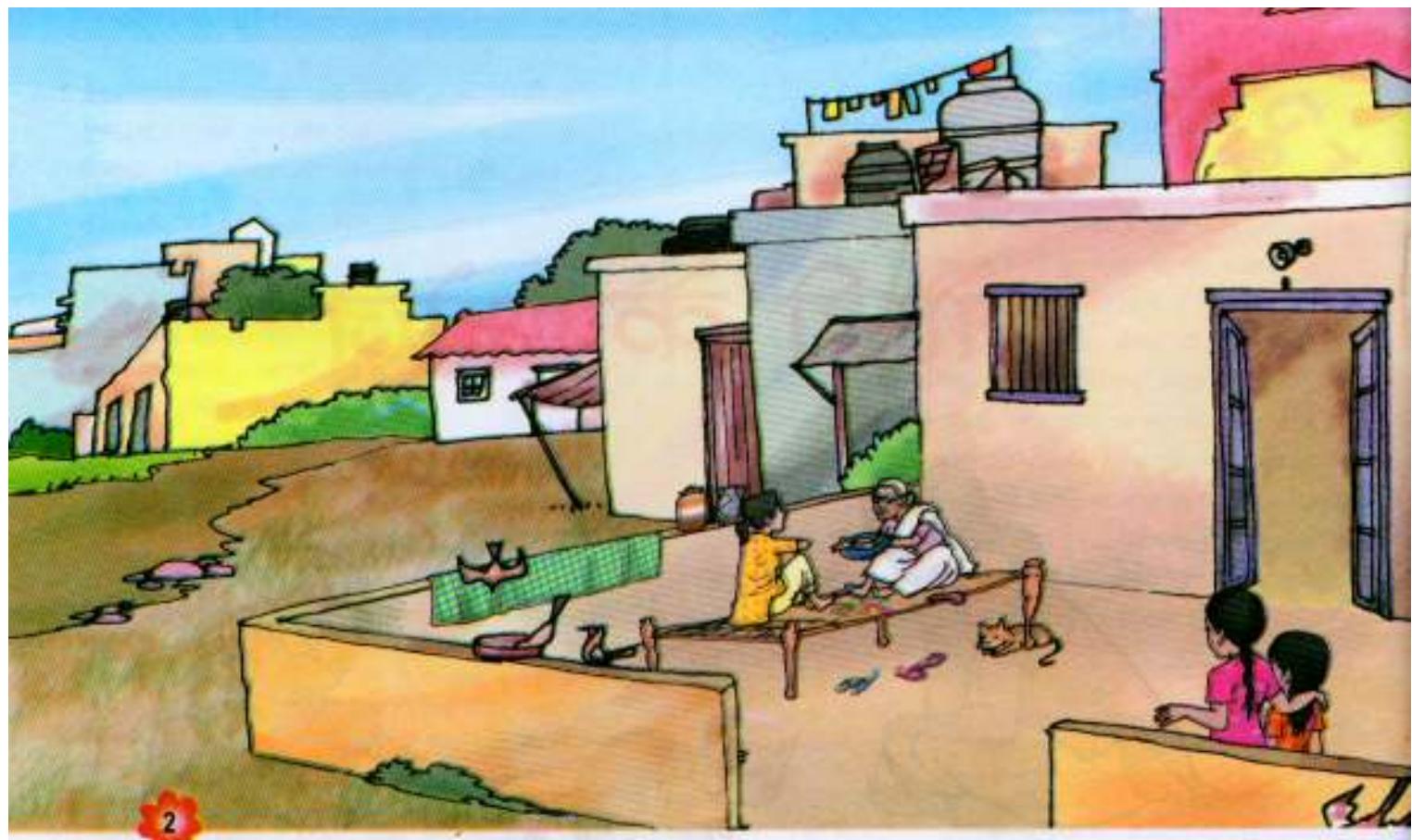
मौसी



मुनमुन



नानी



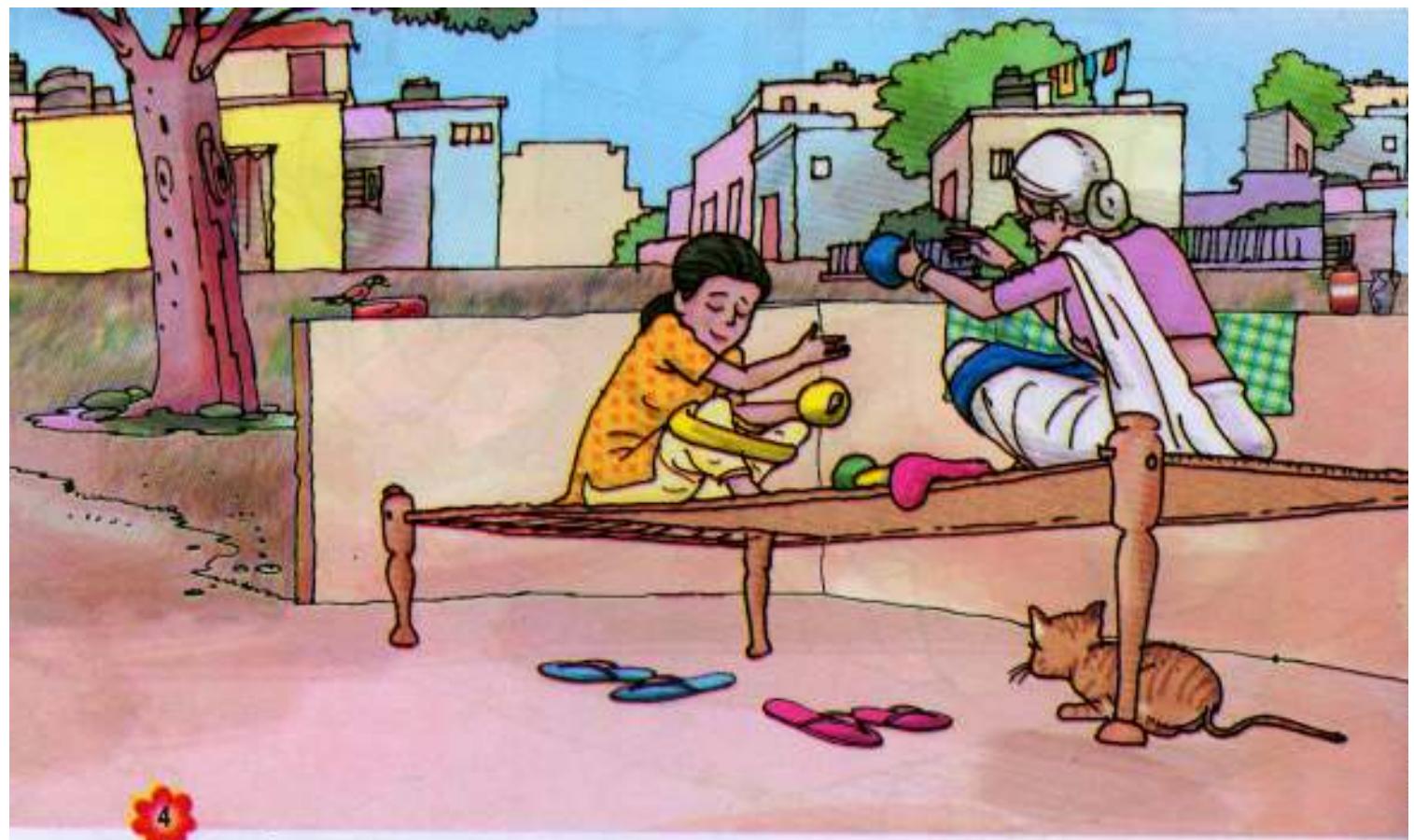
2

एक दिन मौसी नानी से मोजे बनाना सीख रही थीं।
दोनों आँगन में चारपाई डाल कर बैठ गईं।
मुनमुन चारपाई के नीचे लेटी हुई थी।



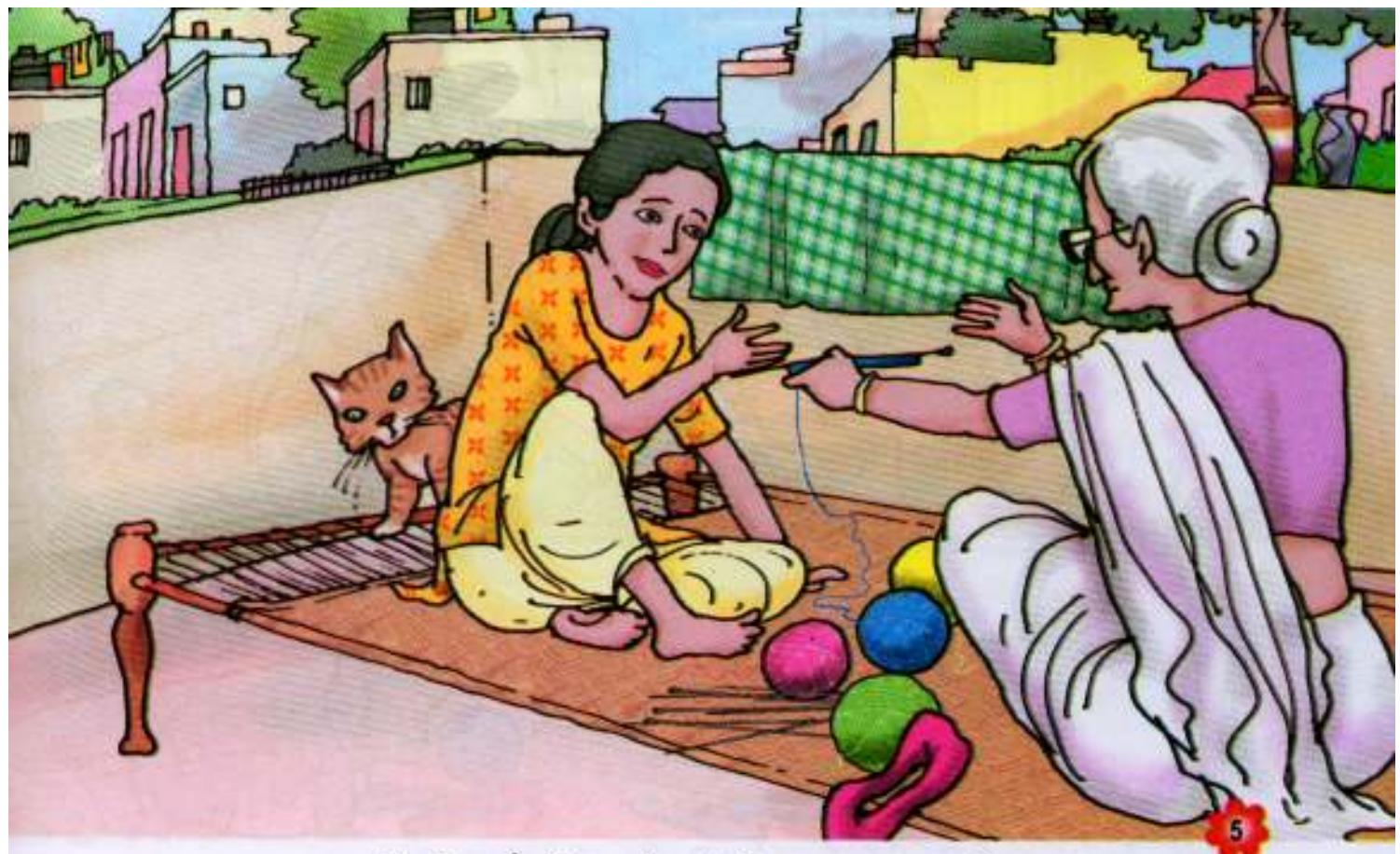
3

उन दोनों के पास खूब सारी ऊन और सलाइयाँ थीं।
नानी ने अपने घुटनों पर नीली ऊन की लच्छी चढ़ाई।
मौसी ने अपने घुटनों पर पीली ऊन की लच्छी चढ़ाई।



4

नानी ने हाथ घुमा-घुमा कर नीले रंग का गोला बनाया।
मौसी ने हाथ घुमा-घुमा कर पीले रंग का गोला बनाया।
मुनमुन ऊन के गोलों को ध्यान से देख रही थी।

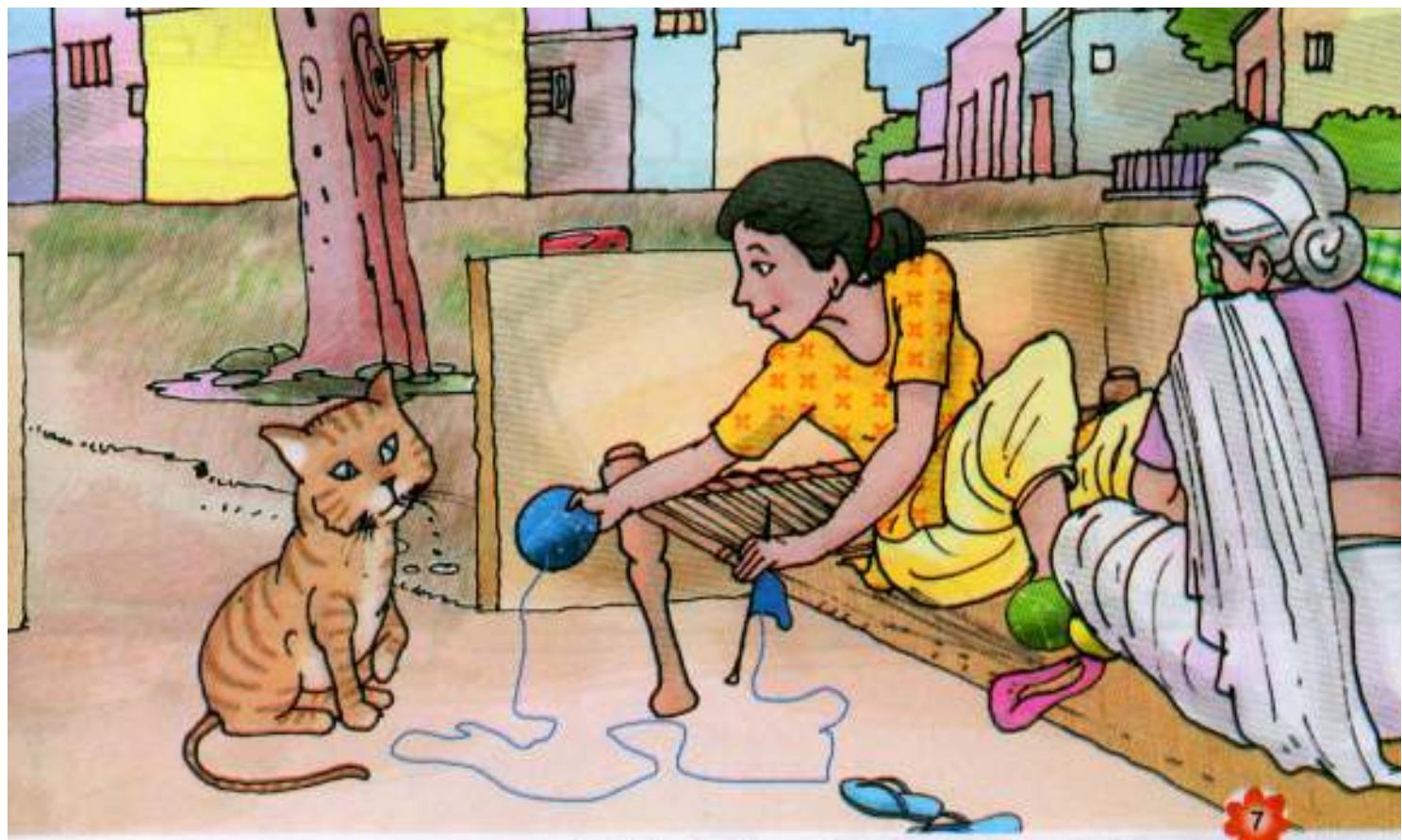


नानी ने मौसी को फंदे डालकर दिए।
मौसी ने मोज़े बुनना शुरू किया।
मुनमुन चुपके-से चारपाई पर चढ़ गई।



6

मौसी मोज़ा बुनने में लगी हुई थी।
मुनमुन ने गोला नीचे लुढ़का लिया।
वह गोले से खेलने लगी।



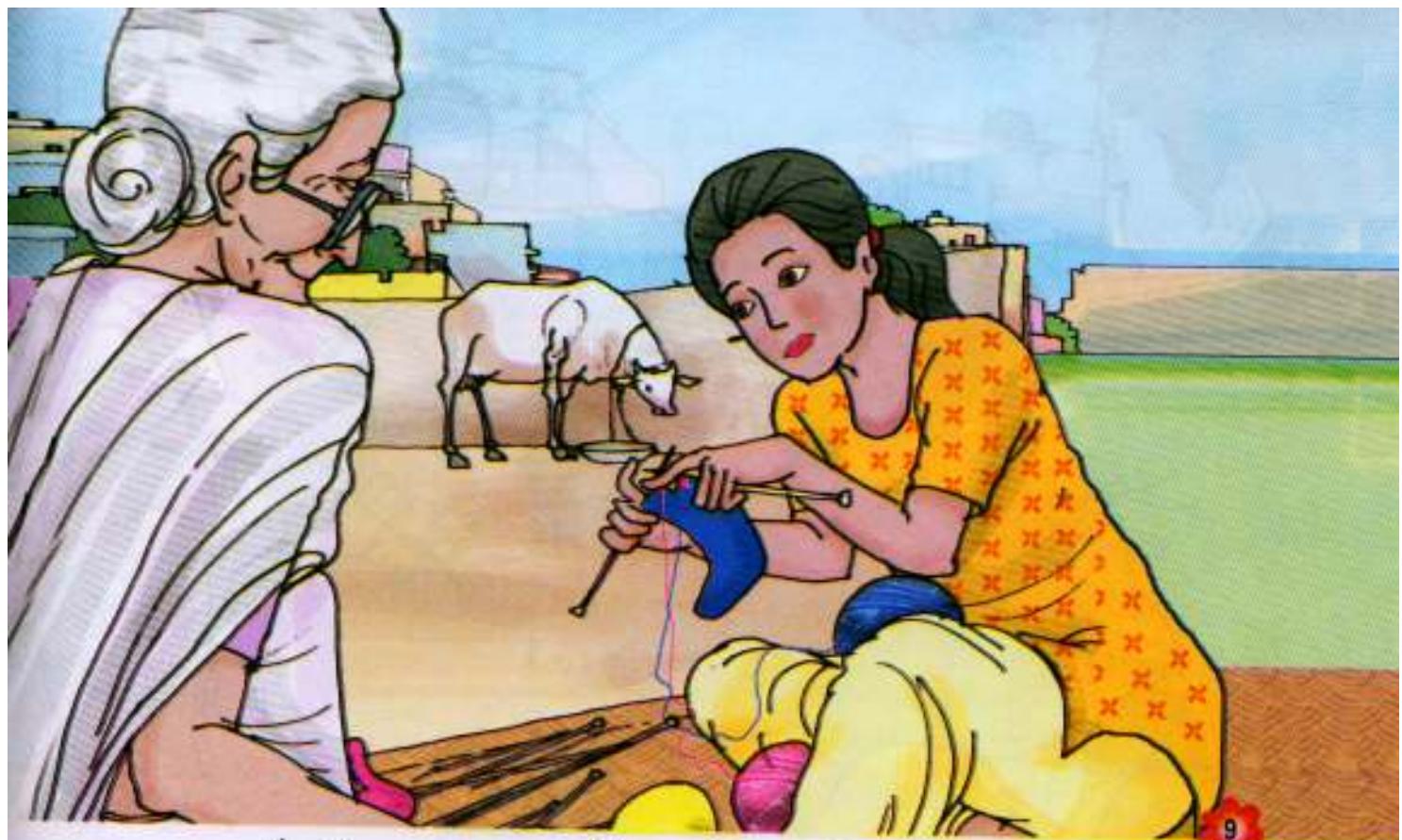
7

जब ऊन खिंची तो मौसी ने गोले की तरफ़ देखा।
उन्होंने मुनमुन को गोले से अलग कर दिया।
मौसी ने गोले को लपेट कर गोद में रख लिया।



8

मौसी फिर से मोज़ा बुनने लगी।
मोज़ा थोड़ा-थोड़ा दिखने लगा था।
नानी ने सिलाई पर गुलाबी ऊन के फंदे बना दिए।

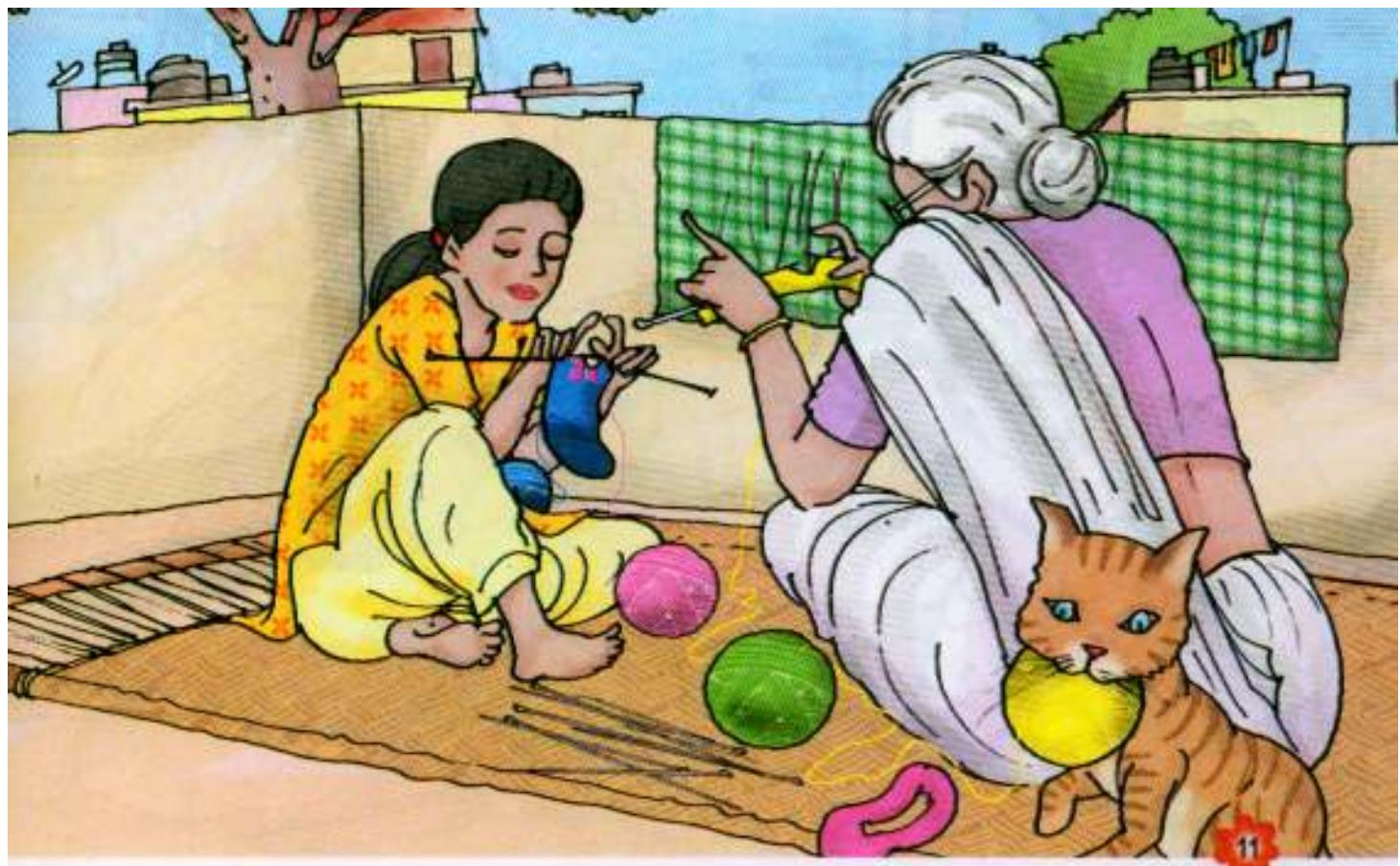


9

मौसी वापस बुनाई करने लगीं।
बुनाई में अब गुलाबी ऊन भी आ रही थी।
गुलाबी गोला भी हिल रहा था।



मौसी की बुनाई में गुलाबी फूल दिखने लगा।
मोज़ा काफ़ी लंबा लटकने लगा था।
नानी ने अपने लिए एक सिलाई पर फंदे डाल लिए।



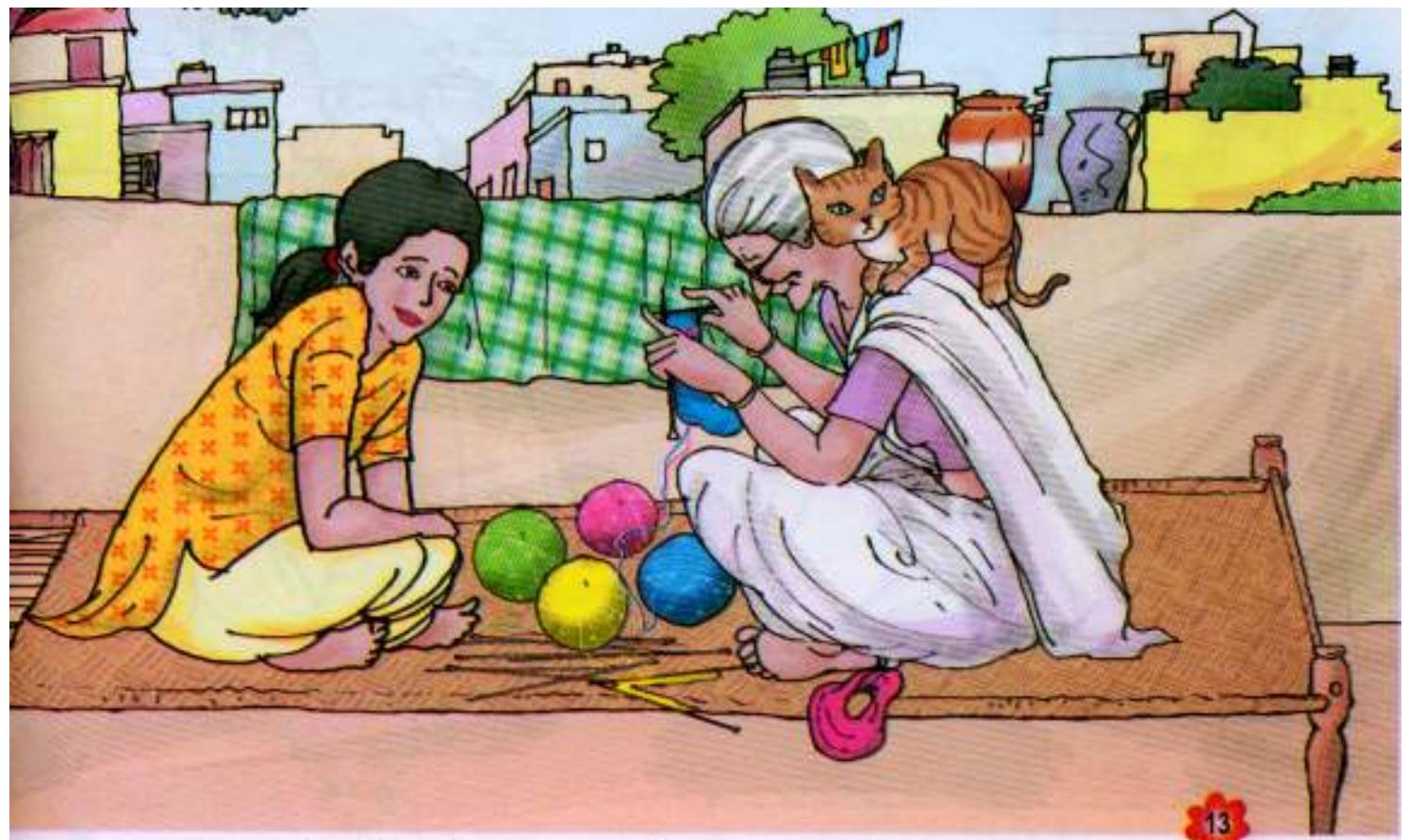
11

नानी ने भी बुनाई शुरू कर दी।
मुनमुन फिर चुपके से ऊपर आ गई।
वह नानी के गोले को नीचे ले जाने लगी।



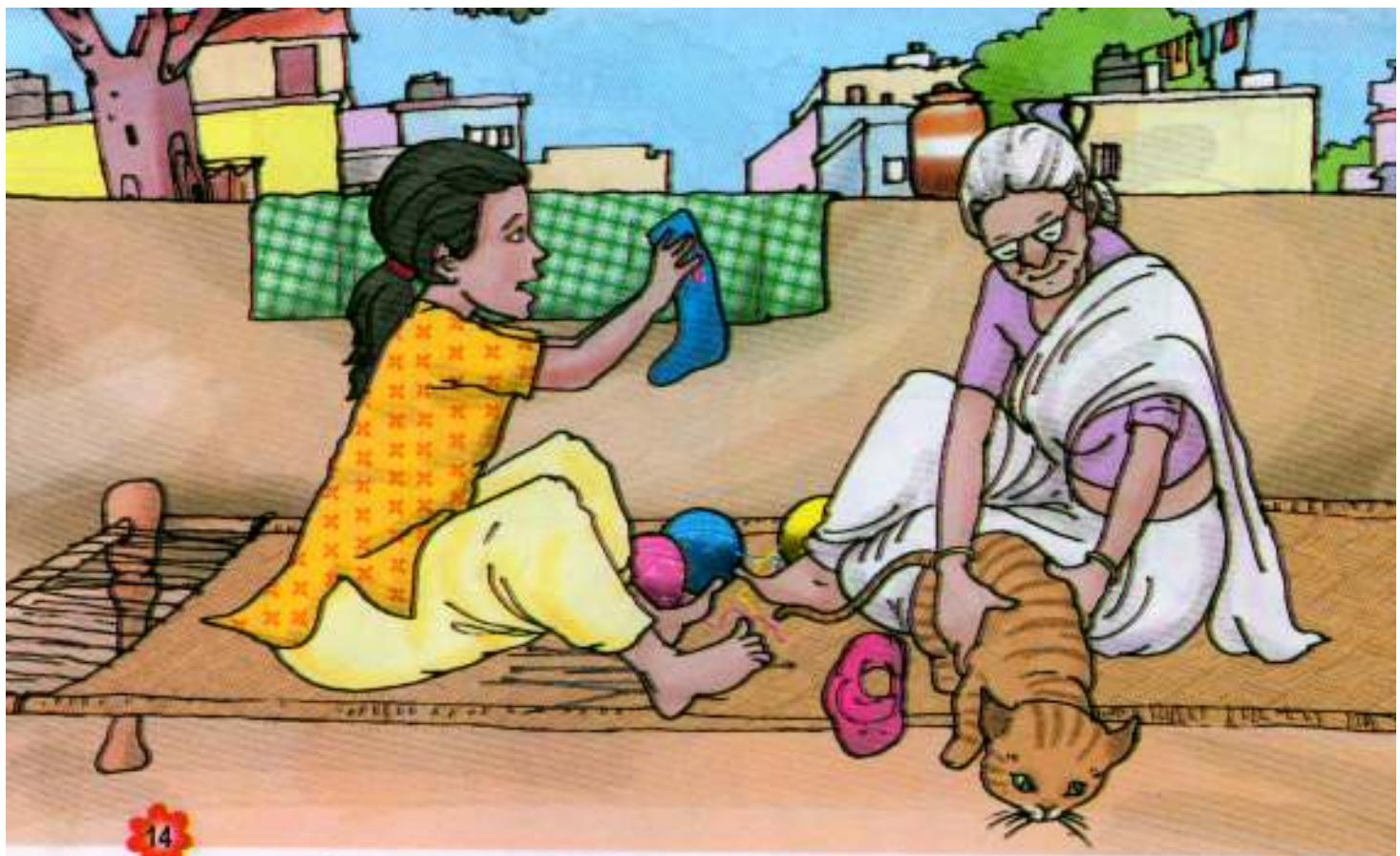
12

नानी ने मुनमुन के मुँह से गोला छुड़ाया।
उन्होंने मुनमुन को अपने कंधे पर बैठा लिया।
मुनमुन उनके कान पर अपना मुँह रगड़ने लगी।



13

नानी ने मौसी का मोज़ा हाथ में लिया।
उन्होंने मौसी को फंदे बंद करना सिखाया।
मौसी ने उस मोजे के फंदे बंद कर दिए।



14

मौसी का एक मोज़ा पूरा हो गया।
वह अपना मोज़ा देखकर बहुत खुश हुई।
नानी ने मुनमुन को नीचे उतार दिया।



15

मौसी अपना मोज़ा पहनकर देखने लगीं।
मोज़ा मौसी के पैर में आया ही नहीं।
मोज़ा तो छोटा पड़ गया।



16

मौसी ने मुनमुन को अपनी गोद में बैठाया।
उन्होंने मोज़ा मुनमुन को पहना दिया।
मोज़ा मुनमुन को आ गया।



2077



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बाल्य-मैट)

मेरे जैसी



पदना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 धौंष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका बेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वाशिष्ठ, सीमा कुमारी, खेनिका कौशिक, सुशोला शुक्ल

संवर्ध्य-समन्वयक - लिपिका गुप्ता

वित्तकित - जोएल गिल

सम्बन्ध तथा आवारण - निधि वाधवा

जी.टी.पी., ऑफिसर - अर्चना गुरु, अशूल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कलापथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीयीकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. विश्वास, विभागाध्यक्ष, प्रार्थिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजनम शर्मा, विभागाध्यक्ष, वाका विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अभ्यन्तर, रोडिंग एक्सेंप्ट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक काजपेथी, अभ्यन्तर, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विभागविद्यालय, वधो; प्रोफेसर फरीदा, अन्तुला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अभ्यन्तर विभाग, जाहिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अमूर्यनंद, रोडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनग सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एम., मुंबई; श्री तुरहत हसन, निदेशक, नेशनल चुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री गोहित धनकर, निदेशक, दिग्ंग, ब्रह्मपुर।

80 वी.एस.एस. पेपर पर प्राप्ति

प्रकाशन विभाग में संस्कृत, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अभ्यन्तर वार्ग, नई दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, हॉमिन्डकल परिच, राष्ट्र-५, मुम्बई 400004 द्वारा प्राप्ति।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-879-9

बरखा ऋमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के भौतिक देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पांच क्रांतिकारी में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थानीय पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्य की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों परआधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थानीय पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यक्रमों के होके क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशन को पूर्णतया किसी विद्युत या अन्य विकल्प के द्वारा प्रकाशन के किसी भाव को अपना लगा देने की विद्युतीय, वस्त्रीय, फोटोप्रिलिंग, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पूर्ण प्रयोग पश्चात द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण लंबित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के क्रांतिकार

- * एन.सी.ई.आर.टी. कैफा, लै. अभिनव भार, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- * 108, 100 फॉट एंड, नई एसटीज़ेन, होमटेक्नो, बनसपानी 111 मंज़िल, बालूक 560 085 फोन : 080-26725740
- * नवजीवन ट्रस्ट फाल, जलपार नवजीवन, असमरपाल 330 014 फोन : 079-27541446
- * श्री.इन्द्र-सी. कैफा, निकट: धनकर वास स्ट्रीट नवीनी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- * श्री.उमा-सी. कैफा, मलीरीवा, मलीरीवा, गुडाकाट 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन संहार्योग

अभ्यन्तर, प्रकाशन विभाग : पी. एक्स्प्रेस

मुख्य उत्पादन अधिकारी : श्री तुरहत हसन
मुख्य संवादक : श्वेत उपल

मेरे जौसी



बुआ



दीपा



रानी



मम्मी



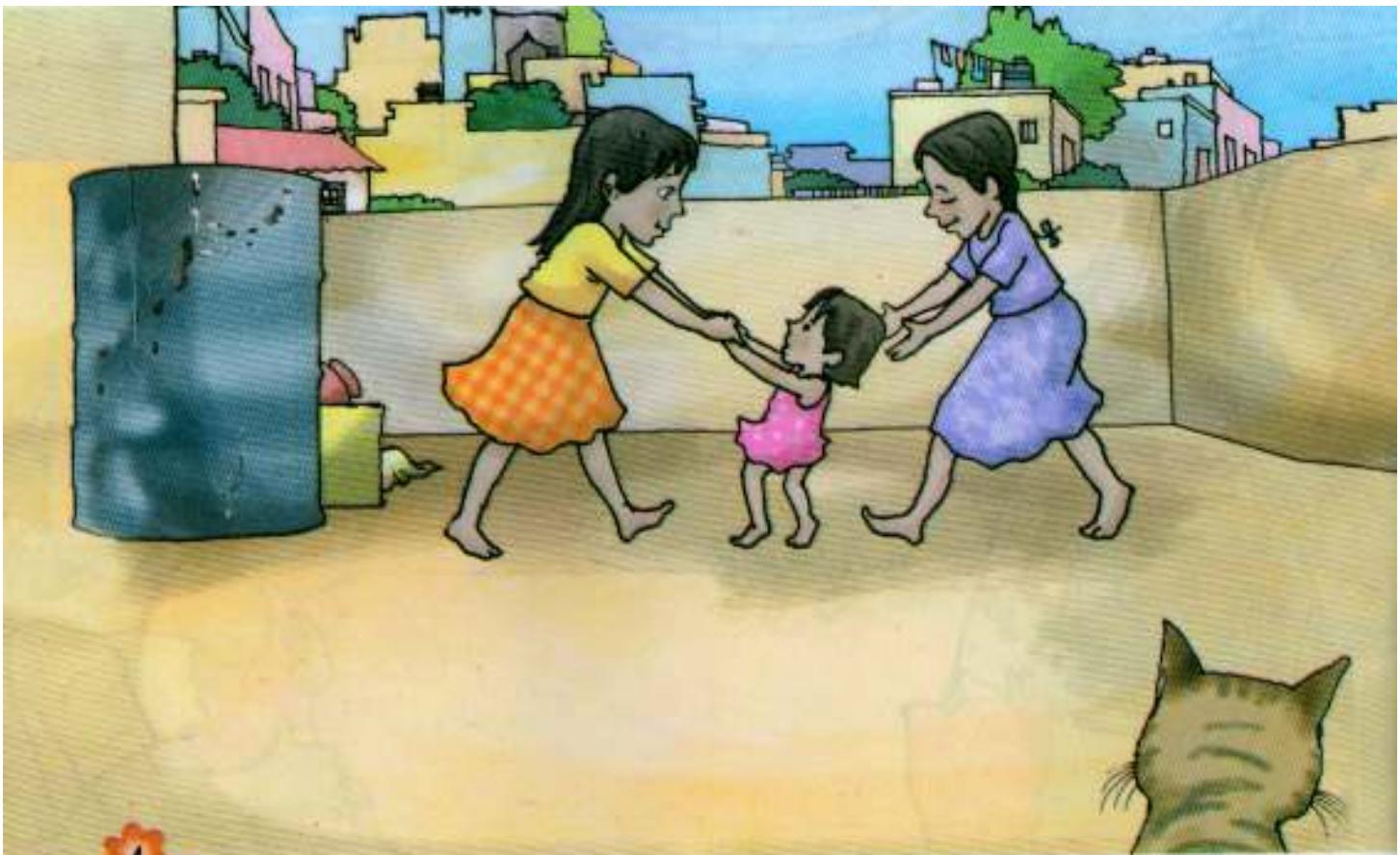
2

एक दिन रानी की बुआ उसके घर आई।
बुआ साथ में अपनी छोटी-सी बेटी को भी लाई।
उनकी बेटी का नाम दीपा था।



3

रानी ने दीपा को अपनी गोद में ले लिया।
रानी दीपा को खिलाने लगी।
दीपा सिर्फ़ एक साल की थी।



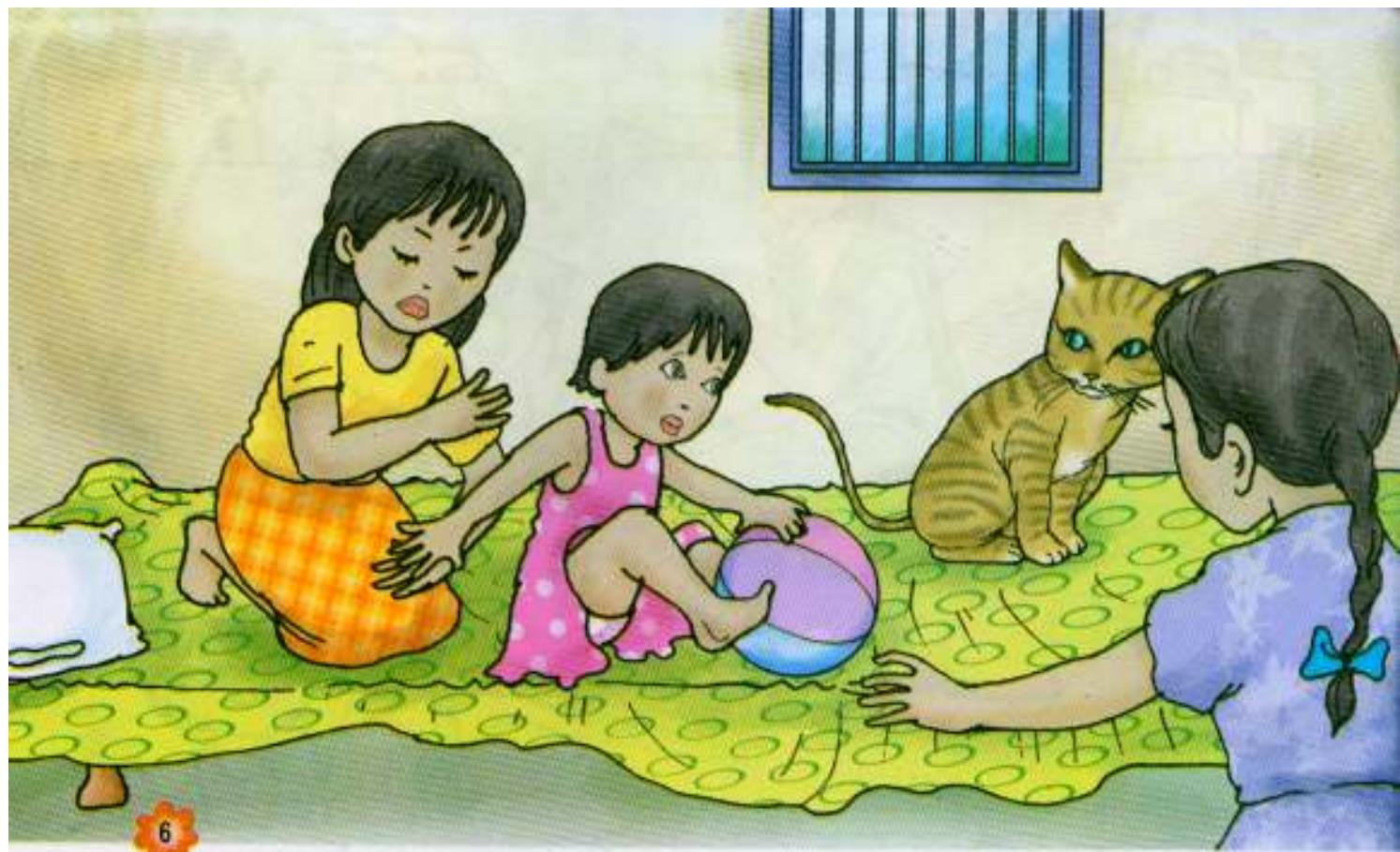
4

रमा भी वहाँ आ गई।
वह भी रानी के साथ खेलने लगी
रमा और रानी ने दीपा को खूब खिलाया।



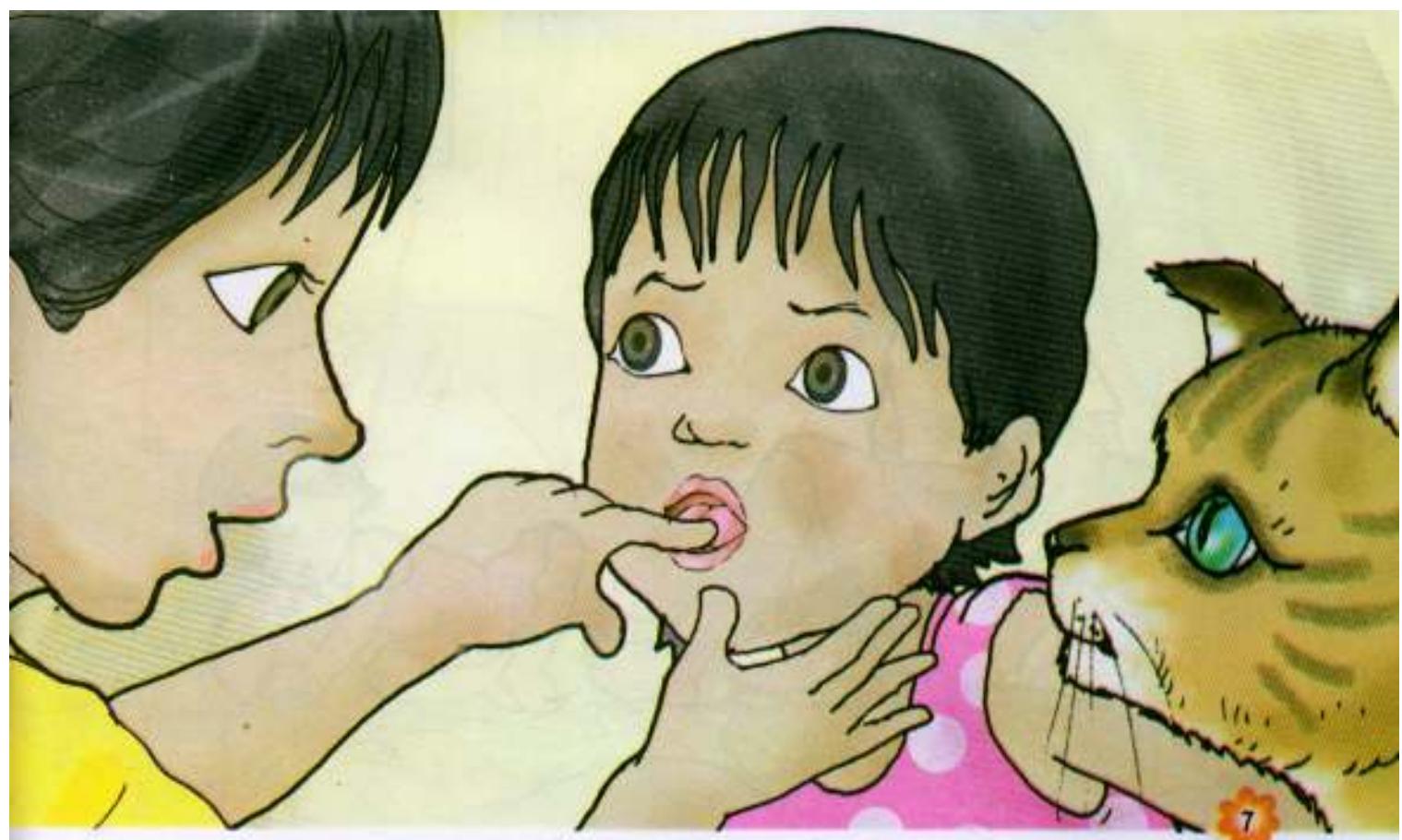
5

बुआ बोलीं कि दीपा रानी जैसी दिखती है।
मम्मी भी बोलीं कि दीपा रानी जैसी दिखती है।
रानी दीपा को गौर से देखने लगी।



6

रानी ने दीपा को बिस्तर पर बैठाया।
उसने दीपा की बाँह से अपनी बाँह मिलाकर देखी।
उसे दीपा की बाँह पतली और अपनी बाँह मोटी लगी।



रानी ने दीपा का मुँह खोला।
वह दीपा के दाँत ढूँढ़ने लगी।
दीपा के मुँह में चार ही दाँत थे और रानी के बहुत सारे।



8

रानी ने अपने पैर दीपा के पैरों से मिलाए।
दीपा के पैर छोटे थे और रानी के बड़े।
दीपा के पैर पतले थे और रानी के मोटे।



9

रानी ने अपनी उँगलियाँ दीपा की उँगलियों से मिलाई।
दीपा की उँगलियाँ छोटी थीं और रानी की बड़ी।
दीपा की उँगलियाँ पतली थीं और रानी की मोटी।



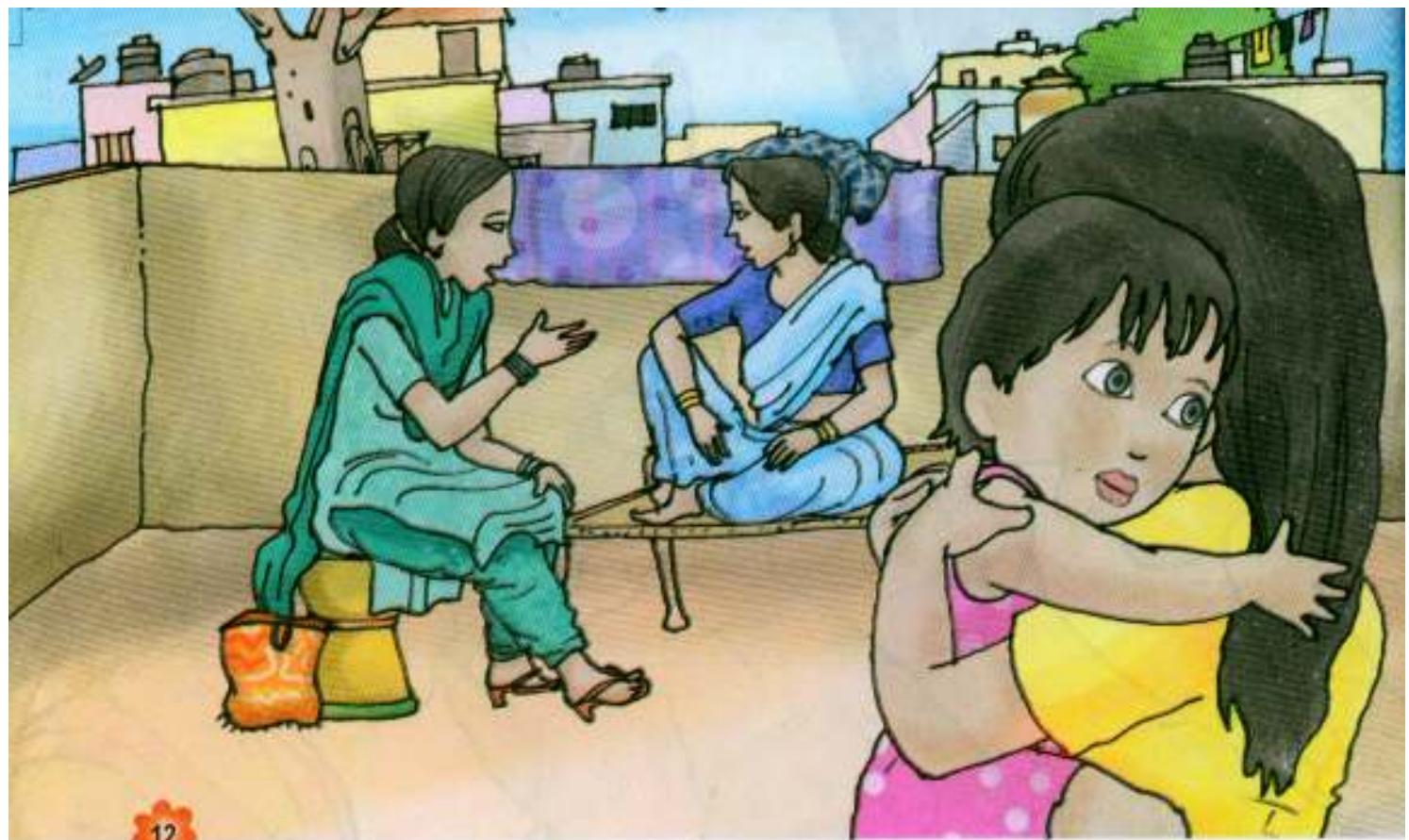
10

रानी ने अपने नाखून दीपा के नाखून से मिलाए।
दीपा के नाखून बहुत नरम और गुलाबी थे।
रानी के नाखून थोड़े सख्त और कम गुलाबी थे।



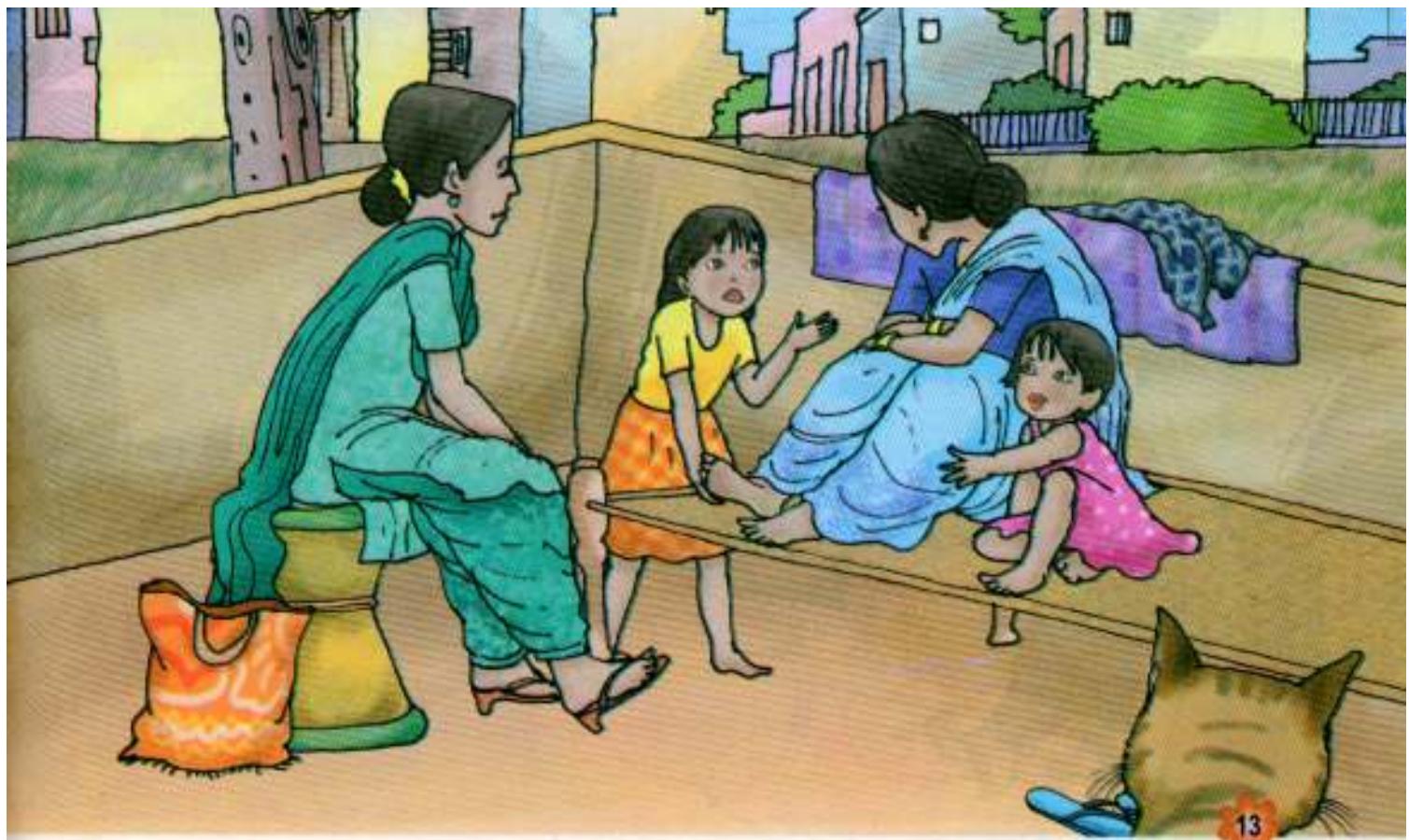
11

रानी ने अपनी नाक दीपा की नाक से मिलाई।
रानी अपनी नाक छू-छूकर देख रही थी।
वह नाक मिला कर देख नहीं पाई।



12

रानी ने दीपा को गोद में उठाया।
वह उसे लेकर बुआ के पास गई।
वहाँ रानी की मम्मी भी थीं।



13

रानी ने बुआ से कहा कि दीपा उसके जैसी नहीं है।
रानी को दीपा अपने जैसी नहीं लगी।
वह बोली कि दीपा मेरे जैसी नहीं है।

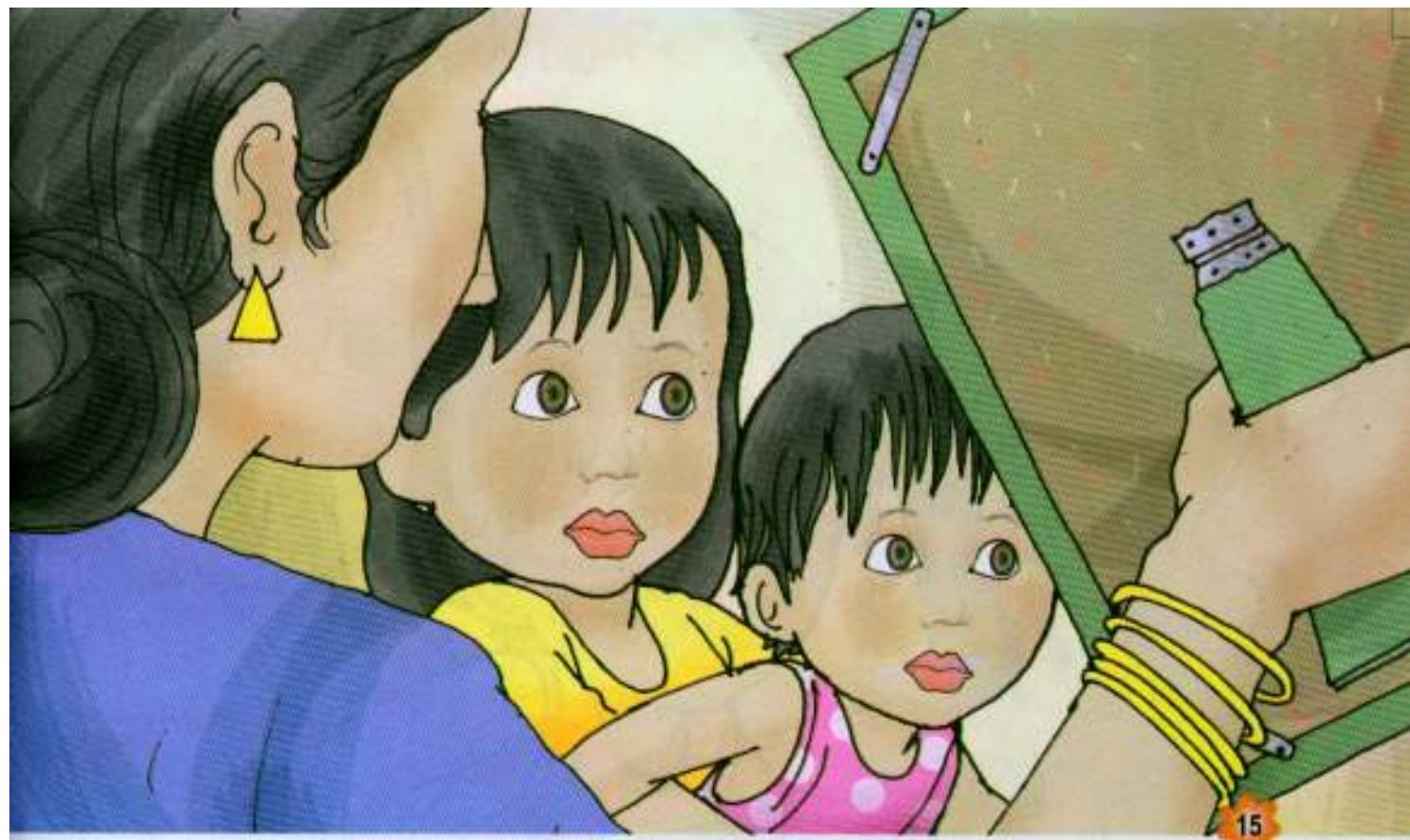


14

माँ ने रानी को शीशा लाने के लिए कहा।

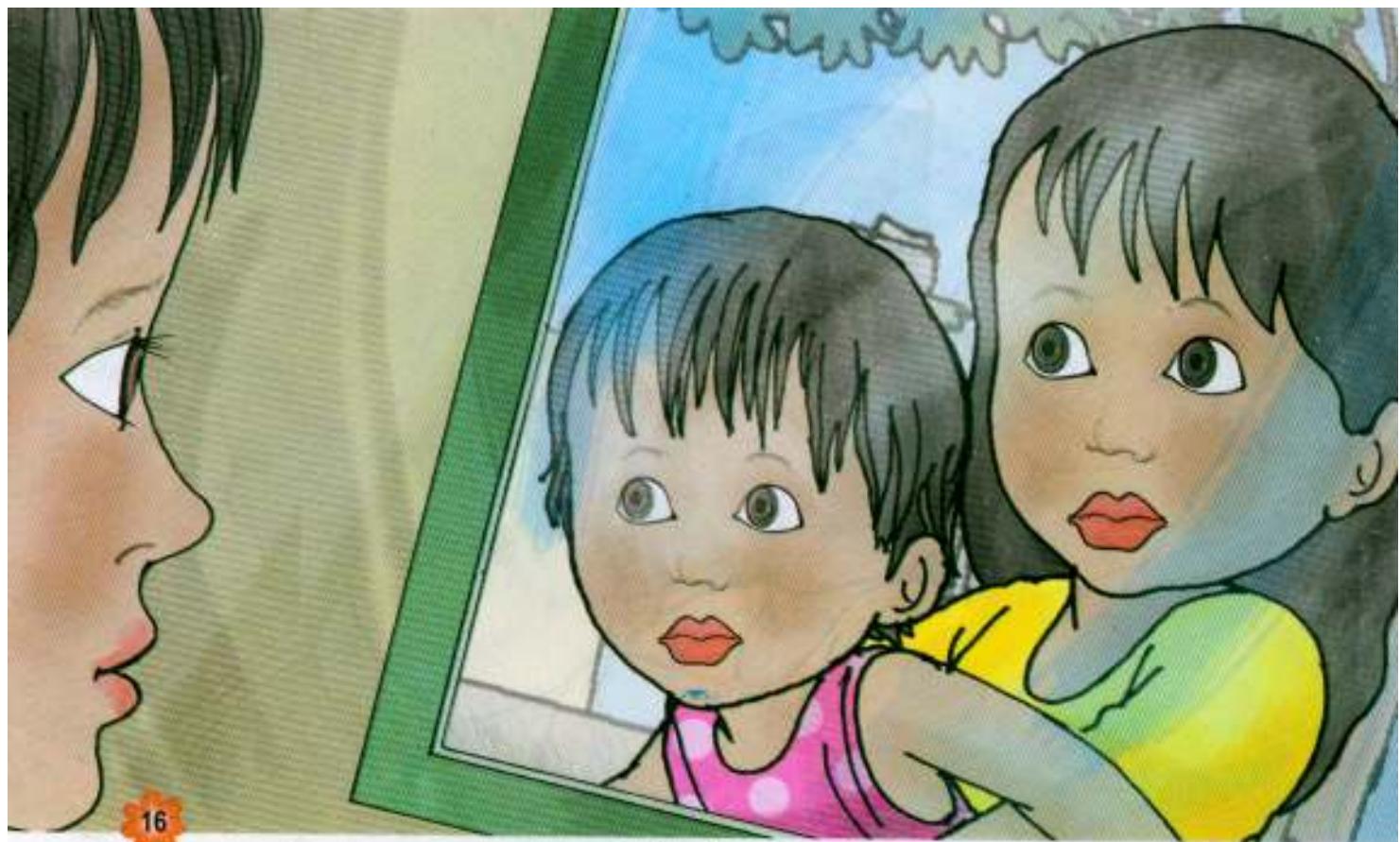
रानी शीशा लाने अंदर गई।

वह हरे किनारे वाला शीशा लेकर लौटी।



15

माँ ने रानी से शीशे में देखने के लिए कहा।
उन्होंने दीपा को भी शीशे के सामने खड़ा कर दिया।
रानी अपना और दीपा का चेहरा शीशे में देखने लगी।



16

रानी ने ध्यान से शीशे में देखा।
उसे दीपा अपने जैसी ही लगी।
वह सिर हिलाकर बोली कि दीपा मेरे जैसी है।



नव शिक्षा अभियान

नव पढ़ें नव बढ़ें



2078



₹. 10.00

राष्ट्रीय शिक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पहचान समिति

कूदती जुराबें



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पाँच 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला विधायिक समिति

कवचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति बर्मा, सारिका वर्षाचार, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सर्वस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

विज्ञानकन - कृतिका एस. नरेला

सम्भा तथा आखरण - निधि वाथवा

डी.टी.पी. अध्येतर - अर्जन गुप्ता, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निरेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर जयसुधा कामथ, संयुक्त निरेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोफेसियनल संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वे. के. वर्षाचार, विभागाध्यक्ष, प्रार्थिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर उमपन्न शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला महेश्वर, अध्यक्ष, सीडिंग एवं वलपर्से सैल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक बाजारपेटी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महालया गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्षा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्लाह खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जल्मिया पिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वनंद, रोडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शशनग सिन्हा, डी.इ.ओ., आई.एल.एव.एस.एस., मुम्बई; सुश्री जुलहत हसन, निरेशक, नेशनल चुक्क ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निरेशक, दिग्गज, जयपुर।

३० डी.एस.एस. एवर पर धूमित

प्रकाशन विभाग ने साचिव, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी मार्ग, नई दिल्ली ११००१६ द्वारा प्रकाशित तथा पक्ष प्रिंटिंग प्रेस, डी-२८, इंडिपेंस एविंग, माहठ-१०, मुम्बई २८१००४ द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)

978-81-7450-880-5

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथाओं स्तुतियों में विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की सूशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को गोजमरी की होटी-होटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' को सभी कहानियाँ वैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चयों के हरेक छोड़ में सज्जानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

इसका कोई संवेदनशीलता के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को लापन तथा इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी, ऑटोप्रिंटिंग, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्र्याप्त एवं अन्य उपकरण संग्रहन अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.डी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.डी.ई.आर.टी. एप्स, डी.सी.वार्स, डी.सी.वार्स ११० ०१६ फोन : ०११-२६५६२७०८
- १०८, १०९ वॉट एंड ईसी एक्स्टेंशन, हाम्पेंडेंस, बैंगलोर ३०० ०१४ फोन : ०८०-२६७२५२४०
- नवरीमन ट्राई भवन, नवरीमन नवरीमन, अहमदाबाद ३८० ०१४ फोन : ०७९-२७५४१४४६
- डी.एस.प्यू.ले. कैप्पर, बनकल बम स्टार्ट चैम्पियन, कोलकाता ७०० ११४ फोन : ०३३-२५५३०४५४
- मी.एस.प्यू.ले. कॉम्पैक्स, मलीगांव, नुवाबादी ३८१ ०११ फोन : ०३६१-२६७४३६०

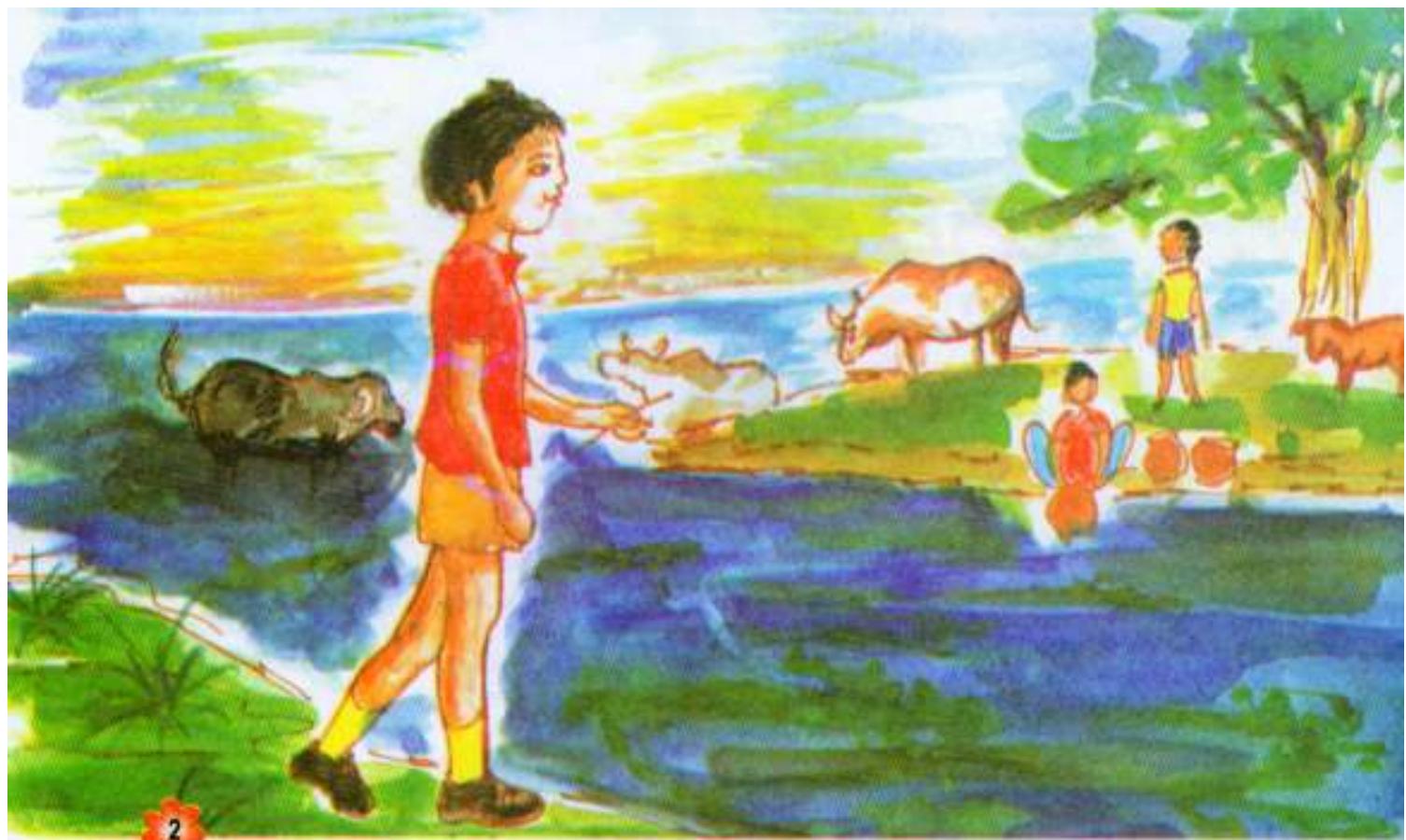
प्रकाशन सदृश्यम्

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : डॉ. रमेश्कुमार
मुख्य संपादक : रमेश उपात
मुख्य अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य अध्यक्ष प्रबन्धक : गौतम गंगुली

कूदती जुराबें

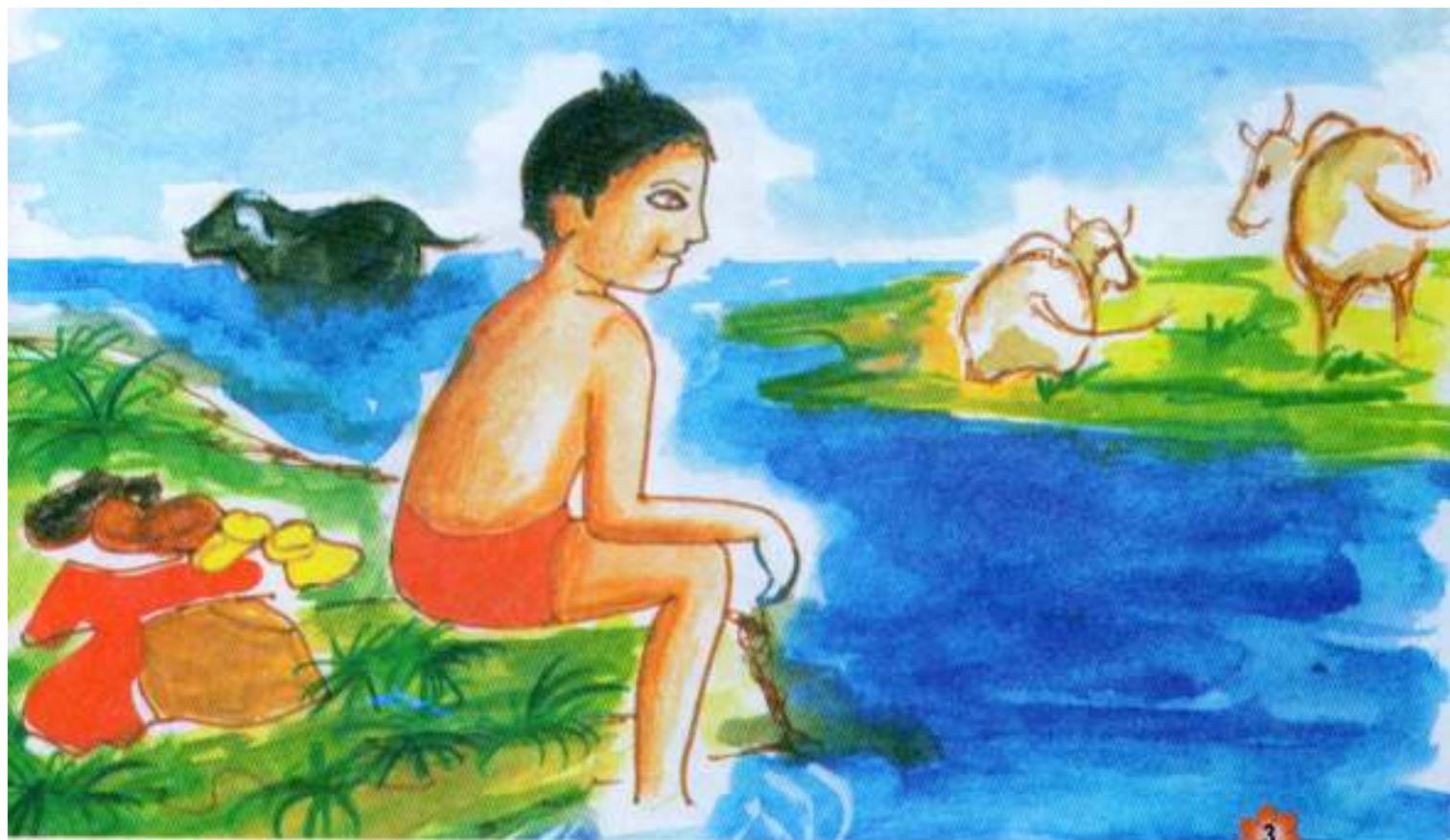


माधव



2

एक दिन माधव सुबह-सुबह तालाब पर रुक गया।
तालाब का ठंडा-ठंडा पानी उसे बहुत पसंद है।
उसे तालाब में डुबकियाँ लगाने में बहुत मज़ा आता है।



3

माधव ने जूते और जुराबें उतारीं और एक तरफ़ रख दीं।
उसने अपने कपड़े भी उतार कर एक तरफ़ रख दिए।
वह पानी में पैर डाल कर तालाब के किनारे बैठ गया।



4

बहुत देर माधव तालाब में छोटे-छोटे पत्थर फेंकता रहा।
उसे पत्थर से तालाब में बनने वाले गोले भी पसंद हैं।
वह ऐसे गोले बनाने तालाब पर कई बार आता है।



5

माधव की नज़र तालाब की मछलियों पर पड़ी।
उसने पत्थर फेंकना बंद कर दिया।
माधव गौर से मछलियों को देखने लगा।



6

माधव ने काली मछली देखी।
माधव ने सुनहरी मछली देखी।
उसने चमकीली मछली भी देखी।



वह झुककर मछलियों को पास से देखने लगा।
तालाब में बहुत सारी मछलियाँ थीं।
कुछ मछलियाँ छोटी-सी थीं और कुछ बड़ी।



8

माधव मछलियों को पास बुलाना चाहता था।
उसने तालाब में रोटी के टुकड़े डाले।
रोटी खाने के लिए खूब सारी मछलियाँ आ गईं।



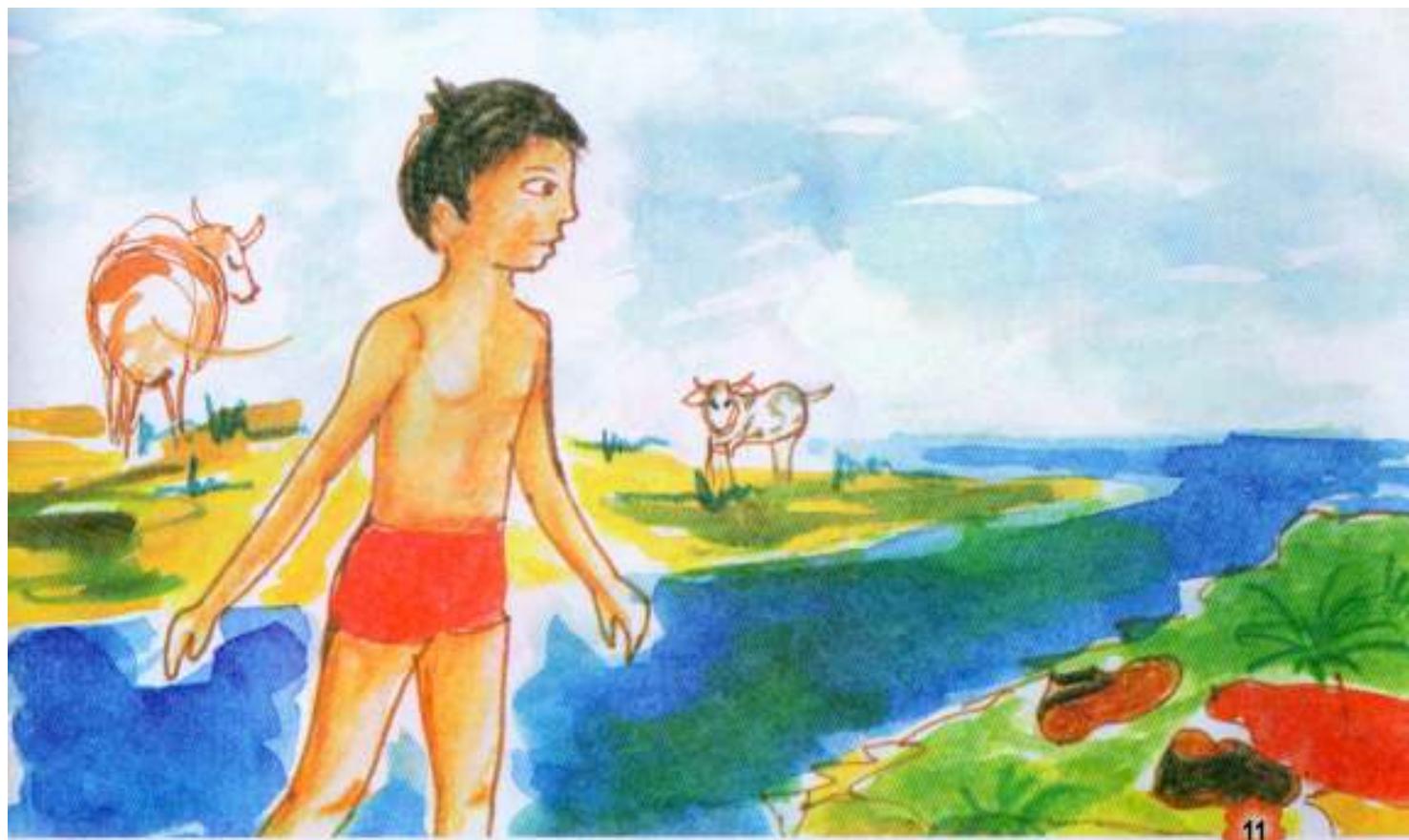
9

माधव ने मछलियों को पकड़ने की कोशिश की।
सारी मछलियाँ भाग गईं।
एक भी मछली हाथ नहीं आई।



10

माधव ने मछली पकड़ने के लिए डुबकी लगा दी।
उसने हाथ बढ़ाकर मछलियों को पकड़ने की कोशिश की।
पर मछलियाँ दूर भाग गईं।



माधव को एक तरकीब सूझी।
उसने सोचा कि वह जुराबों में मछलियाँ पकड़ लेगा।
वह अपनी जुराबें उठाने किनारे पर आया।

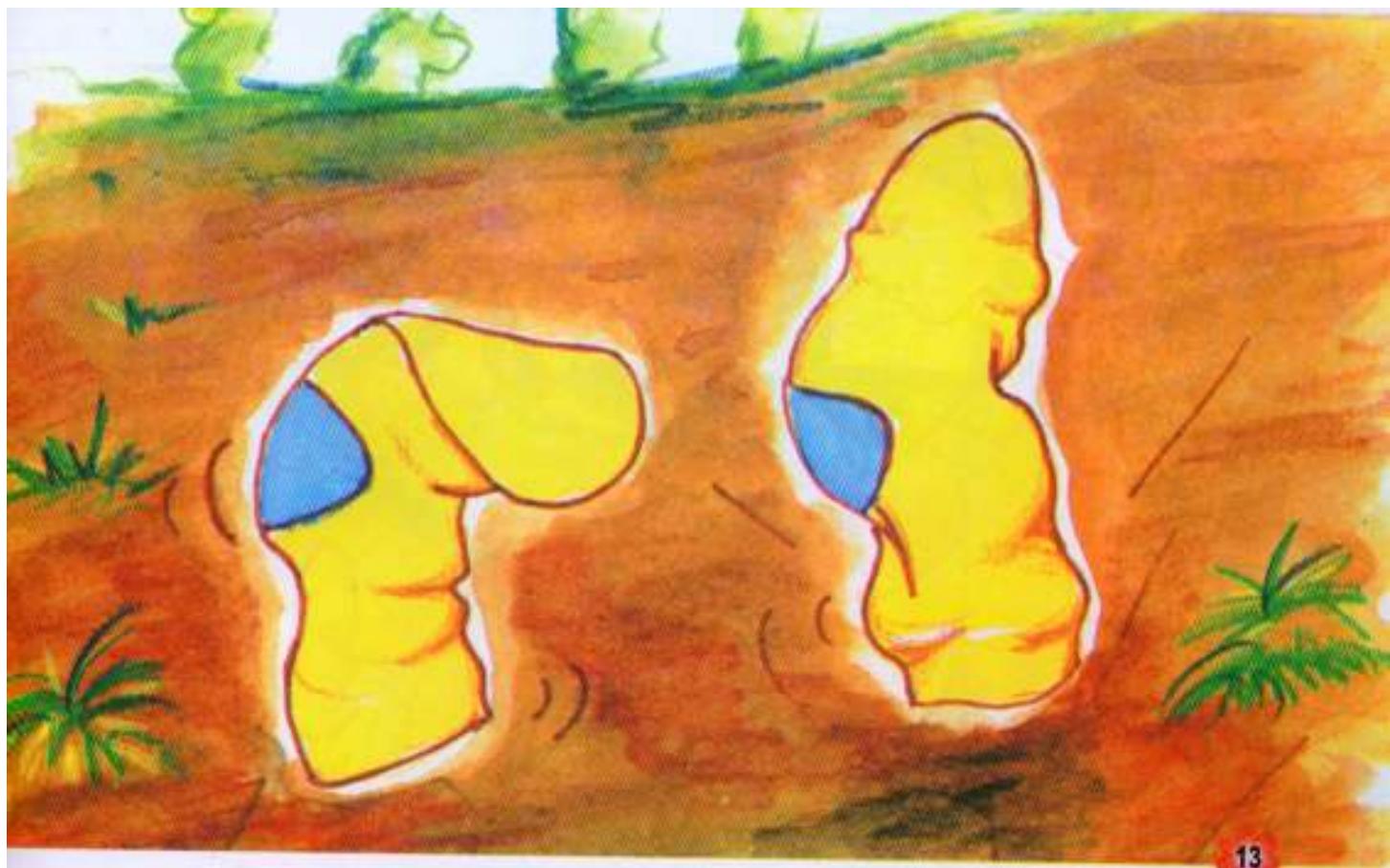


12

माधव की जुराबें किनारे पर नहीं थीं।

उसने अपने कपड़े झाड़-झाड़ कर देखे।

उसने जूते में भी देखा।



13

पर उसकी जुराबें किनारे पर नहीं थीं।
माधव की जुराबें तो दूर मैदान में कूद रही थीं।
उसकी नज़र कूदती जुराबों पर पड़ी।



14

माधव फौरन तालाब से बाहर आ गया।

वह कूदती जुराबों के पीछे भागा।

जुराबें आगे-आगे कूदती रहीं।



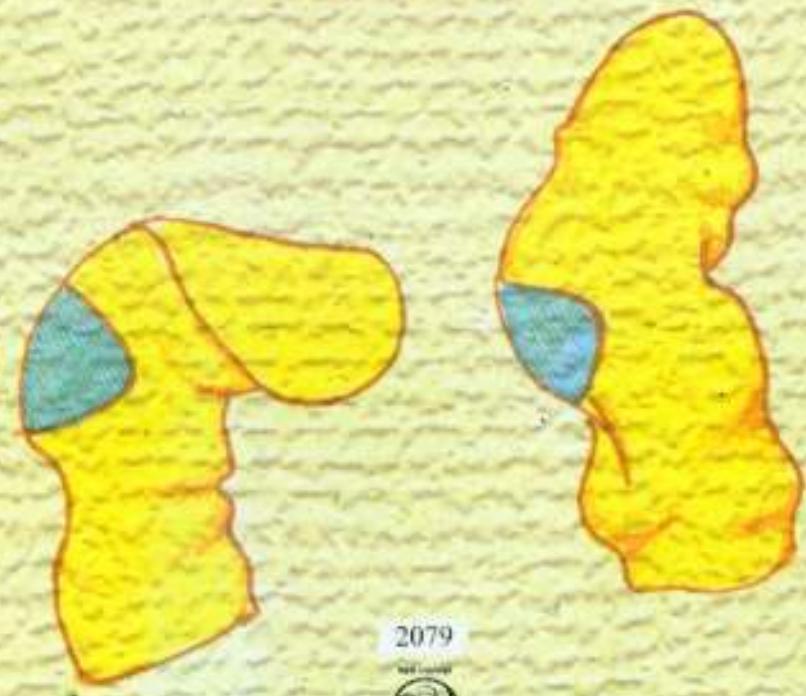
15

माधव तेजी से जुराबों के पीछे भागा।
पर वह उनको पकड़ नहीं पाया।
जुराबें कूदती ही रहीं।



16

जुराबें एक झाड़ी में जाकर अटक गईं।
उनमें से कुछ निकला।
माधव उनको देखकर हँस पड़ा।



2079



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बट्टा-५२)

978-81-7450-880-5

तालाब के मज़े



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलादुल विभाग, मुकेश मालवीय, गणिका बेनन, राजिलनी शामा, लता याण्डे, स्वाति चहर्मी, सारिका चौशाह, सीमा कुमारी, सामिका कौशिक, सुशोभ शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका शुक्ल

बिप्रांकन - कृतिका एस. नकला

सम्बा तथा आवरण - निधि वाधक

डी.टी.पी. ऑफरेंस - अर्चना गुजा, अंशुल शुक्ल

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निर्देशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर जग्नुधा कामथ, संयुक्त निर्देशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोत्साहिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर ने. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रार्थभक्त शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधव, अध्यक्ष, सिद्धंग डॉकलैपर्सेंट मैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अर्जुन कांडोयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, नक्षत्र योगी अंतर्राष्ट्रीय शिखि विश्वविद्यालय, बर्धा; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अमृतरंग, रीढ़र, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ.शब्दनम मिनाना, सी.इ.ओ., आई.ए.ल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री तुवहत हसन, निर्देशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री गोहित भगवर, निर्देशक, दिल्ली, जयपुर।

80 श्री.एस.एस. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अर्जुन दास, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंक्ति प्रिंटिंग प्रेस, हॉ-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साईट-ए, मधुबन 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-881-2

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सतरों और पाँच शताब्दियों से विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजाना की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हारेक क्षेत्र में सज्जानाल्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आमानों से किताबें ढाठ सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

उद्योग को पूर्णअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी व्यक्ति को आपना तथा इनकटानियों, मसीनों, कोटोप्रसिसिंचि, रिकार्डिंग अवयव किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका अप्राप्य अवकाश प्रसंगत बनाए रखिए।

एन.सी.ई.आर.टी. से प्रकाशन विभाग के कारबालय

- एन.सी.ई.आर.टी., कैपा, श्री अर्जुन दास, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562798
- 103, 109, शोट रोड, हैंडे एक्स्टेंशन, होमोनोने, कलाकारी III स्टेज, बाबूगढ़ 560 055 फोन : 080-26725740
- नवीनीन ट्रस्ट भवन, दावापार, नवापाल, नवापाल 380 014 फोन : 079-27541446
- श्री.इम्प्रूली, कैपा, लिंग: भगवत्त बम स्ट्रीप अनिली, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- श्री.लक्ष्मी, कॉम्पैक्स, मालीगाँव, नुवाबादी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहाय्यग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. रामकृष्ण

मुख्य संपादक

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिल कुमार

मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गुप्ती

तालाब के मज़े



काजल



माधव



2

काजल और माधव के गाँव में एक तालाब था।
दोनों तालाब पर रोज़ खेलने जाते थे।
उन्हें तालाब का पानी बहुत अच्छा लगता था।



3

एक दिन वे दोपहर को तालाब पर पहुँचे।
वहाँ बहुत सारे बगुले आए हुए थे।
तालाब सफेद बगुलों से भरा हुआ था।



4
काजल और माधव इतने सारे बगुले देखकर खुश हो गए।
दोनों कूद-कूद कर बगुलों के बीच भागे।
दोनों ने बगुलों को पकड़ने की कोशिश भी की।



5

अगले दिन मोनी भी उनके साथ तालाब पर आ गई।
मोनी बगुलों पर भौंकने लगी।
काजल ने उसको प्यार से चुप कराने की कोशिश की।



6

लेकिन मोनी भौंकती ही रही।
वह दौड़कर बगुलों पर झापटी।
काजल ने उसे गोद में उठा लिया।



7

माधव और काजल उसको घर छोड़ने चल दिए।
तालाब के उस तरफ उन्हें कुछ घोंसले दिखे।
बगुलों ने तालाब के किनारे के पेड़ों पर घोंसले बनाए थे।



8

घोंसलों में तिनके घास और पंख लगे हुए थे।
बगुलों के घोंसलों में अंडे भी थे।
काजल और माधव दूर से अंडों को देखते रहे।



9

दोनों रोज़ अंडों को देखने लगे।
हर एक घोंसले में तीन या चार अंडे थे।
अंडे हल्के नीले रंग के और छोटे-बड़े थे।



10

थोड़े दिनों बाद कुछ अंडों का रंग मटमैला हो गया।
उनमें से छोटे-छोटे बगुले निकल आए।
छोटे बगुले आवाज़ निकालते और पंख फड़फड़ाते थे।



11

बगुले अपनी चोंच में उनके लिए खाना लेकर आते।
वे बच्चों की चोंच में खाना डालते थे।
काजल और माधव को यह देखने में मज़ा आता था।



12

छोटे बगुले अब घोंसलों से बाहर भी आते थे।
तालाब के किनारे खूब सारे छोटे-छोटे बगुले दिखने लगे।
काजल और माधव छोटे बगुलों के पीछे भागते।



13

धीरे-धीरे छोटे बगुले बड़े होने लगे।
वे बड़े बगुलों के साथ तालाब में भी बैठने लगे।
वे तालाब में मछली और मेंढक भी पकड़ने लगे थे।



14

एक दिन सारे बगुले वापस अपने घर चले गए।
काजल और माधव ने सबको उड़कर जाते हुए देखा।
उन्हें पता था कि बगुले अगले साल फिर आएँगे।



15

उस दिन मोनी फिर तालाब पर आ गई।
काजल ने उसे भगाया नहीं।
मोनी उन दोनों के साथ ही घूमती रही।



तभी उनकी नज़र तालाब में नहाती भैंसों पर गई।
काजल और माधव भैंसों पर जाकर बैठ गए।
दोनों ने भैंसों की पीठ पर चौक से अपना नाम भी लिखा।



2080



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बाला-सेट)

978-81-7450-881-2

बबली का बाजा



पंचायत सम्मान

प्रश्नम संस्करण : अकाउटर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पृष्ठ 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला नियमांग समिति

कल्चन मेटी, कृष्ण कुमार, ज्योति मेटी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मनन, शालिनी शर्मा, लला पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका बर्शाप्ल, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि वाधवा

सम्बन्ध तथा आवरण - निधि वाधवा

दी.टी.पी., ऑफिटर - अर्चना गुप्ता, अंशुल शुक्ल, सीमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, विदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त विदेशक, कन्नड़ीय शैक्षिक छात्राविकी सम्बान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. चौधरी, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर शमजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीटिंग एवं लीपेंटेंट यैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक काजपेही, अध्यक्ष, पूर्व कूलपरिष, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विभागविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जायिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वीनंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विभागविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनग रिनहा, सी.ई.ओ., अई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुनी नुगहत हसन, विदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, विदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 नी.एस.एम. यैक्य प्रामुख

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अविनंद मर्म, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंक्ति प्रिंटिंग प्रेस, दी-३४, इंडिस्ट्रियल एरिया, माइट-ए, मध्यप्रदेश 281004 द्वारा प्रसिद्धि।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-882-9

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सतरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्यादा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यवस्था के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

स्वाधीनकार सुरक्षित

प्रकाशक को योग्यानुसारि के बिन इस प्रकाशन के किसी भाग को छापने तथा छोड़ाविकी, प्रोटोकॉलिंग, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रकाशन लाभान्वित द्वारा उत्पादन अथवा प्रसारण जीती है।

एन.सी.ई.आर.टी. के इकाइयान विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. लैनम, श्री अविनंद मर्म, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708 108, 109 फ्लॉट फ्लॉर, टेली एम्प्लोइमेंट, हैल्फेंडर, बनारसगढ़ III फ्लॉर, बंदरगाह 560 085 फोन : 080-26725746

प्रकाशन उत्तर प्रांत, राजस्थान विभाग, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-22541446 सी.एच.एस. बैंक, निकट, अहमदाबाद एवं चांडीगढ़, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.एच.एस. बैंक, निकट, निकट, मुमुक्षु विभाग, पुराणी बाजार, फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री नवाकुमार

मुख्य सचिव : श्रीमति उपल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य व्यापार प्रबंधक : गीतम गांगुली

बबली का बाजा



पापा



बबली



मम्मी



2

एक दिन बबली के घर में सफाई हो रही थी।

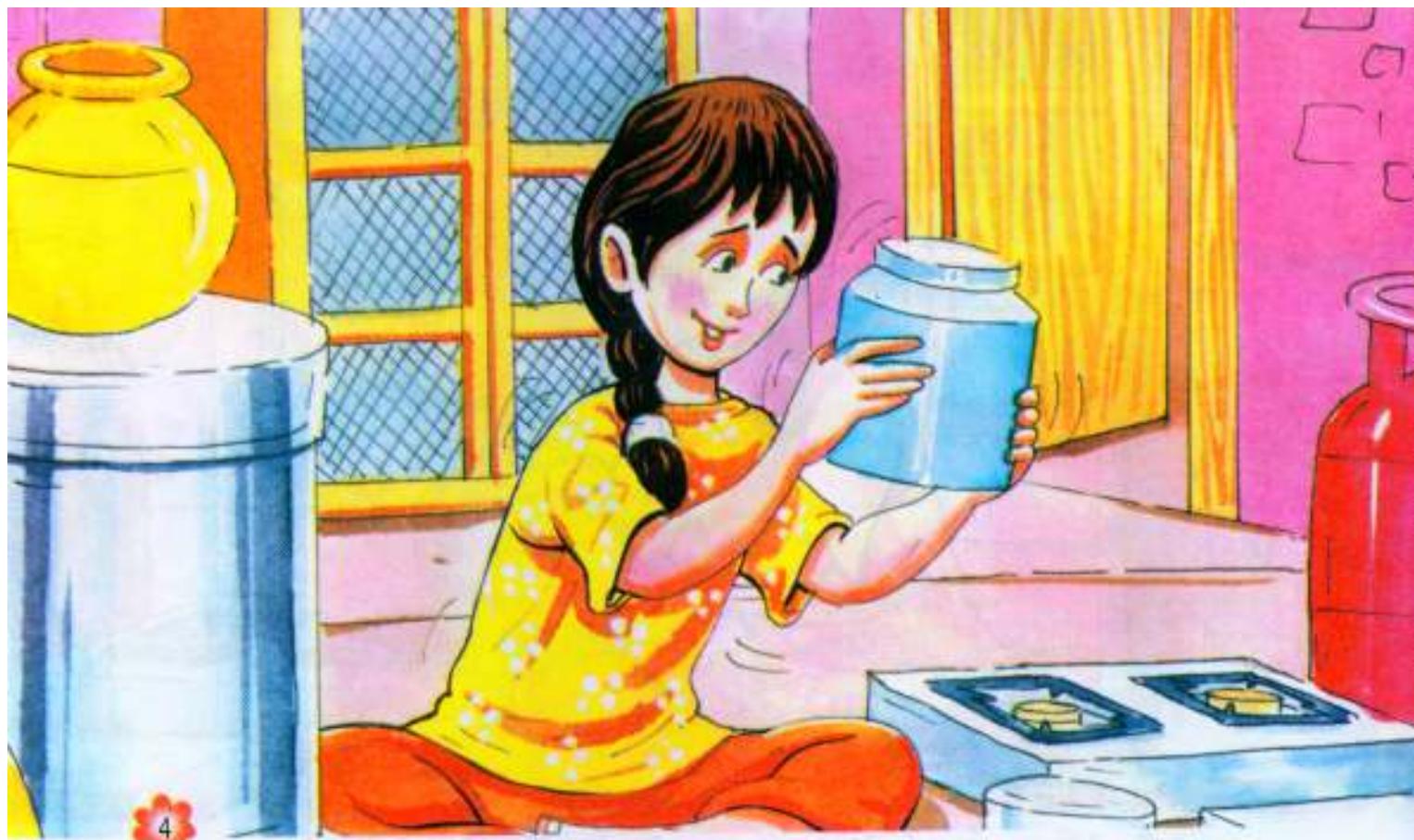
सारे घर का सामान आँगन में निकला हुआ था।

रसोई का सामान भी आँगन में ही था।



3

रसोई के सामान में बहुत सारे डिब्बे निकले थे।
बबली डिब्बों के ढेर के पास बैठ गई।
बबली ने अपने लिए एक नीला डिब्बा उठा लिया।



बबली ने डिब्बे को हिलाकर देखा।
डिब्बा हिलाने पर छन-छन की आवाज़ आई।
बबली ने डिब्बे को खूब बजाया।



बबली सारे घर में डिब्बा बजाती घूमी।
बबली सोचने लगी कि डिब्बे में क्या होगा।
उसने डिब्बा खोलकर देखा।



6

डिब्बे में चावल के दाने थे।
बबली ने डिब्बे को बंद कर दिया।
पहले की तरह उसे बजाती रही।



7

बबली डिब्बे को अपने साथ लेकर सोई।
रात को बबली के बिस्तर पर एक चूहा आया।
चूहा डिब्बे के सारे चावल खा गया।



बबली ने सुबह देखा कि डिब्बा खुला पड़ा था।
चावल के दाने गायब थे।
उसने माँ से और चावल माँगे।



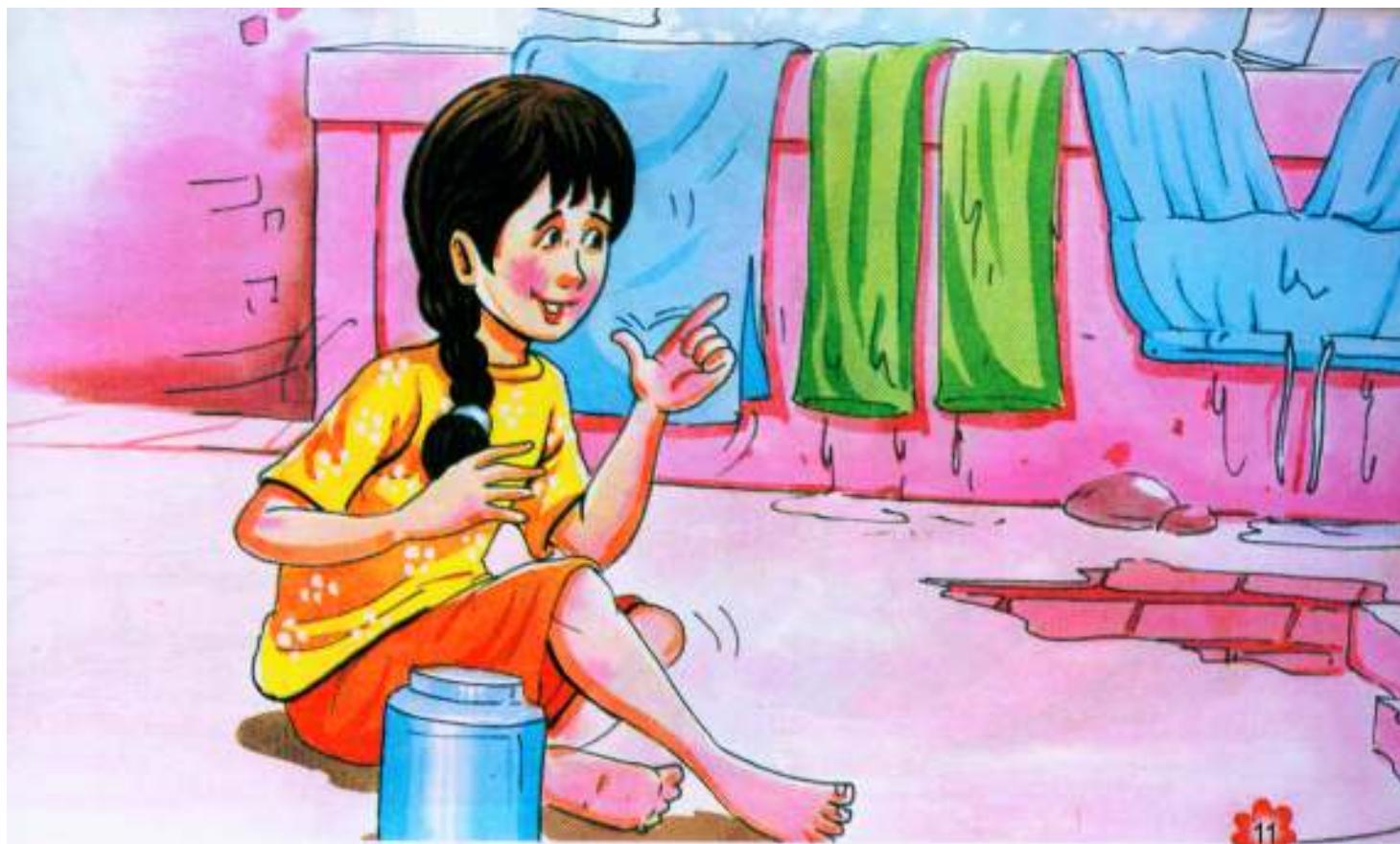
9

माँ ने चावल देने से मना कर दिया।
माँ बोली चावल खेलने की चीज़ नहीं है।
चावल तो खाने के लिए होता है।



10

बबली बहुत उदास हो गई।
वह छत पर जाकर बैठ गई।
वहाँ धुले हुए कपड़े सूख रहे थे।



11

बबली की नज़र सलवार पर पड़ी।
सलवार का नाड़ा लटक रहा था।
बबली को एक तरकीब सूझी।



12

बबली ने नाड़ा खींचकर निकाल लिया।
उसने नाड़े का एक सिरा डिब्बे से बाँध दिया।
नाड़े का दूसरा सिरा डिब्बे के दूसरी तरफ बाँध दिया।



13

डिब्बे से एक ढोलक बन गई।
बबली ने ढोलक अपने गले में पहन ली।
वह ढोलक बजा-बजा कर छत पर नाची।



14

बबली ढोलक बजाते हुए नीचे उतरी।
नीचे अभी भी सफ़ाई हो रही थी।
सामान अभी भी आँगन में ही पड़ा हुआ था।



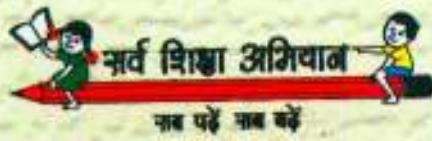
15

माँ डिब्बों को साफ़ कर रही थी।
पापा डिब्बों को अंदर ले जाकर रख रहे थे।
जीत सामान में कुछ ढूँढ़ रहा था।



16

सारे लोग बबली की ढोलक की आवाज़ सुनने लगे।
ढप-ढप-ढप-ढप-ढप-ढप-ढप
बबली गाना भी गा रही थी।



2081



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

₹. 10.00



पढ़ना है समझना

झूला



प्रश्नम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

केचन संठी, कृष्ण कुमार, ज्योति संठी, दुलदुल विश्वाम, मुकेश मालवीय, गोधिका मंत्रन, शालिमी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वर्षाचन,

सीमा कुमारी, सांकिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि वाधवा

सञ्जा तथा अवारण - निधि वाधवा

डी.टी.पी., ऑफिसर - अचना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा गाल

आधार ज्ञान

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीयकी संभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर ए. के. के. वर्षाचन, विभागाध्यक्ष, प्रार्थक विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रमेशनंद शर्मा, विभागाध्यक्ष, भावा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रिडिंग हंडबैगेट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय संघीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कूलपति, यशोवना गांधी अत्यरिक्तीय हिन्दी विश्वविद्यालय, यादी; प्रोफेसर फरीदा, अंशुला खन, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जायिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अमूर्खनद, रोडर, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एस. एवं ए.एस., मुंबई; सुश्री नुचहत बसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिल्ली, जयपुर।

४० जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द गांग, नई दिल्ली ११००१६ द्वारा ज्ञानित तथा प्रकाशित हुआ विभिन्न प्रेस, दी-२८, इंडिपेंडेंस एरिया, सड़क-८, नई दिल्ली २८१००४ द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बस्ता-सैट)

978-81-7450-883-6

बरखा ऋत्तिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कक्षाओं स्तरों में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजाना की छोटी-छोटी घटनाएं कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यक्रमों के हरेक क्षेत्र में सजानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार संक्षिप्त

प्रकाशक की पूर्वभूमिका के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकों, मर्लीनों, फोटोफॉरिलिप, फिलार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उपका संकलन अथवा प्रसारण नवीनित है।

एन.सी.ई.आर.टी., के छापान विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. बैचल, श्री जलिन गांग, नई दिल्ली ११० ०१६ फोन : ०११-२६२६२७०८
- १०८, १०० फ्लॉर एंड, देनी एम्पारेस, हॉटेल्स, भालांगरी III मंडल, अस्सी ३६० ०८५ फोन : ०६०-२६२५७४०
- नवलीयन ट्रस्ट बैचल, दाकघर नवलीयन, अहमदाबाद ३८० ०१४ फोन : ०७९-२७५४१४४६
- श्री इन्द्रनूरी, कैरास, निकट: भावघर बस स्टॉप चिंडिया, कोलकाता ७०० ११४ फोन : ०३३-२५३०४६५४
- श्री इन्द्रनूरी, कैरास, भावघर, गुवाहाटी ७८१ ०२१ फोन : ०३६१-२६२४८६९

प्रकाशन संहिता

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पौ. राजकुमार

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उपराज

झूला



बबली

जीत



2

एक दिन जीत और बबली टायर से खेल रहे थे।
उनके पास एक काले रंग का चौड़ा-सा टायर था।
दोनों अपनी-अपनी डंडी से उसे चला रहे थे।



3

बबली बोली कि वह टायर बहुत तेज़ दौड़ाती है।
गोल-गोल दौड़ता हुआ टायर कितना अच्छा लगता है।
जीत बोला कि उसे तो झूले पर मज़ा आता है।



4
यह सुनकर बबली का मन झूला झूलने को करने लगा।
जीत को भी झूला झूलने की इच्छा हुई।
दोनों मिलकर झूला ढूँढ़ने लगे।



5

दोनों ने दूर-दूर तक झूला ढूँढ़ा।
पर झूला कहीं नहीं मिला ।
वे सोचने लगे कि क्या करें।



6

उस मैदान में बहुत सारे पेड़ थे।
कई पेड़ों की डालियाँ बहुत नीचे आ गई थीं।
दोनों को एक तरकीब सूझी।



7

जीत और बबली डाली पर लटक कर झूलने लगे।
दोनों को खूब मज़ा आया।
लेकिन वे ज्यादा देर तक नहीं झूल पाए।



बबली के दोनों हाथ छिल गए थे।
जीत की हथेलियों में जलन हो रही थी।
दोनों हाथ झाड़कर नीचे बैठ गए।



वहाँ एक लोहे का पाइप लगा हुआ था।
बबली की नज़र उस पाइप पर पड़ी।
उसने जीत को वह पाइप दिखाया।



10

जीत और बबली भागकर पाइप के पास पहुँच गए।
दोनों पाइप से लटककर झूलने लगे।
दोनों को खूब मज्जा आया।



11

लेकिन जीत और बबली ज्यादा देर नहीं झूल पाए।
जीत के हाथ में दर्द हो रहा था।
बबली भी हाथ पकड़कर बैठ गई।



12

बबली को एक और तरकीब सूझी।
वह बोली कि अपने टायर से झूला बना लेते हैं।
उसमें बैठकर झूला झूलेंगे।

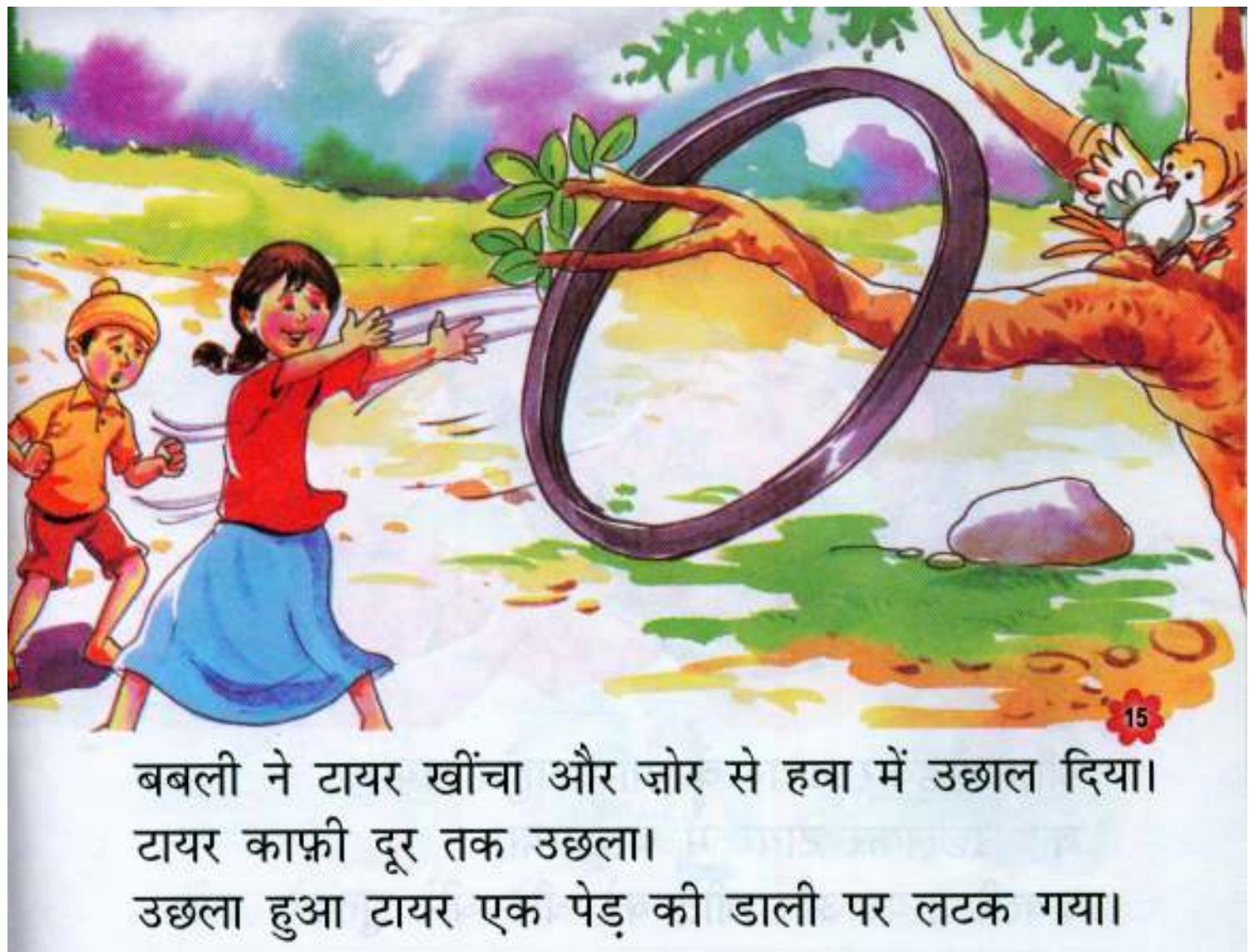


जीत को यह बात पसंद आ गई।
वह बोला कि वह टायर पेड़ पर लटकाएगा।
बबली बोली की वह टायर को लटकाएगी।



14

बबली ने टायर अपने हाथ में ले लिया।
जीत ने उससे टायर छीनने की कोशिश की।
दोनों में छीना-झपटी होने लगी।



बबली ने टायर खींचा और ज़ोर से हवा में उछाल दिया।
टायर काफ़ी दूर तक उछला।
उछला हुआ टायर एक पेड़ की डाली पर लटक गया।



16

जीत दौड़कर टायर के पास पहुँच गया।
वह उछलकर टायर में बैठ गया।
बबली टायर और जीत को धीरे-धीरे झुलाने लगी।





पहना है मम्माना

मिली के बाल



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

युनिट्डिंग : दिसंबर 2009 पौष 1931

⑤ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्धारण ममिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, गणेशका मेनन, शालिनी शर्मा, लला याण्डे, ल्याति बर्मा, सारिका वरिश्वर, श्रीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

विक्रांकन - कनक शर्शि

सम्बन्ध तथा आवरण - निधि वाथवा

डी.टी.पी. ऑफरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर चमुचा कामध, मंदुका निदेशक, कन्दीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी सम्बान्ध, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वाणिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रार्थक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंदुला माधव, अध्यक्ष, रेडिंग इंकलेपेट मैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा ममिति

श्री अशोक चावरेया, अध्यक्ष, पूर्व कृतिपति, महाराष्ट्र शैक्षी अविहायी दिल्ली विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला छाल, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अमूर्खनद, रोडर, हिंदौ विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शश्वत मिन्ना, सीई.ओ., अर्द्ध-एस.एव. एफ.एस., शृंखला; सुश्री तुराहत हसन, निदेशक, नेशनल युक्त ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री गोहित भनकर, निदेशक, दिसंबर, वर्षपुरा।

80 जी.एस.एम. नेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अर्थविद वर्ष, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित गधा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडिपेंडेंस एरिया, माइट-ए, मध्य 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-884-3

बरखा कमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सत्रों और पाँच कक्षाओं स्तरों में विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमरा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरके क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेंगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

स्वाधीनिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पर्यावरणीय के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन तथा इनकानी, प्रयोगी, बांटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग प्रदृष्टि द्वारा उसका संग्रहन अथवा प्रवाहण नहीं है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैप्पम, डी.पी.एस. नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 100, 110 बांट गढ़, रोडी एम्सटेन, होम्सेक्टर, बनशकरी III स्ट्रीट, बैंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवरीमन नगर भवन, डाकघर नक्कीवन, अलगड़ाव 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.उच्चन्द्री, कैप्पम, निकट: भनकल भवा रोडी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.उच्चन्द्री, कैप्पमेन्स, मालेंगोर, तुम्हारी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. रावकुमार

मुख्य संचादक : शंख उपल

मुख्य उपकारी : विल कुमार

मुख्य संचादक : नीतम नारायण प्रब्रह्मक : नीतम नारायण

मिली के बाल



मिली



मम्मी



2

मिली के बाल लंबे थे।

मम्मी उसके बालों में दो चोटियाँ बनाती थीं।

मम्मी को मिली के बाल चोटी में गुँथे हुए पसंद थे।



3

मम्मी मिली के बालों में रोज़ तेल लगाती थीं।
वह तेल लगाकर रोज़ मिली की दो चोटियाँ बना देतीं।
मिली को चोटी बनवाना पसंद नहीं था।



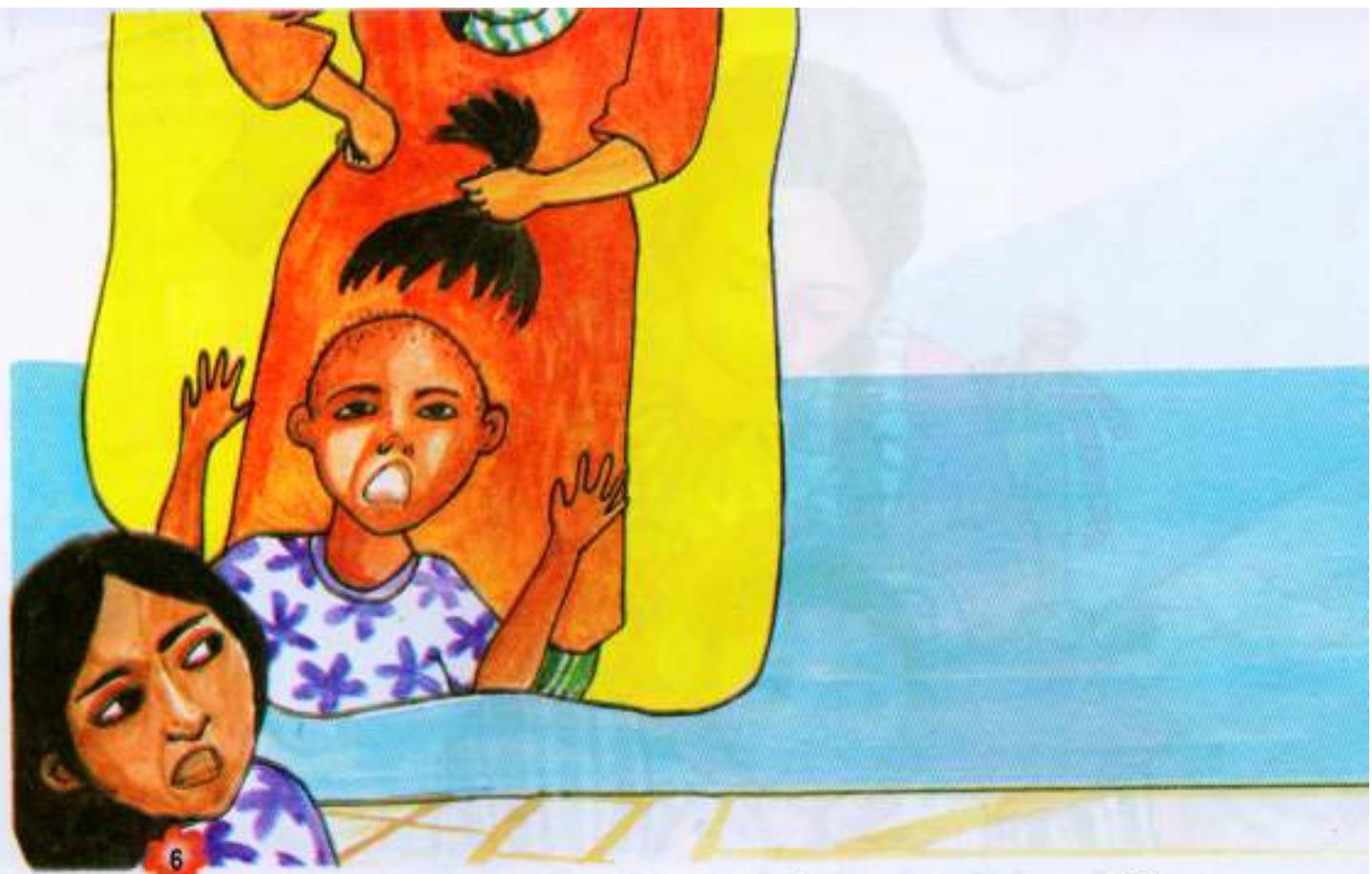
4

मिली को बाल खुले रखना पसंद था।
उसे फैले-फैले बाल अच्छे लगते थे।
वह उँगली से बालों के लच्छे बनाती रहती थी।



5

मम्मी चोटी गूँथतीं तो मिली परेशान हो जाती।
वह बहुत कसकर चोटी गूँथती थीं।
मिली को बहुत दर्द होता था।



6

मिली को लगता कि उसके बाल टूट जाएँगे।
चोटी बनवाते समय मिली चिल्लाती थी।
वह बार-बार मम्मी का हाथ हटाती।



मिली कई बार चोटी खोल ही देती थी।
वह खुले बालों में घूमती रहती।
मम्मी बहुत गुस्सा करती थीं।



8

मम्मी फीता बाँधतीं तो मिली फीता खोल देती।
वह फीते के धागे निकाल कर हवा में उड़ाती।
मिली फीते से फूल भी बनाती।



9

मम्मी चिमटी लगातीं तो मिली चिमटी निकाल देती।
मिली चिमटी का कीड़ा बनाकर खेलती रहती।
वह चिमटी के कीड़े में फीता बाँधकर भागती फिरती।



10

मिली बाल खुले रखना चाहती थी।

मम्मी हमेशा चोटी बनाना चाहती थीं।

दोनों का हमेशा झगड़ा होता था।



मिली मम्मी से परेशान थी ।
मम्मी मिली से परेशान थीं।
दोनों एक-दूसरे से परेशान थीं।



12

एक दिन मिली सुबह से गायब थी।
मिली के पापा भी घर पर नहीं थे।
मम्मी ने दोनों को बहुत ढूँढ़ा।



13

मिली पापा के साथ बाज़ार गई थी।
बाज़ार में काफी भीड़ थी।
वे दोनों एक दुकान पर गए।



14

मिली और पापा दोपहर में बाज़ार से लौटे।
मिली मम्मी के पास भागकर गई।
वह बोली कि लो गूँथ लो मेरी चोटियाँ।



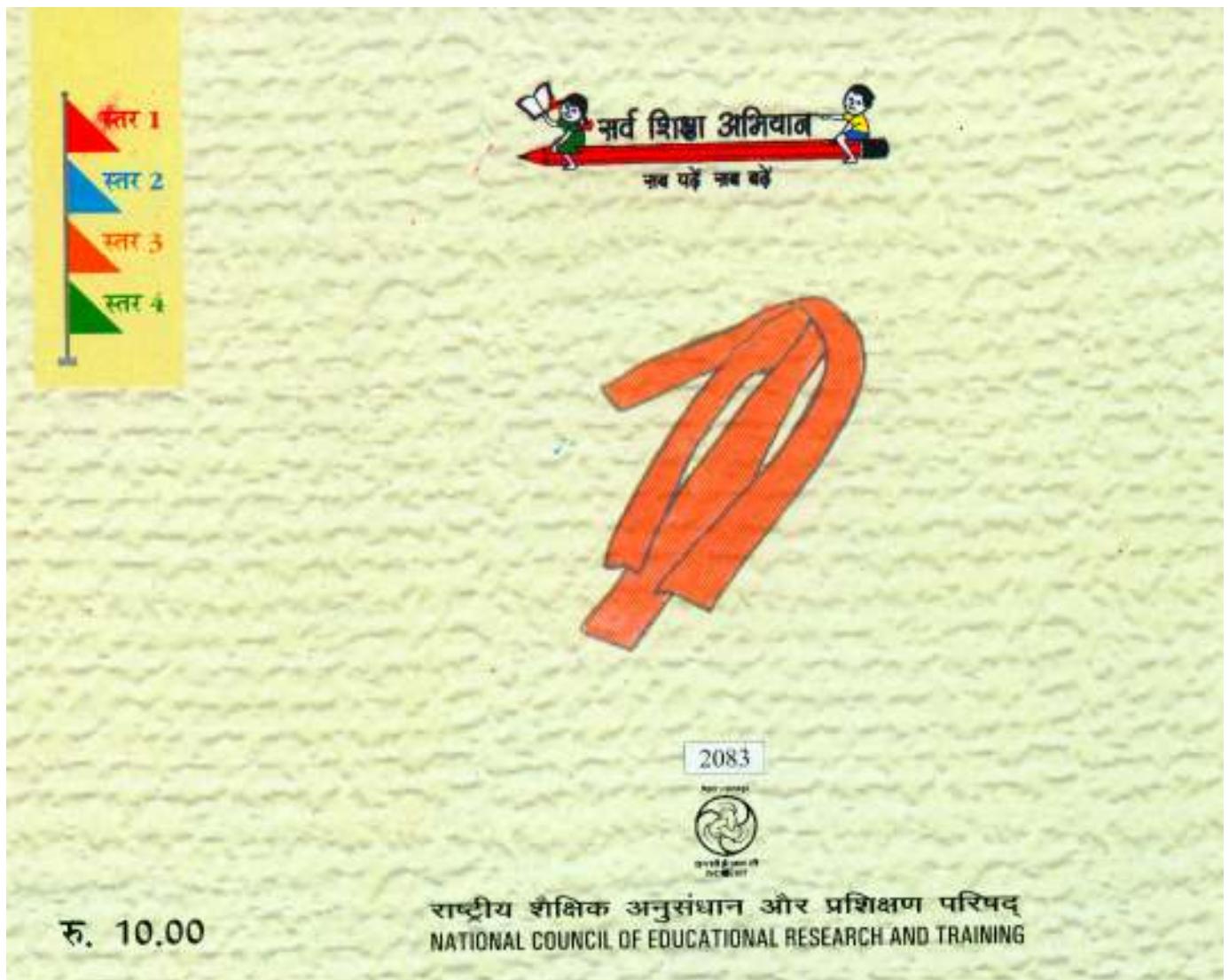
15

मिली ने बाल छोटे-छोटे कटवा लिए थे।
मम्मी ने मुस्कराकर उसके बालों में हाथ फेरा।
उन्होंने मिली को गले लगा लिया।



16

अगले दिन मम्मी मिली के बालों के लिए कुछ लाई।
वह रोज़ की तरह मिली के बालों में तेल मलने बैठ गई।
मिली ने भी आराम से तेल मलवा लिया।





तांसिया का सखबा

प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

युनर्नद्दिण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालखीय, शापिका बेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – ललिता गुप्ता

विचारकन – करनक शर्मा

सम्ज्ञा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी., ऑफिसर – अर्वना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कुमार कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणिकी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वरिशन, विभागाध्यक्ष, प्रार्थिक प्रिया विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रमेशनंद शर्मा, विभगाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुरा, अभ्यक्त, एडिंग इंवेलीपमेंट मैल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक जानपेयी, अभ्यक्त, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर कल्याण, अब्दुल्ला, खान, विभगाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिला मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, सीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनम निलाला, गोई, ओ., आई.ए.ए. एवं एक.एम., मुंबई; सुशी नुगहत हसन, निदेशक, नेशनल युक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिग्ंगत, जम्पुर।

80 श्री.एम.एम. गोपन पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में छात्रव, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अभिनंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रियंग ग्रंथ, डी-28, इंडिपेंडेंस एरिया, माइट-ए.ए. मध्य 261004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बाल्क-सेट)

978-81-7450-885-0

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सतर्ह और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजान्यों की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाद्यवर्यों के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सार्वजनिकान् सुधारित

प्रकाशक की पूर्वभूमि के बिना इस प्रकाशन के किसी भी जो लापत्त वा इत्यक्तव्यिको, गशीली, फॉटोग्राफिलिप, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पूँ; प्रयोग पद्धति द्वारा उपका संवेदन अथवा प्रस्ताव बरित है।

एम.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एम.सी.ई.आर.टी. कैप्स, श्री अवृद्धि याद, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 106, 100 फॉट गैंड, हैमी एक्स्टेंशन, हैम्प्लेन्ट, बालाकड़ी III स्टेट, काल्कुल 560 085 फोन : 010-26725740
- एवलोन इन्डियन, बालाकड़ी नालौलन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- मोडब्ल्यू.सी. कैप्स, निकट, धनकर जल स्टॉप पान्डिया, कालकड़ा 700 114 फोन : 033-25530454
- मोडब्ल्यू.सी. बालौलन, यालीर्हीव, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2624809

प्रकाशन संस्थाएँ

अभ्यक्त, प्रकाशन विभाग ; श्री. एम.कुमार

मुख्य उत्पादन अधिकारी : श्री. कुमार

मुख्य संपादक : श्रीत उपल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : श्री. कुमार

तोसिया का सपना



नानी



तोसिया



2

एक दिन तोसिया ने सपना देखा।
तोसिया बहुत सपने देखती है।
वह उठकर सपनों के बारे में बात भी करती है।



3

तोसिया को सपना आया कि दुनिया के सारे रंग उड़ गए हैं।
कहीं कोई रंग नहीं बचा।

उसने देखा कि सब कुछ सफेद-सफेद हो गया है।



तोसिया उठी और सपने को याद करने लगी।

वह एकदम से घबरा गई।

तोसिया सोचने लगी कि क्या सचमुच रंग गायब हो गए हैं।



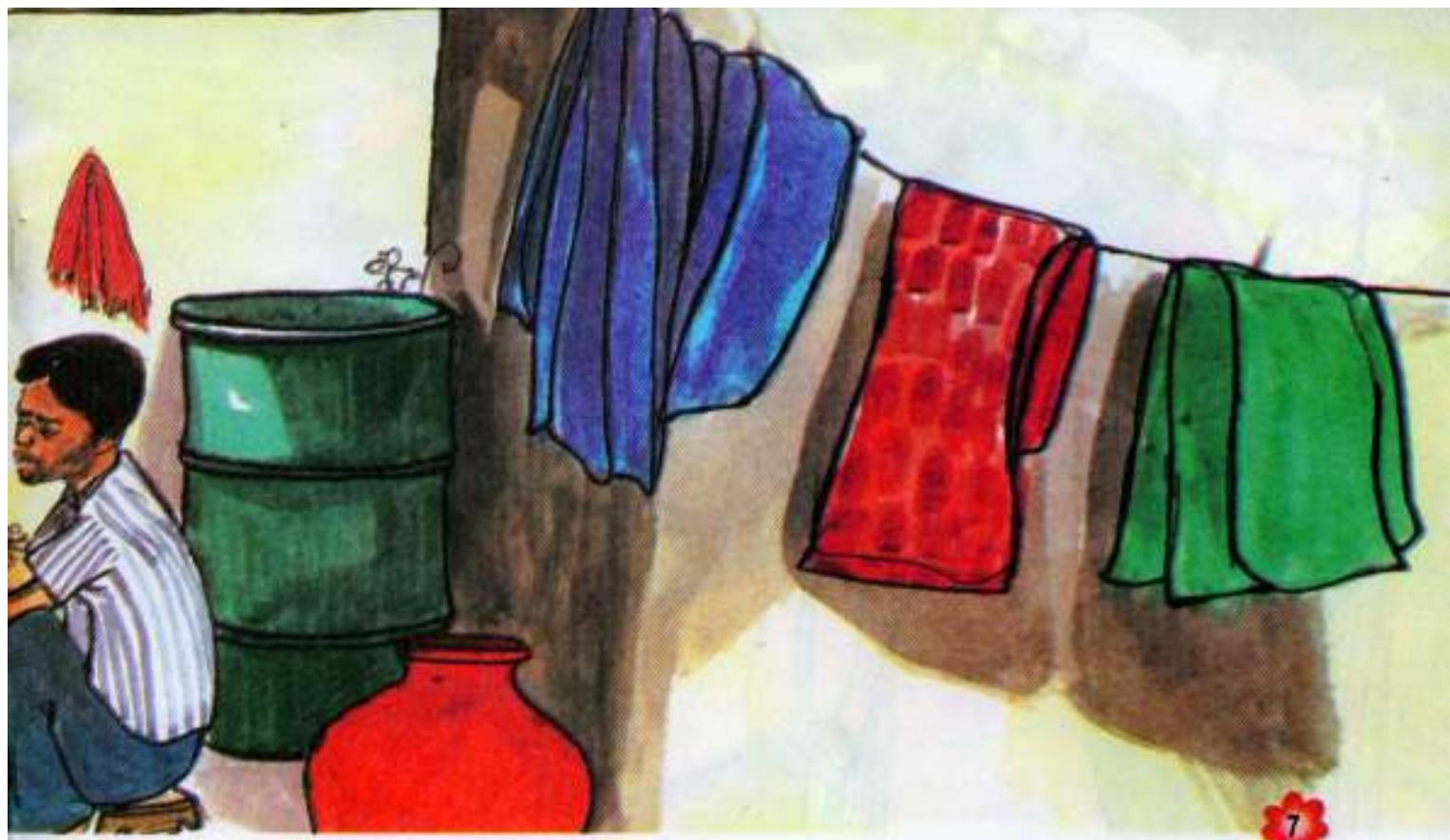
5

तोसिया रसोई में गई।
वहाँ बहुत सारे रंग-बिरंगे मसाले रखे हुए थे।
लाल मिर्च, जीरा, हल्दी, धनिया, मेथी।



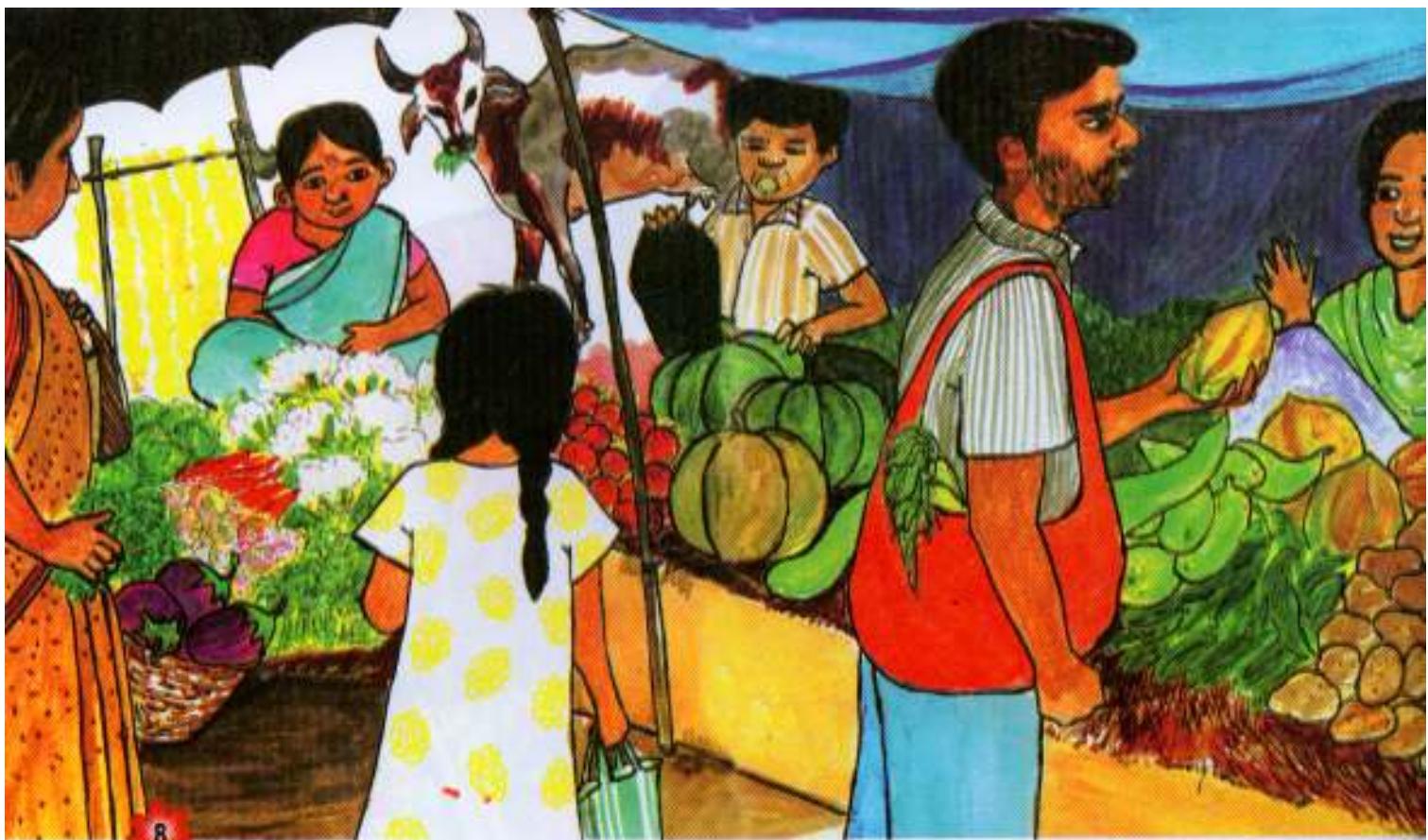
6

तोसिया उठकर बाहर बगीचे में गई।
वहाँ रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे।
गेंदा, चमेली, सदाबहार, गुलाब, सूरजमुखी।



7

तोसिया ने देखा कि उसके कपड़ों में रंग हैं।
मम्मी पापा के कपड़ों में भी रंग हैं।
घर में भी खूब सारे रंग दिख रहे थे।



8

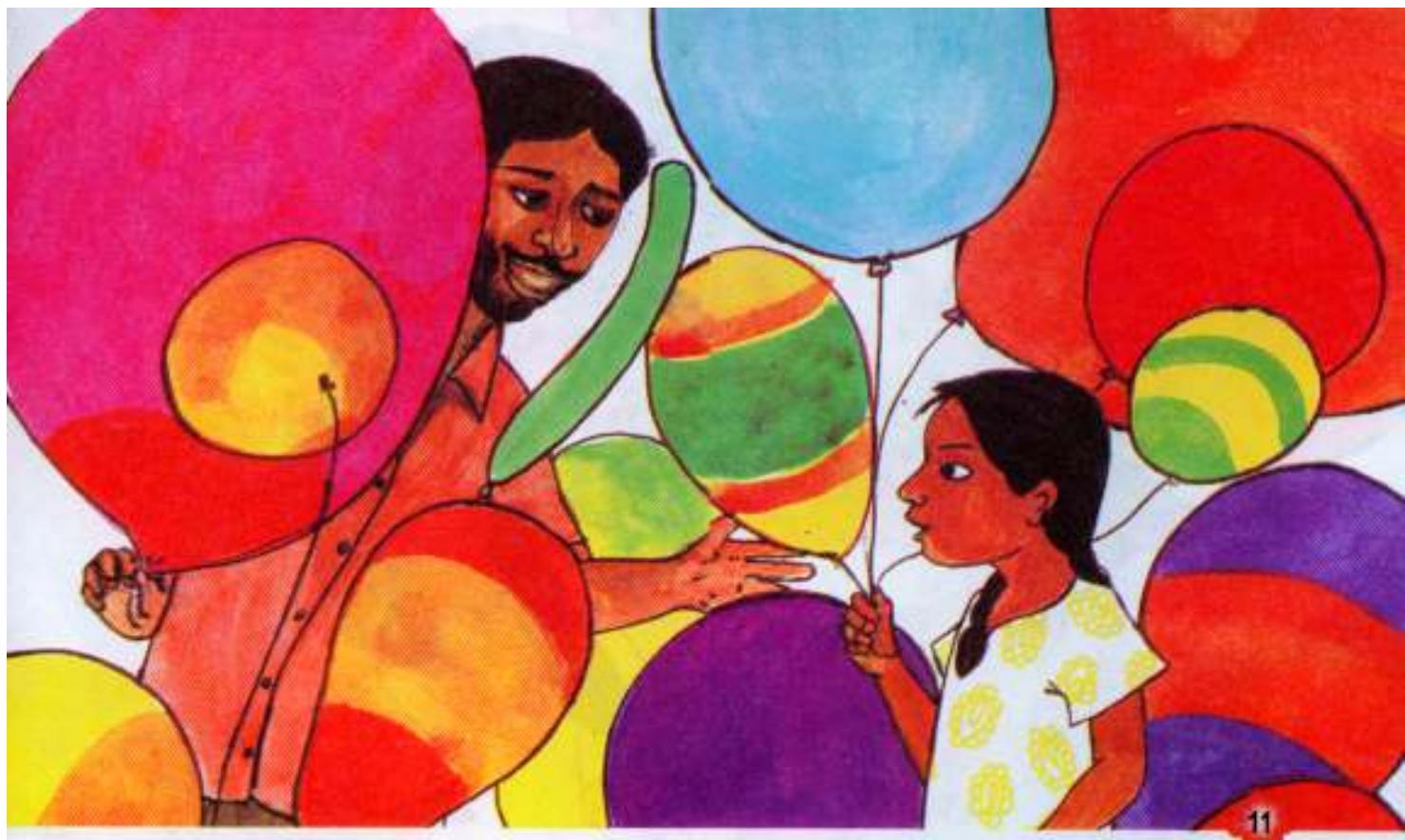
तोसिया मम्मी के साथ बाज़ार चल पड़ी।
वहाँ खूब सारी रंग-बिरंगी सब्जियाँ थीं।
गाजर, बैंगन, टमाटर, सेम, मटर।



बाजार में पतंग की दुकान भी थी।
दुकान में खूब सारी रंग-बिरंगी पतंगे थीं।
काली, पीली, नीली, हरी, नारंगी।



मम्मी चुन्नी की दुकान पर गई।
वहाँ खूब सारी रंग-बिरंगी चुनियाँ थीं।
गुलाबी, बैंगनी, फिरोजी, आसमानी, भूरी।



11

बाजार में गुब्बारेवाला खड़ा हुआ था।
उसके पास खूब सारे रंग-बिरंगे गुब्बारे थे।
नीले, पीले, हरे, लाल, गुलाबी।



12

तोसिया ने खूब सारे रंग देखे।
वह खुश हो गई कि रंग गायब नहीं हुए हैं।
वह रंगों को गिनने लगी।



13

तोसिया घर आकर दोपहर का सो गई।
उसने उठकर देखा कि नानी की सहेलियाँ आई हुई हैं।
उन सबके बाल सफेद-सफेद हैं।



14

तोसिया को एक बात याद आई।
वह रात को नानी के साथ सोई थी।
इसलिए सपने में सब सफेद-सफेद दिखा होगा।



15

तोसिया नानी के बालों को गौर से देखने लगी।
वह नानी के बालों को छू-छूकर देखने लगी।
तोसिया सोचने लगी कि नानी के बाल सफेद क्यों हैं।



16

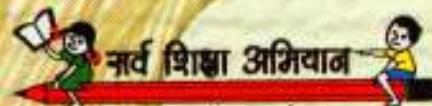
उसने नानी से पूछा कि उनके बालों का रंग कहाँ गया।
नानी बोलीं कि पहले उनके बाल भी काले थे।
फिर उनके बालों का रंग तोसिया के बालों में चला आया।

स्तर 1

स्तर 2

स्तर 3

स्तर 4



नार्ट पढ़ें जाव बढ़ें

2084



₹. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

चाय



पढ़ना है समझना



प्रक्षम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 शैष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला विर्याण समिति

कवचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश भालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वति वर्मा, सारिका चंशिल,

सीमा कुमारी, सौभिका कौशिक, मुशोल शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लिखिता गुप्ता

चित्रांकन - निधि बाधवा

संज्ञा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी., ऑफरेटर - अर्वन गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामन, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीको संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. चौहान, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामदन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, बाल विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला गांधी, अध्यक्ष, शीठिंग हॉटेलिंग पॉइंट, गैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक बाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व चुनावी, गङ्गाधारा गांधी अंतर्राष्ट्रीय शिरी विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफेसर कर्मी, अब्दुल्ला, स्थान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जायिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अमूर्यानंद, गोदर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनम सिंह, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एम., मुंबई; सुशी नुराहत ठाकर, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित भनकर, निदेशक, विगतर, जयपुर।

80 जी.एस.एस. चैर एस.मुद्रित

प्रकाशन विभाग में भाँति, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंक्ति विभिन्न प्रेस, दी-28, इंडिस्ट्रियल परिया, साईट-ए, मधुगंगा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-895-0 (क्रमांक)

978-81-7450-886-7

बरखा कृतिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सत्रों और पाँच कक्षावस्थाओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को गोलमरी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी गोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक क्षेत्र में सज्जानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

संबोधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्ववत्त्वपत्री के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को जापन तथा उत्प्रदानकी, नरोनी, चोटोप्रतिरक्षिति, रिकॉर्डिंग अवधा किसी अन्य विधि से नुकसान प्रदर्शित द्वारा उपकरण का प्रसारण बनायित है।

इन संस्कृत-आठारों के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- श्री.टी.ए.एस.टी. बैंकर, श्री जयश्री यार्ग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- १००, १०१ फॉट वेल, हिन्दी एसटीएन, हाम्सोंकेने, बाबासाहेब ३३ मर्टल, भारत ५६० ०८५ फोन : 080-26725740
- वल्लीवर ट्राय. पर्स, राबड़ी नववीयन, भारतपाल ३८० ०१४ फोन : 079-27541446
- श्री.बलभूमी, लैपट, निकट, भवाल बस स्टॉप पानहटी, बोलकला ७०० ११४ फोन : 023-25530454
- श्री.उमेश.सी. अमरीक्ष, पार्सीगांव, गुजरात ३८१ ०२१ फोन : 0261-2674869

प्रकाशन सहजेंगा

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार

मूल संसाधक

मूल उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मूल लापत्र अधिकारी : जीत मणिकर्णी

चाय



मदन

जमाल



2

एक दिन जमाल को जुकाम हो गया।
वह सुबह से छींक रहा था।
उसकी नाक भी बह रही थी।



3

जमाल का मन चाय पीने का हुआ।
रोज़ की तरह मदन उसके घर पर ही था।
जमाल ने उससे कहा कि चाय पीने का मन हो रहा है।



मदन फौरन चाय बनाने चल पड़ा।

उस दिन मदन पहली बार चाय बना रहा था।

उसने पहले कभी चाय नहीं बनाई थी।



मदन ने पतीले में दो प्याले पानी डाला।
उसने पानी में दो लौंग डालीं।
फिर मदन ने पानी उबलने रख दिया।



मदन ने खूब सारा अदरक डाला।
पानी में लौंग और अदरक खूब देर तक उबाले।
मदन उनको उबलते हुए देखता रहा।



फिर उसने पतीले में आधा प्याला दूध डाला।
मदन ने उबलते हुए पानी में दो चम्मच चीनी डाली।
उसने पानी में दूध डालकर खूब देर उबाला दिया।



8

इसके बाद खूब सारी चाय की पत्ती डाली।
मदन ने पत्ती डालकर चाय को खूब उबाला।
चाय का रंग खूब गाढ़ा हो गया था।



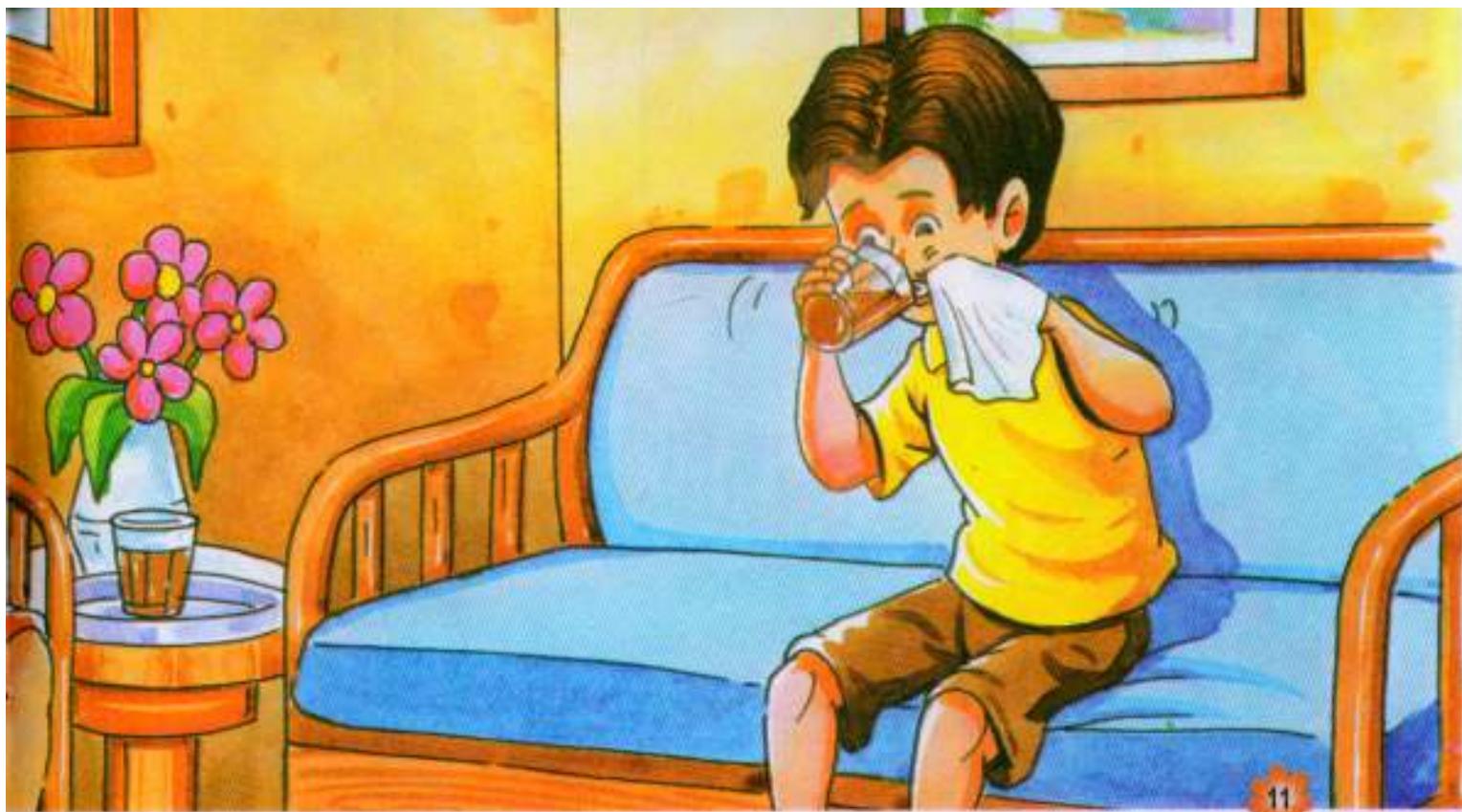
9

मदन ने चाय दो गिलासों में छानी।
उसने दोनों गिलासों में चाय बराबर डाली।
चाय थोड़ी कम थी।



10

मदन ने चाय के गिलास एक थाली में रख लिए।
वह बड़े प्यार से जमाल के लिए चाय लेकर आया।
उसने बड़े प्यार से जमाल को चाय दी।



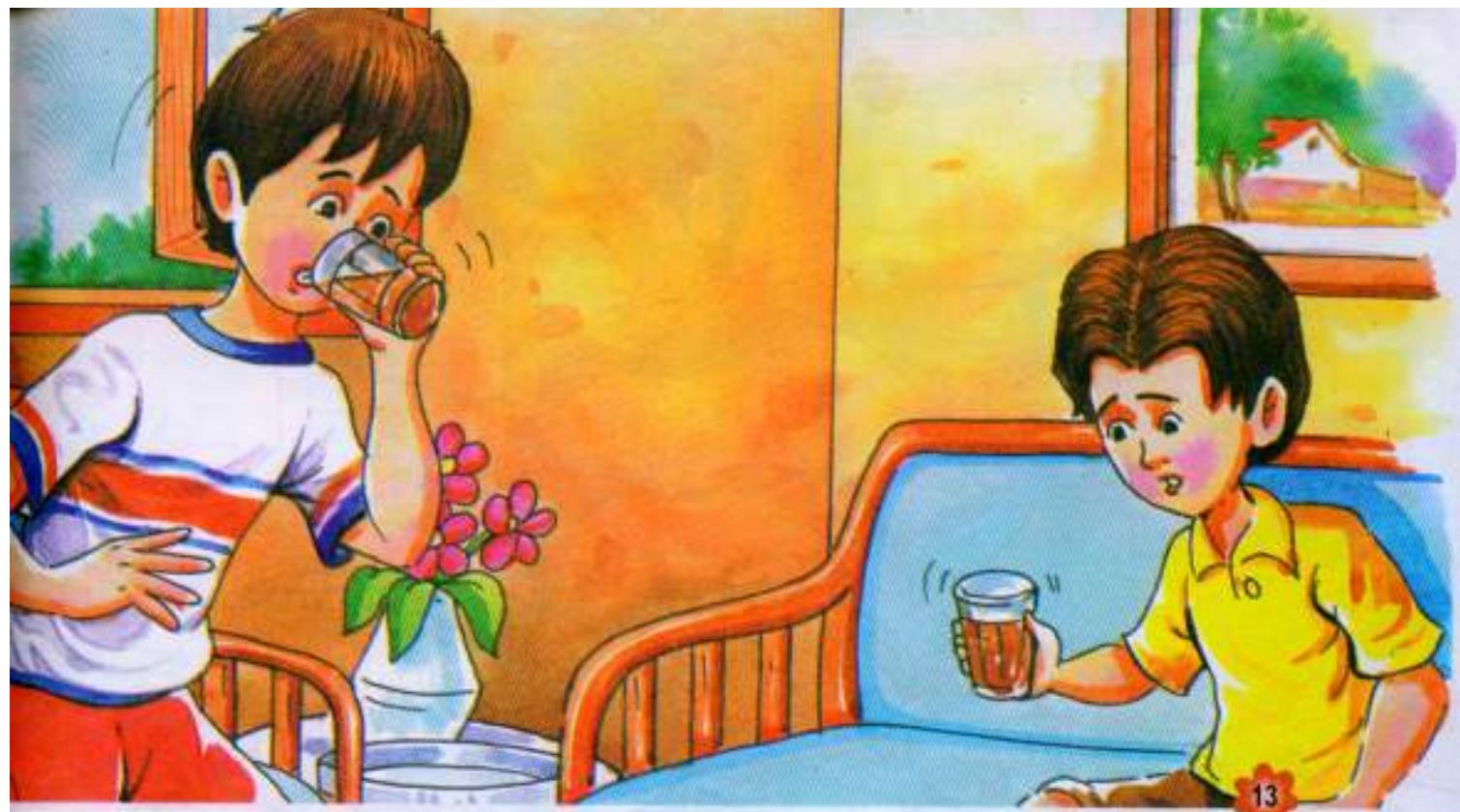
11

जमाल की नाक अब भी बह रही थी।
उसने चाय का गिलास हाथ में लिया।
जमाल ने नाक पोंछते हुए चाय का एक घूँट पीया।



12

जमाल ने सारी चाय थूक दी।
चाय बहुत कड़वी थी।
वह बोला कि चाय है या कड़वी दवा।



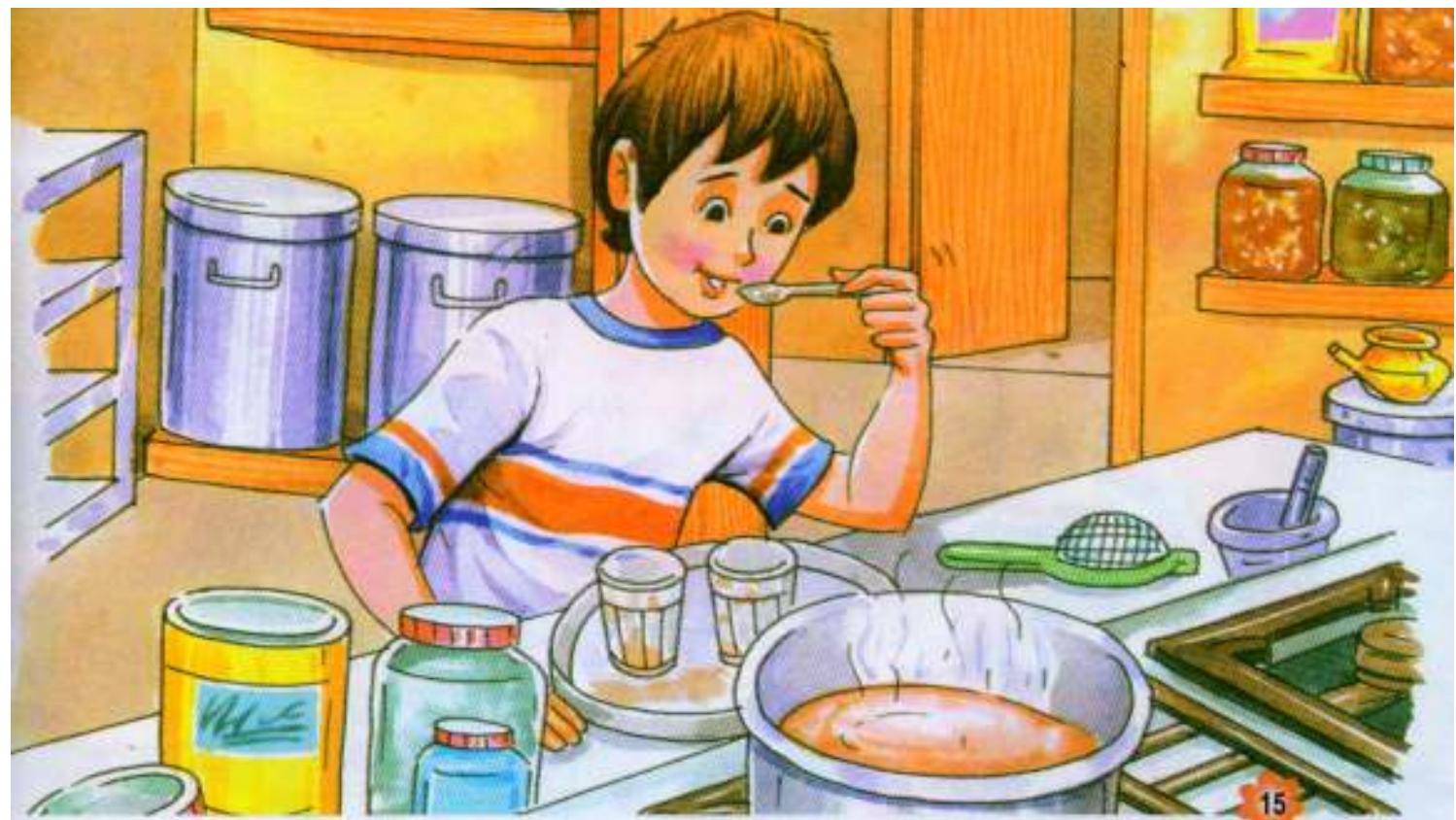
13

मदन ने भी चाय पीकर देखी।
चाय में चीनी कम थी।
अदरक और पत्ती बहुत ज्यादा डल गई थी।



14

मदन ने दोनों की चाय वापस पतीले में डाली।
उसने चाय में चीनी और दूध डाला।
चाय को फिर से उबलने रख दिया।



15

अब चाय का रंग हल्का हो गया था।
मदन ने चम्मच से निकाल कर चाय चखी।
चाय अब अच्छी हो गई थी।



16

वह जमाल के लिए दोबारा चाय लेकर आया।
जमाल को इस बार चाय अच्छी लगी।
उसने मदन की चाय भी अपने गिलास में डाल ली।



2085



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पढ़ना है समझना

गोलगप्पे



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पाँच 1931

© एष्ट्रोप शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कवचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका बेनन, शालिनी शर्मा, लक्षा पाण्डे, स्वाति बर्मा, सारिका वशिष्ठ,

सीमा कुमारी, सोनिका वौशिक, मुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – ललिता गुप्ता

शिक्षकन – निधि वाधवा

सम्बन्ध तथा आवरण – निधि वाधवा

डॉ.टी.पी. ऑफिसर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आधार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कालाय, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रार्थक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रमेशन्द्र शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अन्यस, रोहिंग डेकलीपरमं नेतृत्व, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वार्षपात्रा, अन्यस, पूर्व कूलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, कधी; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिक, दिल्ली; डॉ. अमूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ.शबनम रिनात, सी.ई.ओ., उड़ी.एल, एवं एफ.एस., मृदुः; सुश्री नृशहत हसन, निदेशक, नेशनल कूक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिग्ंग, जयपुर।

80) बी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग ने सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकार मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडिस्ट्रियल परिया, साइट-ए, मधुगंगा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-मैट)

978-81-7450-887-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार सत्रों और पाँच कथाओं स्तरों में विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की सुणी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजाना की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ ऐनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यक्रम के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आमानी से किताबें उठा सकें।

शब्दोचिकार मुक्तिः

प्रकाशक की पूर्वभूमिति के बिंदु हम प्रकाशन के किसी भी को आपने तथा इलेक्ट्रॉनिकी, पर्सोनल, फोटोइलेक्ट्रोनिक, इलेक्ट्रोडिग अवलोकन किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग क्षमति द्वारा उसका संहारण जबकि प्रसारण वर्तित है।

दन सीई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैफ्ट, श्री अधिकार मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 106, 100 फॉर्म एवं, बैंगी एस्टेटेशन, होमलैंडेस, बगलुरुकर्नी III स्ट्री, बगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नाहौल ट्रस्ट भवा, बाकपार जावीन, बाहुदाबद 380 014 फोन : 029-27541446
- मो. राज्यू.सी. वैष्ण, निकट, धरकर जम स्ट्रीट बैंगलोर, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- श्री उच्च.सी. कॉम्पोज्शन, महाराष्ट्र, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अन्यस, प्रकाशन विभाग ; डॉ. एम.कुमार

मुख्य उत्पादन अधिकारी ; शिव कुमार

मुख्य संपादक ; इ.वेंकट उपल

मुख्य अवार अधिकारी ; गौतम गांगुली

गोलगप्पे



मदन



जमाल



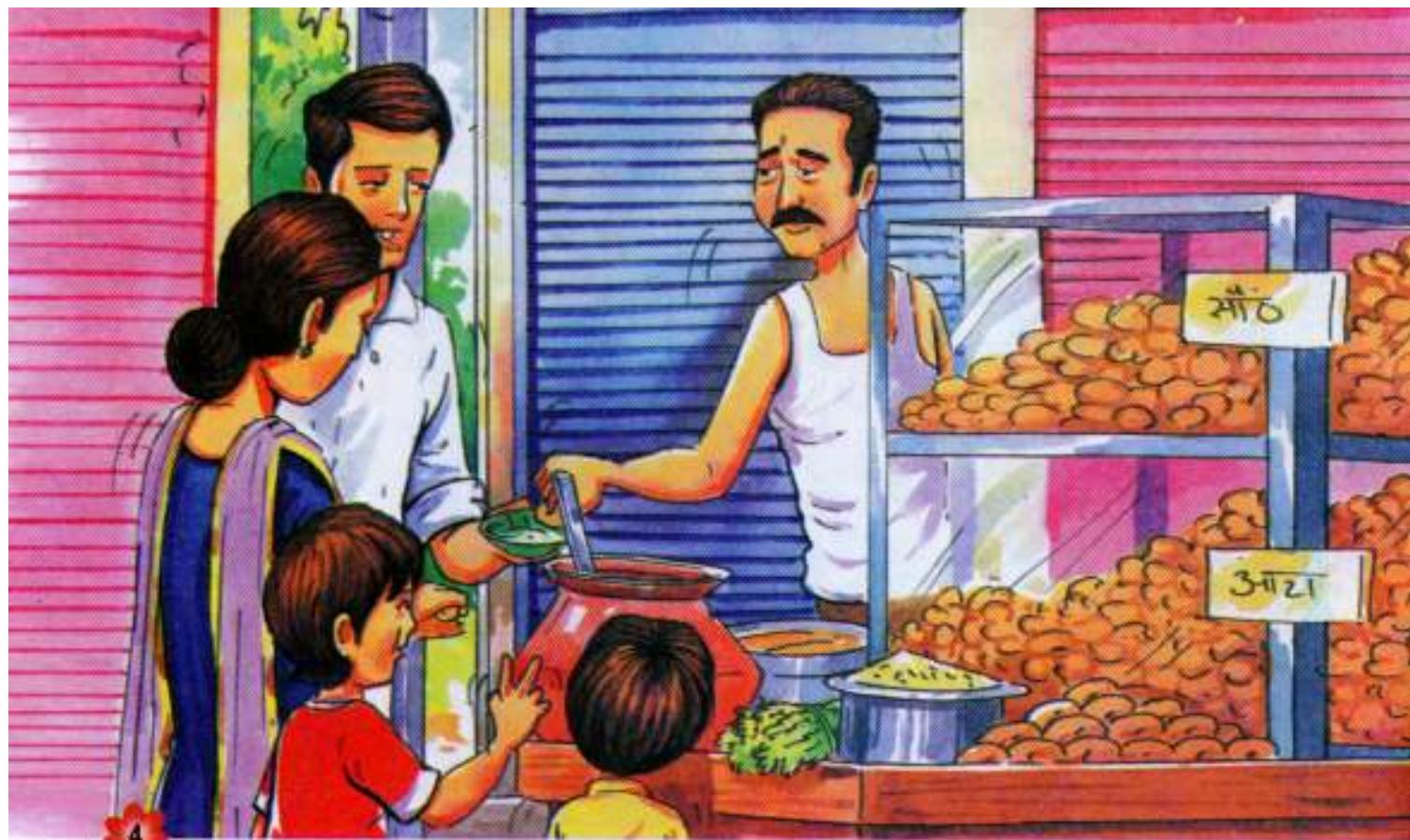
2

एक दिन मम्मी ने जमाल को पाँच रुपये दिए।
जमाल ने सब्ज़ी धोने में मम्मी की मदद की थी।
मम्मी जमाल से बहुत खुश थीं।



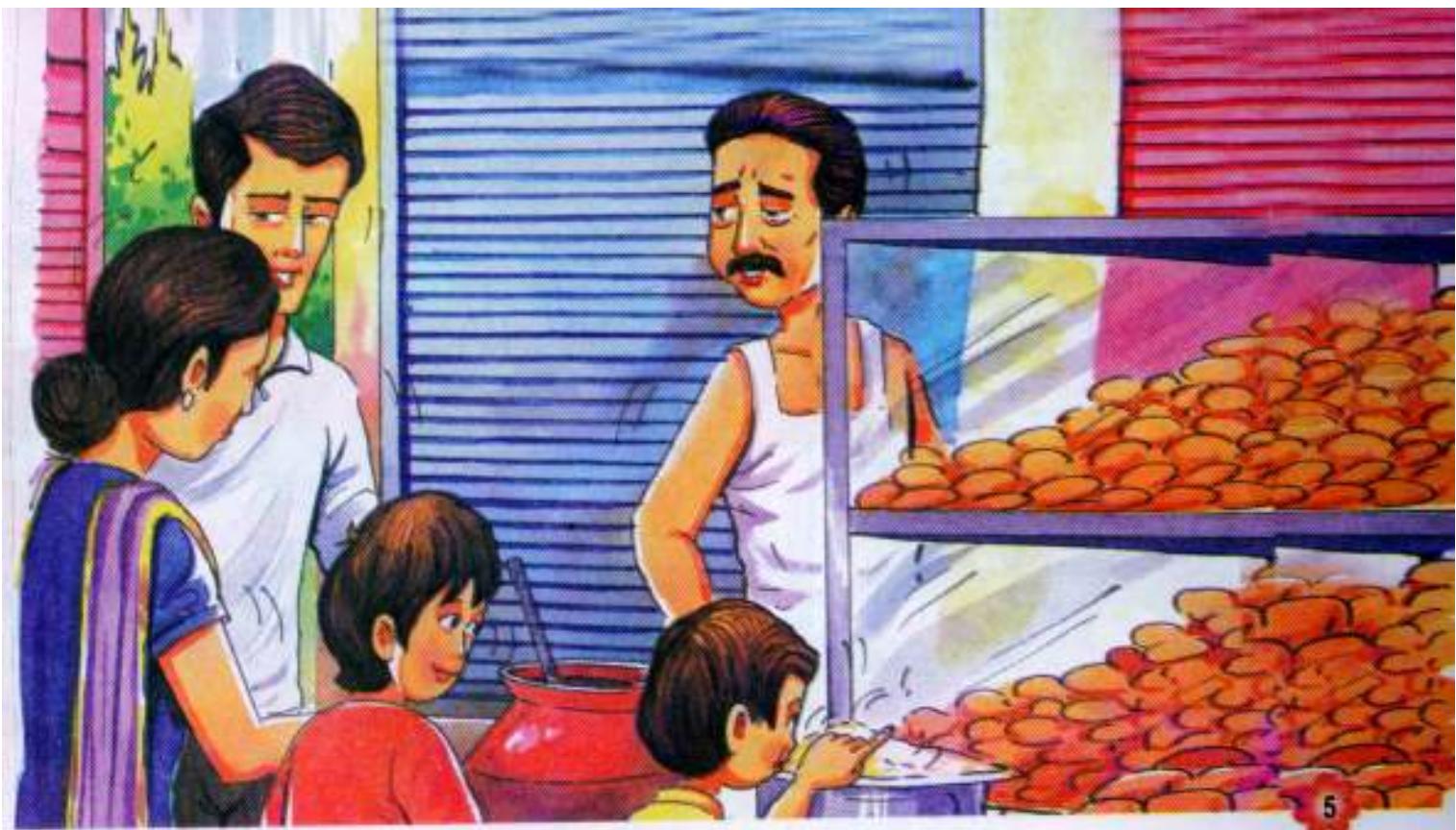
3

वह मदन को लेकर बाजार गया।
बाजार में गोलगप्पे की एक दुकान थी।
दोनों हमेशा वहीं गोलगप्पे खाते थे।



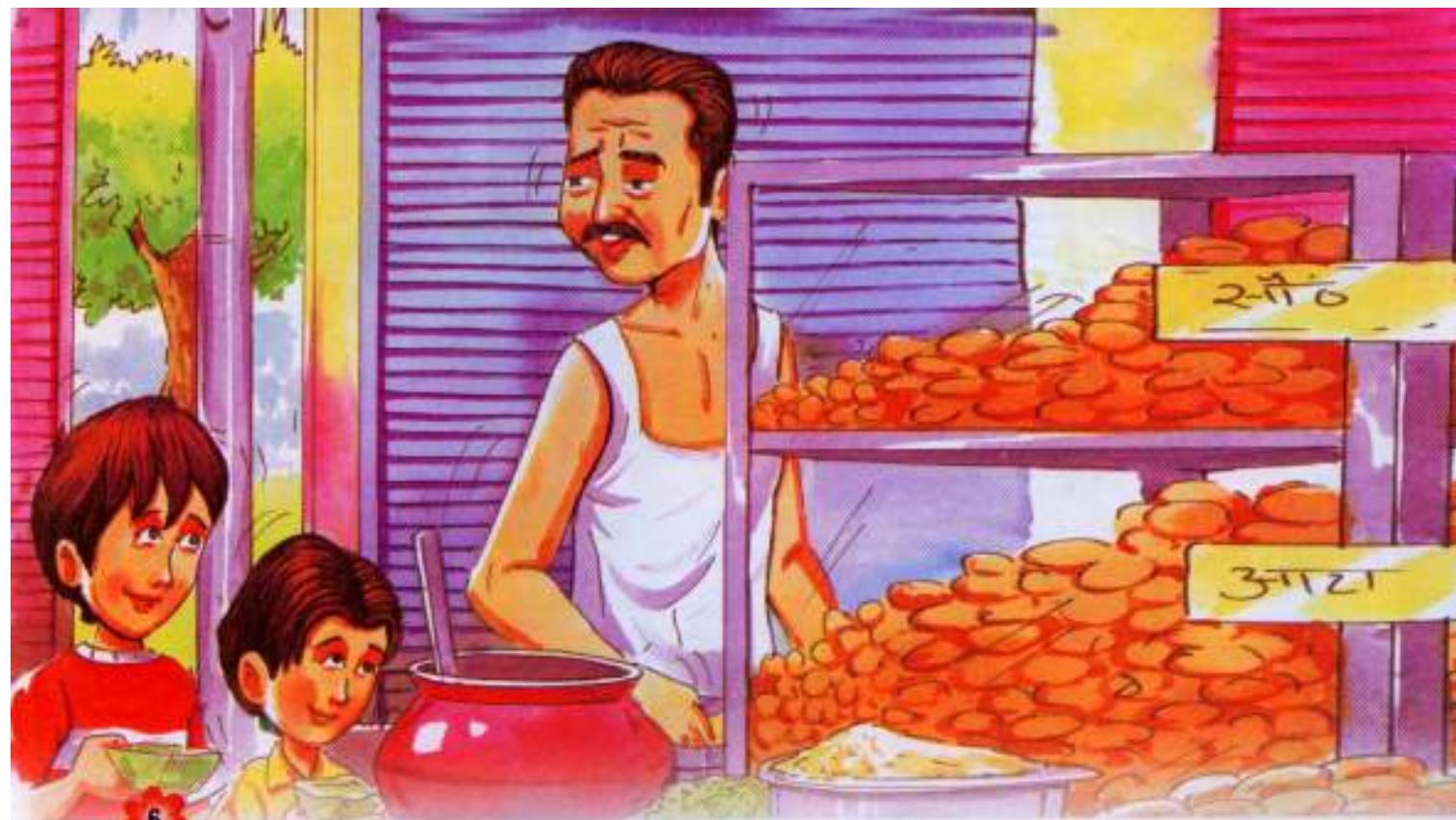
4

गोलगप्पे की दुकान पर मदन ने दो दोने माँगे।
गोलगप्पे वाला दूसरे लोगों को खिला रहा था।
जमाल खाते हुए लोगों को देखने लगा।



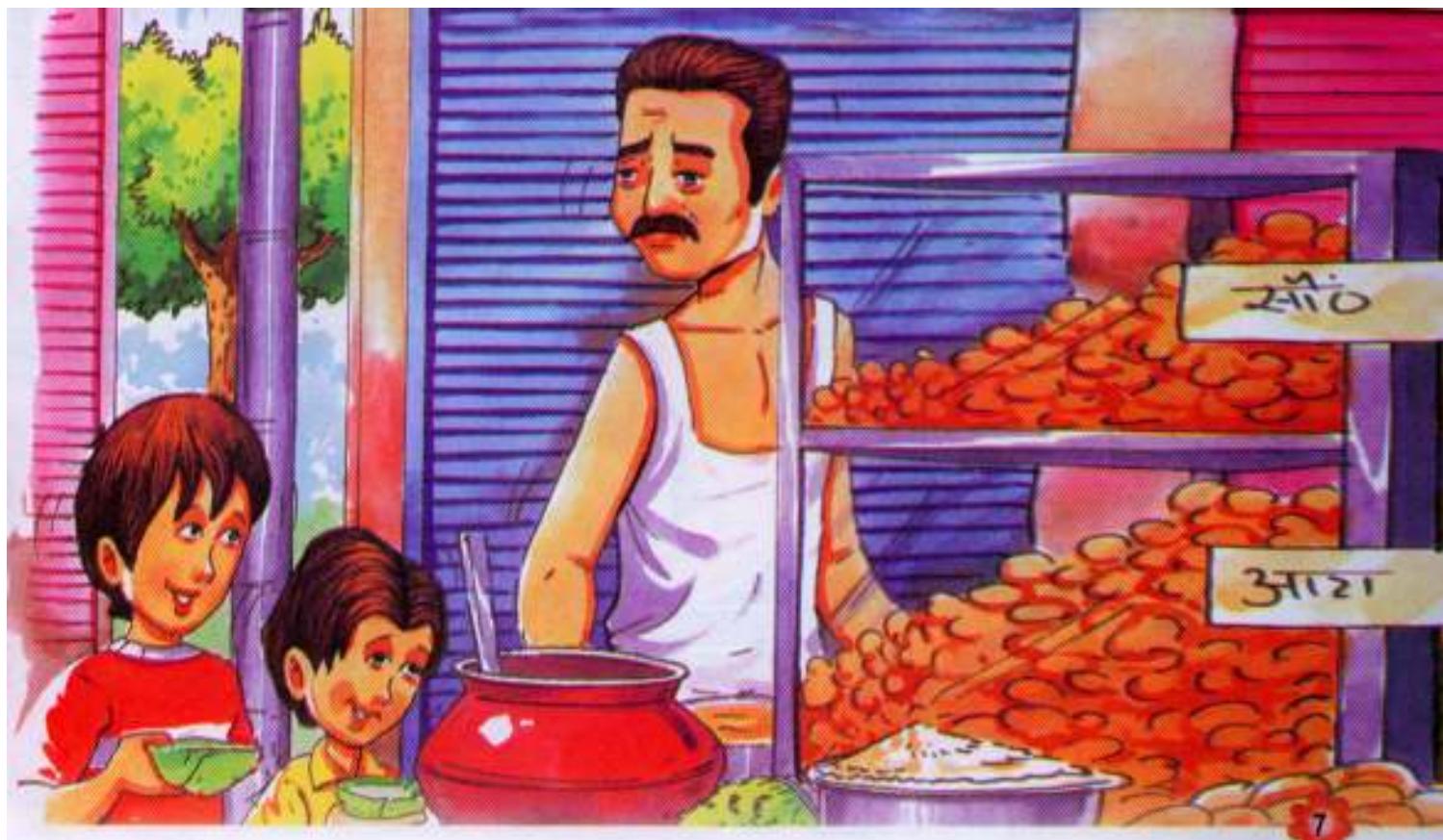
5

जमाल का मन गोलगप्पे खाने के लिए मचल रहा था।
उसे सौंठ चाटने का मन कर रहा था।
जमाल के मुँह में पानी आ रहा था।



6

गोलगप्पे वाले ने उनको एक-एक दोना दिया।
जमाल ने सौंठ वाले गोलगप्पे माँगे।
मदन ने कहा कि उसे सौंठ नहीं चाहिए।

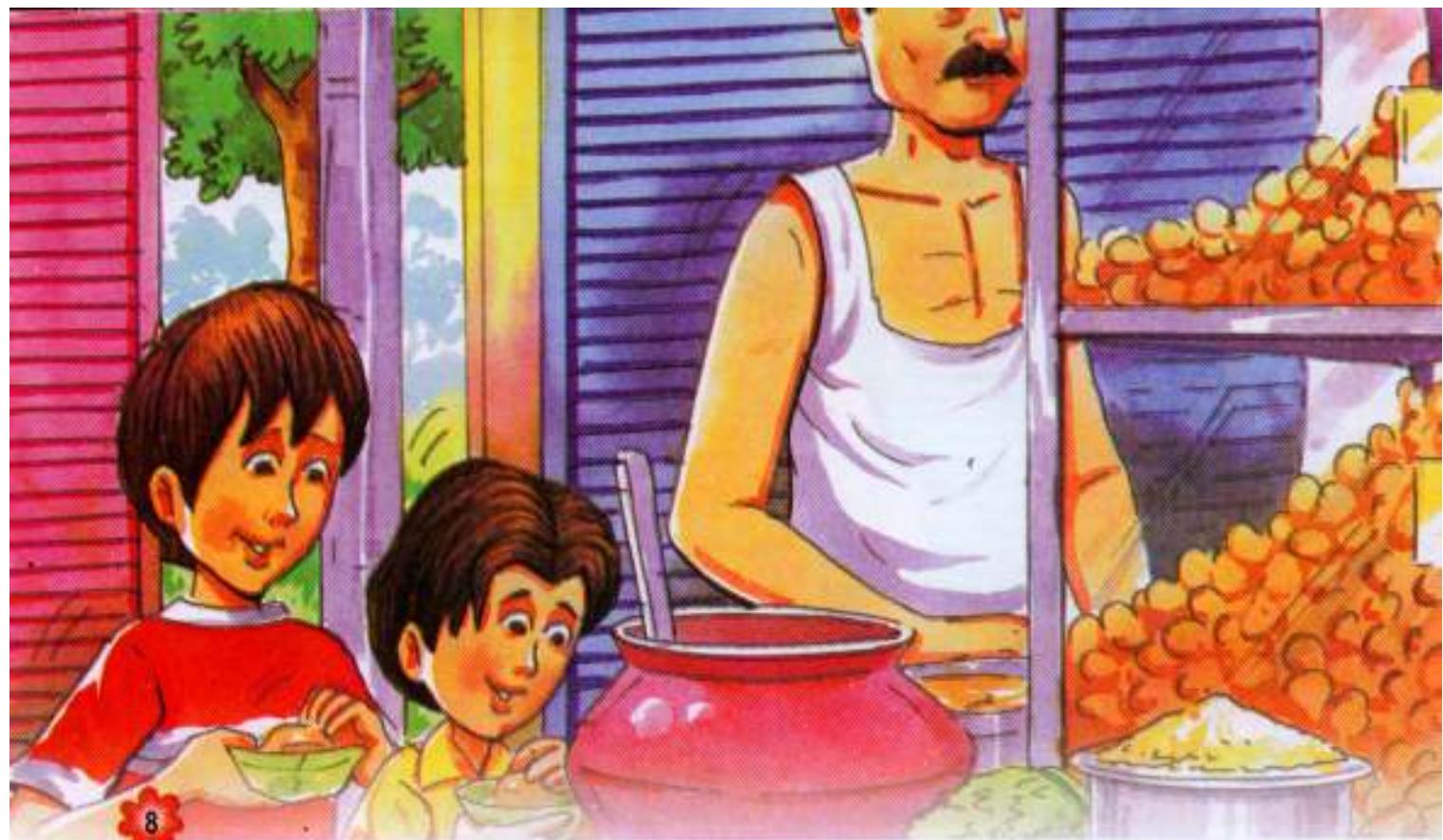


7

गोलगप्पे बहुत बड़े-बड़े थे।

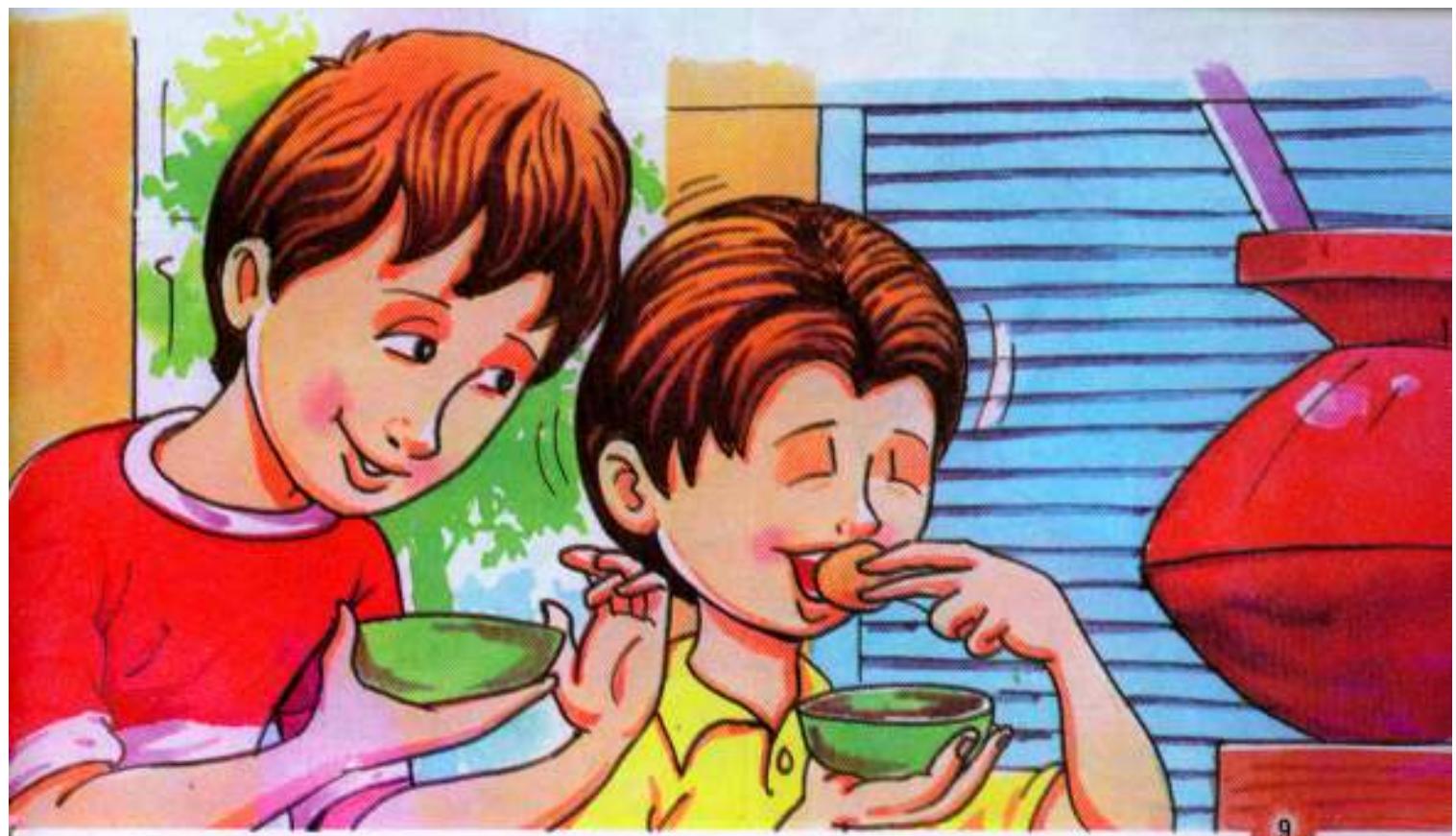
जमाल ने गोलगप्पा खाने के लिए बहुत बड़ा मुँह खोला।

उसका पूरा मुँह गोलगप्पे और पानी से भर गया।



8

कुरकुरे गोलगप्पे से जमाल के मुँह में आवाज हुई।
उसके बाद मुँह में खट्टा-मीठा पानी घुल गया।
जमाल ने ज़ोर से चटखाग लिया।



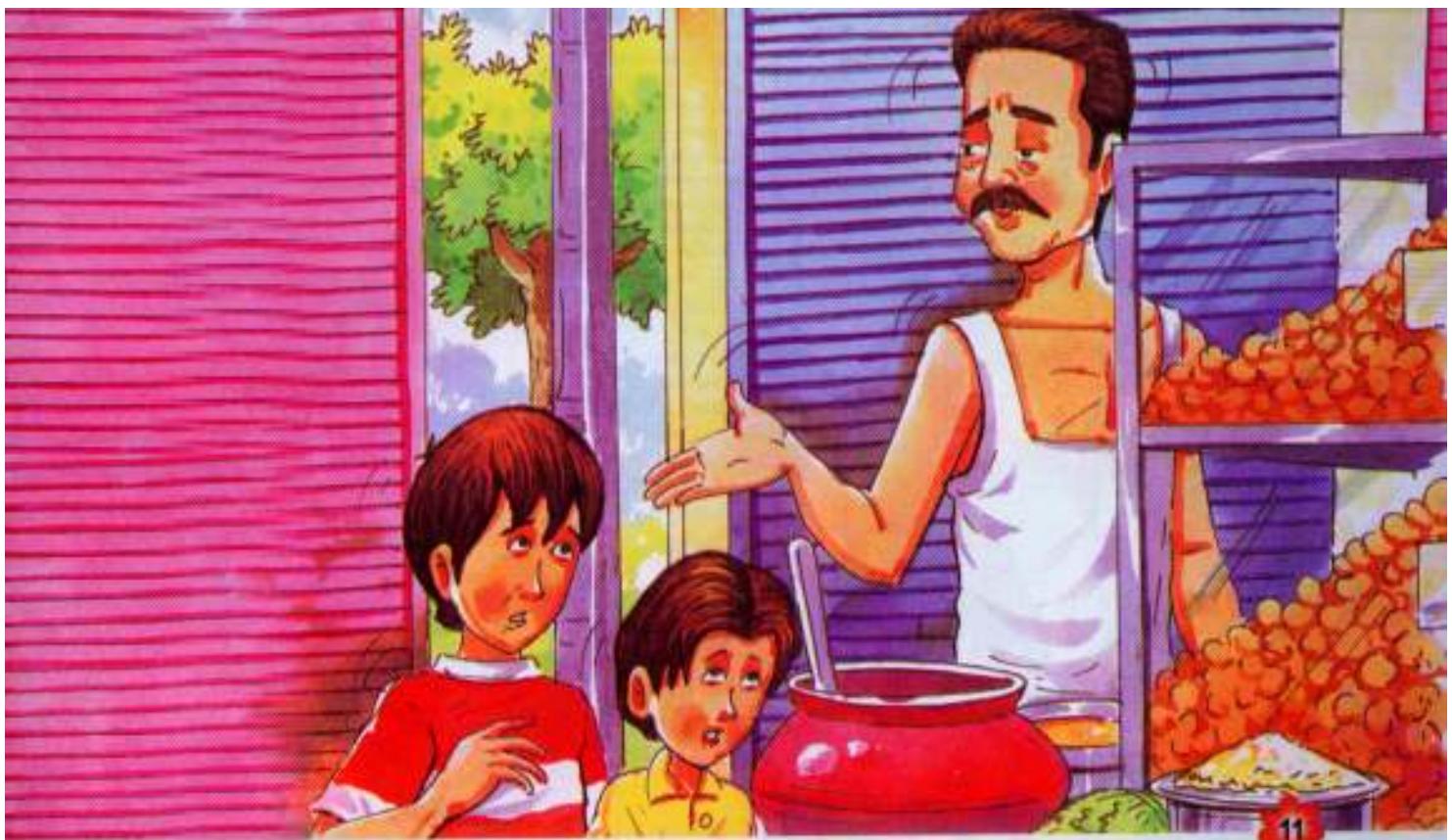
9

गोलगप्पा मुँह में डालते ही उसकी आँखें बंद हो जाती थीं।
जमाल पानी का स्वाद लेने लगता था।
उसे खट्टा, मीठा, तीखा मिला-जुला पानी पसंद था।

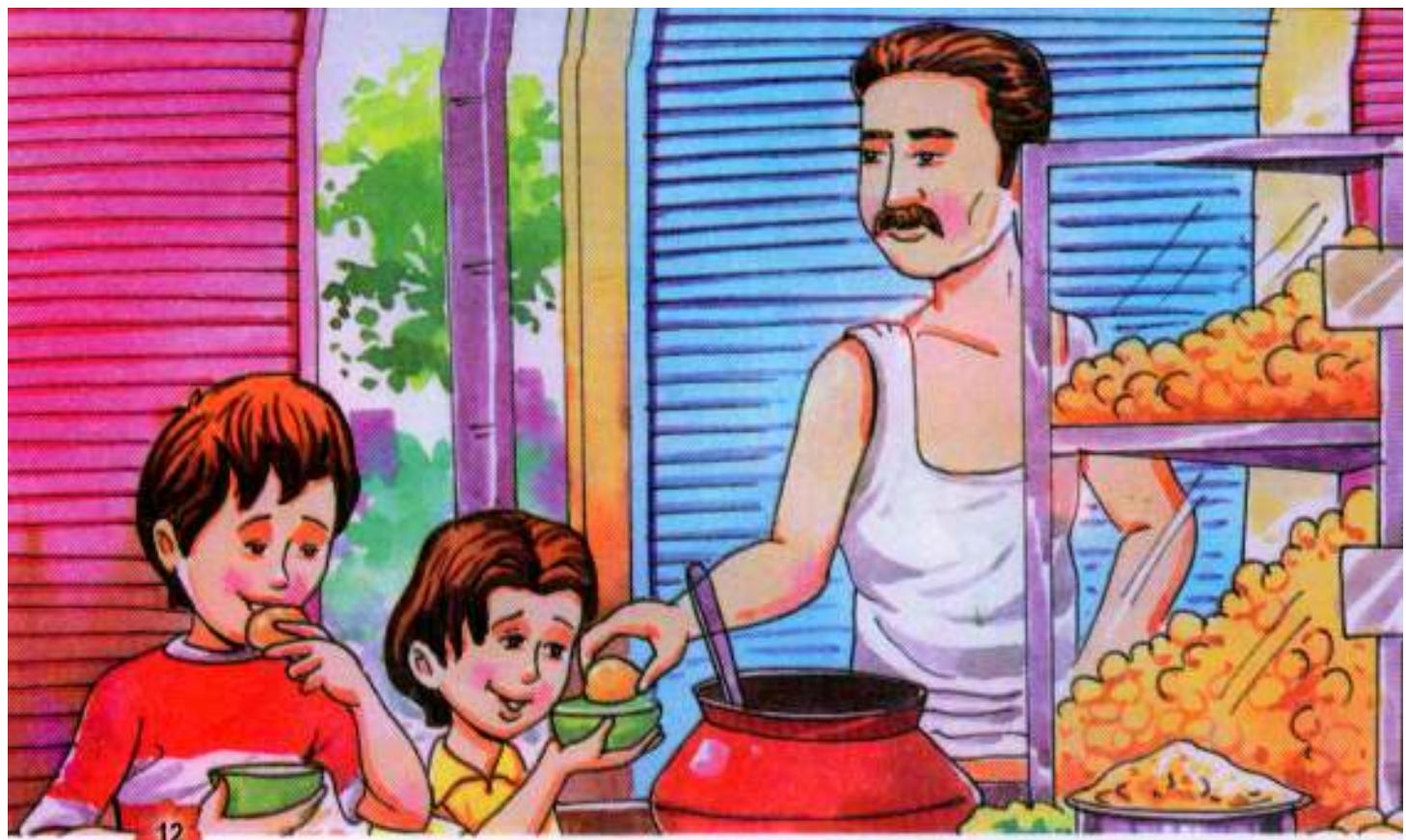


10

मदन को खट्टा-खट्टा पानी बहुत अच्छा लग रहा था।
उसे पानी के तीखेपन में मज़ा आ रहा था।
गोलगप्पा खाते ही उसकी आँखें भी बंद होती थीं।

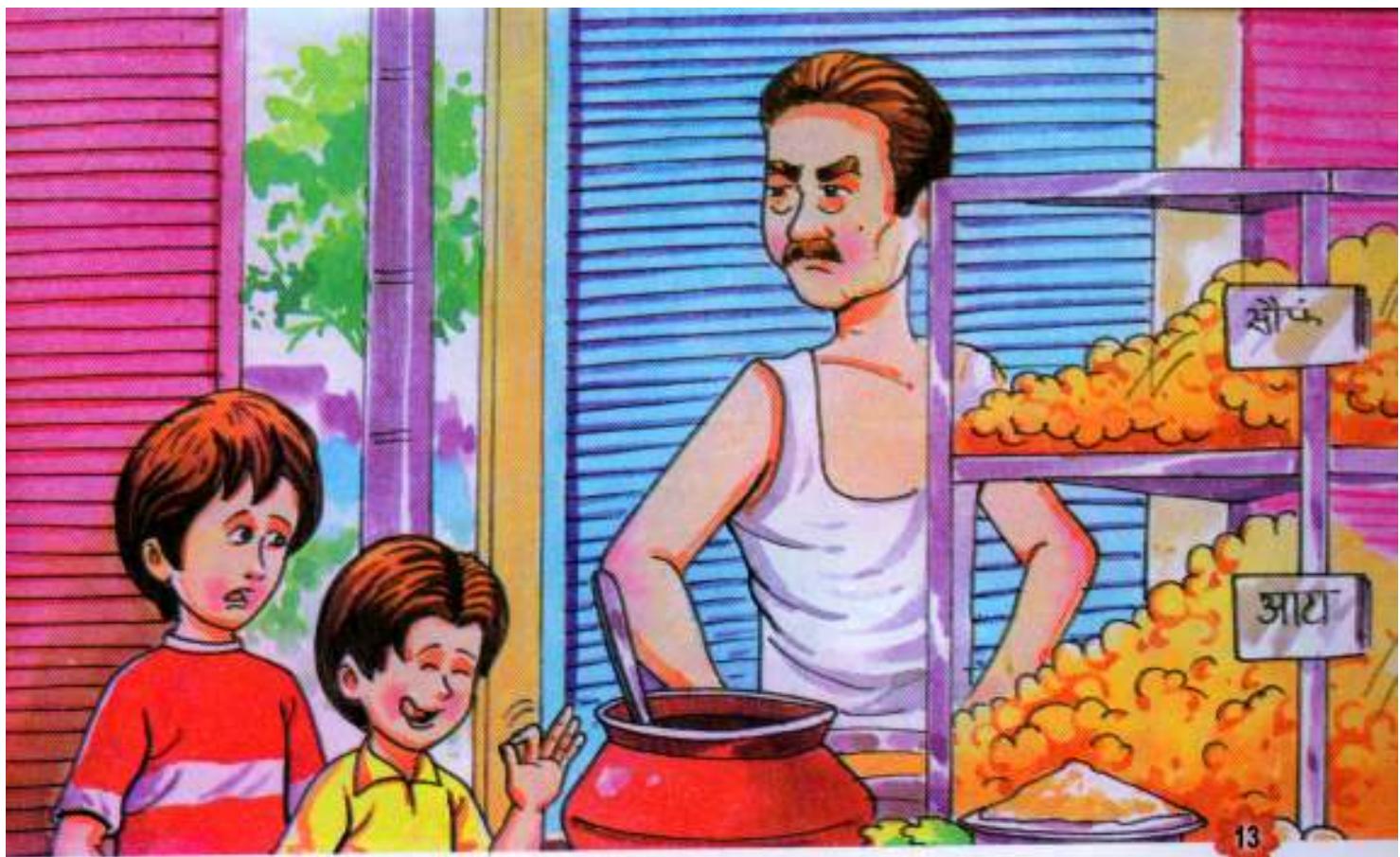


पाँच गोलगप्पे खाने के बाद जमाल थोड़ा रुका।
वह पैसों के बारे में सोचने लगा।
उसके पास सिर्फ़ पाँच रुपये थे।



12

इतने में गोलगप्पे वाले ने एक और गोलगप्पा बढ़ाया।
जमाल से मना नहीं किया गया।
वह फिर गोलगप्पे खाने लगा।



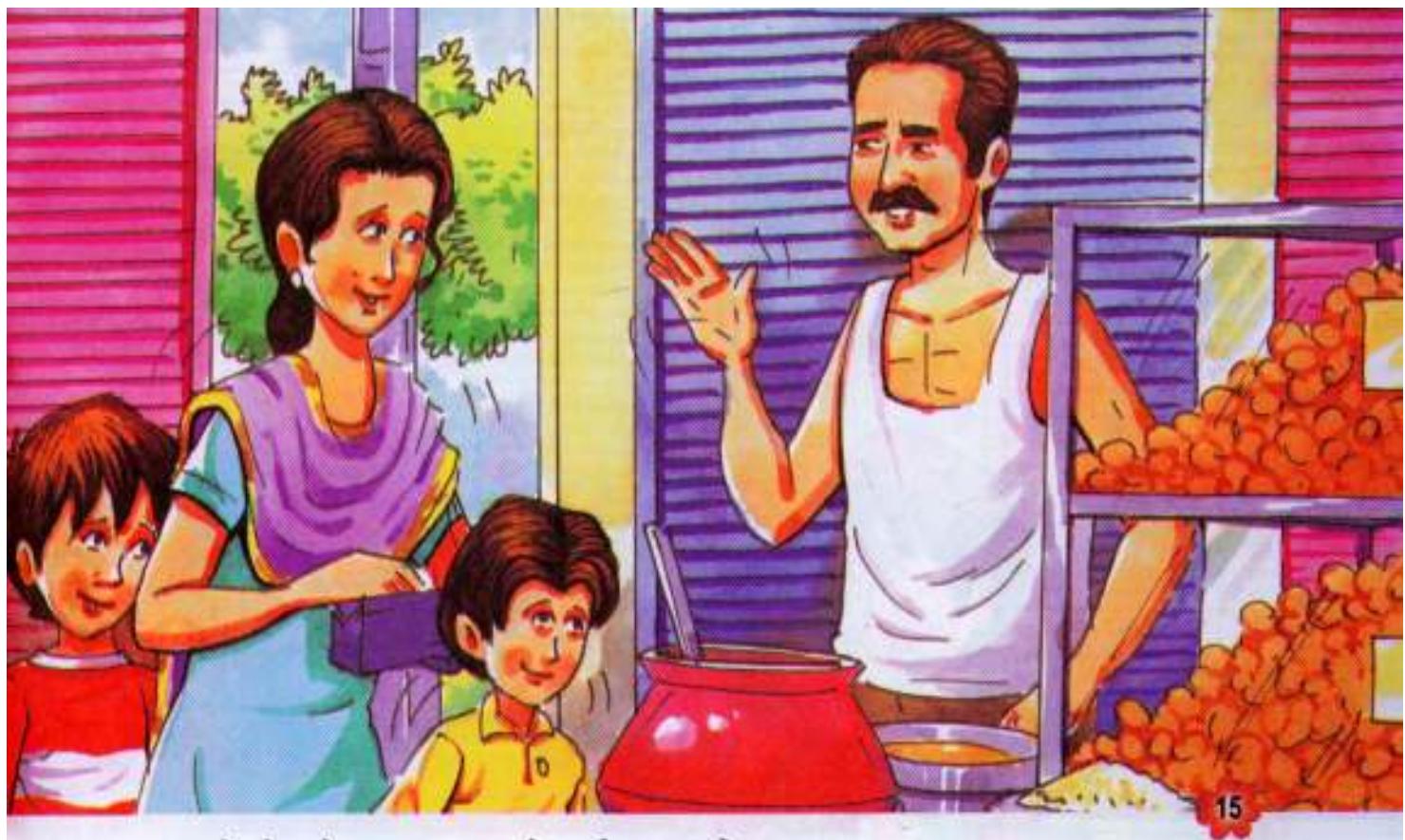
13

मदन ने जमाल की तरफ़ देखा।
उसने आँखों से पैसे के बारे में इशारा किया।
जमाल चटखारे लेने में लगा हुआ था।

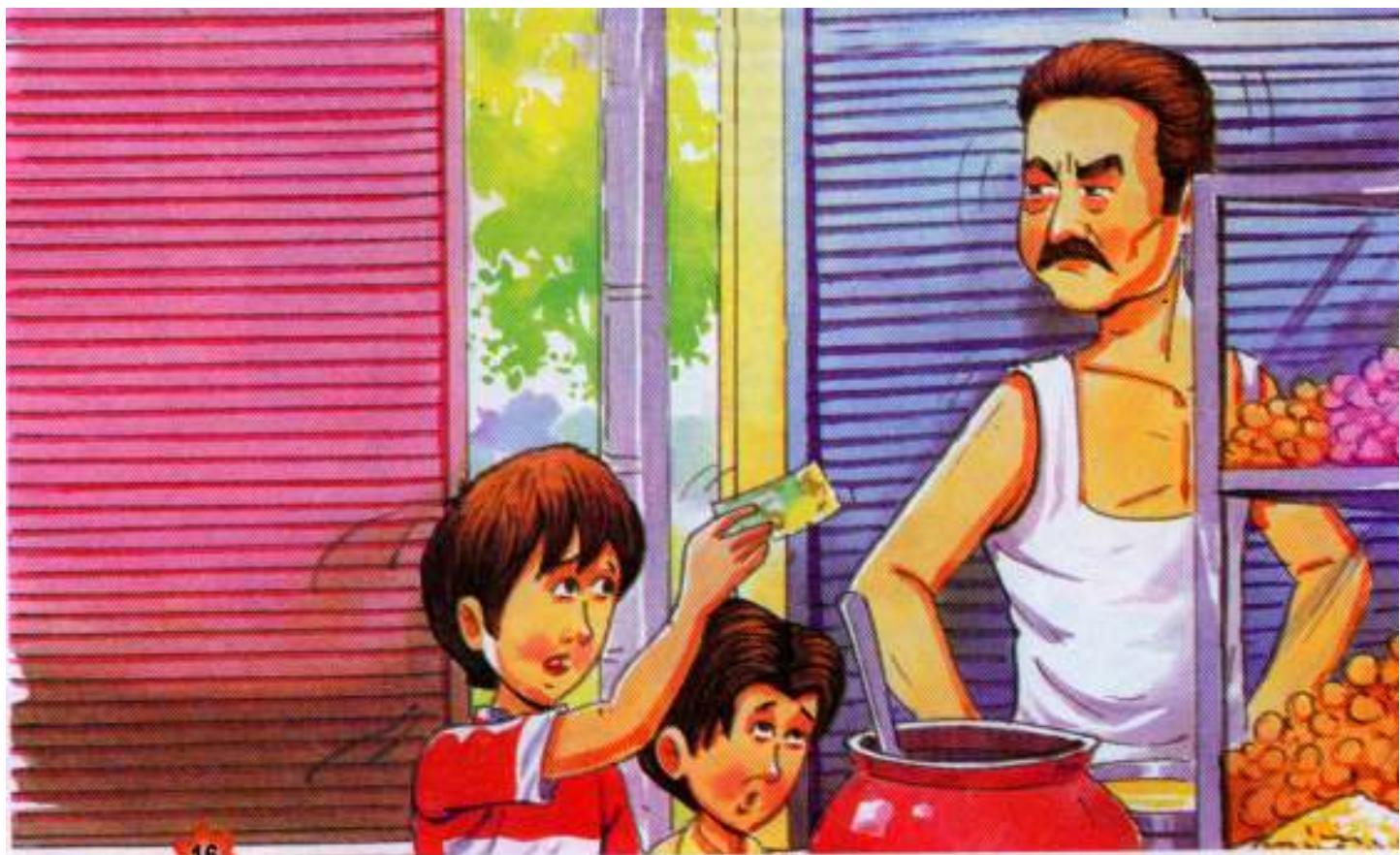


14

मदन से भी रुका नहीं गया।
वह भी गोलगप्पे खाता गया।
उसने गोलगप्पे वाले से पानी में खट्टा बढ़ाने को कहा।

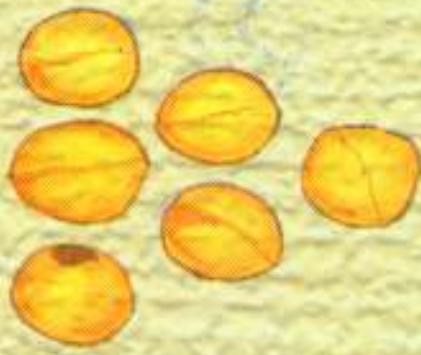


दोनों ने खूब सारे गोलगप्पे खाए।
जमाल को खूब मिर्च लग रही थी।
मदन को उससे भी ज्यादा मिर्च लग रही थी।



16

उन्होंने गोलगप्पे वाले को पाँच रुपये दिए।
दो रुपये कम पड़ गए।
गोलगप्पे वाले ने कहा – अगली बार दे देना।



2086



रु. 10.00

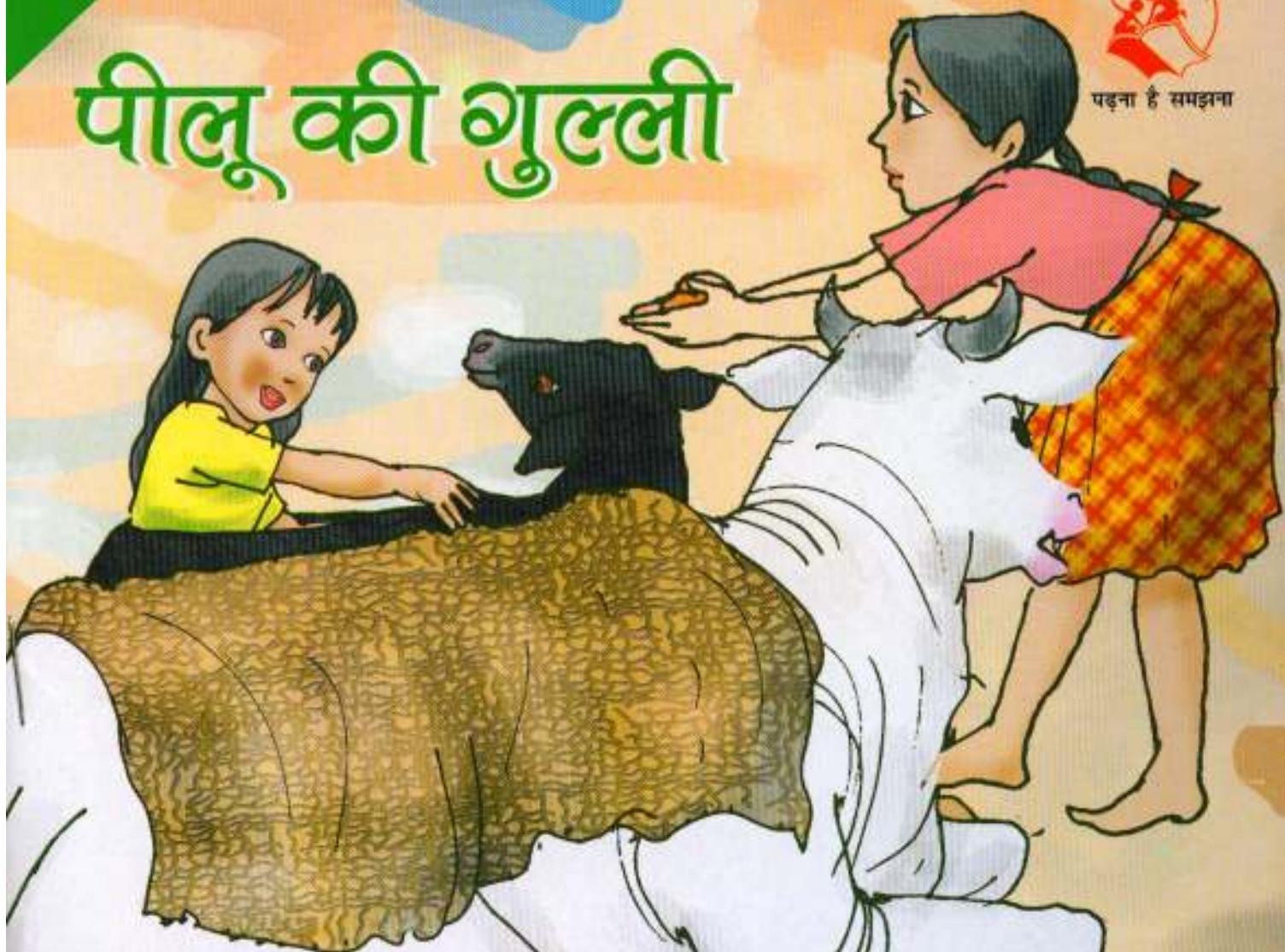
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरचा-सैट)
978-81-7450-887-4

पीलू की गुल्ली



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसेंबर 2009 पौष 1931

© साईंटीपी शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कवचन सेठो, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वाम, मुकेश मालवीय, गोधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वर्णिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि वाधवा

सम्पादन तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑफिसर - अर्चन गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार द्वापर्य

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संगुजल निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण की संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. विश्वाम, विभागाध्यक्ष, प्रार्थिमिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर यमजन्म जामी, विभागाध्यक्ष, भवा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला मधुर, अध्यक्ष, गोदावरी एवं पर्यावरण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेये, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, यहात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफेसर फारीदा अब्दुल्लाह, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जमिया फिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वकर्ण, रोहर, बिहारी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शश्वत मिश्रा, श्री.इ.ओ., आई.ए.ए.एवं एफ.एम., मुख्य, सुशील कुमार हरान, निदेशक, वेश्वनत चूक दुर्दल, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचय, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी भारा, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाशित ग्रन्थ, डी-28, इंडियनपल मैट्टिया, साइट-ए. पैक्का 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बाल्का-सेट)

978-81-7450-888-1

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'सामाजिक साथ' स्वयं पढ़ने के बोझे के देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथाओं स्तरों में विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की सुरुचि के लिए पढ़ने और स्वयं पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजान्यों की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी योग्य लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्वयं पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हारेक स्तर में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सार्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वभूमि के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को ज्ञापना तथा इलेक्ट्रॉनिकों, मर्मांकन, फांटोफोटोफोटो, रिकार्डिंग जब्ता किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संज्ञान अथवा प्रव्याप्त नहिं है।

एनसीईआरटी के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

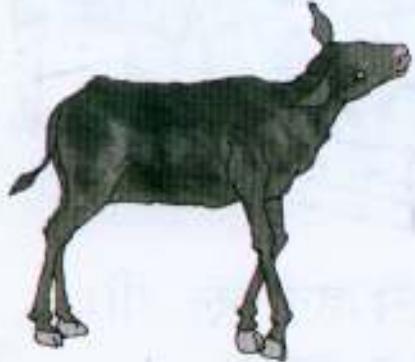
- एनसीईआरटी, बैप्पा, श्री अर्जित मर्म, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 छोटे गोद, हेंडे एक्सटेंशन, होम्डेवेन, बनशक्ती III स्ट्री, बालू 560 085 फोन : 080-26725740
- नवीन द्वारा भवन, शाक्ति नवीन, नवीनसाहब 380 014 फोन : 079-27541446
- श्री उम्मीद, बैप्पा, निकट, बनकल बम टॉप पर्सनल, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- श्री इन्ड्रनाथ, बैप्पा, नवीन, गुप्ताल 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पर्वतज्ञानम्
मुख्य संस्कृतक

मुख्य उत्पादन अधिकारी : श्रीष्ट कुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी : गीता शंकुल

पीलू की गुल्ली



गुल्ली



पीलू



मम्मी



2

एक दिन रानी के घर में सुबह से हलचल थी।
सुबह से ही आवाज़ों आ रही थीं।
आवाज़ों से रानी की नींद खुल गई।
उसने रमा को भी जगा दिया।



3

रानी उठकर आँगन में आ गई।
आँगन में बहुत चहल-पहल थी।
सब अपने-अपने काम में लगे हुए थे।
वह सबको देखने लगी।



पापा चूल्हे पर पतीला चढ़ा रहे थे।
पतीले में पानी और दाल-चावल थे।
मम्मी दो बोरे लेकर बैठी हुई थीं।
वह बोरों में से गुड़ निकाल रही थीं।



5

रानी ने देखा कि पीलू गाय को बछिया हुई है।
वह पीलू के बगल में ही बैठी हुई थी।
पीलू गाय अपनी बछिया को चाट रही थी।
बछिया भी प्यार से अपना मुँह चटवा रही थी।



6

रानी भागकर बछिया के पास गई।
बछिया काले रंग की थी।
मम्मी भी रानी के पास आ गई।
वह पीलू को गुड़ खिलाने लगीं।

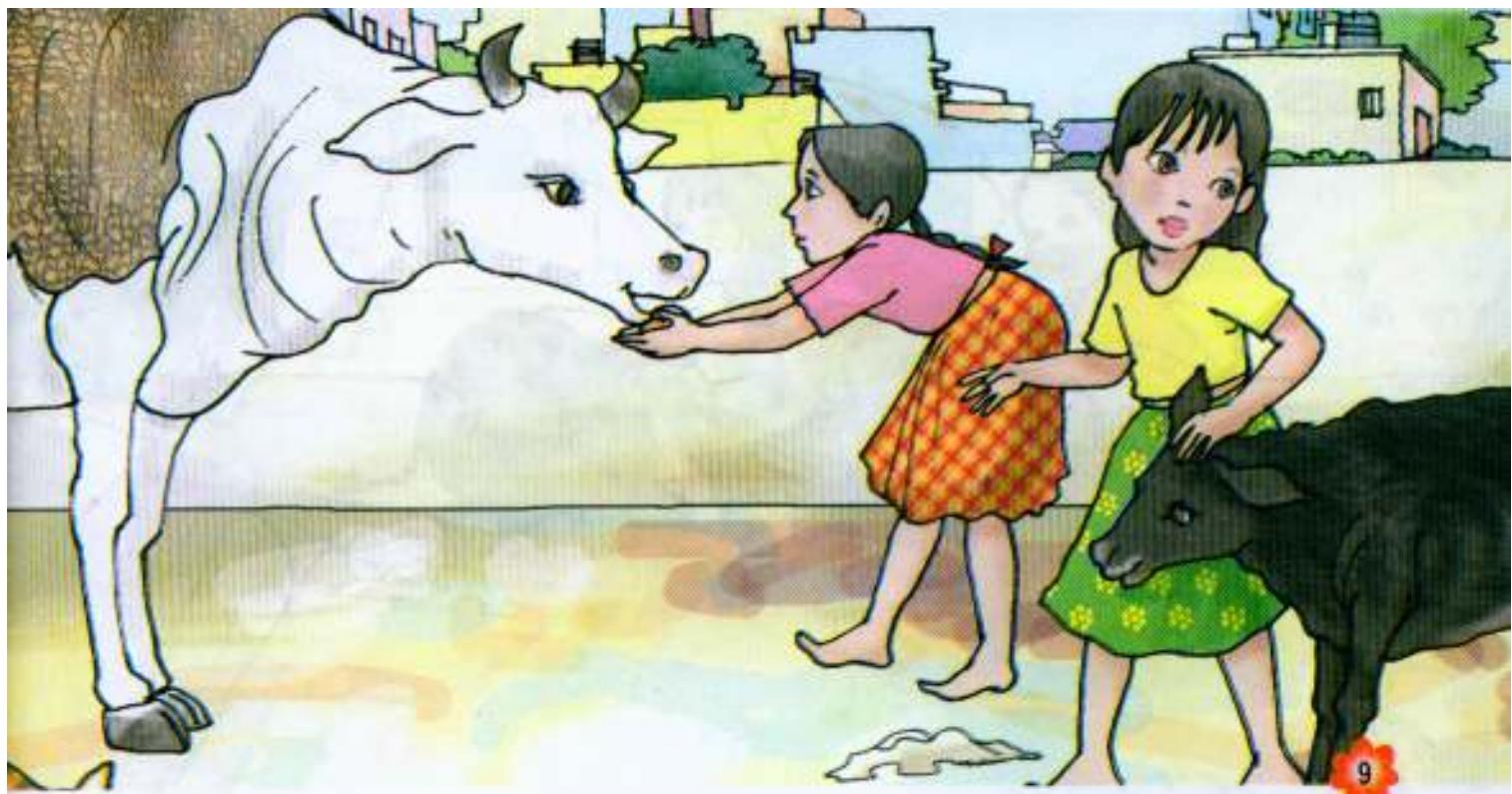


7

रानी ने बछिया को छू कर देखा।
वह बहुत चिकनी-चिकनी थी।
बछिया के बाल चमक रहे थे।
उसकी पूँछ छोटी-सी थी।



बछिया बार-बार खड़ी होने की कोशिश कर रही थी।
वह लड़खड़ा कर बैठ जाती थी।
रानी ने उसकी कमर सहलाई।
रमा भी वहाँ आ गई।



9

रमा ने पीलू को गुड़ दिया।
रमा भी बछिया को छू-छूकर देखने लगी।
रमा और रानी बहुत खुश थीं।
उन्हें बछिया को देखकर बहुत मज़ा आ रहा था।



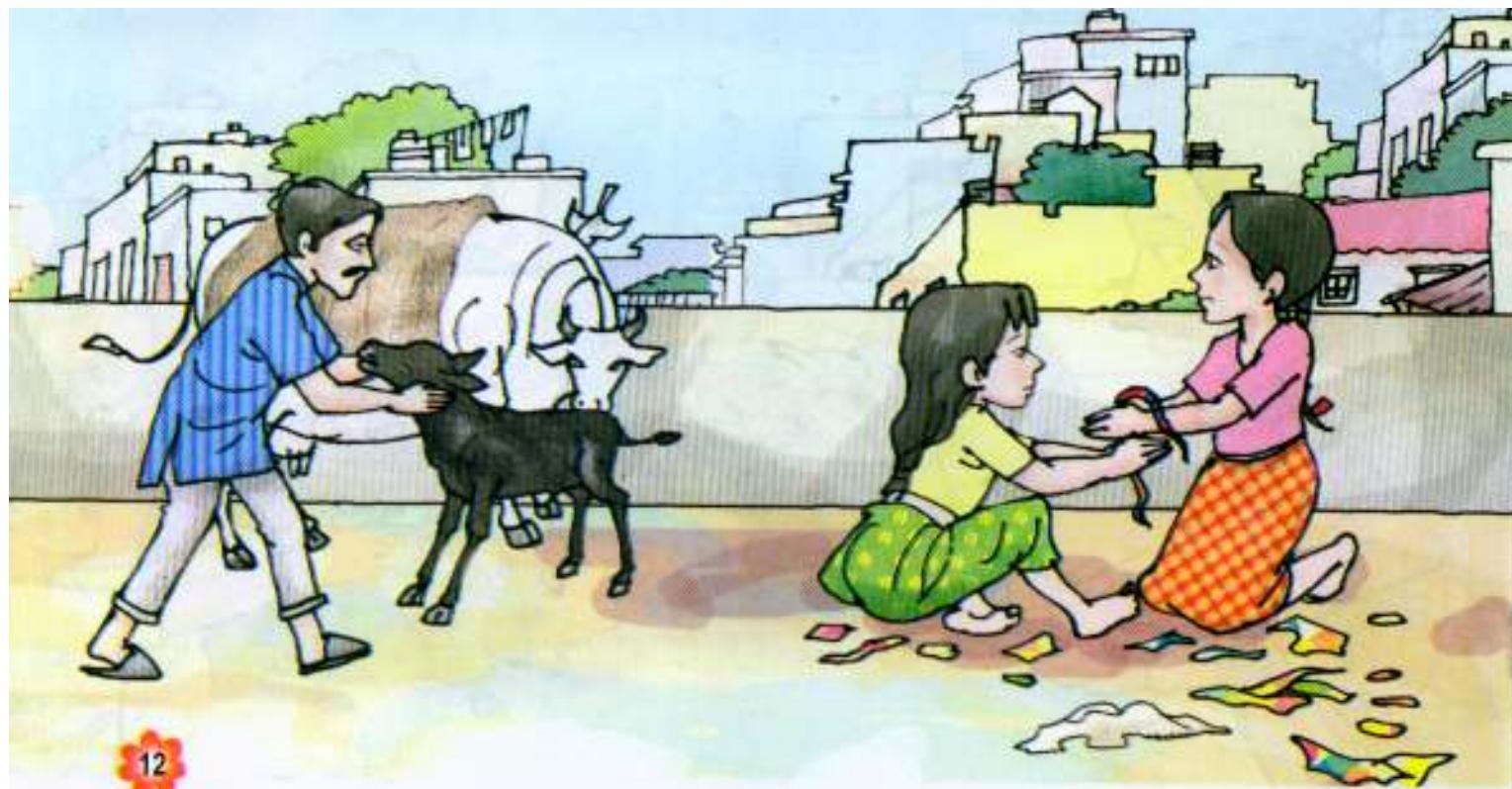
10

रमा और रानी ने बछिया का नाम गुल्ली रखा।
उन्होंने मम्मी को उसका नाम बताया।
वे वापस गुल्ली के पास आकर बैठ गईं।
वे गुल्ली के पास से हटना नहीं चाह रही थीं।



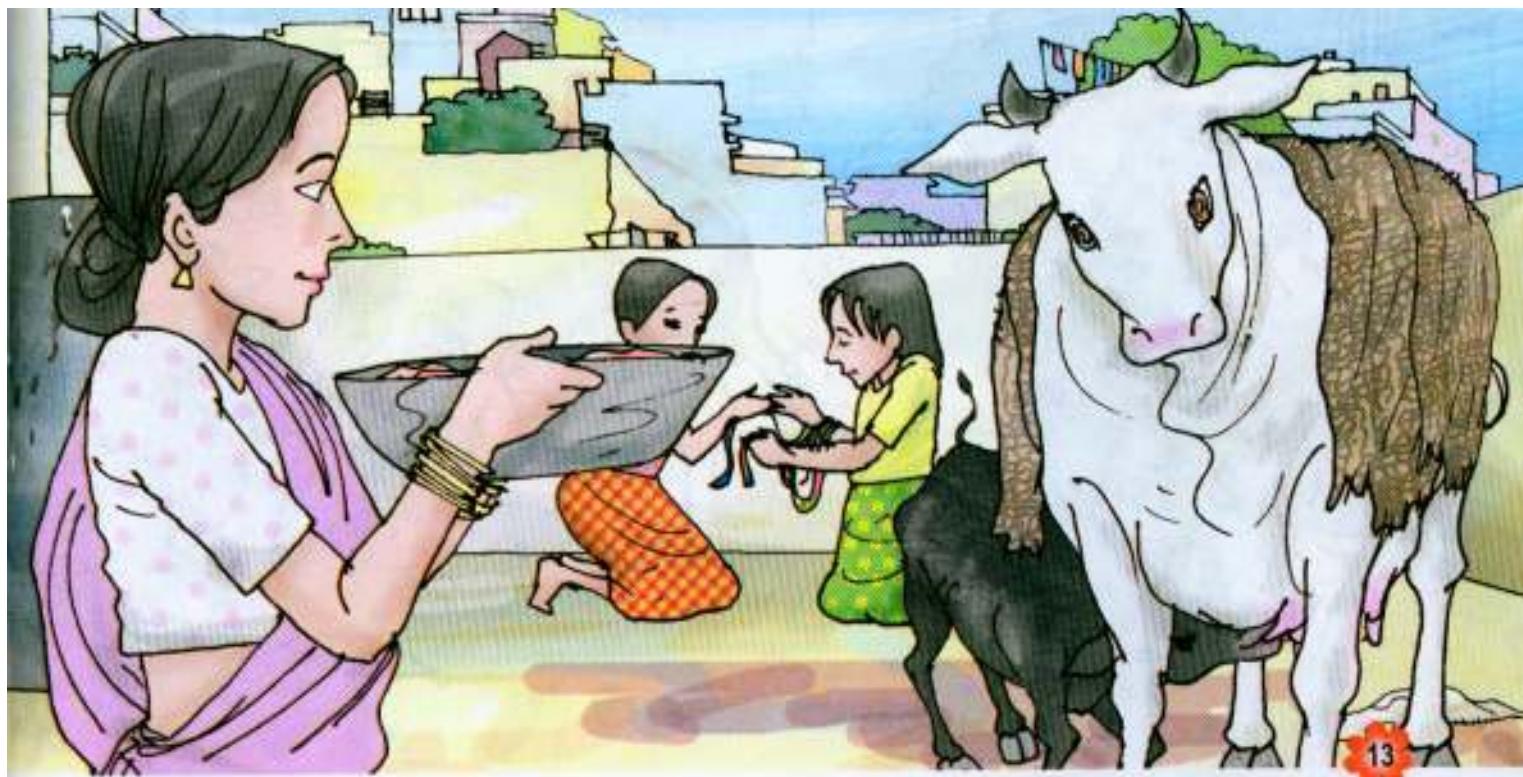
11

मम्मी ने रमा और रानी को कुछ कतरने दीं।
उन्होंने गुल्ली के लिए रस्सी बनाने को कहा।
गुल्ली को बाँधने वाली रस्सी नरम होनी चाहिए।
दोनों बैठकर रस्सी बुनने लगीं।



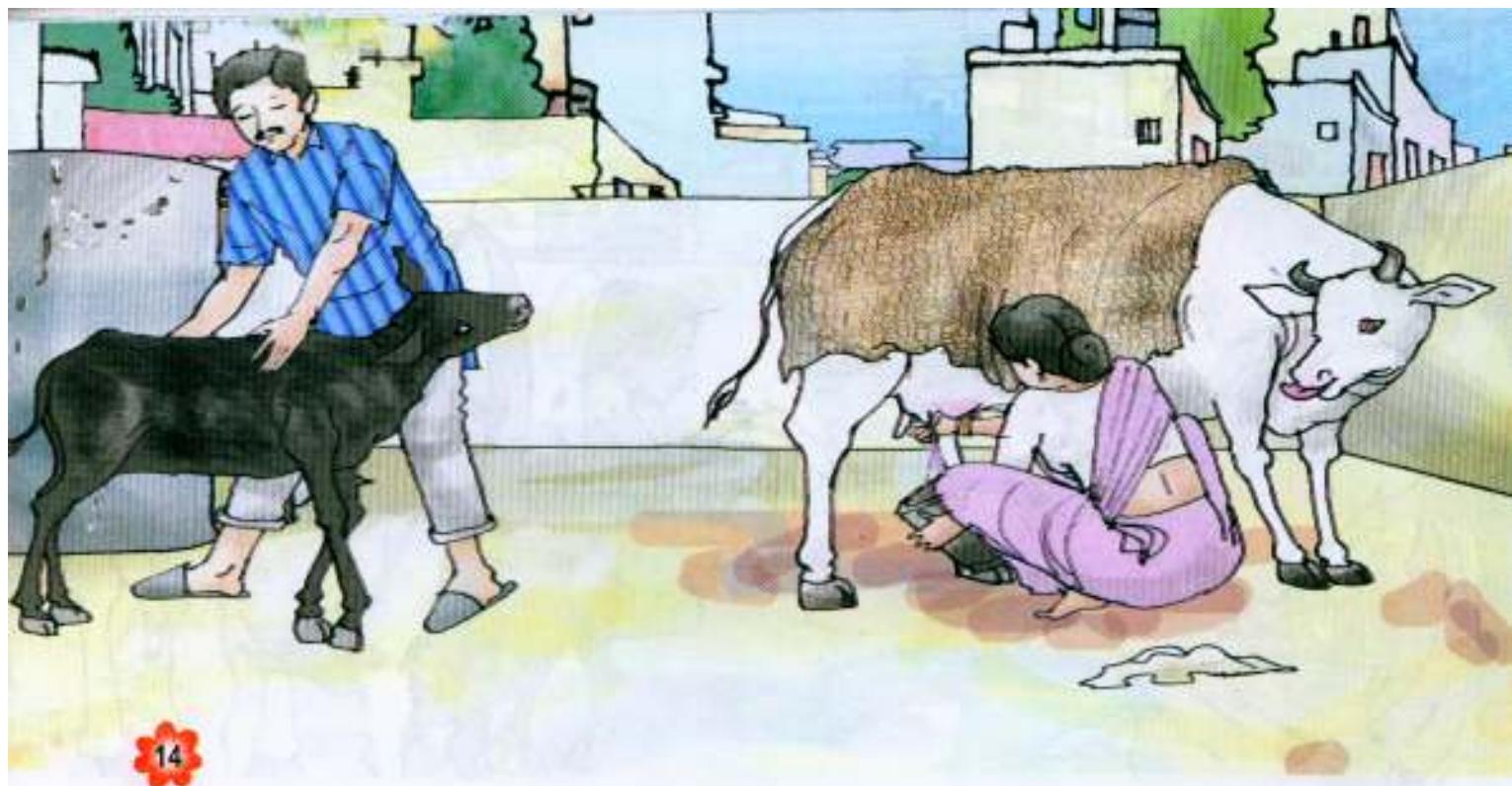
12

रमा ने देखा बाबा गुल्ली को धीरे-धीरे खींच रहे थे।
उन्होंने गुल्ली का मुँह पीलू के थनों पर लगा दिया।
गुल्ली दूध पीने लगी।
पीलू चुपचाप खड़ी हुई थी।



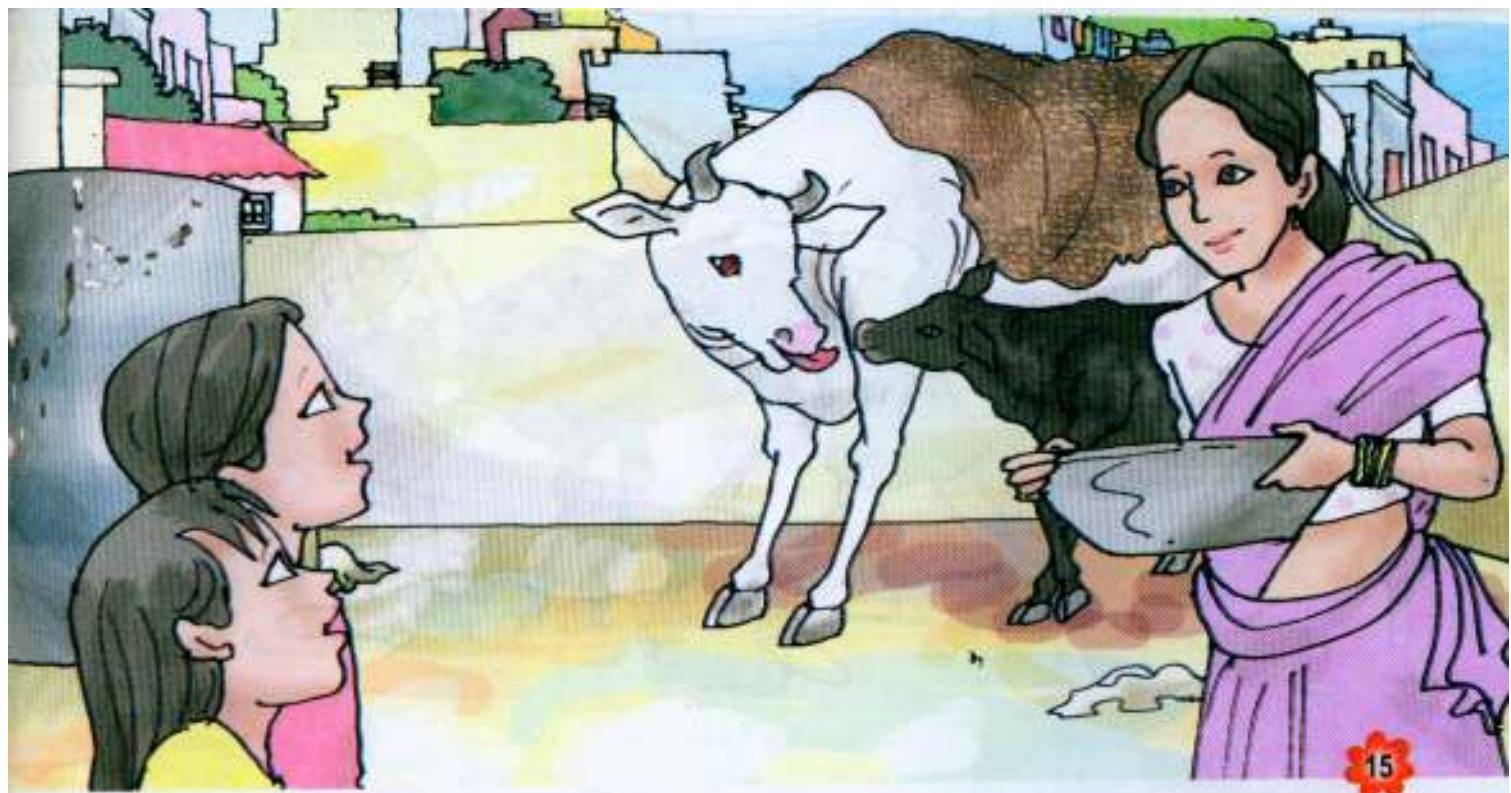
13

गुल्ली दूध पीती जा रही थी।
उसकी पूँछ इधर-उधर गटक रही थी।
इतने में मम्मी पीलू के लिए काढ़ा ले आई।
पीलू काढ़ा पीने लगी।



14

थोड़ी देर में पापा ने गुल्ली को अलग कर लिया।
फिर मम्मी पीलू का दूध दुहने लगीं।
उस दिन पीलू का दूध कुछ अलग-सा था।
दूध पीला-पीला और फटा-फटा था।



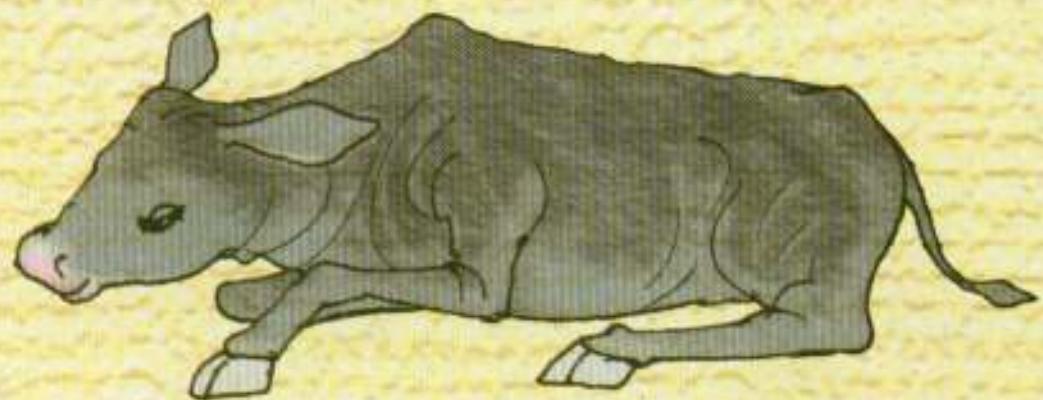
15

रमा और रानी मम्मी के पास पहुँची।
उनका मन स्कूल जाने को नहीं था।
मम्मी उनकी बात मान गई।
लेकिन मम्मी ने एक शर्त रखी।



16

मम्मी ने कहा कि उन्हें गुल्ली को नहलाना पड़ेगा।
यह सुनकर दोनों खुश हो गईं।
रमा और रानी ने धीरे-धीरे गुल्ली को नहलाया।
उन्होंने गुल्ली को नहलाकर नरम रस्सी से बाँध दिया।



2087



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पढ़ना है समझना



नानी का चश्मा

प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

युनर्नेश्वर : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गांधीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, शैक्षिक बेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका जश्चर, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लिखित गुप्ता

चित्रांकन - जाएल गिल

सम्पादन तथा आवरण - निधि वाधवा

डॉ.टी.पी. ऑपरेटर - अर्जन गुप्ता, अशुल गुप्ता, सीमा याल

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गांधीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, मधुकर निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोशोगिकी सम्बन्धन, गांधीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वर्षिका, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गांधीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर यामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गांधीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर यंगुन्त यश्वर, अध्यक्ष, रीडिंग हंडकलेपर्सन्ट यैल, गांधीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गांधीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वावरेही, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय तिर्यो विश्वविद्यालय, वर्ष; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला, श्वान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया विलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वांशुर, रीडर, लिंगी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम मिन्हा, सी.ई.ओ., आई.ए.ल. एफ.एम., मुंबई; सुश्री नुरहत इस्मान, निदेशक, नेशनल चुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री गोहित धनकर, निदेशक, दिनेंद्र, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पैपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, गांधीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी भवन, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंक्ति लिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडिपेंडेंस एरिया, माइट-ए, मुंबई 400004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-पैट)

978-81-7450-889-8

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और यांच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की सुन्नी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्य की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के माध्य-माध्य बच्चों को पाठ्यक्रमों के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें ढारा सकें।

प्रबंधिकार सुरक्षित

प्रकाशक जी पूर्वभूमि के बिना इस प्रकाशन के किसी भव को लापन करा इन्हें निकालो, यांत्री, फोटोप्रिन्टिंग, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पूर्ण प्राप्त पूर्णता द्वारा उसका संग्रहण अवश्य प्रस्तुत चाहिए।

इन स्तरों अंतर्गत, के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- ए.पी.ई.आर.टी. बैगल, श्री अधिकारी भवन, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26362708
- 108, 109 फौरे एवं, सौरी एमटीएल, हाईटेक, बालाकोट III स्टेट, काशी 540 085 फोन : 060-26725740
- लालोका हाई एवं, दालाल लालोका, अलमगढ़ 380 014 फोन : 0579-27541446
- शी.उम्मीद, कैप्स, निकट, बनकल अम स्ट्रीट चन्द्रगढ़, कालकाटा 700 114 फोन : 033-25530454
- शी.उम्मीद, कैप्स, पालघाटी, नवादाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन संस्थाग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार

मुख्य संसाधक : श्रीत उपल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य आपार अधिकारी : गोपन गांगुली

नानी का चश्मा



नानी



मुनमुन



रमा

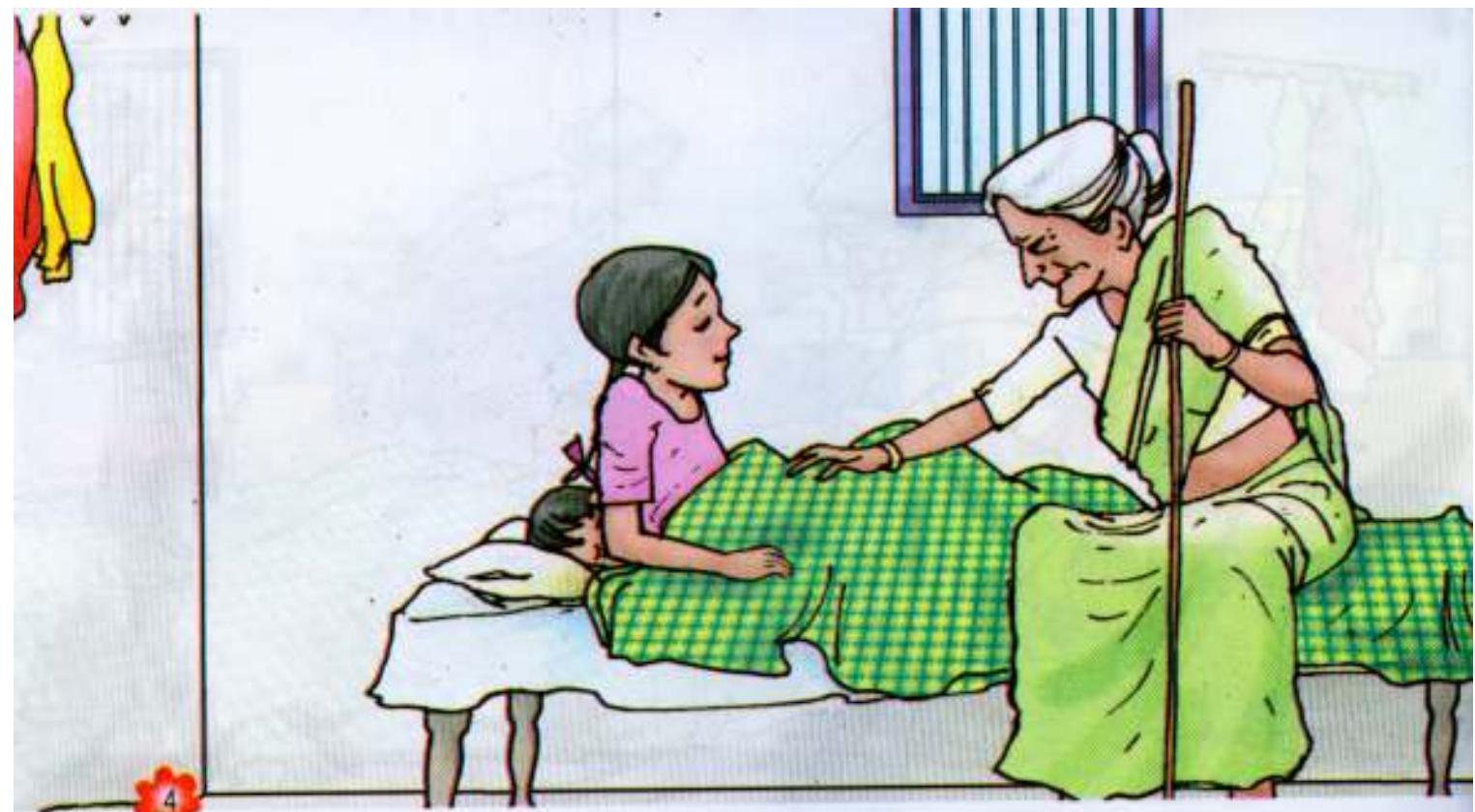


2

यह रमा की नानी हैं।
रमा की नानी हर समय चश्मा लगाती हैं।
नानी को किताबें पढ़ना पसंद है।
नानी रोज़ सुबह अखबार पढ़ती हैं।



एक दिन नानी रमा को सुबह-सुबह उठाने लगीं।
नानी को अपना चश्मा नहीं मिल रहा था।
नानी को चश्मे के बिना मुश्किल हो रही थी।
वह अपनी ज़रूरी चीज़ें नहीं ढूँढ़ पा रही थीं।



4

रमा बहुत गहरी नींद में थी।
वह उठ नहीं रही थी।
नानी ने रमा को बहुत प्यार से उठाया।
उन्होंने रमा को चश्मा ढूँढ़ने के लिए कहा।



5

रमा नींद में ही चश्मा ढूँढ़ने लगी।
उसने तकियों के नीचे चश्मा ढूँढ़ा।
नानी चश्मे को कई बार वहाँ रख देती हैं।
चश्मा तकियों के नीचे नहीं मिला।



6

नानी ने रमा से समय पूछा।
रमा बोली कि छोटी सुई पाँच पर और बड़ी चार पर है।
साढ़े पाँच बजने वाले थे।
नानी को अखबार पढ़ना था और सैर करने जाना था।

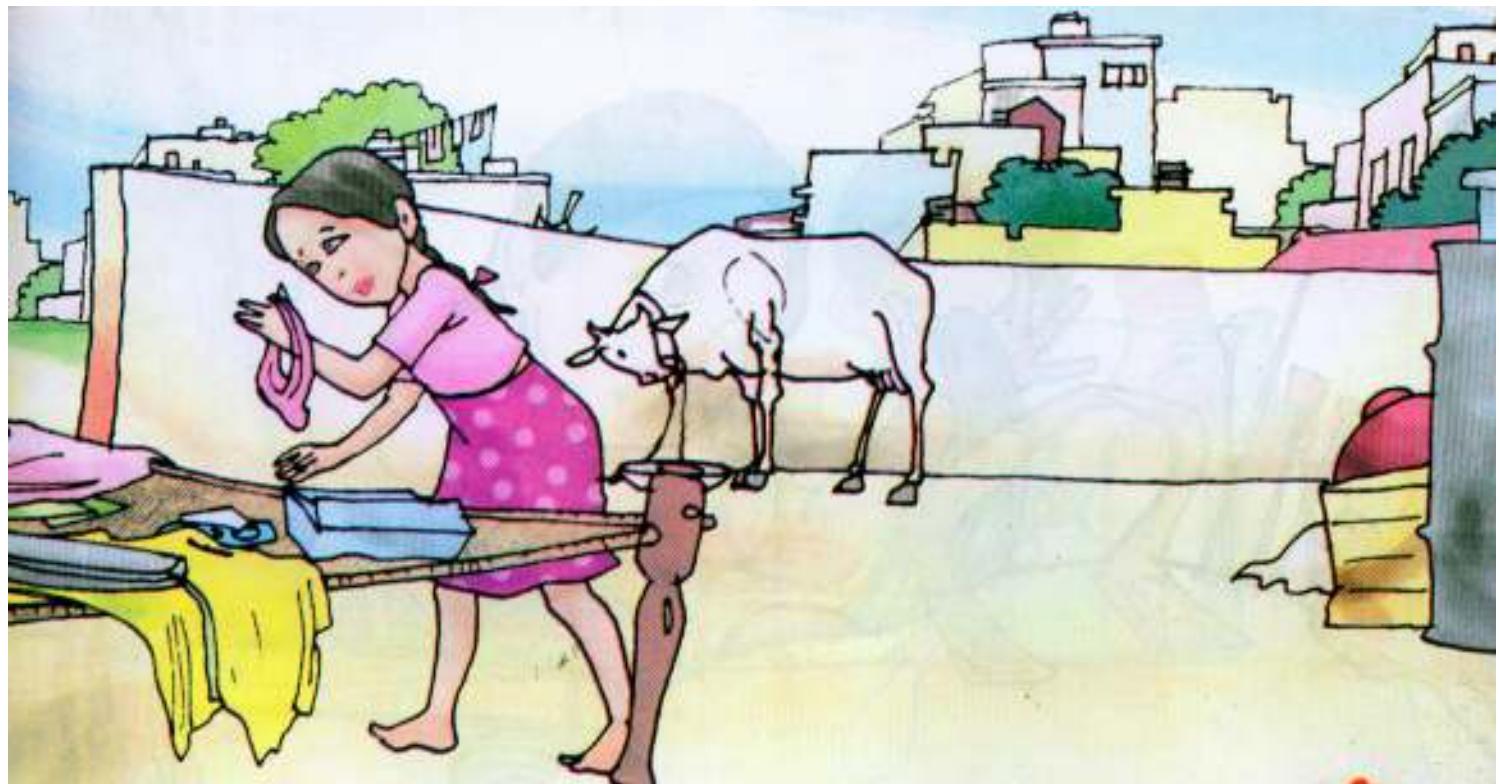


रमा ने नानी की मेज पर किताबों के बीच में चश्मा ढूँढ़ा।
नानी मेज पर बैठकर अखबार और किताबें पढ़ती हैं।
वह अक्सर किताबों के बीच में चश्मा छोड़ देती हैं।
चश्मा मेज पर नहीं था।



8

रमा ने चश्मा गुसलखाने में ढूँढ़ा।
गुसलखाने में बहुत सारे कपड़े पड़े हुए थे।
नानी कभी-कभी चश्मा गुसलखाने में छोड़ देती हैं।
चश्मा गुसलखाने में भी नहीं था।



9

रमा ने चश्मा आँगन में ढूँढ़ा।
आँगन में बहुत सारा सामान पड़ा हुआ था।
नानी अक्सर आँगन की चारपाई पर चश्मा छोड़ देती हैं।
चश्मा चारपाई पर भी नहीं मिला।



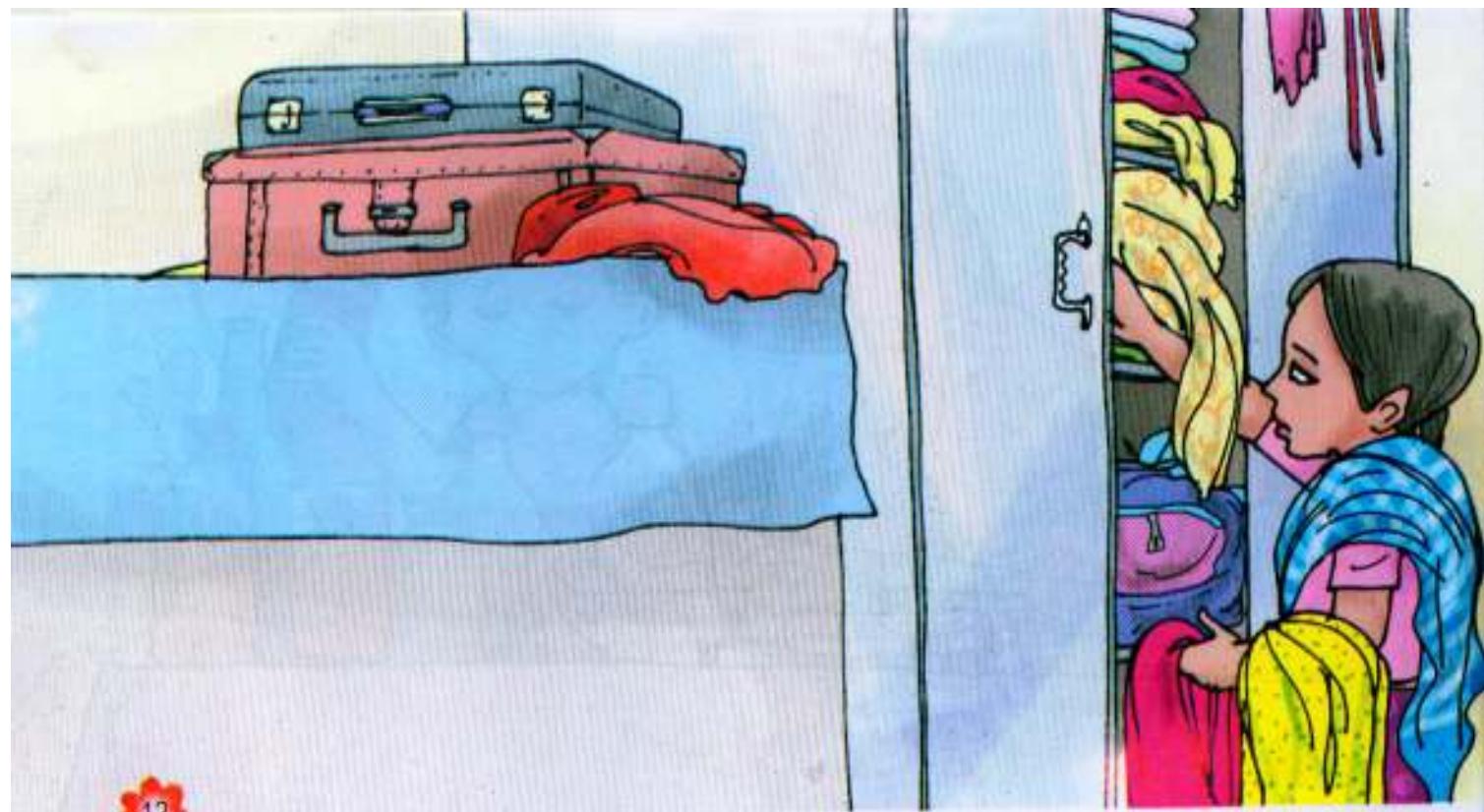
10

रमा ने चश्मा नानी के ऊन के थैले में ढूँढ़ा।
थैले में ऊन के बहुत सारे गोले थे।
उसमें आधे बुने हुए स्वेटर भी थे।
चश्मा थैले में भी नहीं था।



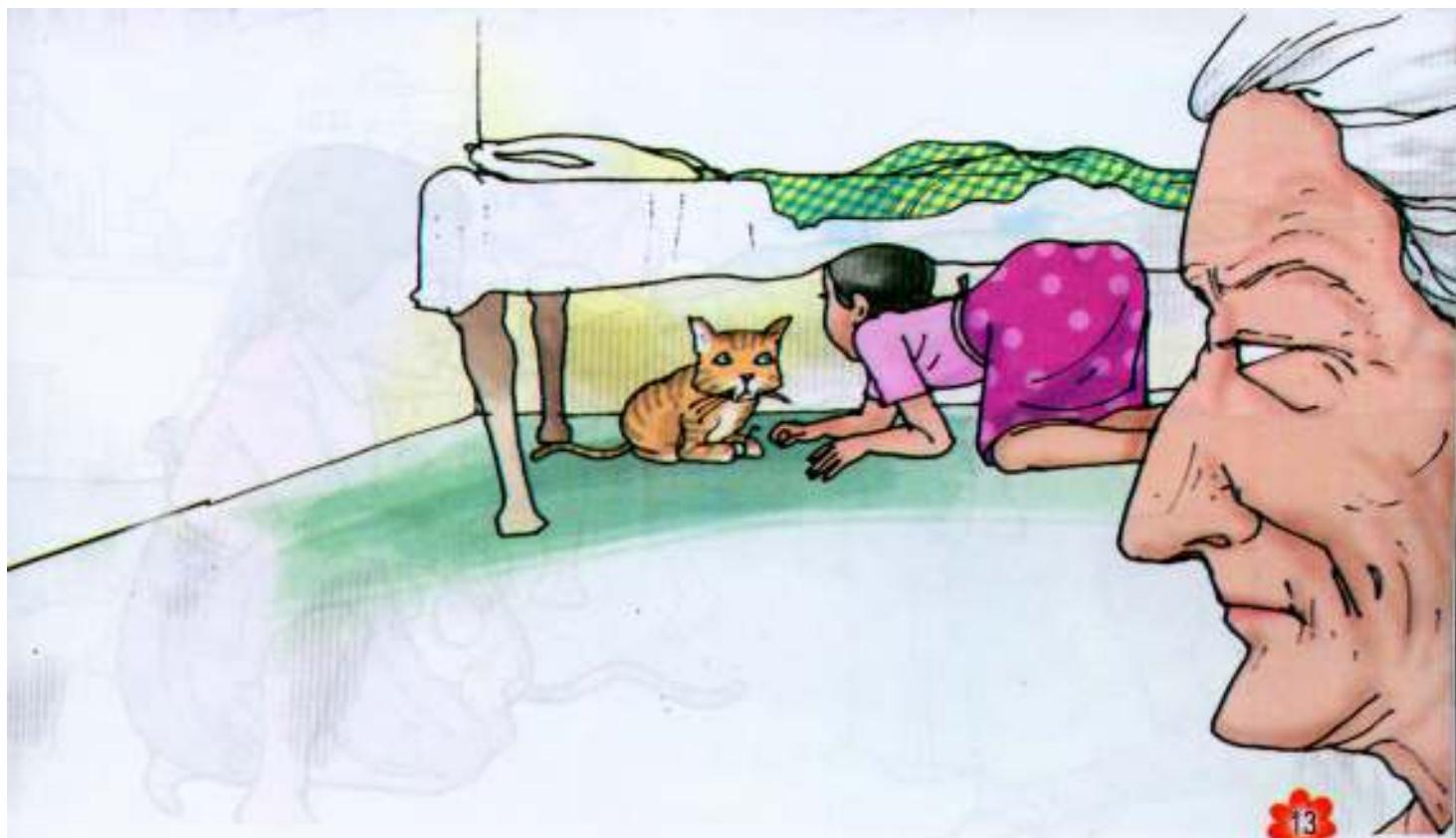
11

रमा ने चश्मा शीशे के पास ढूँढ़ा।
वहाँ पर कंधियाँ और तेल की शीशियाँ रखी हुई थीं।
नानी अक्सर कंधी करते समय चश्मा उतार देती हैं।
चश्मा शीशे के पास भी नहीं था।



12

रमा ने चश्मा अलमारी में ढूँढ़ा।
अलमारी में नानी की साड़ियाँ थीं।
नानी कई बार अलमारी में चश्मा छोड़ देती हैं।
चश्मा अलमारी में भी नहीं था।



13

रमा चश्मा ढूँढ़ने पलंग के नीचे घुसी।

पलंग के नीचे मुनमुन बैठी हुई थी।

मुनमुन के पैरों के बीच में कुछ था।

वह ठीक से दिख नहीं रहा था।



14

रमा ने मुनमुन को बाहर निकाला।
मुनमुन के साथ नानी का चश्मा भी आ गया।
रमा ने फौरन चश्मा उठा लिया।
वह चश्मा लेकर नानी के पास भागी।



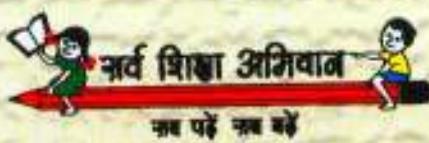
15

नानी चश्मा देखकर बहुत खुश हो गई।
उन्होंने चश्मा लगा लिया।
वह अखबार पढ़ने बैठ गई।
नानी बहुत देर तक अखबार पढ़ती रहीं।



16

नानी ने रमा को सैर के लिए बुलाया।
रमा ने चश्मा मुनमुन को लगा दिया।
मुनमुन चश्मा लगाकर बड़ी सुंदर लग रही थी।
फिर तीनों सैर के लिए निकल गए।



2088



₹. 10.00

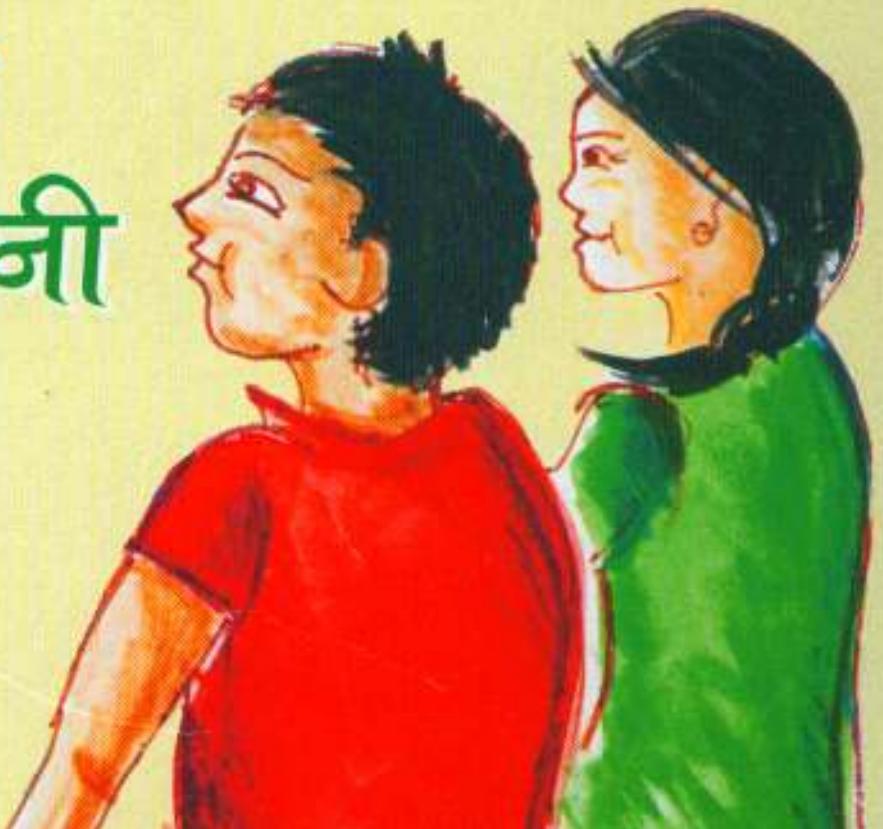
राष्ट्रीय शिक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पढ़ना है समझना



चुन्नी और मुन्नी



पुनर्मिलित : दिसंबर 2009 पृष्ठ 1931

© राष्ट्रीय परिक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

प्रस्तावकमाला निर्धारण समिति

कवचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,
गधिका बेनन, शालिनी शर्मा, लता घाण्डे, स्वाति वर्मा, मारिका वर्षाशन,
सीमा कमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शाक्त

संस्कृत-संपन्नयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कलिका परम नहाली

सर्वत्र तथा आवासा - निधि याधु

ਹੀ ਟੀ ਸੀ ਅੰਪਸੇਟ - ਅਰੰਗ ਗਜ਼ਾ ਵੈਲਸ ਚੌਥਾਂ ਤੱਤਾਂ ਸਾਡਾ

आशार उपाल

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर चंद्रश्च कायश, चंद्रश्च निदेशक, कन्दोय शैक्षिक प्रशिक्षणिकी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. पश्चिम, विभागाध्यक्ष, प्रार्थक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर गवर्नर शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग ऐतिहासिक मैल गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

गान्धीय संस्कृता सभिता

ओं अशोक नवरेण्यी, अच्छल, पूर्व कुलापति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदौ विश्वविद्यालय, लखनऊ; प्रोफेसर फरीद अद्वृत्तला खान, विभागाध्यक्ष, ईश्विक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया हस्तानीभाष्य, दिल्ली; डॉ. अपुर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम मिन्हा, सी.इ.ओ., आई.एल.ए.ए.एस., मुम्बई; सुशील नूराहत हसन, निदेशक, नेशनल चुक इस्ट, नई दिल्ली; ओं योहित भनकर निदेशक, दिग्गज, जयपुर।

(g) जी.एस.एम. एक्स पर भट्टिया

प्रकाशन विभाग में संरचना, टाटोपै इंस्क्रिप्शन अनुमतिपान और प्रशिक्षण परियोग, वी अवधिक वार्षि
नहै दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा घोषित प्रियंग प्रेस, वी-28, डॉक्टर्सट्रीफल एविया, नाईट-ए-
प्रेस 281004 द्वारा प्रकाशित।

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के पौरक देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथायनस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमरा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों परआधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यक्रमों के हरेक क्षेत्र में संलग्नतमक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में प्रेसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आमतौर से किताबें उठा सकें।

संवादितकार मराठी

प्रकाशक की पूर्ववस्तुओं के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग जो उत्पन्न तथा उत्पन्न किया गया है, उसका प्राप्ति अधिकार अवश्यक प्राप्त करना चाहिए।

परमी हाथ दो के प्रकाश विभाग के कार्यालय

- एनसीआरटी, कैपियम, भी प्रतीक्षा पार्क, नगरी विहारी 110 016. कोन : 011-26562708
 - 108, 100 पाटे पाटे, हेली एसटीएस, हास्पेशन, कालांखडी III इंद्र, बैलून 560 085 कोन : 080-26725740
 - एनसीआरटी एस, डक्टर नवाजिन, अहमदाबाद 380 014. फोन : 079-27541446
 - मी.एस.पी.पी. कैपियम, निकट: खलकल बस स्टॉप पालघरी, कोलकाता 700 114. फोन : 033-25530454
 - मी.एस.पी.पी. कैपियम, पालघरीपुर, चुवाडी 381 021. कोन : 0361-2674869

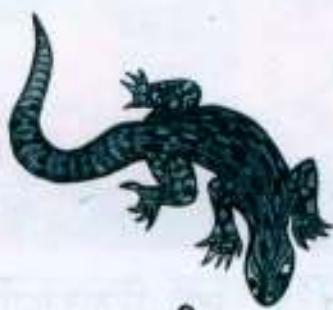
प्रकाशन संस्थान

अध्यात्म, प्रकाशन लिखान : पी. राजव्हाकर
मुख्य संस्कारक : स्वेच्छा उपलब्ध
मुख्य अधिकारी : शिल कुमार
मुख्य लापान प्रबंधक : नीतम गोपनी

चुन्नी और मुन्नी



माधव



मुन्नी



चुन्नी



काजल



माधव और काजल के घर में दो छिपकलियाँ रहती थीं।
एक छिपकली सफेद रंग की थी।
दूसरी छिपकली काले रंग की थी।
दोनों छिपकलियाँ घर की दीवारों पर चिपकी रहती थीं।



माधव और काजल को छिपकलियाँ अच्छी लगती थीं।
उन्होंने छिपकलियों के नाम भी रख दिए थे।
वे सफेद छिपकली को चुनी कहते थे।
काली छिपकली का नाम मुन्नी था।



4

चुन्नी और मुन्नी पूरे घर की दीवारों पर घूमती रहती थीं।
वे एक-दूसरे के पीछे भागती रहती थीं।
वे कभी-कभी छत पर उल्टी चिपकी दिखाई देती थीं।
काजल और माधव काम छोड़कर उन्हें देखते रहते थे।



5

कभी-कभी चुन्नी और मुन्नी गायब हो जाती थीं।
काजल उन्हें पूरे दिन ढूँढ़ती रहती थी।
माधव भी उन्हें ढूँढ़ नहीं पाता था।
चुन्नी-मुन्नी कहीं कोने में घुस जाती थीं।



6

चुन्नी और मुन्नी रात को आवाजें निकालती थीं।
माधव को लगता जैसे वह उससे बात कर रही हों।
माधव कई बार उनसे बात करने की कोशिश करता था।
वह चुन्नी और मुन्नी की तरह आवाज़ निकालता था।



7

चुन्नी और मुन्नी कई बार बहुत नीचे आ जाती थीं।
वे ज़मीन पर भी दौड़ती थीं।
काजल ने उनको रसोई में भी देखा था।
वह रसोई के डिब्बों के पीछे घुस जाती थीं।



8

चुन्नी और मुन्नी कीड़े-मकोड़े खाती थीं।
वे अक्सर तिलचट्टे को पकड़े हुए दिखती थीं।
चुन्नी तिलचट्टे को मुँह में दबा लेती।
मुन्नी मच्छर पकड़ती और चट कर जाती।



9

चुन्नी एक दिन मुन्नी के पीछे भाग रही थी।
काजल को लगा कि जैसे पकड़म-पकड़ाई खेल रही हों।
मुन्नी सरपट दीवार पर भागी जा रही थी।
चुन्नी उसके पीछे-पीछे थी।



अचानक चुन्नी और मुन्नी अलग हो गई।
काजल ने देखा कि मुन्नी की पूँछ गायब थी।
चुन्नी के मुँह में मुन्नी की पूँछ थी।
मुन्नी की पूँछ कट गई थी।



11

काजल ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी।
माधव दौड़कर आया।
काजल बहुत घबराई हुई थी।
उसने बताया कि चुन्नी ने मुन्नी की पूँछ खा ली।



12

माधव ने बिना पूँछ की मुन्नी देखी।
दोनों बहुत दुखी हो गए।
मुन्नी फिर भी इधर-उधर दौड़ रही थी।
चुन्नी कहीं छुप गई थी।



13

रात को माधव मुन्नी की पूँछ के बारे में सोचता रहा।
काजल भी मुन्नी की पूँछ के बारे में सोच रही थी।
दोनों को चुन्नी पर बहुत गुस्सा आ रहा था।
वे मुन्नी के बारे में बातें करते हुए सो गए।



14

सुबह उठते ही दोनों मुन्नी को ढूँढ़ने लगे।
मुन्नी रसोई की दीवार पर थी।
वह रोज़ की तरह मच्छर खा रही थी।
चुन्नी छत पर उल्टी चिपकी हुई थी।



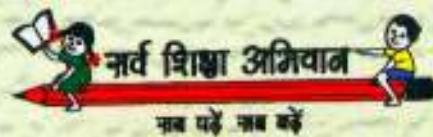
15

काजल और माधव रोज़ मुन्नी को देखते रहते थे।
वे चुन्नी से अभी भी नाराज़ थे।
एक दिन मुन्नी बहुत नीचे आकर तिलचट्टा पकड़ रही थी।
माधव की नज़र उस पर पड़ी।



16

माधव ने देखा मुन्नी की नई पूँछ आ गई थी।
वह काजल को बुलाकर लाया।
काजल ने भी मुन्नी की छोटी-सी पूँछ देखी।
दोनों समझ गए कि छिपकली की नई पूँछ आ जाती है।



2089



₹. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बाल्का से२)

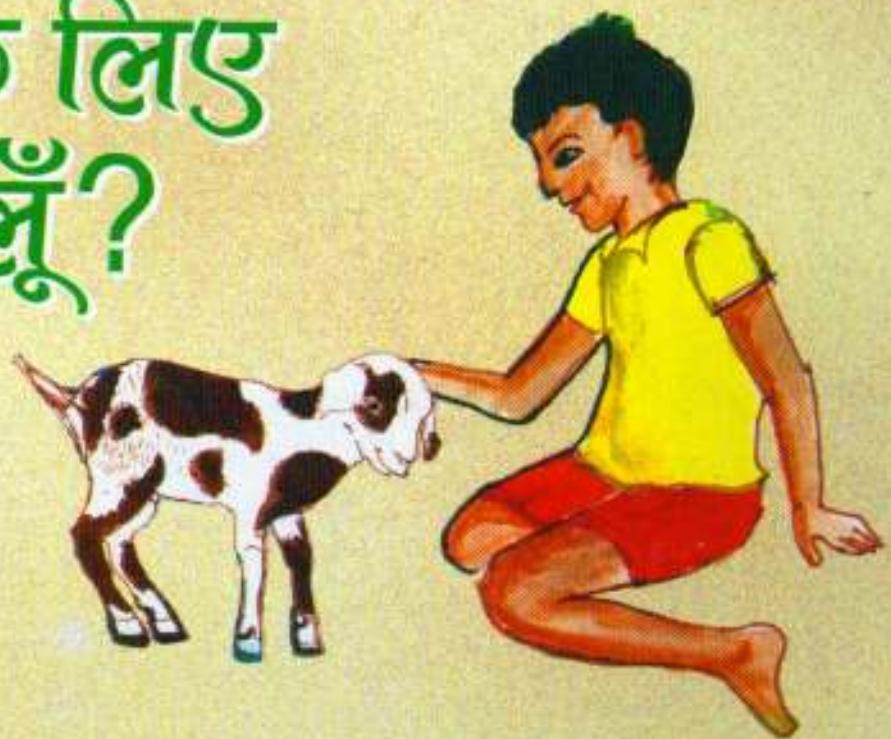
987-81-7450-890-4



प्रबोधन है सम्माना



मिमी के लिए क्या लूँ?



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला नियोग समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश गालवीय, संघिका सेन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका चांडिन,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, मुशील शुक्ल

सरस्वती-सम्पन्नव्यक्ति - ललिता गुप्ता

चित्रांकन - कृतिका एस. नरस्सा

मञ्जा तथा आवारण - निधि वाधवा

डॉ.टी.पी. अंबरेंटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आधार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामल, योग्यकृत निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोविडिंगी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वर्षाश्वत, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामलक्ष्मी शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर भजुला माधुर, अध्यक्ष, शीडिंग एक्स्ट्रेमेट मैल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अमृतानंद, गीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शब्दनम मिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., युवर्द; सूची बुलहत डग्नन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री गोडित भनकर, निदेशक, दिग्गज, ब्रह्मपुरा।

३० डी.एस.एन. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सहाय गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी मान, नई दिल्ली ११००१६ द्वारा प्रकाशित तथा प्रक्रिया विटिंग प्रेस, डी-१८, इंडिस्ट्रियल एरिया, गाइट-ए, मधुगंगा २८१००४ द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-891-1

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की सुशीला के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को गोजमर्ह की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी गोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ ऐनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र भाषा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यवर्ष के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक साधा मिलेंगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

समीक्षिकार सुरक्षित

प्रकाशन की पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के फिल्मे भव या छपना तथा डिलेट्रानिको, मोर्सोन, फोटोफ्रॉनिली, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रबोग उत्पत्ति द्वारा उसका संशोधन अथवा प्रसारण बर्जित है।

एन.सी.इ.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.इ.आर.टी. कैप्स, श्री अधिकारी मान, नई दिल्ली ११००१६। फोन : ०११-२६५६२७०८
- १०८, १०० फ्लॉर एवं, हैंडी एम्प्लायमेंट, सोलंकी कोटी, बनालीकोटी III स्ट्रीट, बैंगलूरु ५६० ०६५। फोन : ०८०-२६७२५२४०
- नक्कीन लूम भवा, डाकघर नवबीलन, अहमदाबाद ३८० ०१४। फोन : ०७९-२२५४१४५६
- ली.इ.बन्धु मी. कैप्स, निकास भनकर यास मर्ह परिवारी, कोल्काता ७०० ११४। फोन : ०३३-२५३३०४५४
- सी.इ.बन्धु मी. कौम्होद्दम, मालीगांव, मुम्बई ४०० ०२१। फोन : ०२२-२६७४६६७

प्रकाशन महाप्रयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री रामकृष्ण

मुख्य संचालक : श्रीकृष्ण उपल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य व्यापार प्रबंधक : शीतप गंगुली

मिमी के लिए क्या लूँ?



माधव

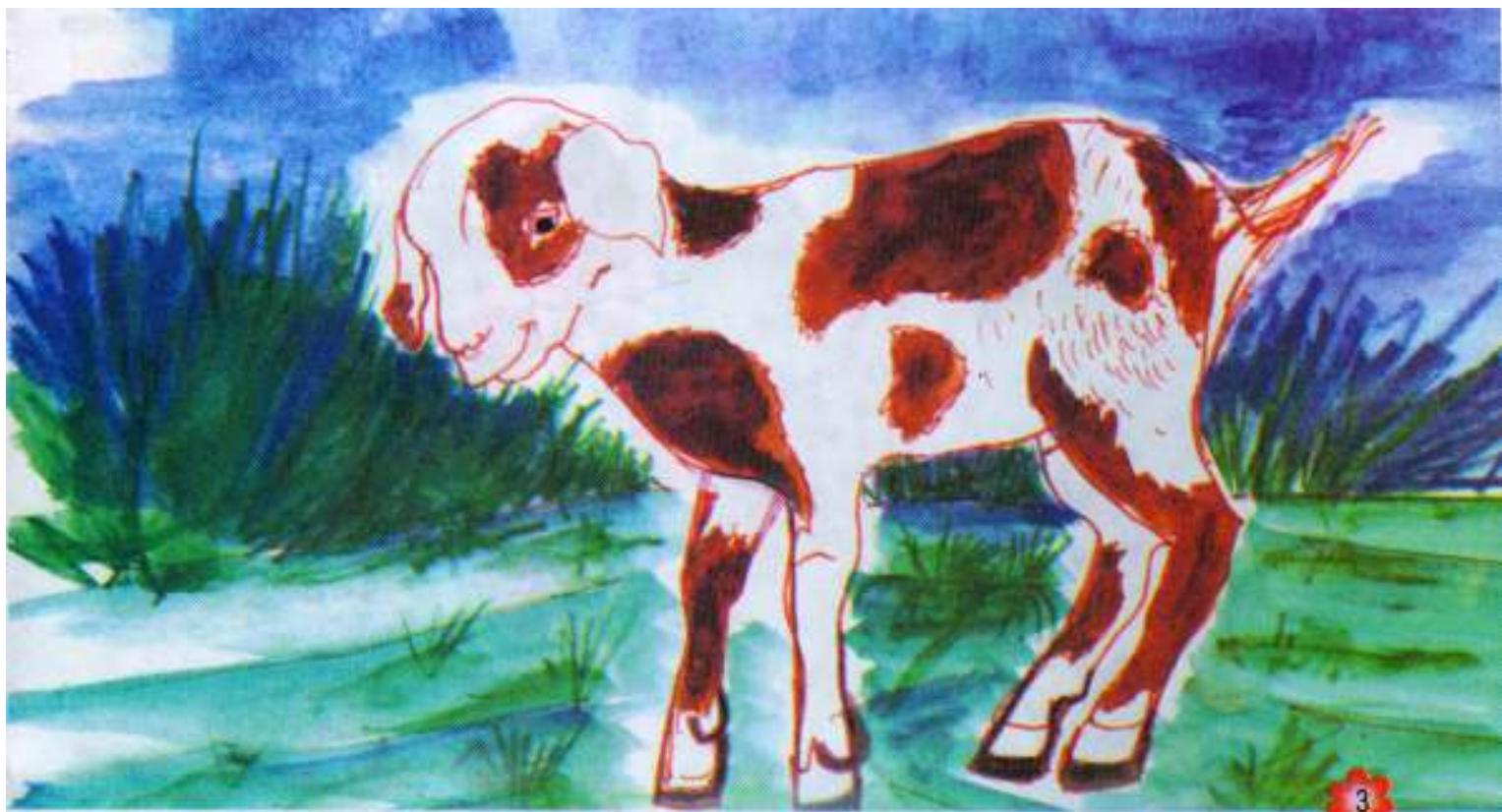


मिमी



2

माधव के पास एक बकरी थी।
उस बकरी का नाम मिमी था।
माधव मिमी को बहुत प्यार करता था।
मिमी भी माधव के आस-पास ही घूमती रहती थी।



3

मिमी का रंग सफेद और भूरा था।

उसके कान बड़े-बड़े थे।

मिमी के बाल बहुत चमकते थे।

मिमी की आँखें बड़ी प्यारी थीं।



4

मिमी बहुत मुलायम थी।
माधव दिनभर उसे सहलाता रहता था।
वह उसे अपनी गोद में लिए फिरता था।
माधव को मिमी के मुलायम-मुलायम कान बहुत पसंद थे।



5

मिमी पूरे एक साल की हो गई थी।
मिमी का जन्मदिन आया।
माधव उसका जन्मदिन मनाना चाहता था।
वह मिमी के लिए एक तोहफ़ा खरीदना चाहता था।



6

माधव ने मम्मी से तोहफे के लिए पैसे माँगे।
मम्मी ने बीस रुपये दे दिए।
माधव ने मिमी को नहला-धुलाकर तैयार किया।
वह मिमी को लेकर बाज़ार की तरफ निकल पड़ा।



7

माधव ने मिमी की रस्सी पकड़ रखी थी।
थोड़ी देर बाद माधव ने रस्सी खोल दी।
मिमी फौरन इधर-उधर उछलने लगी।
माधव को मिमी का उछलना-कूदना बहुत पसंद था।



8

बाजार में सबसे पहली दुकान हलवाई की थी।
दुकान में खूब सारी मिठाइयाँ थीं।
हलवाई के पास खूब सारे लड्डू और रसगुल्ले थे।
उसके पास बहुत सारा दूध, दही और शरबत भी था।



9

तभी माधव की नज़र दूसरी तरफ की मिठाइयों पर पड़ी।
वहाँ रसगुल्ले, जलेबी और पेड़े रखे हुए थे।
माधव सोचने लगा कि मिमी के लिए क्या ले।
एक दोना जलेबी कैसी रहेगी?



अगली दुकान कपड़ों की थी।

दुकान पर बहुत सारे लोग कपड़े खरीद रहे थे।

वहाँ कमीजें, कुर्ते और पाजामे लटके हुए थे।

कुछ कपड़े शीशे की अलमारियों में रखे हुए थे।



माधव कमीजों की तरफ देखने लगा।
उसने पीली, नीली, हरी और गुलाबी कमीजें देखीं।
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।
लाल छींट वाली कॉलर की कमीज कैसी रहेगी?



12

अगली दुकान बर्तनों की थी।

दुकान पर खूब सारे बर्तन थे।

वहाँ बहुत सारे बर्तन स्टील के थे।

कुछ बर्तन पीतल के भी थे।



माधव सारे बर्तनों को देखने लगा।
वहाँ थालियाँ, कटोरियाँ, चम्पचें और गिलास रखे हुए थे।
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।
दूध के लिए एक कटोरा कैसा रहेगा?



14

अगली दुकान लुहार की थी।

उसकी दुकान पर तरह-तरह की चीजें थीं।

वहाँ तवे, कड़छी, जंजीरें और खूब सारी कीलें थीं।

लुहार गर्म-गर्म भट्टी पर कुछ बना रहा था।

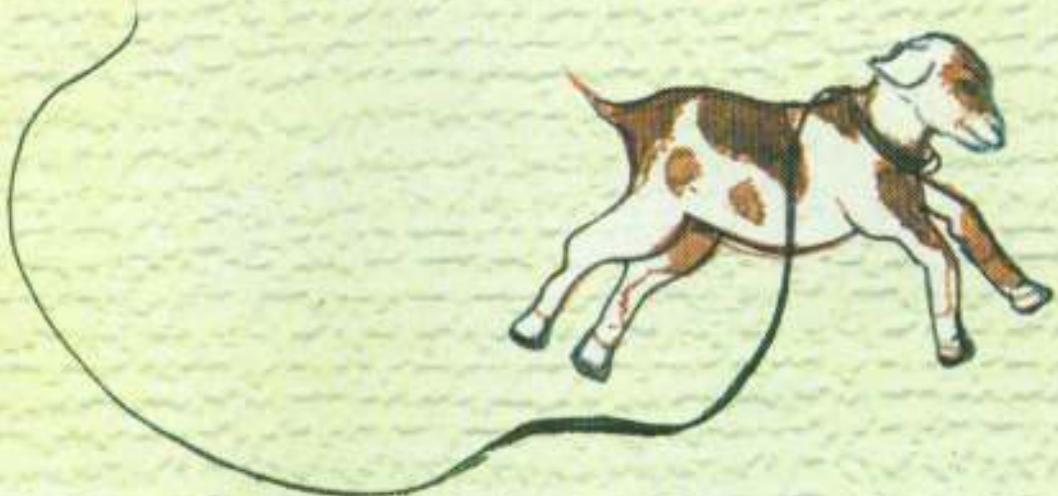


माधव ने चारों तरफ नज़र घुमाई।
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।
उसकी नज़र घुँघरूओं पर पड़ी।
माधव ने मिमी के लिए घुँघरू ले लिए।



16

माधव ने मिमी के दोनों पैरों में घुँघरू पहना दिए।
घुँघरू लाल रंग के सुंदर से धागे में बँधे हुए थे।
मिमी कूदती-फाँदती माधव के साथ चल दी।
सब लोग उसके घुँघरुओं की छुन-छुन सुनने लगे।



2090



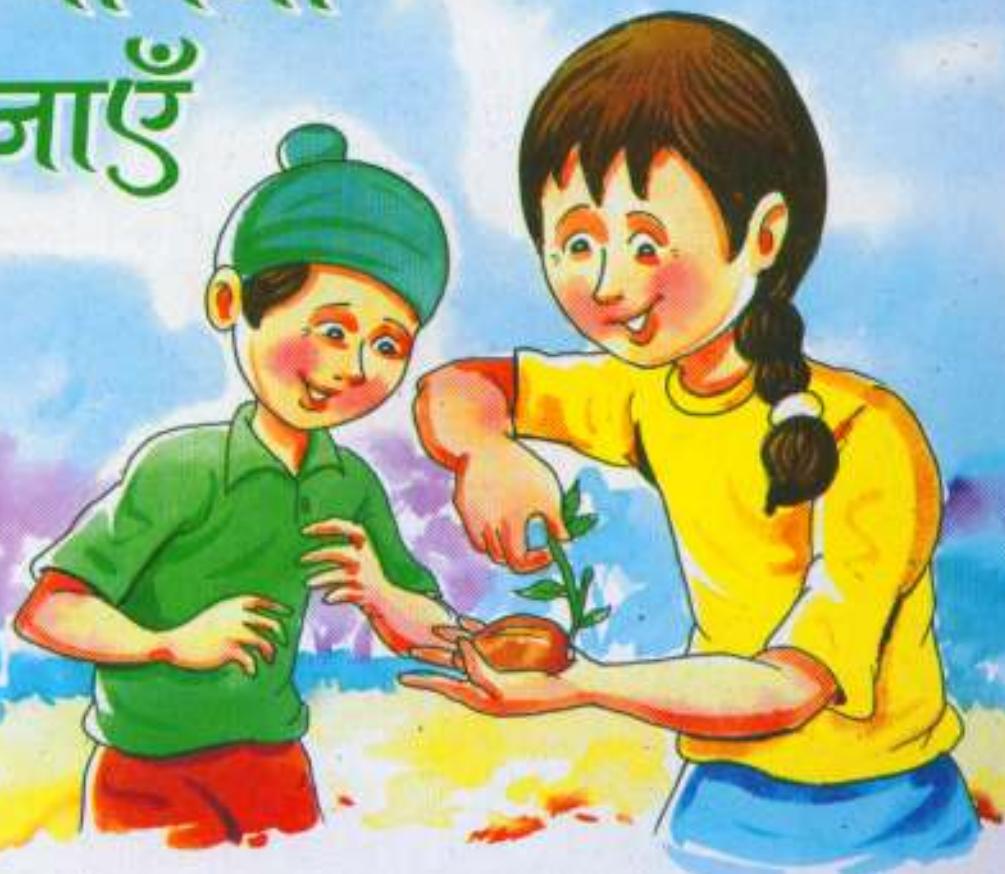
₹ 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



प्रकाश ना है समझना

चलो पीपड़ी बनाएँ



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वाम, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति चर्मा, सारिका विशाल, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्र

संवाद-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चिंताकृत - निधि वाथवा

संज्ञा तथा आवरण - निधि वाथवा

डी.टी.पी. ऑफिसर - अर्चना गुप्ता, अशुल गुप्ता, सीमा गाल

आभार ज्ञापन

ग्रोक्सर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोक्सर बसुधा कामल, सुशील विदेशक, बेन्दीय शैक्षिक ग्रोक्सरिंग की संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोक्सर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोक्सर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोक्सर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, ग्रोक्सर डेवलपमेंट सेल, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महाराष्ट्रा नाईटी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वर्धा; ग्रोक्सर फरीदा अनुदला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिन एवं पर्यावरण इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वनंद, रीडर, हिंदू विभाग, निल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शशनाम सिन्हा, सी.ई.ओ., अई.एल. एवं एफ.एम., मुर्दा; सुश्री तुवाहत हसन, विदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री गोहित धनकर, विदेशक, दिग्गज, जयपुर।

80 डी.एस.एम. पैपर पर मुद्रित

इकाशन विभाग में सचिव, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अविन्द मार्म, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज लिंग प्रेस, डी-28, इंडोप्रियल एरिया, माइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा पुढ़ित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरल-सेट)

978-81-7450-892-8

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'ममझे के साथ' स्वयं पढ़ने के मार्गे देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में स्थानांतरित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोकमर्ग की छोटी-छोटी घटनाएँ, कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यवर्चय के हरेक धंत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेंगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

संविधिकार सूचित

प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को अपना तथा अन्वेषणिकी, प्रश्नों, कालोफोलिंग, सिकाइंग आद्य किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पर्याप्त हाथ उसका व्याप्रणाली लाभवा प्रयोग नहीं है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, ली अविंद मार्म, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100-फीट रोड, हैंडी एस्टेशन, होमटेकर, बच्चाओं की एस्टेशन, बैलूर 560 085 फोन : 080-26725740
- नववीन हाट फैस, दाकघर नववीन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- गो.इन्ड्रूली, कैप्स, निकटः भवतल बस स्टॉप चौकटी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- गो.इन्ड्रूली, कैप्स, पालीखाल, नुस्खारी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन संदर्भ

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार

मूल्य संपादक : ज्येष्ठ उपासन

मूल्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मूल लाइसेंस प्रबंधक : गोप्ता प्राप्ति

चलो पीपनी बनाएँ



बबली



मदन



नाजिमा



जीत



2
एक दिन बबली बहुत खुश थी।
वह सारे घर में पी-पी करती घूम रही थी।
उसने अपने लिए एक पीपनी बनाई थी।
पीपनी में से बड़े ज्ओर की आवाज निकलती थी।



3

नाजिया और मदन उसके घर आए थे।
मदन का मन पीपनी बजाने को कर रहा था।
उसने बबली से पीपनी माँगी।
बबली ने पीपनी देने से मना कर दिया।



मदन बोला कि मुझे पीपनी बनाना सिखा दो।
नाजिया भी पीपनी बनाना सीखना चाहती थी।
बबली सिखाने के लिए मान गई।
वह सबको लेकर घर के बाहर गई।



5

बबली ने सबसे आम की गुठलियाँ ढूँढ़ने के लिए कहा।
बाहर आम के बहुत सारे छोटे-छोटे पौधे दिख रहे थे।
कई पौधे गुठलियों में से निकले हुए थे।
सब आम की गुठलियाँ ढूँढ़ने में जुट गए।



बबली ने समझाया कि आम की कैसी गुठली चाहिए।
गुठली में से छोटा-सा पौधा निकला होना चाहिए।
सबसे पहले नाजिया को आम की वैसी गुठली मिली।
फिर मदन और जीत को भी गुठलियाँ मिल गईं।



7

बबली ने सबसे गुठलियाँ धोने के लिए कहा।
आँगन में एक बाल्टी में पानी रखा हुआ था।
सबने बाल्टी में डालकर अपनी गुठली साफ़ की।
सबको इकट्ठे बाल्टी में हाथ डालने में बड़ा मज़ा आया।



8

बाल्टी का पानी गंदा हो गया था।
सबने फिर नल पर अपनी गुठली धोयी।
नल की धार में गुठली का सारा कचरा निकल गया।
सबकी गुठलियाँ एकदम साफ़ हो गईं।



9

बबली ने फिर गुठली का छिलका निकालने को कहा।
उसने एक गुठली का छिलका निकाल कर दिखाया।
सबने अपनी-अपनी गुठली के छिलके निकाल लिए।
छिलकों के अंदर से एक और गुठली निकल आई।



10

सब अंदर की गुठली को ध्यान से देखने लगे।
गुठली में से आम की खुशबू आ रही थी।
हर गुठली में से छोटा-सा पौधा निकला हुआ था।
सबने धीरे-से उस पौधे को अलग किया।



11

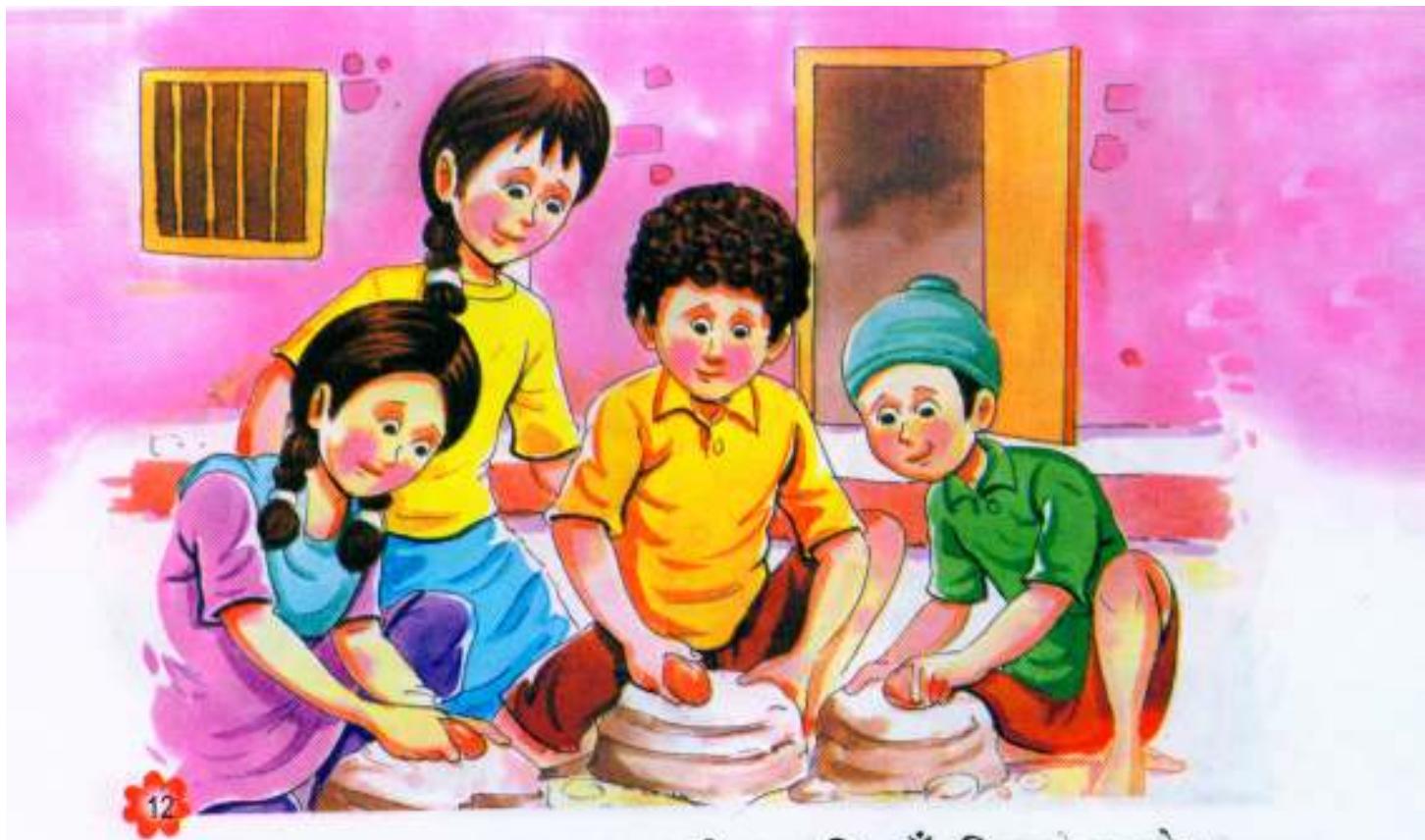
बबली ने सबसे गुठलियाँ घिसने के लिए कहा।

बबली ने समझाया कि गुठली को धीरे-से घिसना चाहिए।

गुठली तब तक घिसो जब तक दो फाँकें न दिखने लगें।

बबली ने एक गुठली घिसकर दिखाई।

सब पत्थर पर अपनी गुठलियाँ घिसने लगे।
 मदन ने अपनी गुठली बहुत धीरे घिसी।
 नाजिया ने अपनी गुठली जोर-जोर से घिसी।
 जीत ने भी गुठली घिस ली।





सबकी गुठलियों में दो फाँके दिखने लगीं।
बबली ने बताया कि पीानी बन गई थी।
उसने सबकी पीपनी हाथ में लेकर देखी।
बबली ने मदन की पीपनी थोड़ी और घिसी।



14

बबली ने पीपनी में फूँकने के लिए कहा।
मदन अपनी पीपनी पी-पी करके बजाने लगा।
वह पी-पी करते हुए भागा।
नाजिया की पीपनी तो बजी ही नहीं।

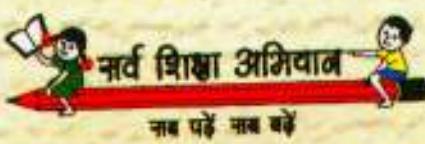


15

बबली ने नाज़िया से दूसरी गुठली लाने के लिए कहा।
नाज़िया एक और गुठली लेकर आयी।
उसने अपनी गुठली को धोया और घिसा।
इस बार नाज़िया की पीपनी बज गई।



नाज़िया ने खूब ज़ोर से पीपनी बजायी।
मदन भी ज़ोर-ज़ोर से पीपनी बजा रहा था।
जीत की पीपनी भी बज रही थी।
सबने खुश होकर अपनी-अपनी पीपनी बजायी।



2091



₹. 10.00

राष्ट्रीय शिक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पढ़ना है समझना

तबला



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

युवमुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्णय समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, गोधिका बेनन, शालिनी शर्मा, लता शर्मा, स्वाति वर्मा, मारिका वशिष्ठ,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुभल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रकान – जोश्ल गिल

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी., ऑफिटर – अर्वद गुप्ता, जैलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार झापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुभा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीयी की सम्पादन, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. क. लक्ष्मी, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजनन शर्मा, विभागाध्यक्ष, विभाग विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुरा माशुर, अध्यक्ष, रोडिंग देवलैपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक बाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफेसर फरीदा अल्मल्ला, खान विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जानिया गिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपवांशद, रोहर, हिंदू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शमनम सिन्हा, श्रीई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुम्बई; मुख्ती नुसहद उमर, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निदेशक, दिग्ंगत, बंगलुरु।

8) जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में गविय, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी नाम, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पेपर विटा अम, द्वी-28, इंडिपेंडेंस एरिया, साइट-ए, मधुगंगा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-पैट)

978-81-7450-858-4

बरखा ऋमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मार्गे देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कक्षाओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को सुनाने के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को योजामरी की छोटी-छोटी घटनाएँ, कहानियाँ जैसी रोचक संगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक क्षेत्र में संलग्नतम क्षमता मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आमानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को जापना तथा इनकानामी, भर्ती, फोटोप्रिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से प्रयोग पद्धति द्वारा उपका संप्रहण अथवा प्रसारण नवीनित है।

ए.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- पूर्वीई.आर.टी. कैफ़ा, श्री अधिकारी नाम, नई दिल्ली 110 016. फोन : 011-26562708
- 108, 109 पैटे तृतीय, हैली एम्प्लोइमेंट, हैलीकोर, बाहाबदी III इलाम, असम 781 065 फोन : 069-26725740
- पूर्वीशैक्षण उत्तर बचन, इकायन नवजीवन, अलमदारगढ़ 380 014. फोन : 079-27541446
- श्री.इल्लू.सी. विप्र, निकट: धनकुल बम बर्टी परिवारी, कोलकाता 700 014 फोन : 033-255310454
- श्री.इल्लू.सी. कम्पोनेंस, मालीपुर, गुग्गाजी 781 021. फोन : 0361-2670360

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री रमेशकुमार

पुस्तक संपादक : रवीश उमर

पुस्तक विभाग अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम जानुरा

तबला



पापा

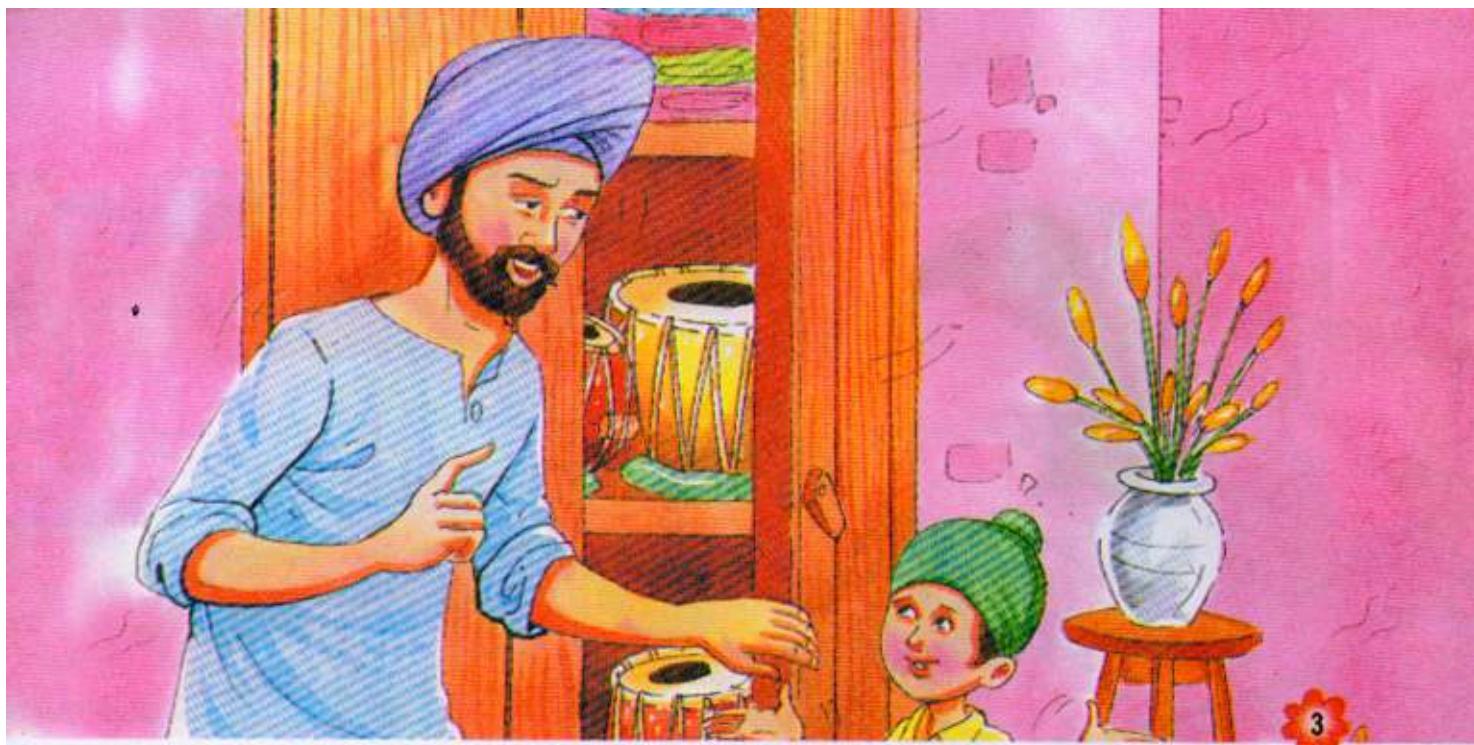
बबली

जीत



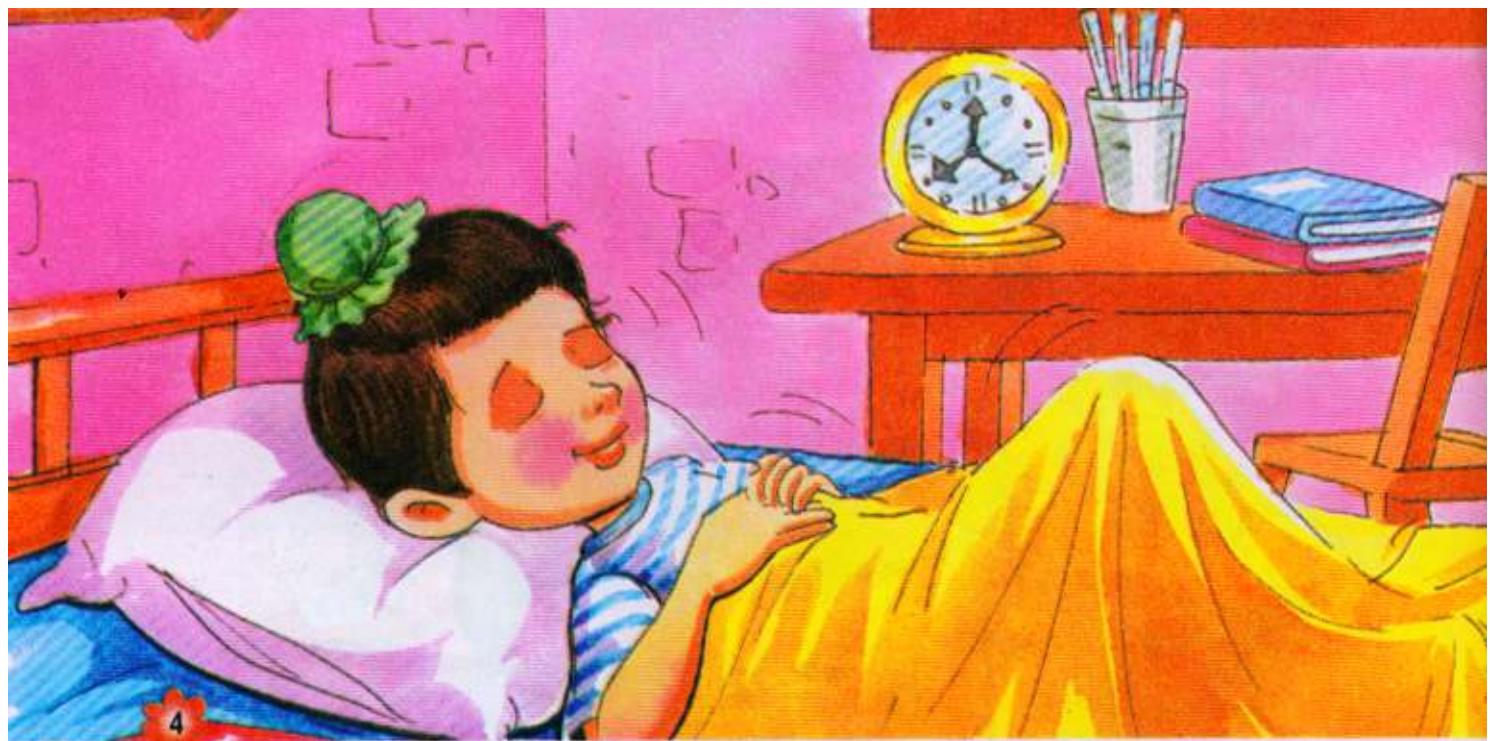
2

यह जीत के पापा हैं।
इनके पास एक तबला है।
जीत के पापा बहुत अच्छा तबला बजाते हैं।
जीत को पापा का तबला बजाना बहुत पसंद है।



3

जीत का मन भी तबला बजाने को करता है।
पापा तबले को हमेशा अलमारी में बंद रखते हैं।
पापा कहते हैं कि वह जीत को तबला बजाना सिखाएँगे।
उसके बाद जीत को तबला मिलेगा।



4

जीत के स्कूल की छुटियाँ हो गई थीं।
वह बहुत खुश था।
जीत ने सोचा कि वह रोज़ सुबह देर तक सोएगा।
उसे सुबह जल्दी उठकर नहाना भी नहीं पड़ेगा।



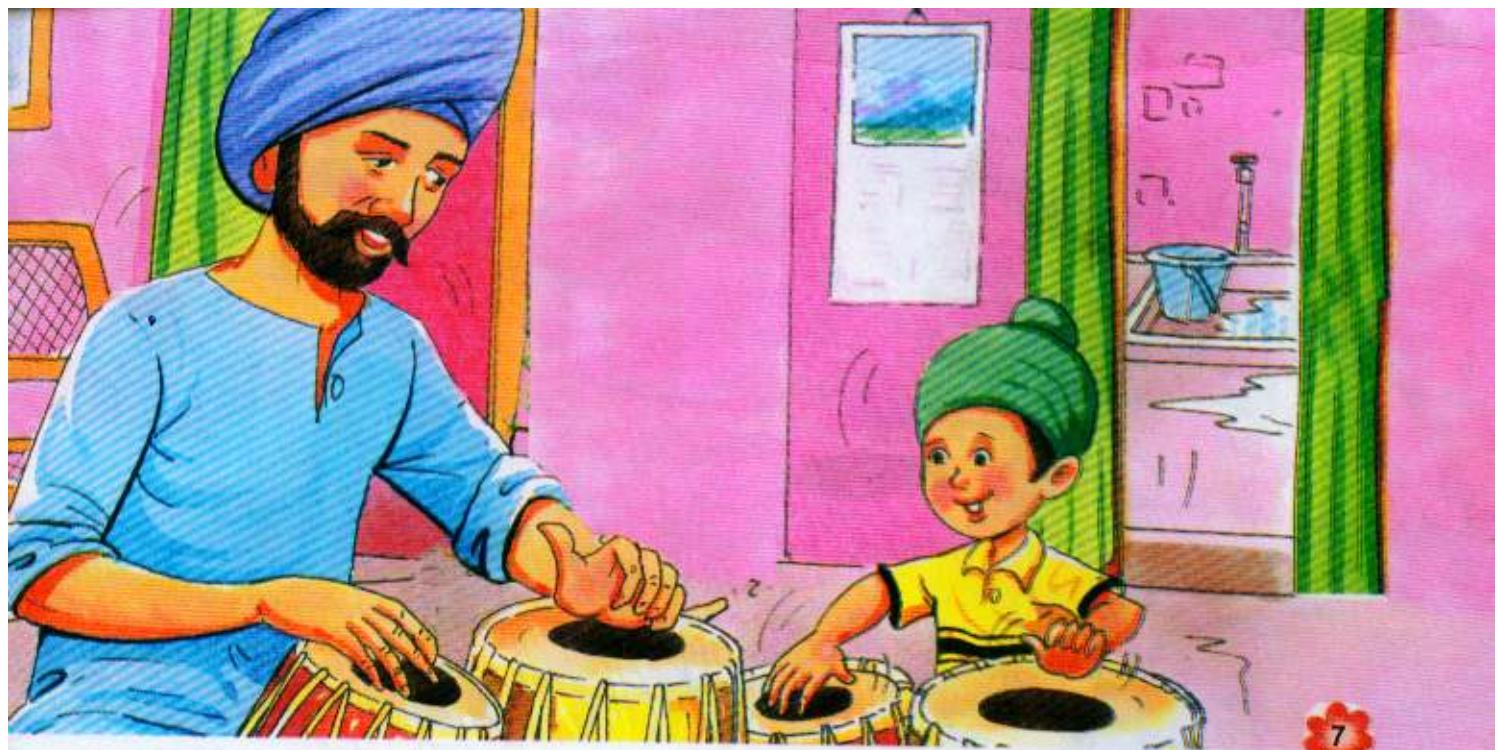
5

कुछ दिनों तक जीत खूब सोया।
वह दिनभर खेलता था।
कहानियों की किताबें पढ़ता था।
रात को जल्दी सो जाता था।



6

इन सबसे जीत का मन जल्दी ही ऊब गया।
पापा ने देखा कि जीत ऊबा हुआ लग रहा था।
पापा ने उसे अपना पुराना तबला दे दिया।
जीत तबला पाकर बहुत खुश हुआ।



पापा ने जीत को तबला सिखाना शुरू किया।
उन्होंने जीत को तबले की पहली ताल सिखाई।
जीत दिनभर यह ताल बजाता रहा।
ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना



8

जीत रात को तबला अपने पास रखकर सोया।
वह सपने में भी पहली ताल बजाता रहा।
जीत नींद में पहली ताल बोलता भी रहा।
ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना



सुबह होते ही जीत पापा के पास तबला लेकर बैठ गया।
पूरे घर में तबले की ना-घी-घी-ना गूँज रही थी।
जीत की कलाई में दर्द होने लगा।
इसके बावजूद जीत तबला बजाता रहा।



पापा ने जीत को तबले की एक और ताल सिखा दी।
धा-धिन-धा, धा-धिन-धा
जीत के मज़े आ गए।
वह रात तक बारी-बारी से दोनों तालें बजाता रहा।



सुबह होते ही जीत का मन हुआ कि तबला बजाए।
उसने रात को तबला बरामदे में छोड़ा था।
तबला बरामदे में नहीं था।
जीत गाने लगा ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना।



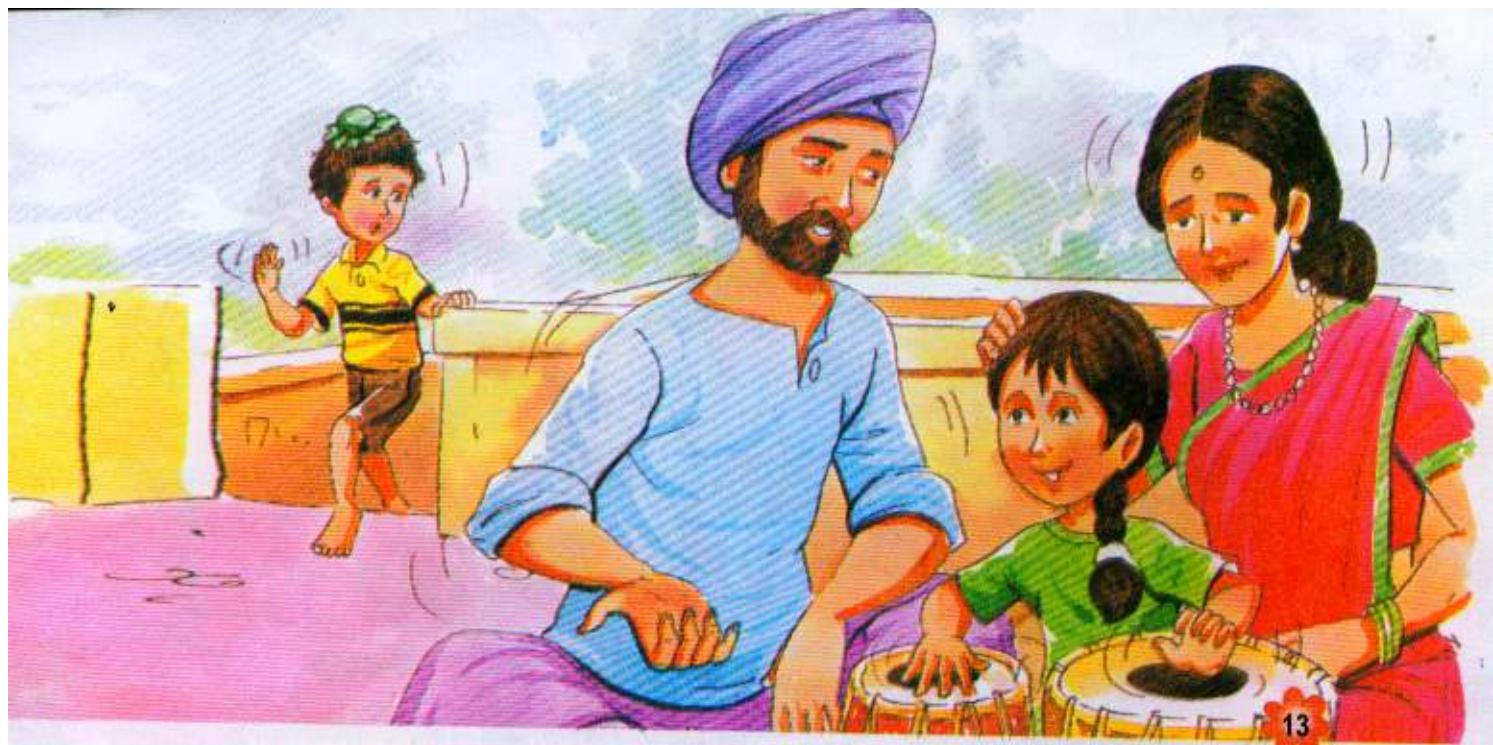
12

जीत आँगन में गया।

उसे लगा पापा ने तबला धूप दिखाने के लिए रखा होगा।

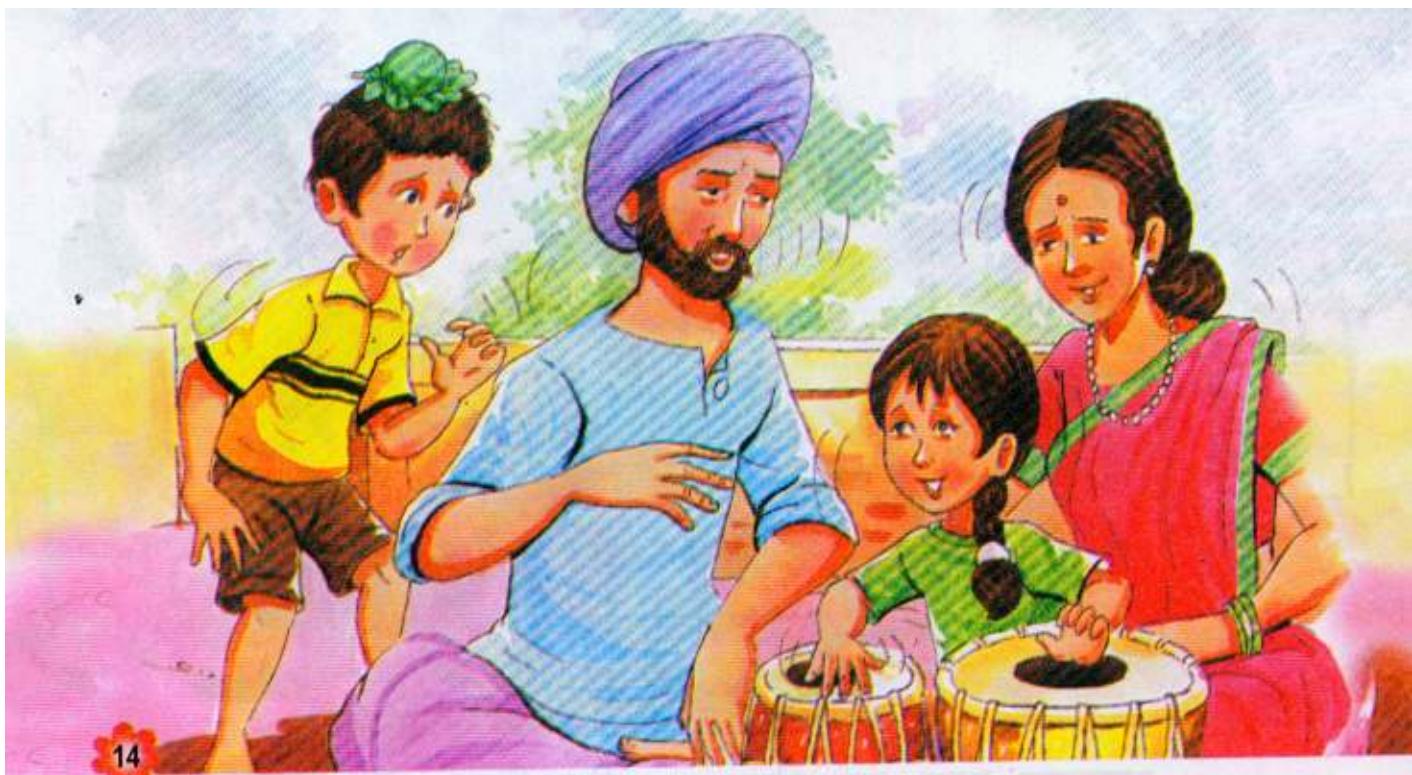
तबला आँगन में नहीं था।

तभी जीत को तबला बजने की आवाज़ सुनाई दी।



13

आवाज़ छत पर से आ रही थी।
जीत छत पर गया।
वहाँ मम्मी, पापा और बबली बैठे हुए थे।
बबली तबला बजा रही थी।



14

पापा बबली को भी पहली ताल सिखा रहे थे।
ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना।
बबली ताल गा रही थी और उसे बजा रही थी।
मम्मी भी बबली का तबला बजाना देख रही थीं।



15

जीत बबली से लड़ने लगा।
वह बोला कि तबला उसका है।
जीत ने बबली से तबला छीनने की कोशिश की।
बबली बोली कि तबला उसका भी है।



16

पापा ने दोनों की लड़ाई रोकी।
पापा बोले कि तबला दोनों के लिए है।
बबली सुबह तबला बजाना सीखेगी।
जीत शाम को तबला बजाना सीखेगा।

स्तर 1

स्तर 2

स्तर 3

स्तर 4



2092



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

मिली की साइकिल



पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 फौष्ट 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण भविति

केचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका बनन, शालिनी शर्मा, लता खाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लिपिका गुप्ता

चित्रांकन – जोश्ल गिल

सम्ज्ञा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी., ऑफिसर – अर्वन गुप्ता, जीलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार झाप्तन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निर्देशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वंशुष्मा कामथ, संयुक्त निर्देशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणिकी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर ए. के. क. विश्वास, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रमेशन शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माशुर, अभ्यक्ष, रोडिंग डेवलपमेंट मैल, राण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय सभीक्षा भविति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, गहाना गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, लखनऊ; प्रोफेसर फारीदा अल्मोहदा, लखनऊ, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया गिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वांशु, रोडर, हिंदू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ.शब्दनग शिवा, सीई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुमर्दः सुश्री तुलहत छहन, निर्देशक, नेशनल कूक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निर्देशक, दिग्गज, बपपुदा।

80) जी.एम.एम. पेपर पर मुद्रित

उकाशन विभाग में मध्यव, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथे पेपर प्रिंटिंग ब्रैम, लै-28, इंडिप्रिंफल एंटर्प्रायज, साईट-ए, मधुगंगा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-ये२)

978-81-7450-858-4

बरखा ऋमिक पुस्तकमाला पहली ओर दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कक्षाओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को सुशील के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को योजनाएँ की छोटी-छोटी घटनाएँ, कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरक शब्द में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सम्बोधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्णअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को जापना तथा इलेक्ट्रॉनिकों, फ़ाइलों, फोटोग्राफिलिप्स, रिकार्डिंग अलग किसी अन्य भित्ति से उपलब्ध गण्डीय प्रकाशन द्वारा उपका संग्रहण अनुमति प्राप्तरण लिजित है।

ए.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- प्र.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016. फोन : 011-26562700
- 108, 109 एंड ट्रैक, हैली एम्प्लोयें, हॉस्टेक्स, ब्राह्मणी III एंड, लखनऊ 220 003 फोन : 052-26725740
- नवलपुर नुस्त बघन, लखनऊ नवबीबन, लखमराह 380 014. फोन : 052-27541446
- श्री.इम्प्रू.सी. विल्स, निकट: भनकल बघ बैर्ड पर्सनल, लखनऊ 220 014 फोन : 052-255310434
- श्री.इम्प्रू.सी. बैम्पोर्स, निकट: नुस्तामी 781 021 फोन : 0361-2673360

प्रकाशन महायोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पौ. लक्ष्मीनाथ
पुस्तक संस्करक : रवीश उपलन

पुस्तक नामानन अधिकारी : शिव कुमार
मूल्य व्यापार अधिकारी : गीतम नानूता

मिली की साझकिल



मिली की मम्मी



तोसिया

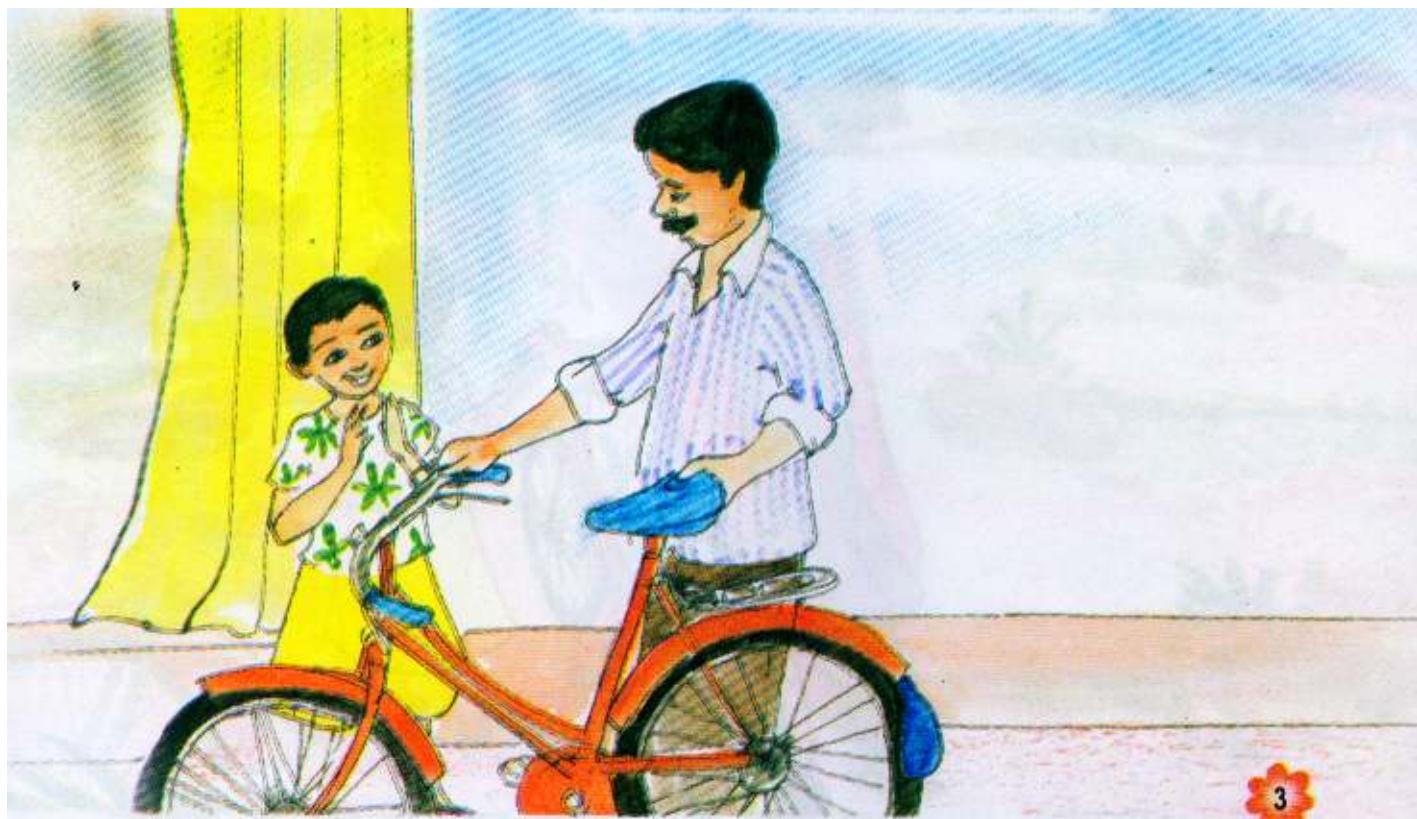


मिली



2

एक दिन मिली खेल रही थी।
उसने कुछ बच्चों को साइकिल चलाते हुए देखा।
मिली का मन भी साइकिल चलाने को हुआ।
मिली ने मम्मी-पापा से एक साइकिल माँगी।



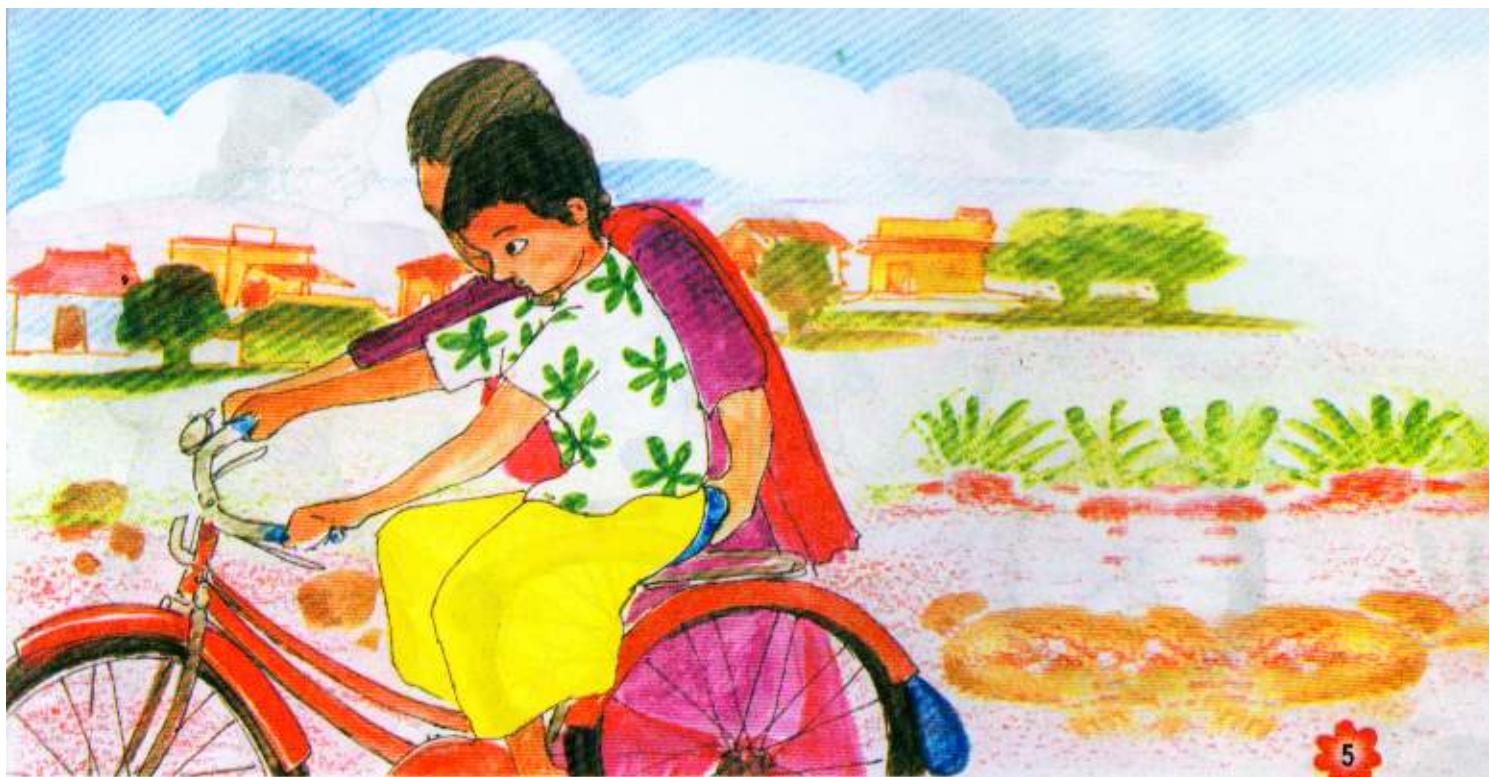
3

अगले दिन पापा ने मिली को एक साइकिल ला दी।
साइकिल थोड़ी पुरानी थी पर अच्छी हालत में थी।
मिली उसे देखकर बहुत खुश हुई।
लाल रंग की साइकिल पर नीली गद्दी थी।



4

मिली ने मम्मी से साइकिल सिखाने के लिए कहा।
मम्मी मिली को साइकिल चलाना सिखाने लगीं।
वे दोनों सुबह जल्दी उठकर एक खुले मैदान में गईं।
मिली ने साइकिल सीखना शुरू कर दिया।



5

मम्मी ने मिली को साइकिल की गद्दी पर बैठाया।
मिली ने साइकिल का हैंडल दोनों तरफ़ से पकड़ लिया।
मिली ने धीरे-धीरे पैडल मारे।
मम्मी हैंडल और गद्दी से साइकिल को पकड़े रहीं।



थोड़ी देर में मम्मी ने साइकिल छोड़ दी।
मिली साइकिल के भार को सँभाल नहीं पायी।
वह साइकिल से गिर गई।
उसके हाथ में थोड़ी-सी चोट लग गई।



मिली थोड़ी देर तक रोई फिर साइकिल चलाने लगी।
मिली दोबारा साइकिल पर बैठी।
मम्मी ने साइकिल सँभाली।
मिली धीरे-धीरे साइकिल चलाती रही।



अगले दिन दोनों फिर सुबह मैदान में पहुँच गई।
आज मम्मी ने साइकिल पीछे से पकड़ी।
मिली की साइकिल चारों तरफ डगमगा रही थी।
मिली ऐसे ही काफ़ी देर तक साइकिल चलाती रही।



9

उस दिन मिली ने शाम को भी साइकिल चलाना सीखा।
मिली अकेले ही साइकिल को हाथ से खींचती रही।
उसने साइकिल पर चढ़ने की काफी कोशिश की।
मिली अकेले साइकिल पर चढ़ नहीं पाई।



10

अगले दिन सुबह मिली की साइकिल डगमगाई नहीं।
वह मम्मी की मदद से साइकिल पर चढ़ गई।
मम्मी साइकिल के पीछे-पीछे चल रही थीं।
मिली साइकिल को धीरे-धीरे चलाती रही।



11

थोड़ी देर बाद मिली साइकिल को दौड़ाने लगी।
मम्मी उसके पीछे-पीछे भागीं।
थोड़ी देर बाद मम्मी ने साइकिल छोड़ दी।
कुछ दूर जाकर मिली साइकिल से गिर गई।



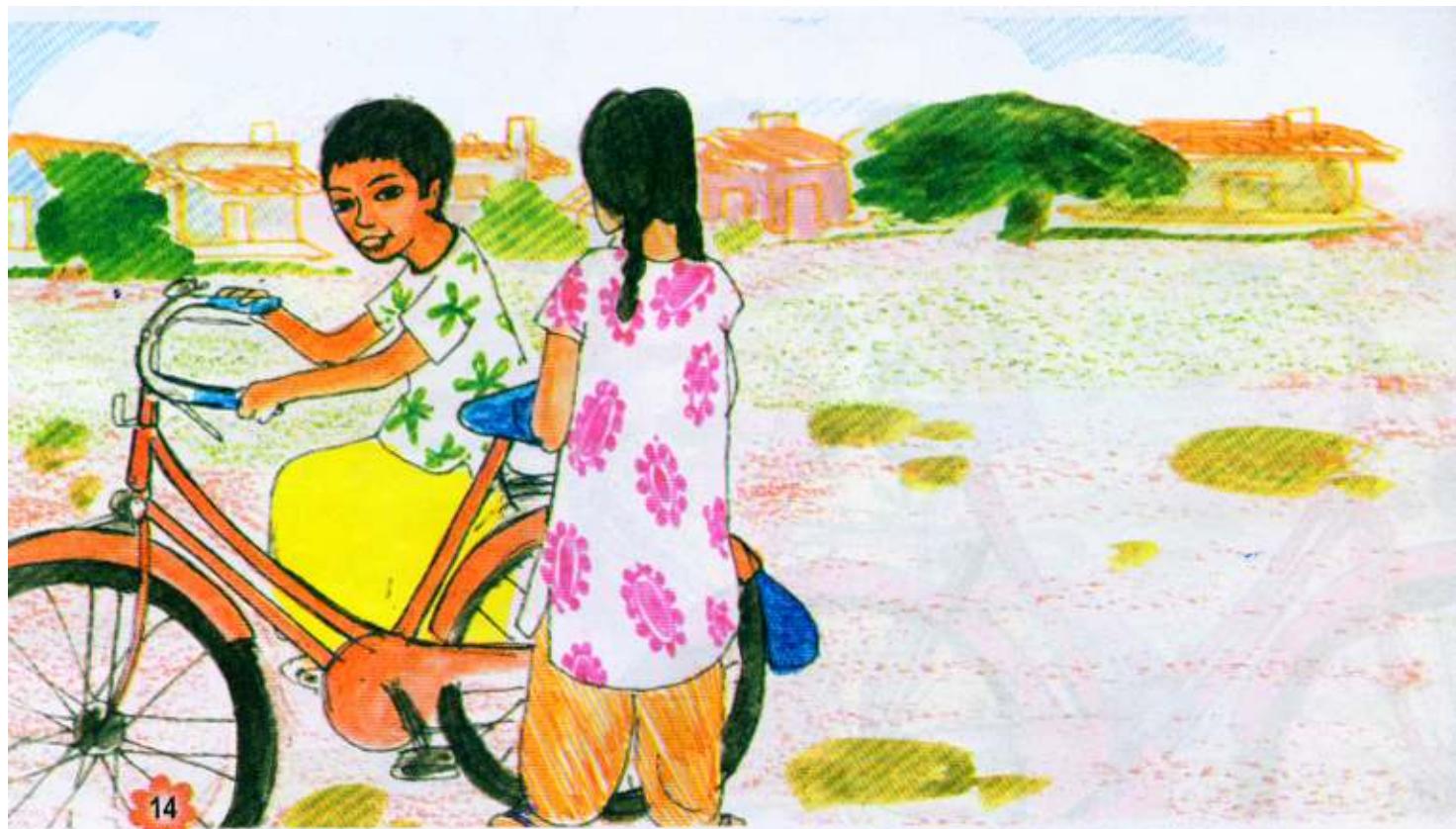
12

मिली को साइकिल चलाना आ गया था।
मिली साइकिल पर अपने-आप चढ़ नहीं पाती थी।
मिली अपने-आप साइकिल से उतर भी नहीं पाती थी।
मिली को साइकिल से चढ़ना-उतरना सीखना था।



13

मिली दिनभर साइकिल के बारे में सोचती रहती थी।
उसके हाथ हैंडल की तरह चलते रहते थे।
वह रात को भी सपने में साइकिल चलाती थी।
सुबह होते ही साइकिल लेकर निकल पड़ती थी।



14

मिली सीधी-सीधी साइकिल चला लेती थी।
उसे साइकिल से उतरने-चढ़ने में मुश्किल होती थी।
वह साइकिल से उतरते समय गिर जाती थी।
मिली को साइकिल ऊँची लगती थी।



15

साइकिल पर बैठकर मिली के पैर नीचे नहीं टिकते थे।
मिली कई बार गिर चुकी थी।
इसके बावजूद वह खुश रहती थी।
उसने तोसिया को यह बात बताई।



16

तोसिया ने उसे एक बड़ा-सा पत्थर दिखाया।
मिली पत्थर पर पैर रखकर साइकिल पर चढ़ गई।
अब तो मिली के मज़े आ गए।
दोनों स्कूल भी साइकिल से जाने लगीं।

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4



2093



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

रु. 10.00

पका आम

पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गद्वीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 107 NSV

पुस्तकमाला निर्याण समिति

कृचन मंटी, कृष्ण कुमार, ज्योति मंटी, दुलदुल विश्वास, मुकेश महलवीय, गणिता मंनन, शालिनी शर्मा, लता छाण्डे, स्वाति बनो, मारिका विश्वास, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

प्रिक्षिकन - जोएल गिल

सम्बन्ध तथा आवरण - विष्णु याधव

डी.टी.पी., ऑफिसर - अर्वन गुप्ता, बैलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार झापण

ग्रोक्सर कृष्ण कुमार, निदेशक, गद्वीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोक्सर वसुभा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणिकी संस्थान, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोक्सर के. क. विश्वास, विभागाध्यक्ष, प्रार्थिक लिपा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोक्सर रामजन्म सर्प, विभागाध्यक्ष, लाला विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; ग्रोक्सर मंजुर याद्वा, अध्यक्ष, रोडिंग देवलेपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय सभीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वर्धा; ग्रोक्सर फॉरेंट, अचुलना, खन, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्यक्ष विभाग, जानिया गिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वोग्रे, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शब्दनग सिन्हा, सीई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुर्दः, सुशी नुसाहर रहवा, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निदेशक, विंगेत, जयपुर।

8) जी.एस.एस. पेपर पर भूमिति

प्रकाशन विभाग में गविष्य, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अध्यक्ष गांधी नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज गिरिधा डेस, लो-28, इडाप्पुरल लॉन्ड, सहृष्टि-ए. मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-मेर)

978-81-7450-858-4

बरखा ऋमिक पुस्तकमाला पहली ओर दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के माध्य' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कक्षावस्थाओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करती। बच्चों को योगमरी की छोटी-छोटी छटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक सगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरक श्रेणी में जलानामक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी पाप को जापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मालिनी, फोटोप्रिलिमिप, रिकार्डिंग अथवा किसी तत्व विधि से पूँः प्राप्त गटापति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण नवाचित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के जाऊरील्य

- * एन.सी.ई.आर.टी., नोएम, श्री अधिकृत गांधी, नई दिल्ली 110 016. फोन : 011-26562703
- * 108, 109 फॉरेंट रोड, हैली एस्टेट्स, हैलीकोर, बालाकोट 110 005. फोन : 011-26725746
- * एन.सी.ई.आर.टी. नुसाहर रहवा, इकाया नवजीवन, अमरदेवल 180 014. फोन : 079-27541446
- * श्री.इलाम्पूरी, विष्णु, निकट: धनकुल बस स्टॉप गिरहटी, कोलकाता 700 014. फोन : 033-255310454
- * श्री.इलाम्पूरी, कर्मलेन, मालीपुर, नुसाहर 781 031. फोन : 0361-2670360

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार

पुस्तक संपादक :

पुस्तक जागरूक अधिकारी : शिव कुमार

मूल्य व्यापार अधिकारी : गीता नारायण

पका आम

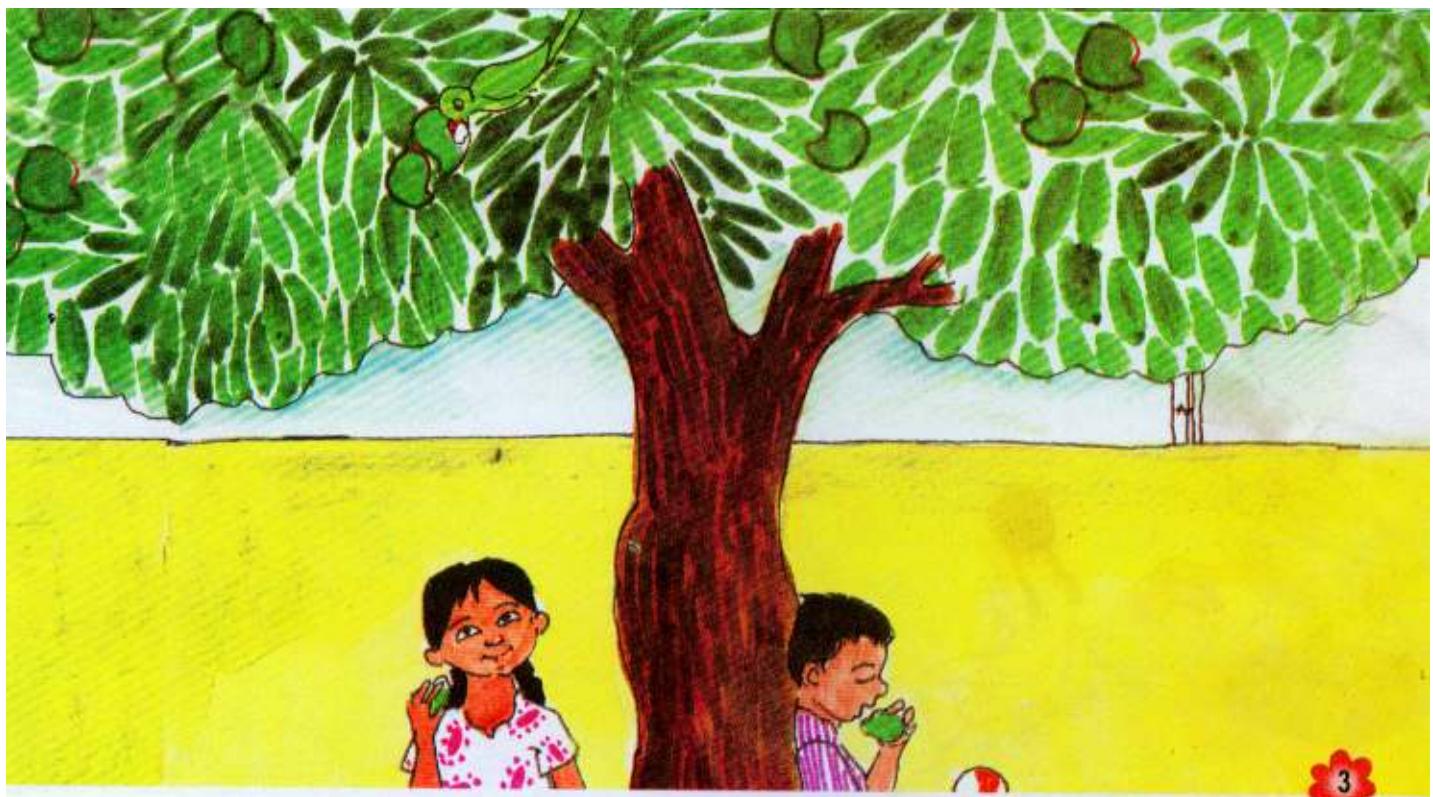


तोसिया

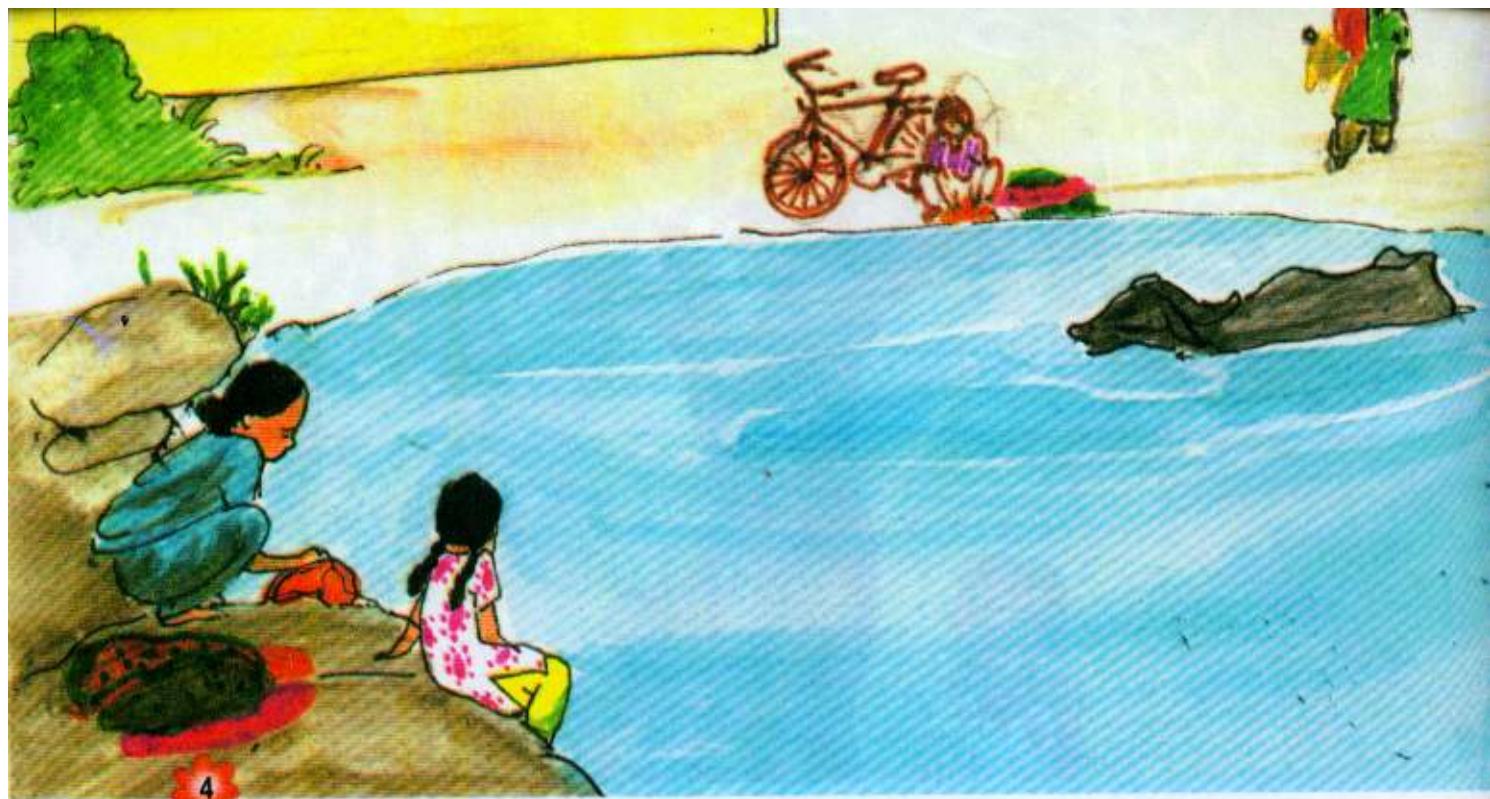


2

तोसिया के स्कूल में एक आम का पेड़ था।
उस पर बहुत आम लगते थे।
स्कूल के सभी बच्चे उसके आम खाते थे।
कभी-कभी आम के पेड़ पर बंदर भी आते थे।

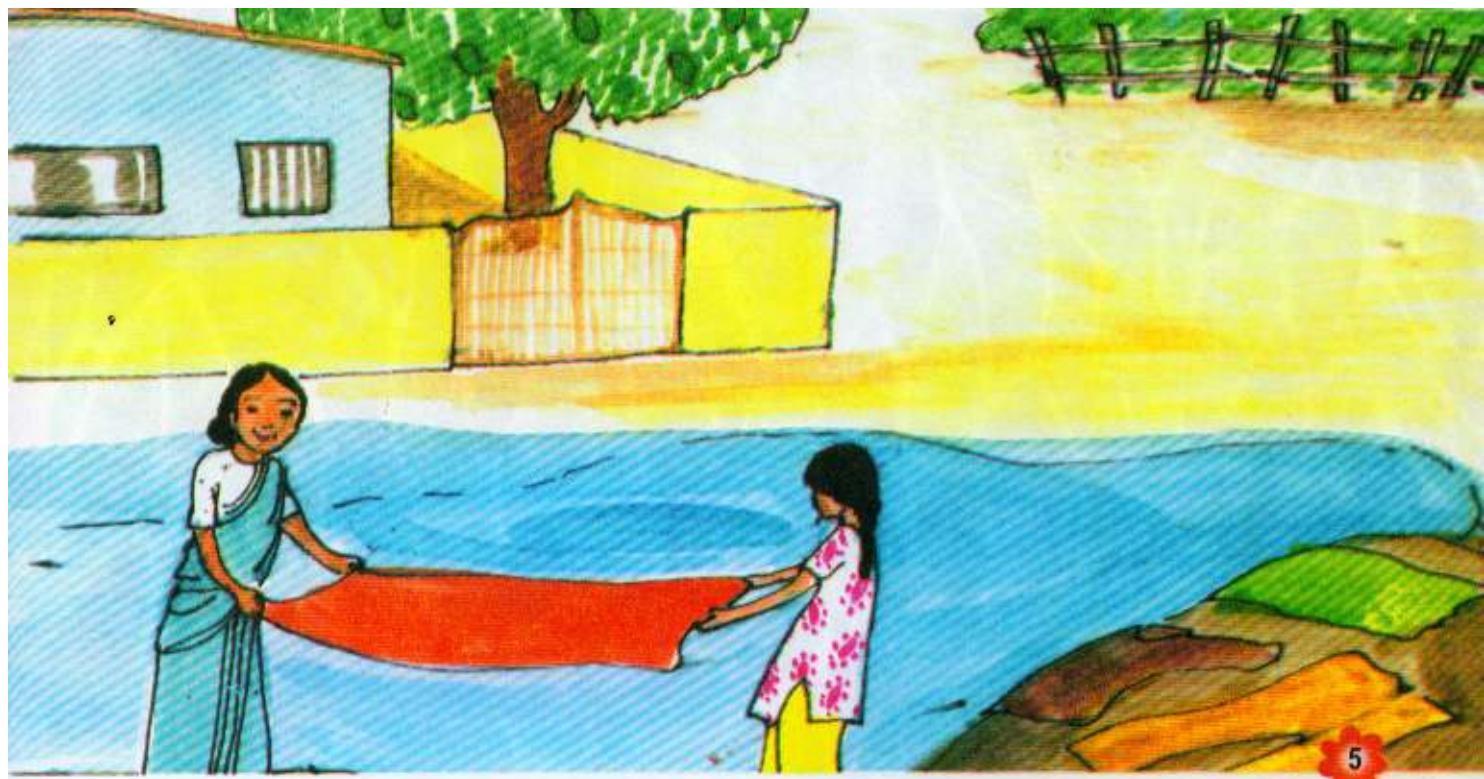


उस पेड़ के आम कभी पक ही नहीं पाते थे।
बच्चे कच्चे आम ही खा जाते थे।
तोते भी हरे आम कुतरते रहते थे।
तोसिया भी कच्चे आम पर नमक लगाकर खाती थी।



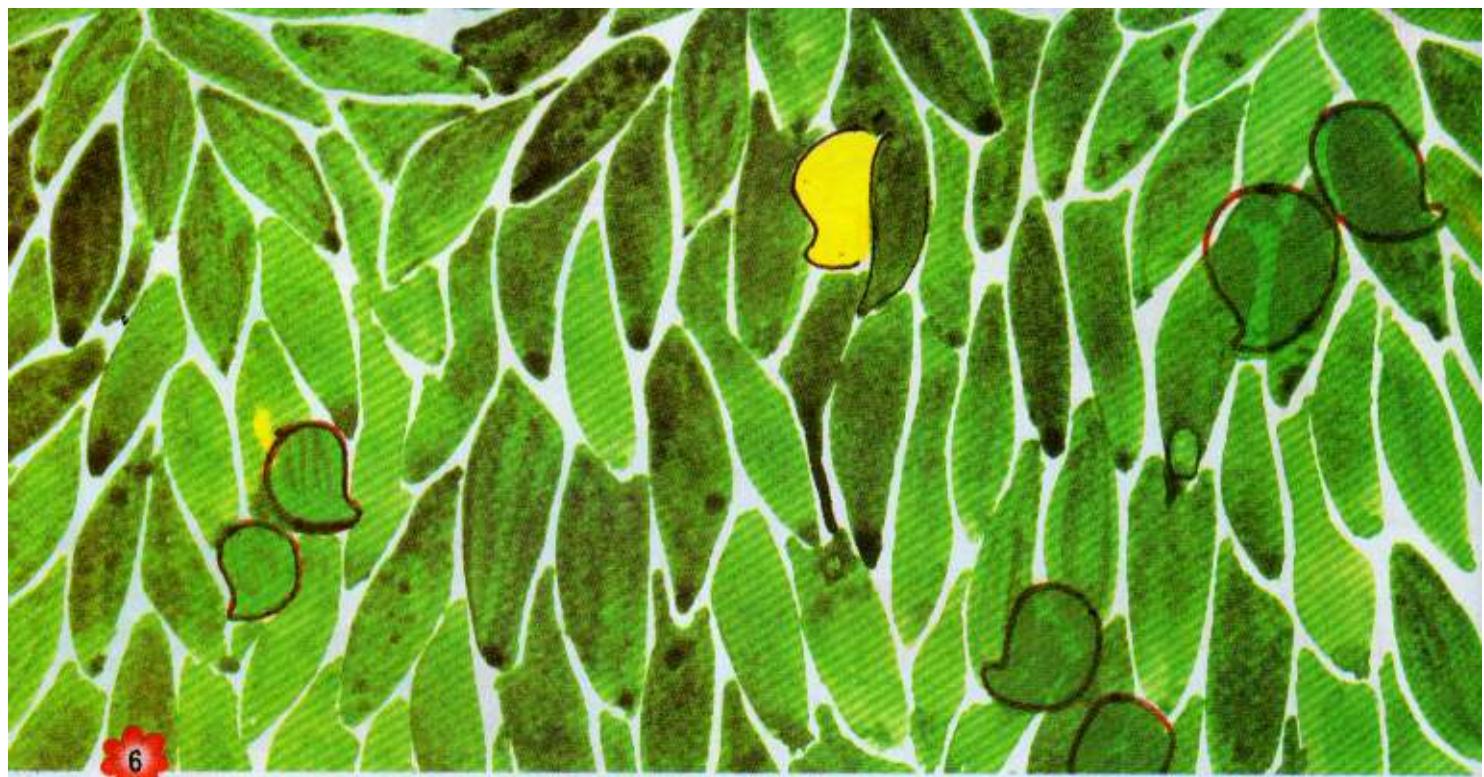
4

स्कूल के पीछे एक छोटा-सा तालाब था।
तालाब के किनारे एक बड़ी-सी चट्टान थी।
तोसिया की माँ उस चट्टान पर कपड़े धोती थी।
तोसिया भी अपनी माँ के साथ वहाँ आती थी।



5

एक दिन तोसिया माँ के साथ तालाब पर आई।
तोसिया ने माँ के साथ कपड़े धुलवाए।
उसने माँ के साथ कपड़े चट्टान पर सूखने के लिए डाले।
कपड़े सुखाते समय उसकी नज़र आम के पेड़ पर गई।



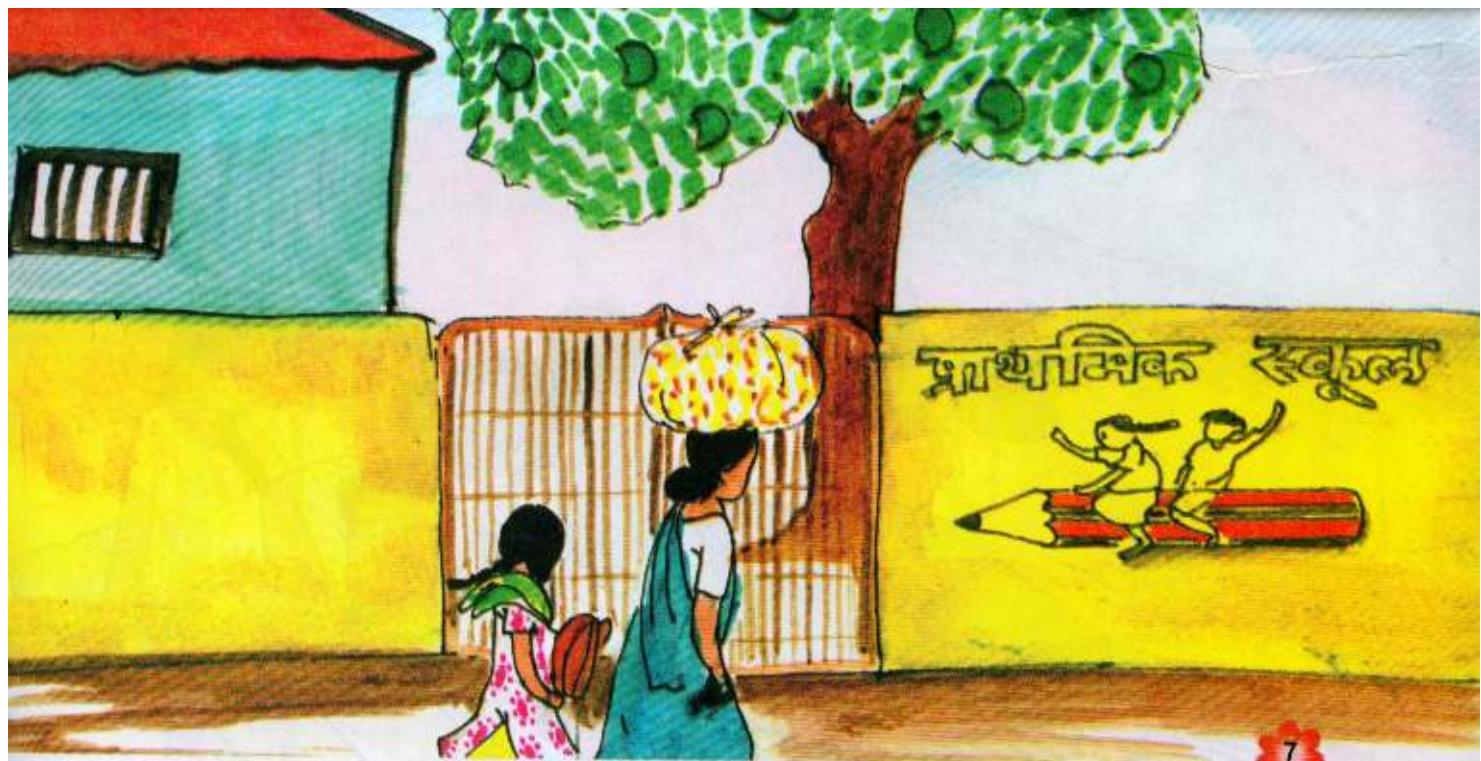
6

तोसिया ने देखा सबसे ऊँची डाली पर एक आम था।

वह आम बिल्कुल पका हुआ था।

आम पत्तों के बीच में छुप गया था।

उसे न तोतों ने देखा था न बच्चों ने।



7

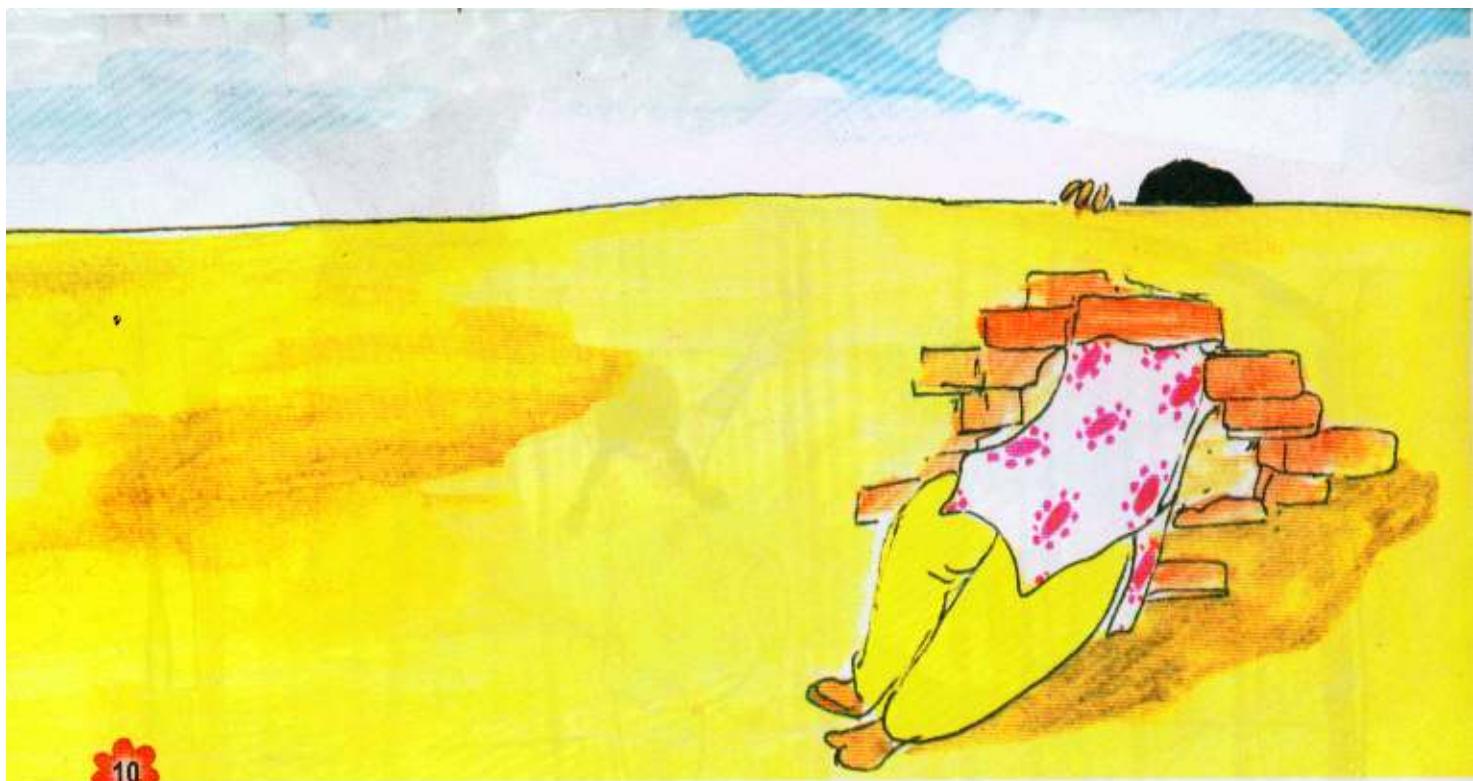
उस दिन तेज़ धूप थी इसलिए कपड़े जल्दी सूख गए।
तोसिया ने माँ के साथ कपड़े उठवाए।
फिर वे दोनों घर की तरफ़ चल पड़ीं।
तोसिया चलते-चलते आम को ही देख रही थी।



घर में सबने दोपहर का खाना खाया।
खाना खाकर सब सो गए।
तोसिया चुपचाप घर से निकल कर बाहर आ गई।
उसने चप्पल नहीं पहनी जिससे कि आवाज़ न आए।



तोसिया नंगे पैर स्कूल पहुँची।
तोसिया ने स्कूल के फ़ाटक पर चढ़ने की कोशिश की।
फ़ाटक का लोहा बहुत गरम हो गया था।
तोसिया फ़ाटक पर चढ़ नहीं पाई।



10

तोसिया स्कूल की चारदीवारी के साथ-साथ चली।
वह उस कोने में पहुँची जहाँ कुछ ईंटें निकली हुई थीं।
तोसिया उन ईंटों के सहारे दीवार पर चढ़ी।
वह आसानी से दीवार के उस पार कूद गई।



11

स्कूल में सन्नाटा था।
सारे कमरों पर ताला लगा हुआ था। तोसिया भाग कर आम के पेड़ के पास पहुँची।
उसे पेड़ पर चढ़ना अच्छी तरह आता था।



12

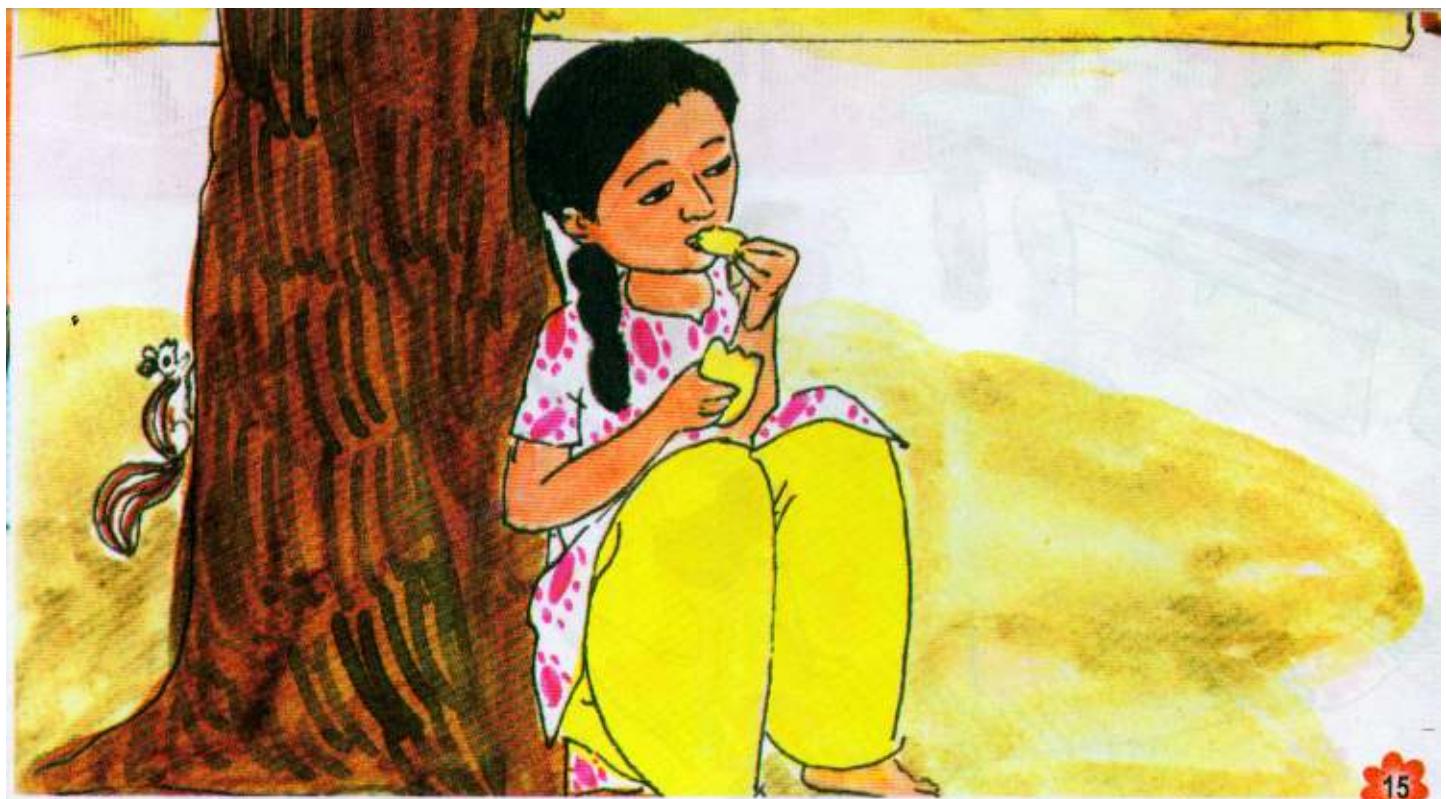
तोसिया तने को पकड़ कर ऊपर चढ़ी।
वह एक डाल से दूसरी डाल पर चढ़ रही थी।
तोसिया डाल पर अपने पैर जमा कर रखती थी।
आखिर तोसिया सबसे ऊँची डाल पर पहुँच ही गई।



पका हुआ आम तोसिया की आँखों के सामने था।
आम काफ़ी बड़ा और पीला था।
तोसिया ने चारों तरफ़ देखा।
तालाब के किनारे कोई भी नहीं था।

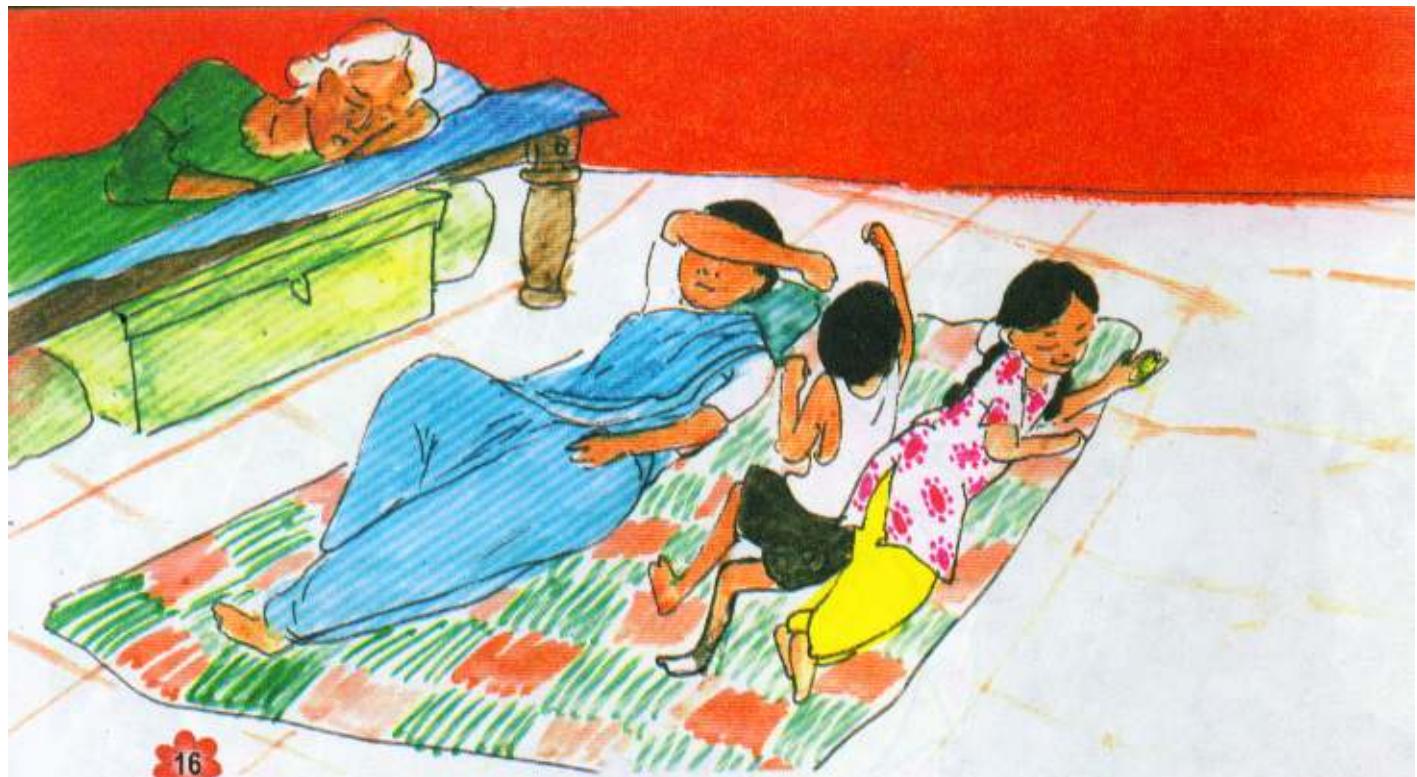


तोसिया ने हाथ बढ़ाकर आम तोड़ लिया।
नाक के पास लाकर उसे सूँघा।
तोसिया थोड़ी देर तक डाल पर ही बैठी रही।
उसे आम की खुशबू अच्छी लग रही थी।



15

तोसिया सावधानी से पेड़ से नीचे उतरी।
वह पेड़ की छाया में बैठ गई।
तोसिया ने आराम से चूस-चूसकर आम खाया।
उसने आम की गुठली भी चूसी।



16

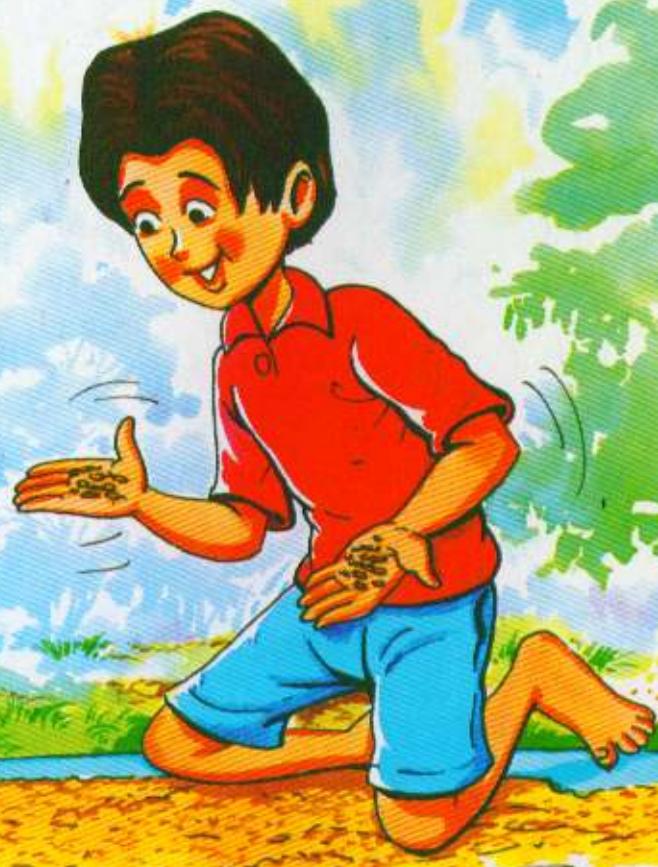
तोसिया स्कूल की दीवार फाँदकर बाहर आ गई।
वह दौड़कर घर पहुँची।
घर में सब सो रहे थे।
तोसिया भी हाथ धोकर सो गई।





पढ़ना है समझना

गोहृ



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्णय समिति

कैचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति मंती, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका भेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति बर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लिपिका गुप्ता

चित्रांकन – जोश्ल गिल

सम्बन्ध आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी., ऑफिसर – अर्वन गुप्ता, जीलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार झापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निर्देशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुभा कामथ, संयुक्त निर्देशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणिकी सम्पादन, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. क. लक्ष्मिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर गमजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुरा माशुर, अध्यक्ष, रोडिंग देवलैपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय सभीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कृतपति, गहाना याधी, अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू विश्वविद्यालय, वर्षा; प्रोफेसर फारीदा, अनुलला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया गिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अफूर्जाह, रोहर, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शब्दनगर मिशन, सीईओ, आईएल, एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री तुलहत उसन, निर्देशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निर्देशक, दिगंतर, कपपुष्ट।

80) जी.एम.एन. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री ज्योतिन्द्र मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथ्य पंक्ति गिट्टा इम, फ्लॉ-28, इन्डिपेंसेंस एंड्रिया, साइट-ए-मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-पैट)

978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली ओर दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के माध्य' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कक्षावस्थाओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को सुनाने के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को योजनाएँ की छोटी-छोटी घटनाएँ, कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चाएँ के हरके क्षेत्र में संलग्नात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक 'बरखा' को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आमानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशन को पूर्णअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को जापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, फोटोप्रिलिमि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से उपयोग प्रदृष्टि द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण नवीत है।

एग्जीई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एग्जीई.आर.टी. कैम्प, श्री अर्पित नारा, नई दिल्ली 110 016. फोन : 011-26562700
- 108, 109 पट्टे रोड, हैली एम्प्लोइ, हैलीकोर, बागेश्वर III इलाज, नई दिल्ली 110 065 फोन : 099-26725740
- एग्जीई.आर.टी. कैम्प, विकास पाल्स, अहमदाबाद 380 014. फोन : 079-27541446
- श्री.इन्द्रजीत, निकट धनकुल बम स्ट्रीट पंजाबी, कोलकाता 700 014 फोन : 033-25510454
- श्री.इन्द्रजीत, कॉम्पोज्म. मर्लीन, गुरुग्राम 131 021 फोन : 0161-2673880

प्रकाशन महादेव

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पौ. राजाकुमार
पुस्तक संपादक : रवीश उमल

पुस्तक विभाग अधिकारी : शिव कुमार
मूल्य व्यापार अधिकारी : गौतम कानूनी

गेहूँ



जमाल



मम्मी



पापा



2

एक दिन जमाल की मम्मी ने गेहूँ धोए।

गेहूँ खूब सारे थे।

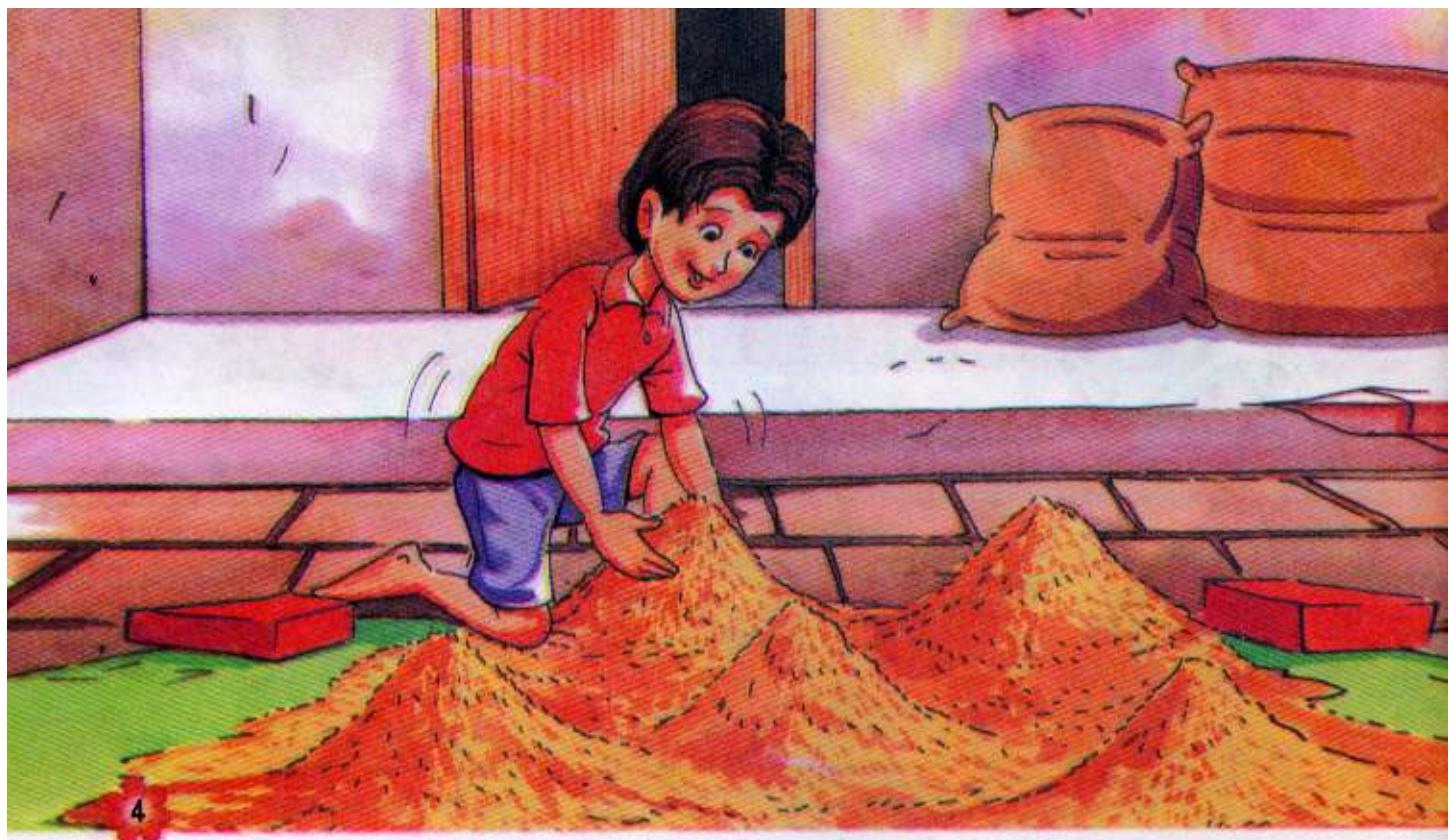
गेहूँ पानी में धुलकर खूब चमक रहे थे।

जमाल ने मम्मी के साथ गेहूँ धुलवाए।



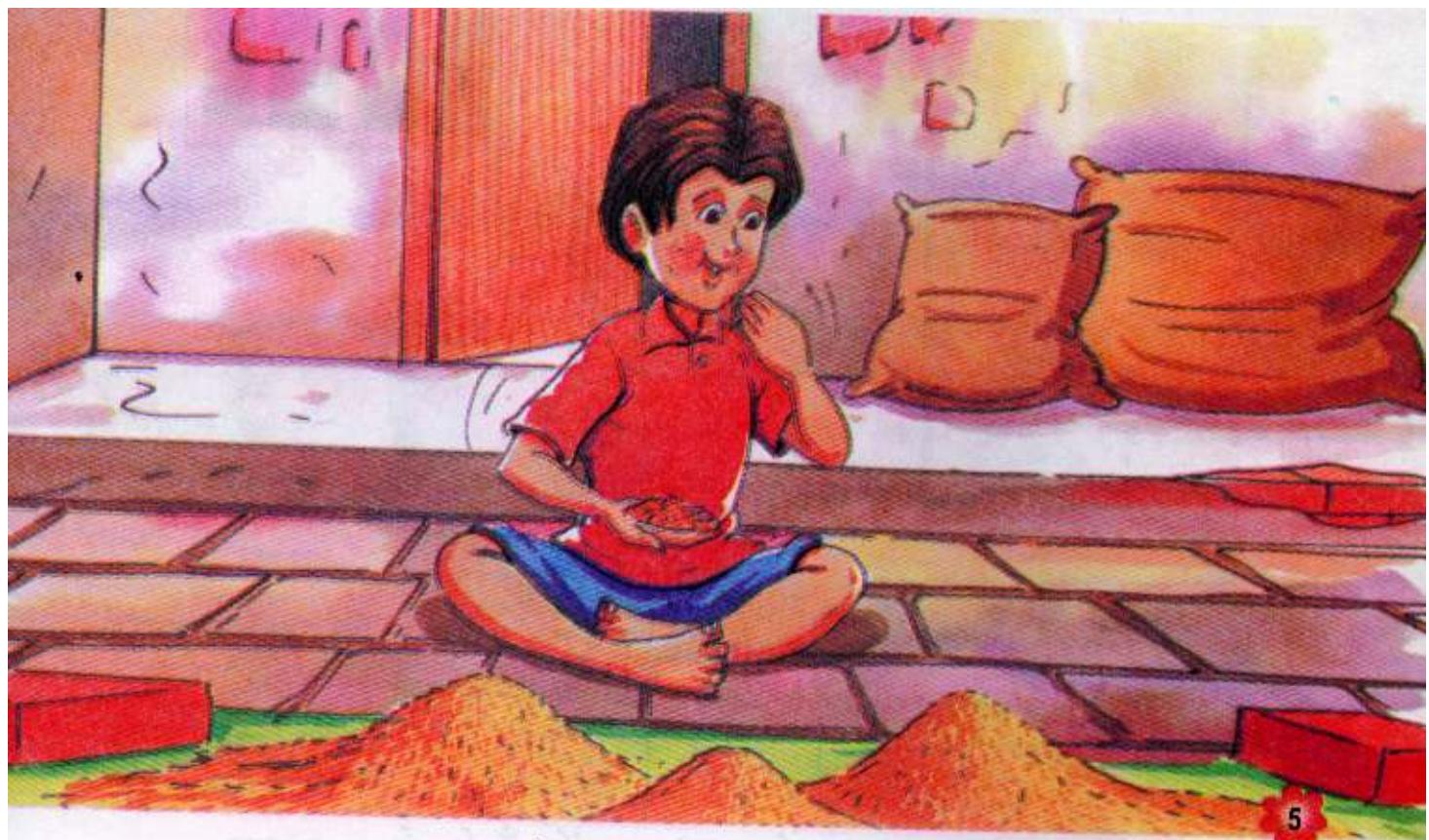
3

मम्मी ने गेहूँ आँगन में सुखा दिए।
उन्होंने जमीन पर दो चादरें बिछाई।
दोनों चादरों पर गेहूँ फैला दिए।
जमाल ने भी मम्मी के साथ गेहूँ फैलवाए।



4

मम्मी थककर सो गई।
जमाल के तो मज़े आ गए।
उसने गीले गेहूँ के दानों से पहाड़ बनाए।
एक चादर पर गेहूँ के पाँच पहाड़ बने।



5

जमाल ने कुछ दाने मुँह में डाले।

उसने गेहूँ के गीले दाने चबाए।

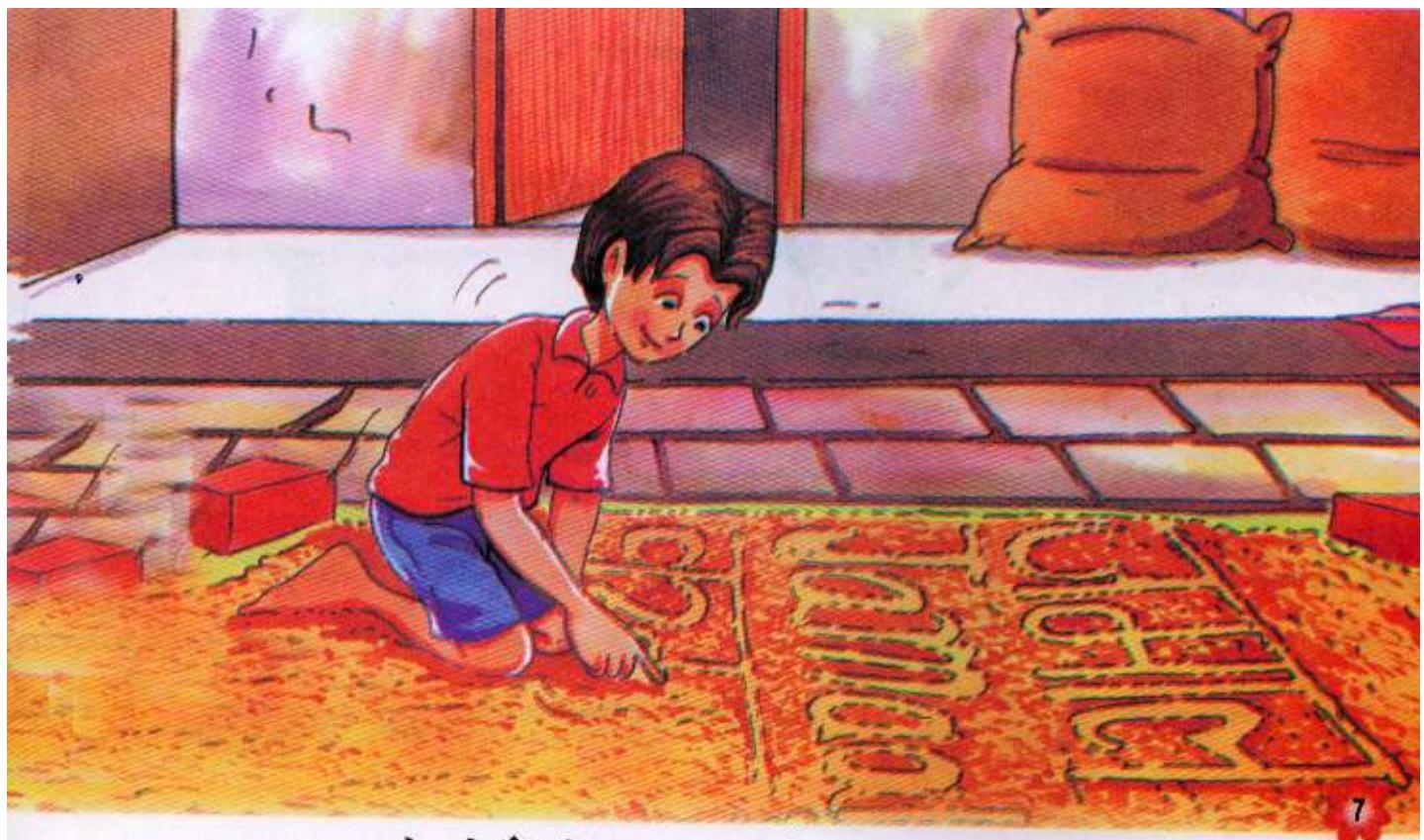
खूब चबाए।

खूब चबाए।



6

जमाल बिजूका भी बना।
वह दोनों हाथ फैलाकर खड़ा हो गया।
तीन चिड़ियाँ गेहूँ के दाने खाने के लिए आईं।
जमाल ने चिड़ियों को देखा पर भगाया नहीं।



जमाल ने गेहूँ में . . . से अपना नाम भी लिखा।
उसने पहले अपना नाम हिंदी में लिखा।
फिर जमाल ने अपना नाम अँग्रेज़ी में लिखा।
उसने अपने मम्मी-पापा का नाम भी लिखा।



8

जमाल ने गेहूँ के कुछ दाने हथेलियों में रगड़े।
खूब रगड़े।
खूब रगड़े।
उसकी हथेलियाँ लाल हो गईं।



9

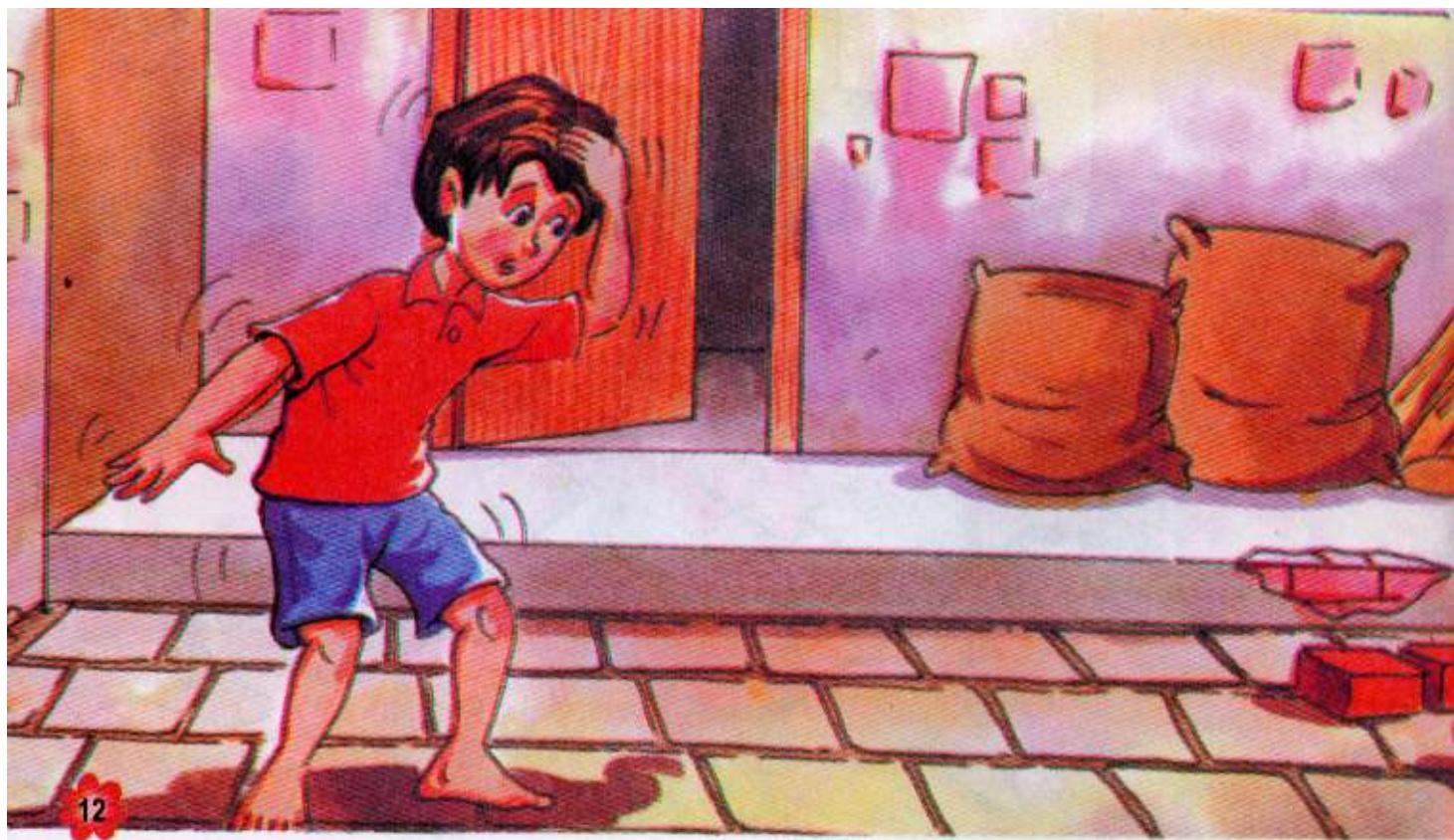
जमाल थक कर वहीं लेट गया।
वह लेटकर भी गेहूँ पर उँगली फेरता रहा।
जमाल को गेहूँ में उँगली फेरते-फेरते नींद आ गई।
वह सो गया।



मम्मी ने जमाल को गोद में उठाया।
उसे ले जाकर बिस्तर पर सुला दिया।
जमाल गहरी नींद में था।
वह सोता ही रहा।



जमाल की आँख खुली तो वह बिस्तर पर था।
उसने उठ कर आस-पास गेहूँ ढँढ़े।
जमाल तो कमरे के अंदर था।
गेहूँ आँगन में थे।



12

जमाल भागकर आँगन में गया।

वह गेहूँ ढूँढ़ने लगा।

पर गेहूँ तो वहाँ थे ही नहीं।

दोनों चादरें भी गायब थीं।



जमाल मम्मी के पास गया।

मम्मी गेहूँ बीन रही थीं।

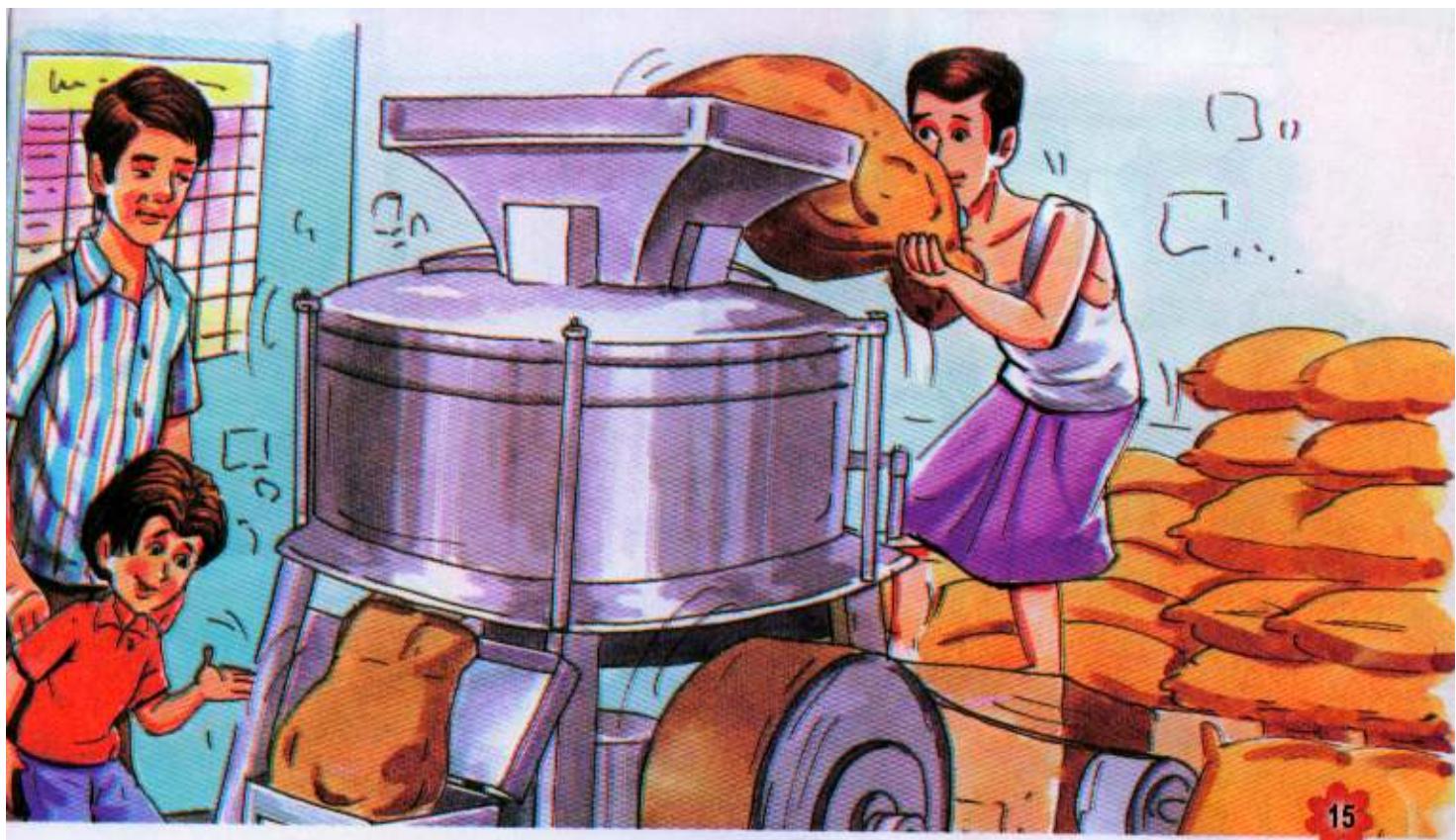
पापा भी गेहूँ बीन रहे थे।

जमाल फिर गेहूँ से खेलने लगा।



14

मम्मी-पापा ने गेहूँ एक कनस्तर में भरे।
पापा ने कनस्तर पकड़ा।
मम्मी ने उसमें गेहूँ डाले।
जमाल ने भी कनस्तर में गेहूँ डलवाए।



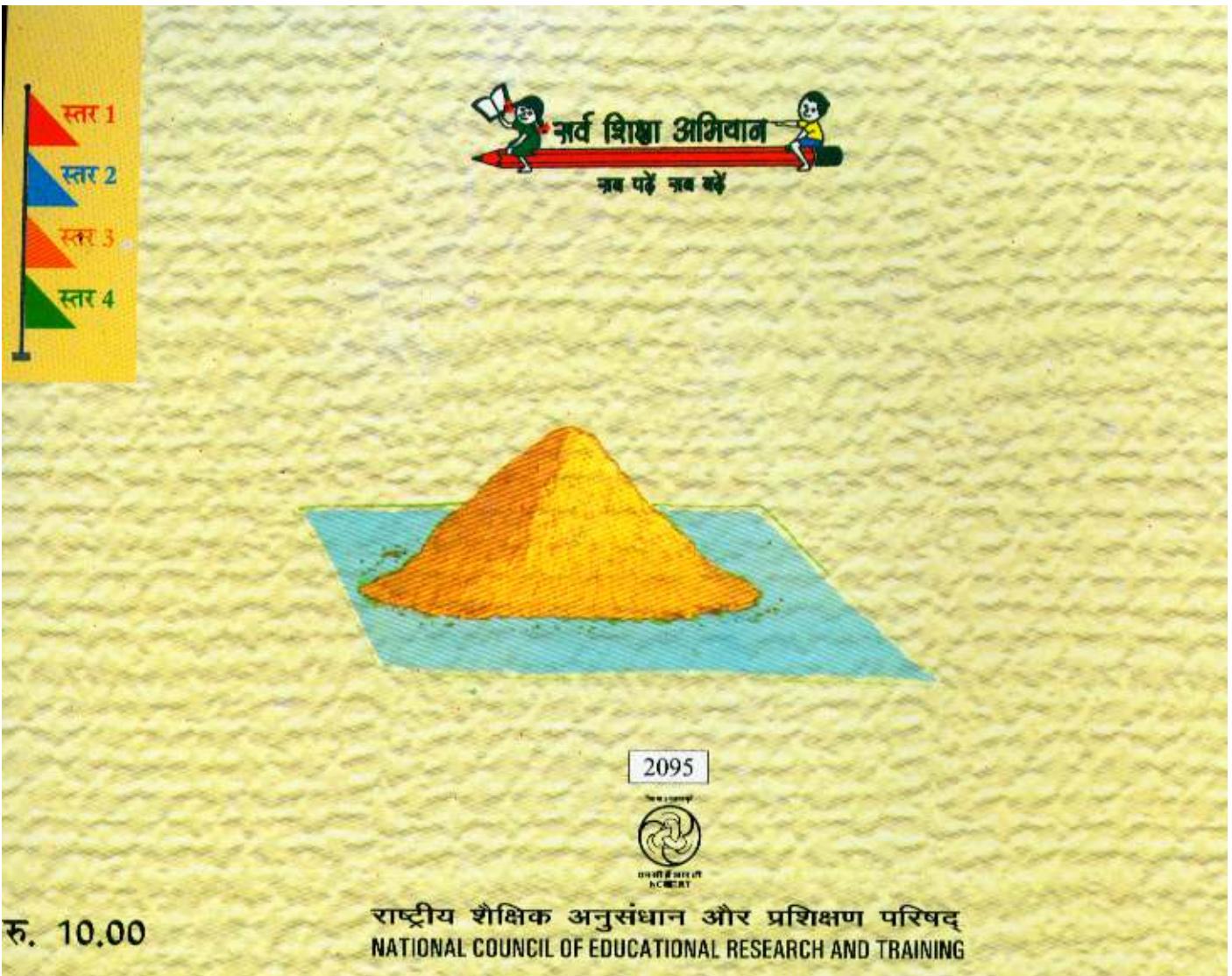
15

पापा फिर गेहूँ पिसवाने गए।
जमाल भी उनके साथ गया।
उसने आटे की चक्की चलते हुए देखी।
जमाल को आटे की खुशबू बहुत अच्छी लगी।



16

जमाल और पापा आटा लेकर घर लौटे।
उन्होंने आटे का कनस्तर रसोई में रखा।
मम्मी ने ताजा-ताजा आटा गूँधा और रोटियाँ सेंकीं।
जमाल ने गरम-गरम रोटियाँ खाईं।

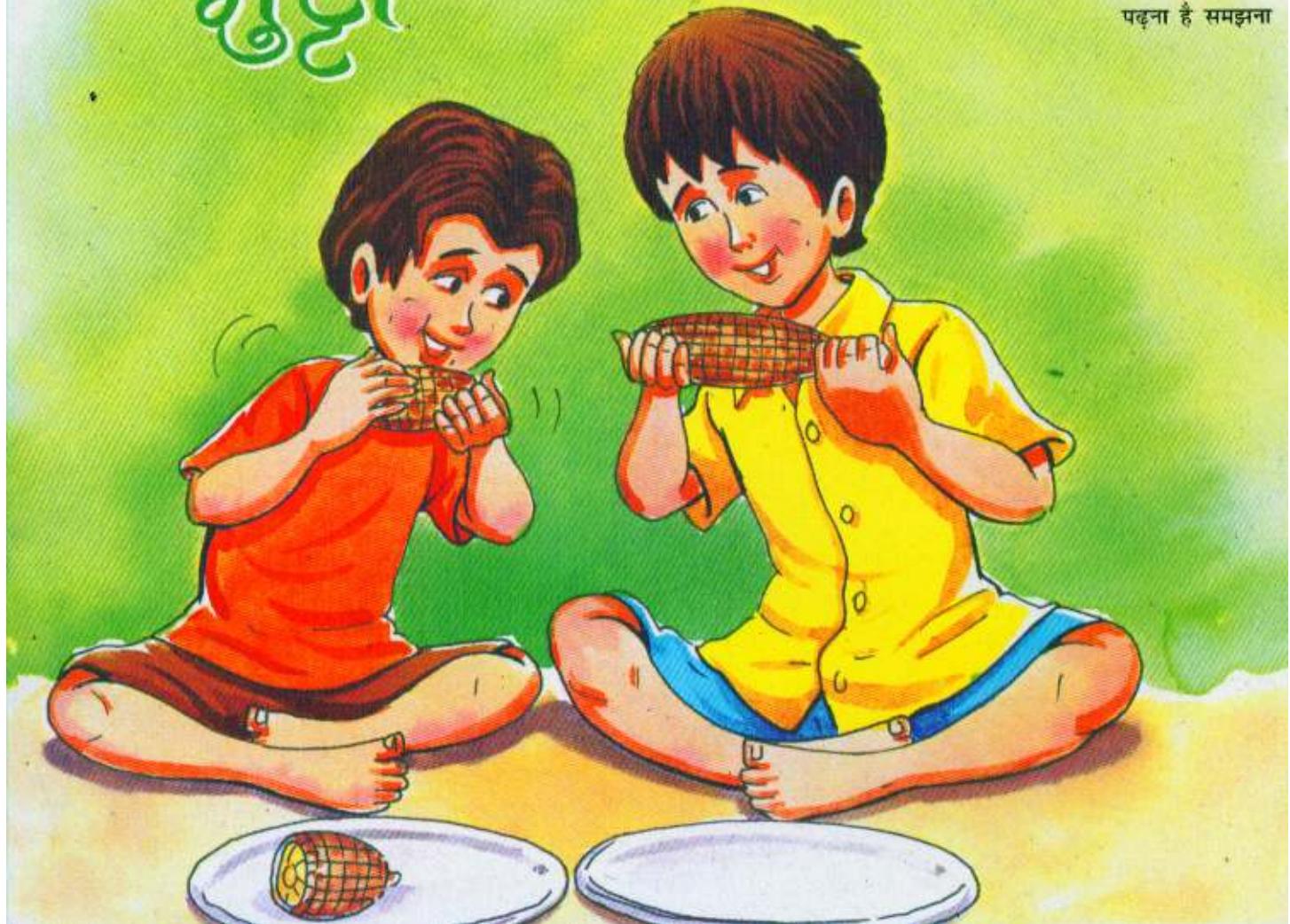


रु. 10.00



पढ़ना है समझना

भूट्टा



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

युवमुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्णय समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, गोधिका बेनन, शालिनी शर्मा, लता शर्मा, स्वाति वर्मा, मारिका वशिष्ठ,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुभल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रकान – जोश्ल गिल

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी., ऑफिटर – अर्वद गुप्ता, जैलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार झापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुभा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीयी की सम्पादन, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. क. लक्ष्मी, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजनन शर्मा, विभागाध्यक्ष, विभाग विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुरा माशुर, अध्यक्ष, रोडिंग देवलैपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक बाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफेसर फरीदा अल्मल्ला, खान विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जानिया गिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपवांशद, रोहर, हिंदू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शमनम सिन्हा, श्रीई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुम्बई; मुख्ती नुसहद उमर, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निदेशक, दिग्ंगत, बंगलुरु।

8) जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में गविय, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी नाम, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पेपर विटा अम, द्वी-28, इंडिपेंडेंस एरिया, साइट-ए, मधुगंगा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-पैट)

978-81-7450-858-4

बरखा ऋमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मार्गे देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कक्षाओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को सुनाने के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को योजामरी की छोटी-छोटी घटनाएँ, कहानियाँ जैसी रोचक संगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक क्षेत्र में संलग्नतम क्षमता मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आमानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को जापना तथा इनकानामी, भर्ती, फोटोप्रिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से प्रयोग पद्धति द्वारा उपका संप्रहण अथवा प्रसारण नवीनित है।

ए.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- पूर्वीई.आर.टी. कैफ़ा, श्री अधिकारी नाम, नई दिल्ली 110 016. फोन : 011-26562708
- 108, 109 पैटे तृतीय, हैली एम्प्लोइमेंट, हैलीकोर, बाहाबदी III इलाम, असम 781 065 फोन : 069-26725740
- पूर्वीशैक्षण उत्तर बचन, इकायन नवजीवन, अलमदारगढ़ 380 014. फोन : 079-27541446
- श्री.इल्लू.सी. विप्र, निकट भनकल बम बर्टी परिवारी, कोलकाता 700 014 फोन : 033-255310454
- श्री.इल्लू.सी. कम्पोनेंस, मालीपुर, गुग्गाजी 781 021. फोन : 0361-2670340

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री रमेशकुमार
पुस्तक संपादक : रवीश उमर

प्रयोग जापान अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम जागती

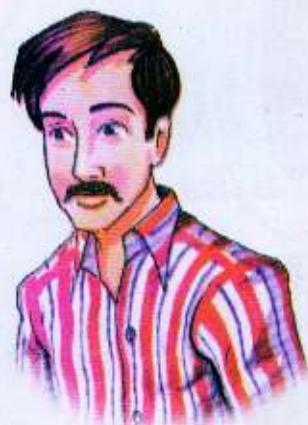
भुट्टा



मदन



जमाल



पापा के दोस्त

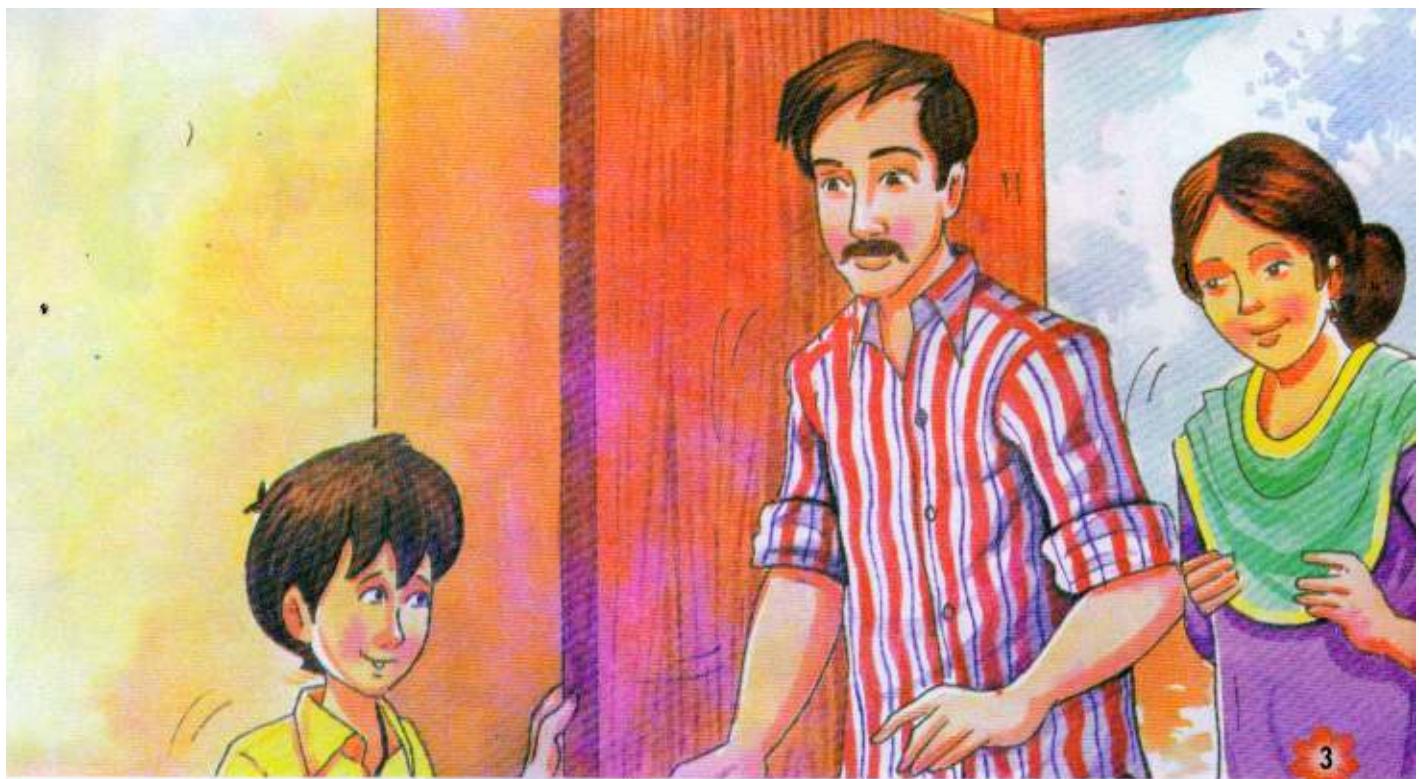


दोस्त की पत्नी



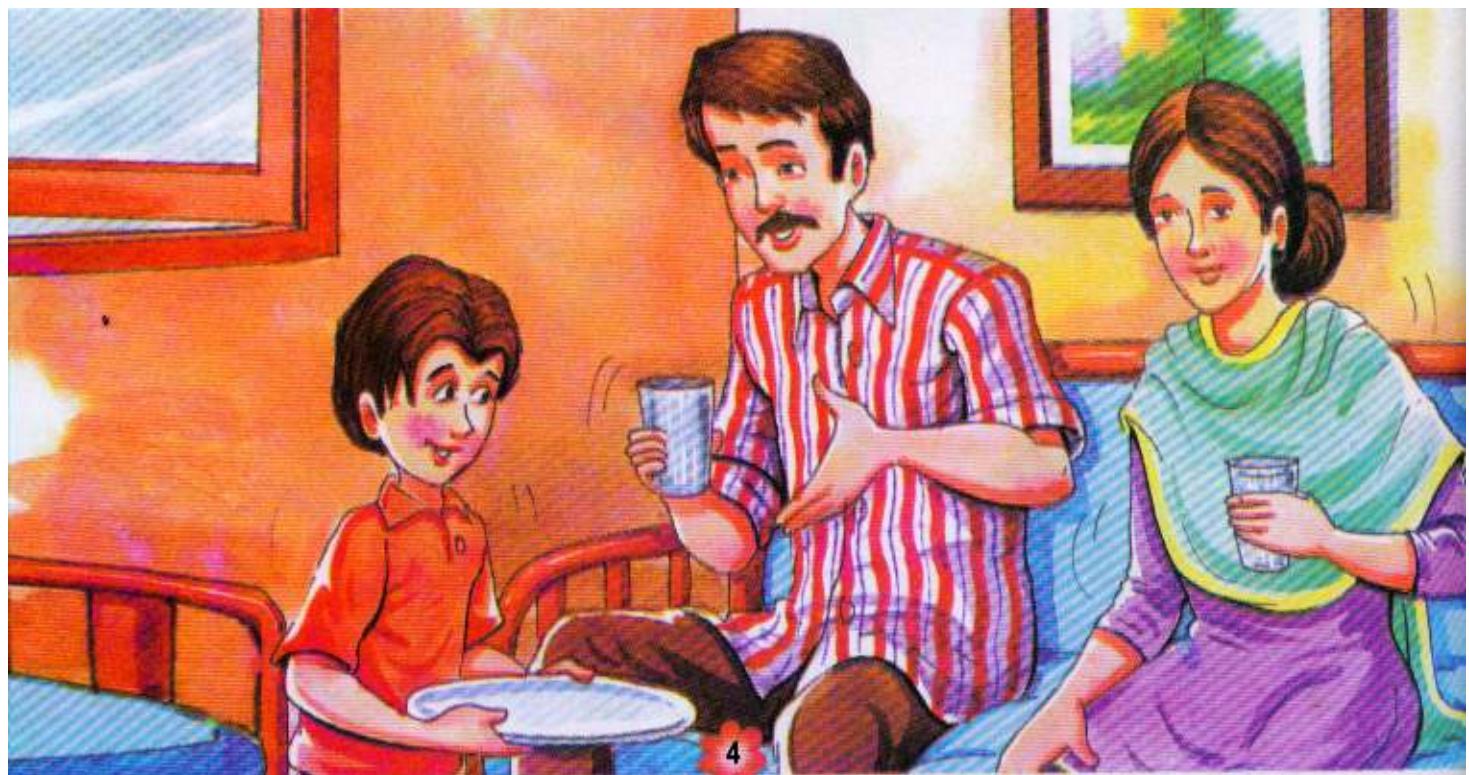
2

एक दिन जमाल और मदन घर में अकेले थे।
घर के सब लोग बाज़ार गए हुए थे।
जमाल और मदन घर-घर खेल रहे थे।
जमाल मम्मी बना था और मदन पापा।



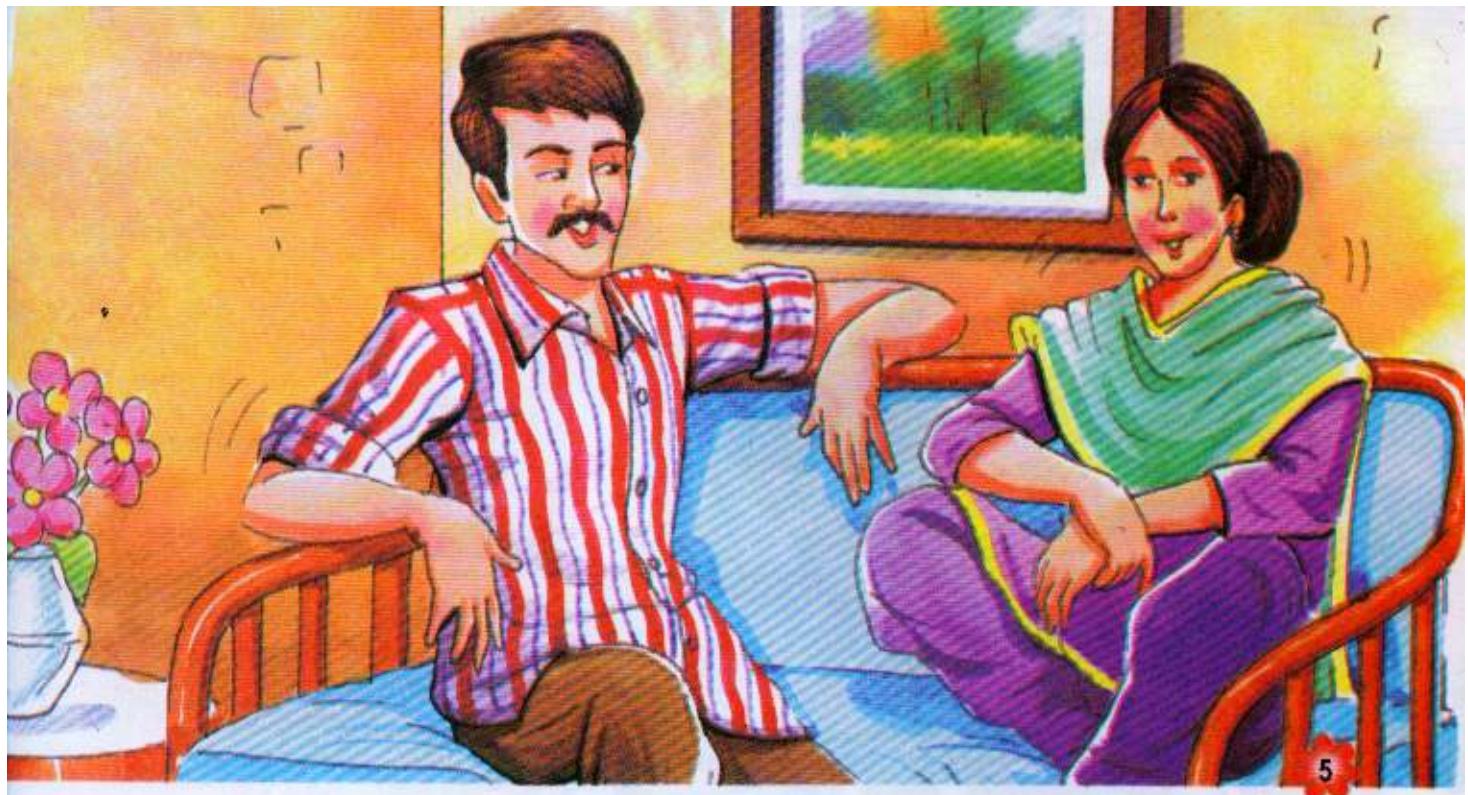
3

तभी घर की घंटी बजी।
मदन ने दरवाज़ा खोला।
पापा मम्मी से मिलने कोई आया था।
मदन ने उन्हें अंदर बैठाया।



4

जमाल ने उनको पानी लाकर दिया।
वे जमाल के पापा के दोस्त थे।
उनके साथ उनकी पत्नी भी आई थीं।
उन्होंने जमाल से मम्मी-पापा के बारे में पूछा।

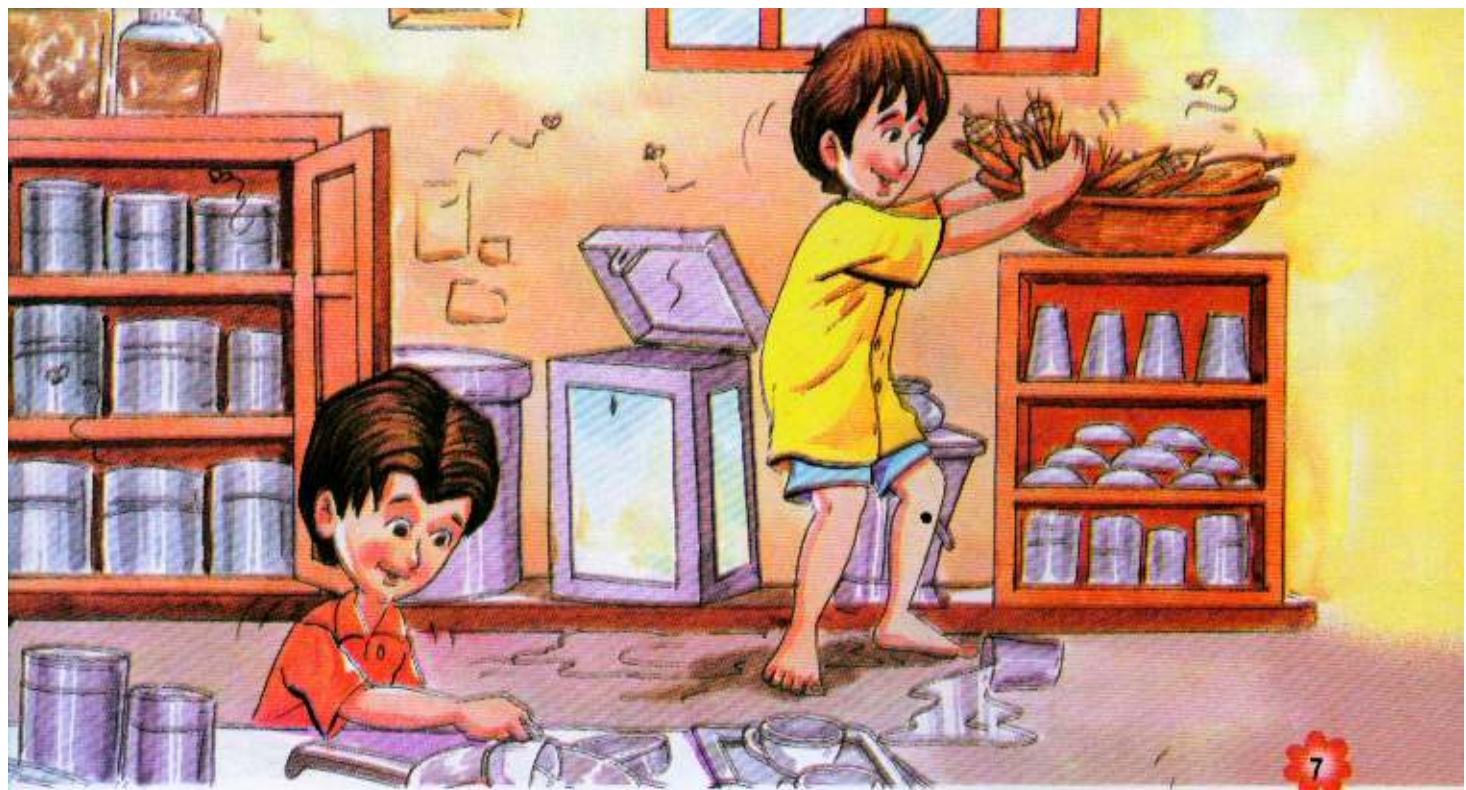


जमाल ने बताया कि सब बाज़ार गए हुए हैं।
मदन बोला कि पापा सब्ज़ी लेकर जल्दी ही लौट आएँगे।
पापा के दोस्त और उनकी पत्नी इंतज़ार करने लगे।
वे आराम से पैर फैलाकर बैठ गए।



6

जमाल और मदन रसोई में आ गए।
जमाल चाय बनाने लगा।
मदन खाने के लिए कुछ ढूँढ़ने लगा।
मदन को डिब्बों में कुछ नहीं मिला !



7

मदन की नज़र टोकरी में रखे भुट्ठों पर पड़ी।
उसने चारों भुट्ठे उठा लिए।
मदन ने सोचा कि भुट्ठे भूने जाएँ।
जमाल चाय बनाने में ही लगा हुआ था।



8

मदन भुट्टों को छीलने लगा।
उसने भुट्टों के छिलके और बाल निकाले।
जमाल ने चाय को प्यालों में छाना।
उसने मदन के हाथ में भुट्टे देखे।



9

जमाल ने पूछा कि भुट्टों का क्या करोगे।

मदन ने कहा कि वह भुट्टे भूनने जा रहा है।

जमाल ने उससे भुट्टे छीन लिए।

वह बोला कि भुट्टे उबालकर खाएँगे।



10

जमाल और मदन में भुट्टों को लेकर लड़ाई हो गई।
मदन भुट्टे भूनना चाहता था।
जमाल भुट्टे उबालना चाहता था।
बनी हुई चाय एक तरफ़ रखी थी।



11

मदन ने दो भुट्टे जमाल को दे दिए।
उसने जमाल से कहा कि जो करना है कर लो।
जमाल ने भुट्टों के दो-दो टुकड़े कर दिए।
वह भुट्टों को उबालने लगा।



12

मदन चाय देने बाहर चला गया।
जमाल ने एक पतीले में पानी भरा।
उसने भुट्टों के टुकड़े पतीले में डाले।
पतीले को गैस पर चढ़ा दिया।



13

मदन रसोई में वापस आया।
वह दूसरी गैस पर भुट्टा भूनने लगा।
जमाल उबलते हुए भुट्टों को हिलाता रहा।
उसने पतीले में थोड़ा नमक भी डाला।



14
मदन का भुट्टा चट-चट आवाज़ कर रहा था।
मदन उसको उलट-पलट कर भून रहा था।
भुट्टा भुनकर भूरा-काला हो गया था।
जमाल अपने उबलते हुए भुट्टों को हिला रहा था।



15

मदन ने अपना दूसरा भुट्ठा भुनने रख दिया।
उसने अपने पहले भुट्ठे पर नींबू और नमक लगाया।
जमाल ने भी अपने भुट्ठे पतीले में से निकाल लिए।
उसने अपने भुट्ठों पर मसाला लगाया।



16

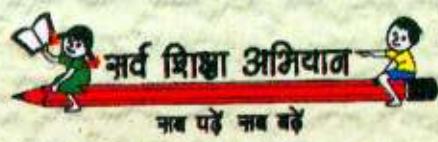
दोनों अपने-अपने भुट्टे लेकर आए।
पापा के दोस्त ने भुना हुआ भुट्टा खाया।
उनकी पत्नी ने उबला हुआ भुट्टा खाया।
उन्होंने जमाल और मदन के भुट्टों की खूब तारीफ़ की।

स्तर 1

स्तर 2

स्तर 3

स्तर 4



2096



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

तोता



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

युवमुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकमाला निर्णय समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, गोधिका बेनन, शालिनी शर्मा, लता शर्मा, स्वाति वर्मा, मारिका वशिष्ठ,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुभल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रकान – जोश्ल गिल

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी., ऑफिटर – अर्वद गुप्ता, जैलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार झापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुभा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षणीयी की सम्पादन, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. क. लक्ष्मी, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजनन शर्मा, विभागाध्यक्ष, विभाग विभाग, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुरा माशुर, अध्यक्ष, रोडिंग देवलैपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

गण्डीय समीक्षा समिति

श्री अशोक बाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदू विश्वविद्यालय, वर्षी; प्रोफेसर फरीदा अल्मल्ला, खान विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जानिया गिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपवांशद, रोहर, हिंदू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शमनम सिन्हा, श्रीई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुम्बई; मुख्ती नुसहद उमर, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित घनकर, निदेशक, दिग्ंगत, बंगलुरु।

8) जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में गविय, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अधिकारी नाम, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पेपर विटा अम, द्वी-28, इंडिपेंडेंस एरिया, साइट-ए, मधुगंगा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-पैट)

978-81-7450-858-4

बरखा ऋमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मार्गे देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कक्षाओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को सुनाने के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को योजामरी की छोटी-छोटी घटनाएँ, कहानियाँ जैसी रोचक संगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हरेक क्षेत्र में संलग्नतम क्षमता मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आमानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को जापना तथा इनकानामी, भर्ती, फोटोप्रिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से प्रयोग पद्धति द्वारा उपका संप्रहण अथवा प्रसारण नवीनित है।

ए.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- पूर्वीई.आर.टी. कैफ़ा, श्री अधिकारी नाम, नई दिल्ली 110 016. फोन : 011-26562708
- 108, 109 पैटे तृतीय, देली एम्स्ट्रेट, होस्टेल्स, बाहाबदी III इलाय, लखनऊ 226 005 फोन : 0520-26725740
- पूर्वीई.आर.टी. कैफ़ा, देली एम्स्ट्रेट, लखनऊ नवबीबान, लखमराहर 380 014. फोन : 0529-27541446
- श्री.इल्लू.सी. कैफ़ा, निकट भनकल बम बर्टी परिवारी, कोलकाता 700 014 फोन : 033-255310454
- श्री.इल्लू.सी. कैफ़ा, निकट भनकल बम बर्टी परिवारी, कोलकाता 700 014 फोन : 033-255310454

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री रमेशकुमार
पुस्तक संपादक : रवीश उमर

प्रथम जापान अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम जागती

तोता



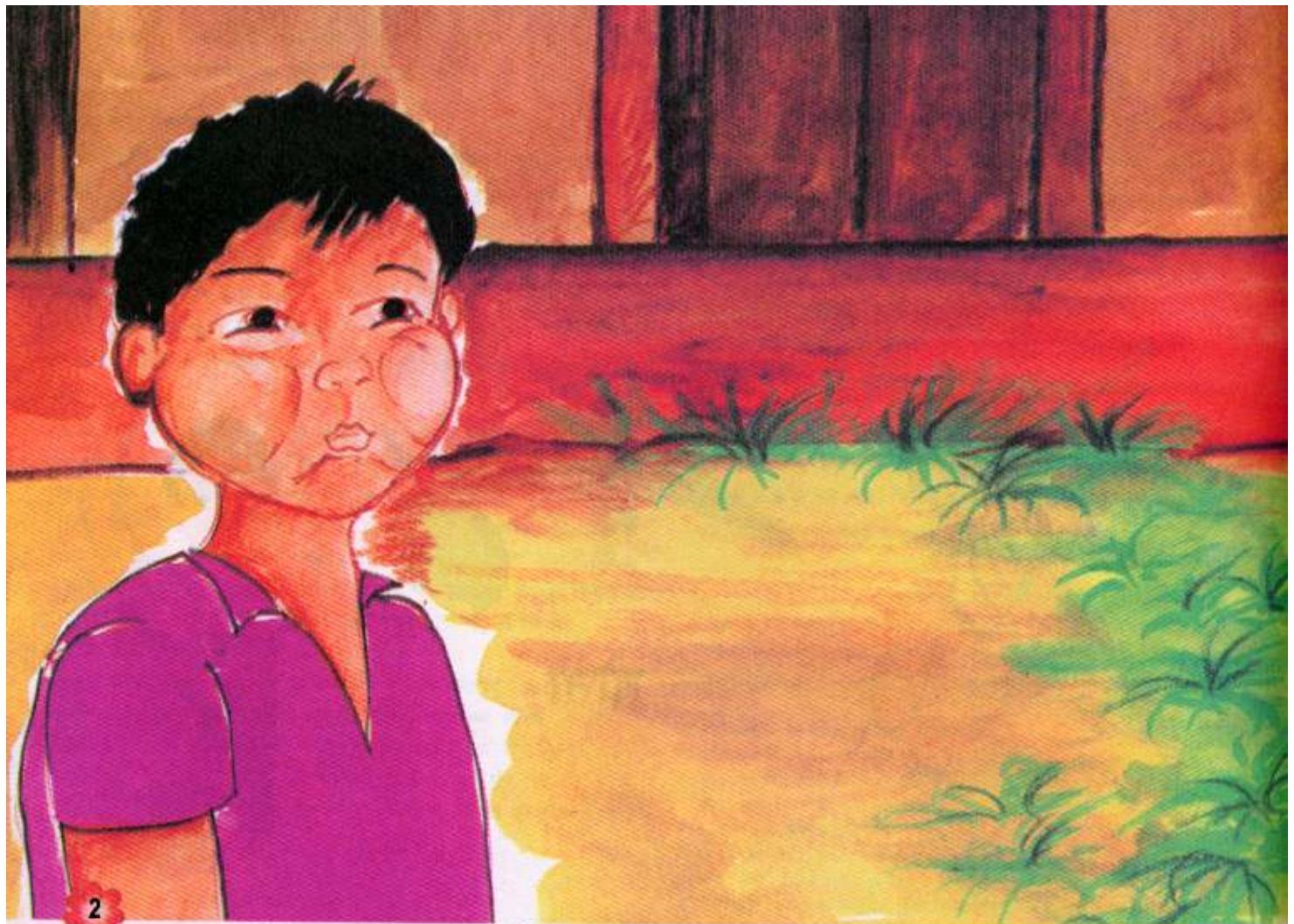
काजल



तोता



माधव

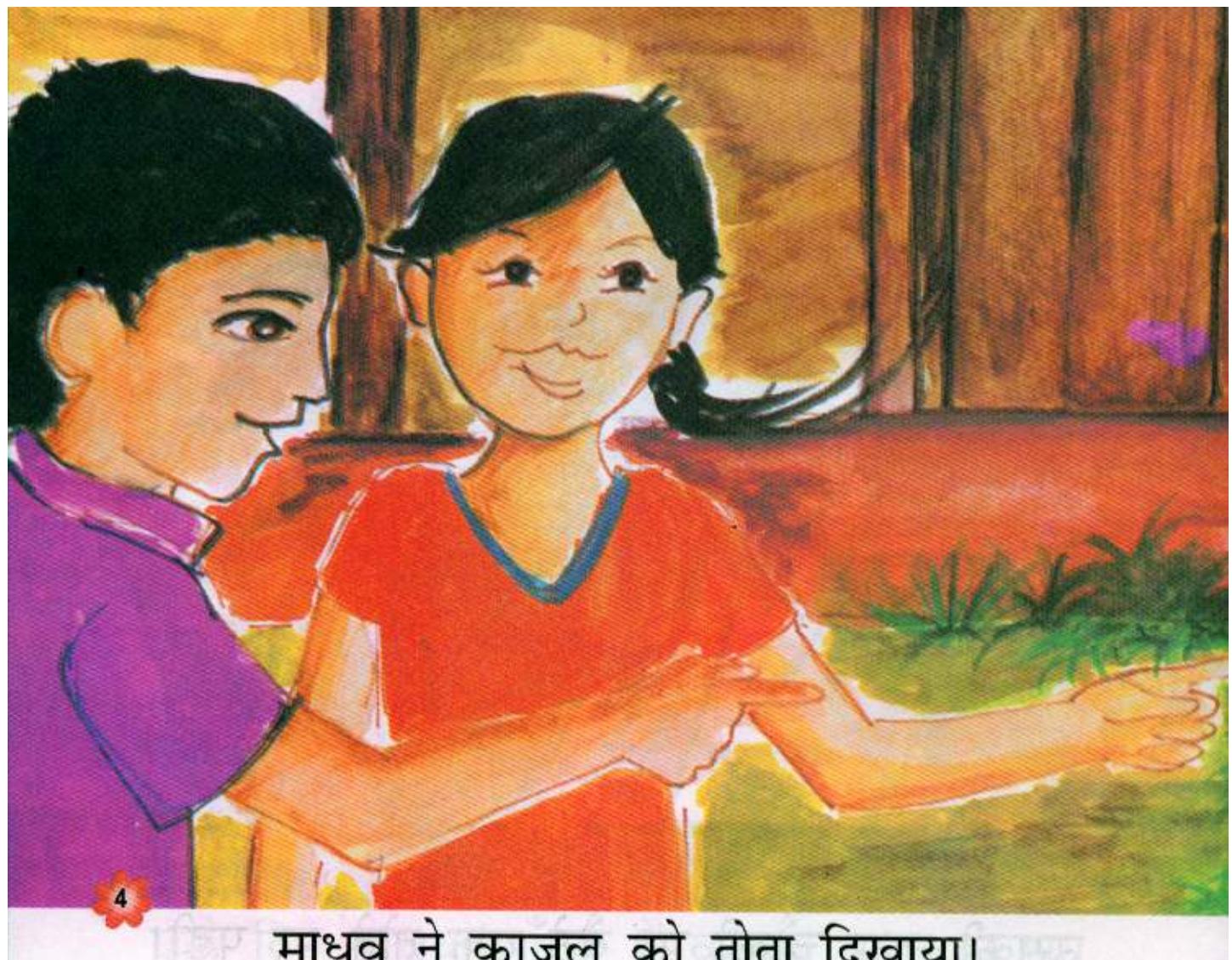


2

एक दिन माधव आँगन में कुल्ला कर रहा था।



उसकी नज़र चौकी पर बैठे एक तोते पर पड़ी।



4

माधव ने काजल को तोता दिखाया।

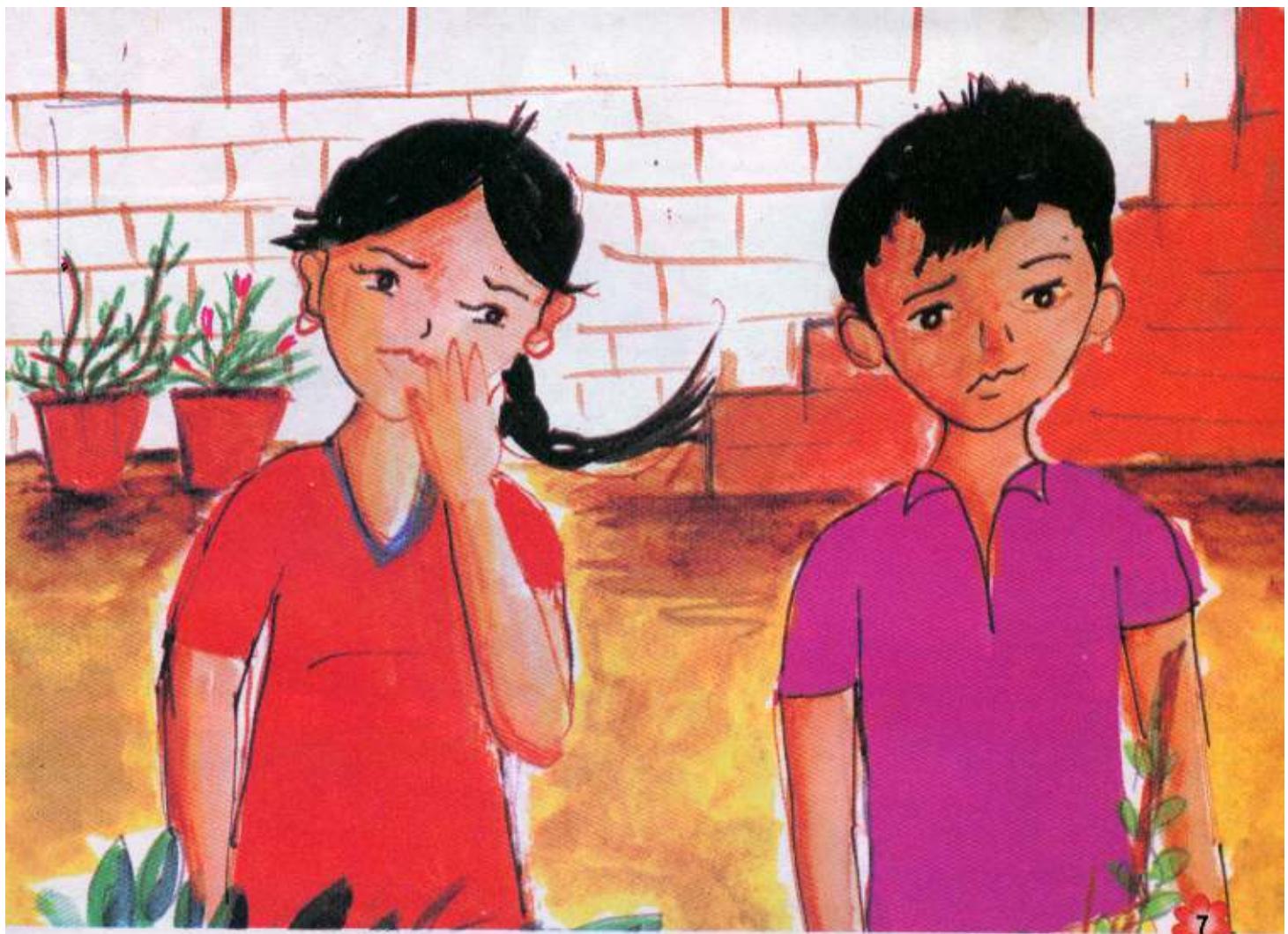


तोता धीरे-धीरे चल रहा था।



6

वह उड़ नहीं पा रहा था।

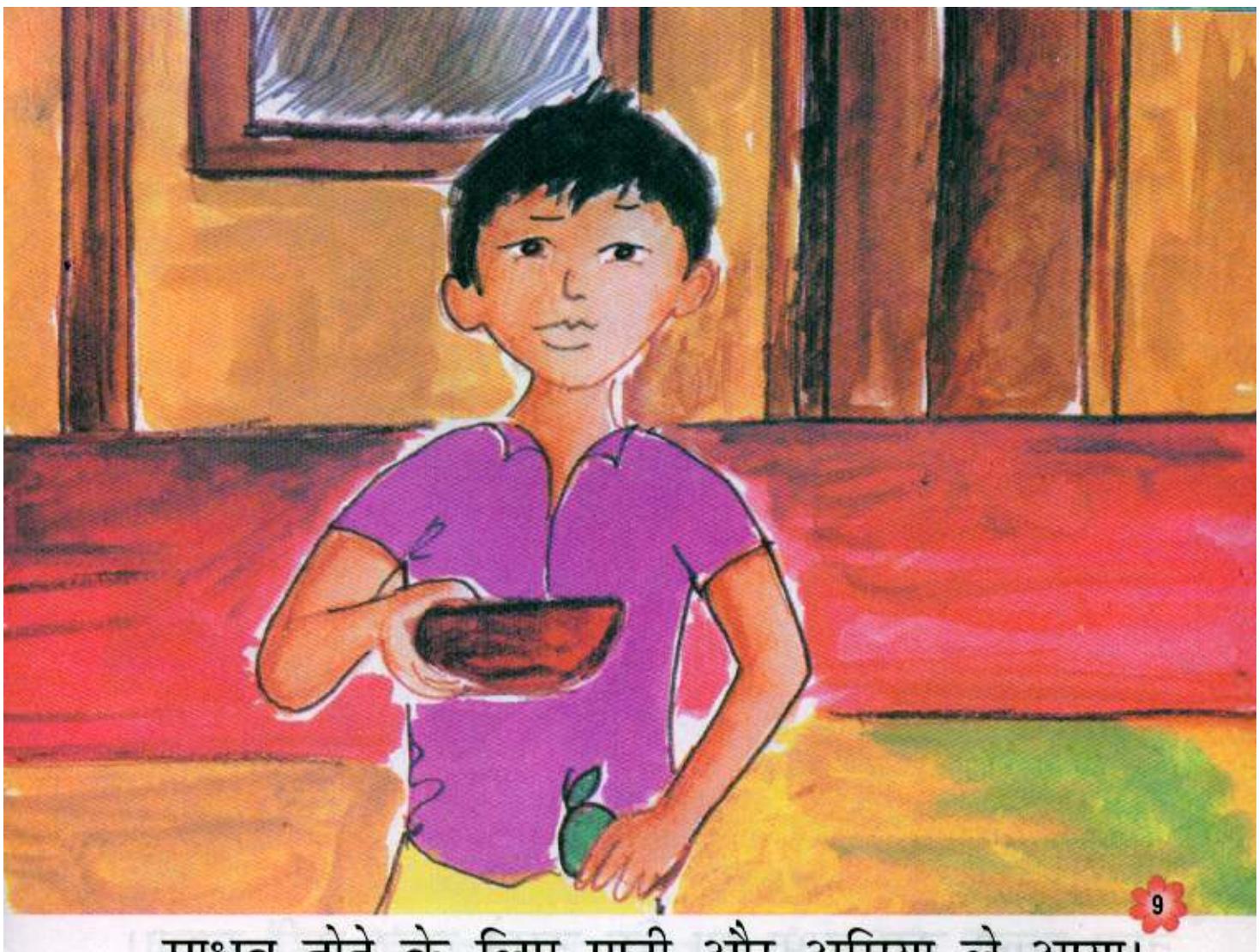


माधव और काजल उसको पास से देखने लगे।



8

तोते को चोट लगी हुई थी।

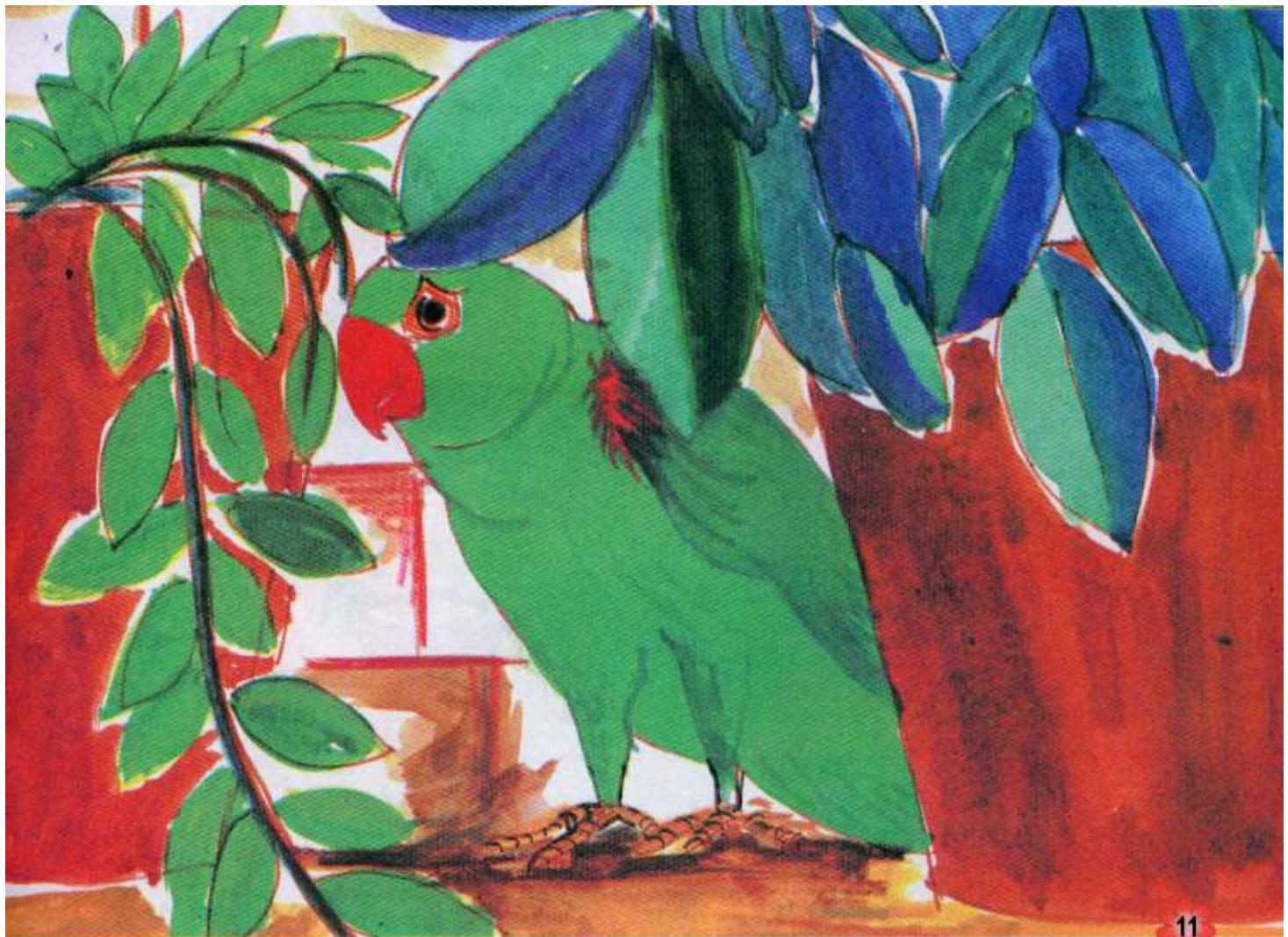


माधव तोते के लिए पानी और अमिया ले आया।



10

तोता इतना डरा हुआ था कि उसने कुछ नहीं खाया।



वह धीरे-धीरे चल कर गमलों के पीछे छिप गया।



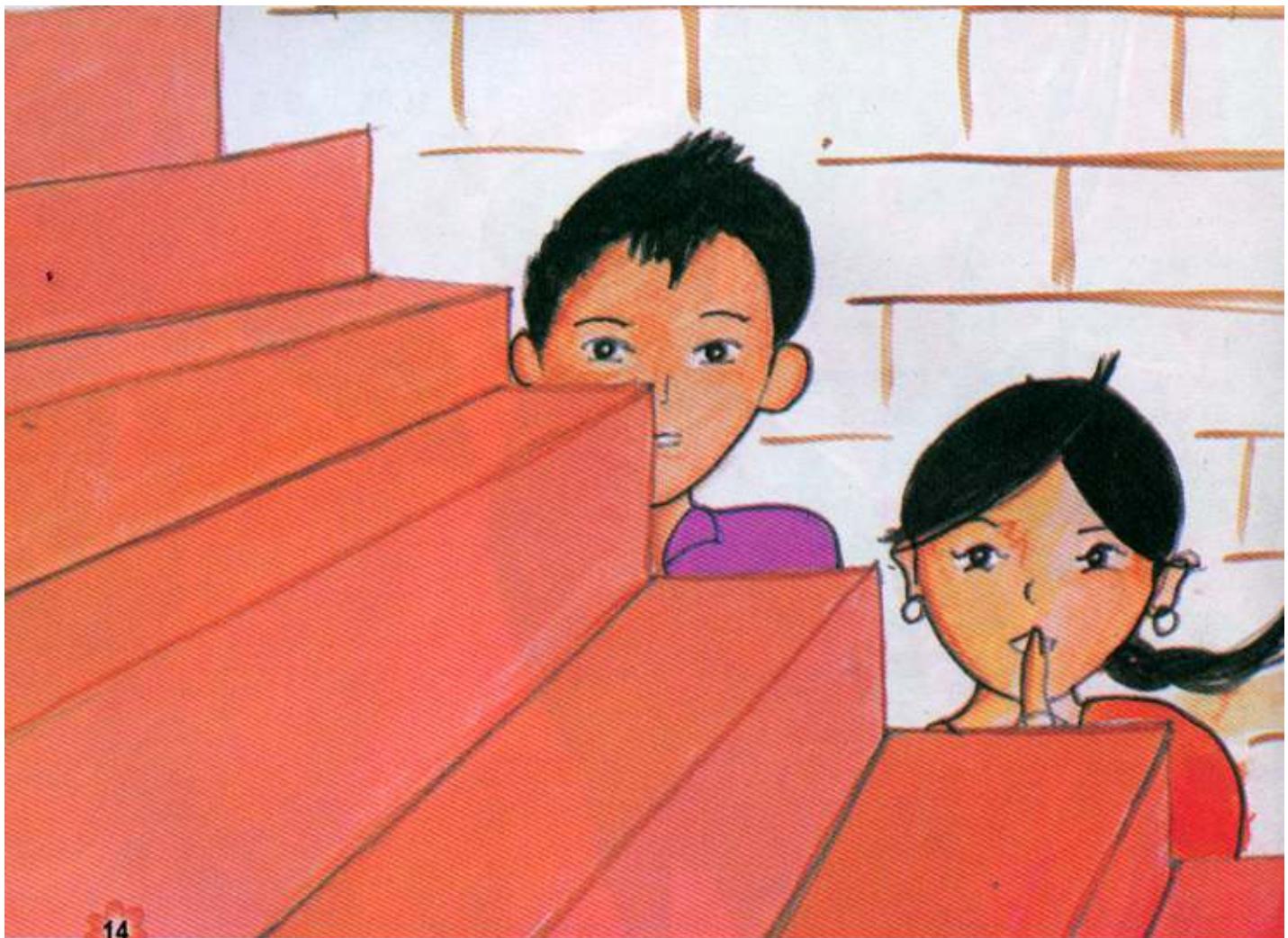
12

काजल ने पानी और अमिया वहीं सरका दिए।



13

तोते ने फिर भी कुछ नहीं खाया।

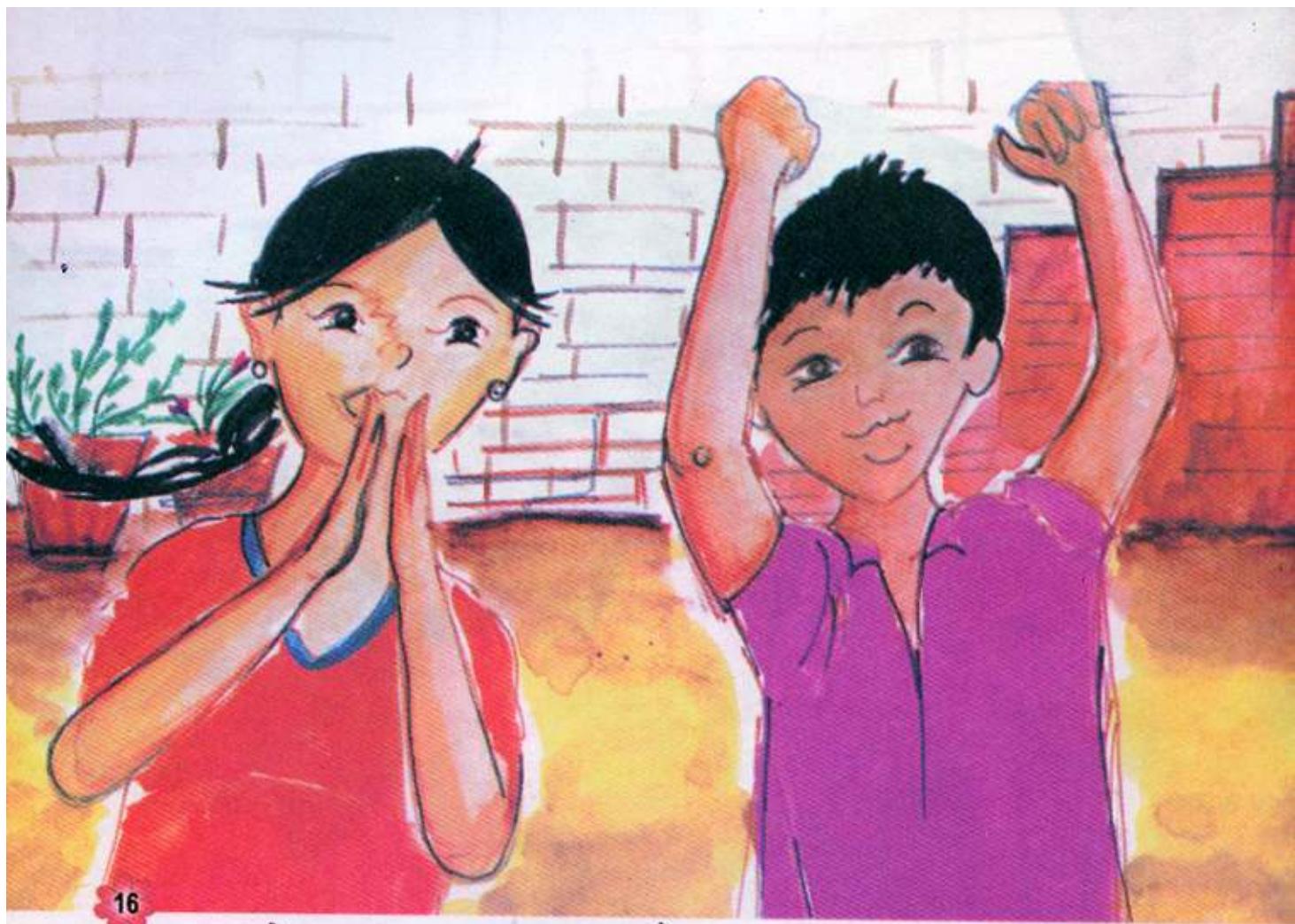


14

माधव और काजल सीढ़ियों के पीछे छिप गए।



तोते ने धीरे से अमिया खाई और पानी पी लिया।



16

यह देख कर काजल और माधव खुश हो गए।

